मालापती

[कहानी संग्रह]

श्री 'पहाड़ी'

प्रकाशगृह
४२, बलरामपुर हाउस, इलाहाबाद-२११००२

एक लम्बे अरसे तक चुप्पी साधने के बाद 'मालापती' कहानी-संग्रह अपने पाठकों को दे रहा हूँ। आज कहानी में शिल्प के प्रति लेखकों का मोह बढ़ गया है, जिसके कारण कि उनकी रचनाओं में सामाजिक-तत्व के प्रति उदासीनता मिलती है इसीलिए सन् १९४७ ई० के बाद लिखी हुई कहानियां अपना सामाजिक-दायित्व नही निभा पा रही हैं।

इधर एक 'फैशन' चल पड़ा है क्षेत्रीय-साहित्य को लेकर। नये लेखक शहर के निर्बल पात्रों को लेकर किसी विशिष्ठ क्षेत्र में उनको स्थापित कर, अपनी सफलता में फूले नही समाते हैं। इसीलिए नया लेखक जहाँ वह रहता है, उस समाज और वातावरण का प्रतिनिधित्व नही कर पा रहा है। वह एक झूठी कल्पना को लेकर क्षेत्रीय और आंचिलिक-साहित्य में प्रवेश करना चाह कर भी असफल रहता है। यही कारण है कि जहाँ रेणु अपने उपन्यासों में असफल रहा है, वही हम उसे कहानियो में सफल पाते हैं। कहानी का 'कैनवस' छोटा होने के कारण वह उस क्षेत्र के बलवान चरित्र दे सका है। जबकि अपने उपन्यासों मे वह शरद की नारी का सस्ता-संस्करण भर ला पाया है।

हमारे आलोचक, जिनको कि क्षेत्रीय-साहित्य की कल्पना नहीं है और ड्राइंगरूम में बैठ कर लिखने-पढ़ने के आदी हैं, उन लोगो ने क्षेत्रीय-साहित्य की मनमानी परिभाषा गढ दी है। बोलियों का लेखक अपने क्षेत्र के लोगों के बलवान-चरित्र सदा से ही देता रहा है। मैंने स्वयं 'गढ़वाली-जीवन' पर तीन दर्जन से अधिक सुन्दर रचनाएँ लिखी हैं। जिनको कि शायद हिन्दी के कथित सबसे अधिक प्रगतिशील आलोचक श्री शिवदान सिंह चौहान ने नही पढा है और न उन शोध-कर्ताओं ने, जिनको जातिवाद या तिकड़म बाजियों से 'हिन्दी कथा-साहित्य' पर आसानी से पी० एच-डी० मिली है।

भोजपुरी, अवधी, गढ़वाली, कुमाऊनी, व्रज, मैथिली आदि बोलियाँ बोलने वाले लोगों का अपना जीवन, अपनी संस्कृति, रहन-सहन तथा

प्रकृति से संबंध है। वहाँ लोक-कथाओं की स्वस्थ बयार आज भी बहती है। वहाँ के लेखक सदा से ही अपने यहाँ की जनता के संघर्षों पर लिखते रहे हैं। जब कि आंचलिक-साहित्य नगर, फैक्टरी आदि किसी अंचल का साहित्य होगा। बड़े शहरों मे कई अंचलों का निर्माण पिछले पन्द्रह सालों मे हो गया है। पुराने जमाने में भी शहरों के भीतर जातियों के अपने मोहल्ले थे। गुजराती, राजस्थानी, महाराष्ट्री, बंगाली आदि। आज हिन्दी के लेखक को यह भेद जान कर जहाँ वह रहता है वहां के लोगों और उस धरती पर ही लिखना चाहिए। इससे हिन्दी का कथा-साहित्य पुष्ट होगा। यदि वह हमारे इतिहास पर लिखना चाहते हैं तो उनको उस समाज का ध्यान रखना होगा जो कि उस पुरातन में उभर रहा था। शिल्प और मनोविज्ञान का मोह उनको कुछ तो छोड़ ही देना होगा।

मैंने सन् १९५२ ई० से सन् १९६० ई० तक कुछ कहानियां लिखी हैं। वे मेरे इस संग्रह तथा 'बीज और पौधा' संग्रह मे छप गई है। इधर राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ने मेरी श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह भी पाकेट बुक संस्करण मे पाठकों के लिए उपलब्ध कर दिया है। और मेरी सब पुस्तकें अब प्रकाशगृह द्वारा प्रकाशित हो कर पाठकों को आसानी से प्राप्त हो जावेंगी।

दीपावली, १९८५ — पहाड़ी

विषय सूची

●

१—मालापती	...	६
२—जोगा	...	२७
३—रामी	...	४०
४—शाहजी	...	५३
५—कालू	...	६५
६—दुनियाँ की ओर	...	७३
७—बखतवार	...	८२
८—कुकरखांसी	...	९३
९—फोंदू	...	१०२
१०—कठपुतली का खेल	...	११२
११—घाटे का बजट	...	१२५
१२—तराजू की बाट	...	१३८
१३—सुलताना की आत्मा	..	१५४
१४—कम्मो	...	१६३
१५—इमली की पत्तिया	...	१७८
१६—प्लास्टिक का हृदय	...	१९१
१७—फूल और काटा	...	२१७

मालापर्ती

मैं उस पड़ाव पर तीसरे पहर पहुँचा। घाटी में जुलाई के अंतिम दिनों वाली उमस थी। चपरासी ने डाक बंगले में सामान रखवाया और फिर नीचे होटल के मालिक के पास बैठ कर गपशप करता हुआ हुक्का गुड़गुड़ाता रहा। मैं चुपचाप नदी के पुल पर खड़ा हुआ। दूर उत्तर की ओर हिमालय की चोटियों पर मेह बरसने के कारण नदी में बाढ़ आ गयी थी। उसके मटमैले पानी में बड़ा वेग था जो कि बीच-बीच मे भँवरें बनाता हुआ आगे की ओर बढ़ रहा था। पानी पुल के ऊपर बिछे हुए स्लीपरों को छू रहा था। नीचे बहाव की ओर नदी के दोनों तरफ वाले खेत पानी से लबालब भरे हुए थे। उनमें कुछ दिन पहले किसानों ने धान की रुपाई की थी। कुछ लोग नदी में बह कर आयी हुई लकड़ी को बटोर रहे थे। कई युवक तो लकड़ी के कुंदों के साथ तैरते हुये बह जाते और अपने प्रयास में सफल रहते। जब वे नदी में कूदते तो उनके हाथ-पाँव तथा कमर की सुदृढ़ मसलें चमक उठती। मछुए नदी में जाल फैलाए हुए थे और एकुले-दुकले वंसी के काँटे पर मरा हुआ केंचुआ फँसा कर नदी में डुबो देते। वंसी के काँटे पर बह कर आयी हुई कई वस्तुयें फँस जाती हैं। एक बार जाल पर एक मरा हुआ बछड़ा उलझ गया, जिससे मन में घिन उदय हुई। नीचे दूर तक नदी का मटमैला फैला हुआ रूप मिलता, जो कि डूबते हुये सूर्य की लाली में हरी-भरी पहाड़ियों के बीच निराली शोभा का प्रदर्शन कर रहा था। बरसाती नदी का अपना

प्रभावशाली व्यक्तित्त्व और अनूठा सौन्दर्य होता है; फिर भी वह दृश्य हृदय को भयभीत कर रहा था।

नहर पर ऊपर की ओर कुछ लड़के बैठे हुये थे। पनचक्की वाले की झोपड़ी से धुआँ उठ रहा था। चक्की की गरड़-गरड़ का स्वर नदी के भारी कम्पन के बीच खो जाता था। युवक तथा युवतियाँ पिसे हुये अनाज के थैले सिर पर रख कर अपने गाँवों की ओर लौट रहे थे। कुछ अभी-अभी आये हैं। वे नहर के पास रोटियाँ सेंक रहे थे। वे रात को अनाज पिसवा लेंगे। एक बूढा पतवीड़ी बना, उसमें तम्बाखू भर कर फूँक रहा था। पनचक्की का मालिक तीन-चार बार झोपड़ी से बाहर निकला और लड़कों को नहर में पत्थर फेंकने से मना कर गया। उसने नहर पर जाल लगा रखा है और बरसाती नहर में बह कर आयी हुई मछलियाँ सुबह तक उसमें फँस जावेंगी। वह मछली होटल वाले के हाथ बेचता है। झोपडी से कुछ दूरी पर एक युवती अपने साथी के साथ गुमसुम बैठी हुई थी और वह युवक उसे मना रहा था।

तभी खच्चरों का एक गिरोह पुल पार करने लगा। उनके चलने से पुल हिचकोले खा झूल सा उठा। अब वे आम तथा जामुन के पेड़ों वाले पड़ाव पर चले गये और वहाँ सामान उतार कर ढेर लगा दिया गया। वह आढ़त का माल है। आज वे यहाँ विश्राम कर कल संध्या तक क़स्बे पहुँच जावेंगे। मैं पुल के ढाँचे को देखने लगा। नदी के आर-पार पत्थर के चार ऊँचे मजबूत मुनारे थे, जिनमें कि लोहे की चार रस्सियाँ मजबूती से फँसाई गयी हैं। नीचे वाली रस्सियों पर सिलीपर जोड़े गये थे और ऊपर वाली रस्सियों से वह मजबूती से बाँध दी गयी थी। यह वहाँ अंकित था कि सन् १९०४ ई० में इसका निर्माण हुआ है। वह लटकने वाला पुल नदी के ऊपर भला लगता है। प्रति वर्ष बरसात में नदी इस पुल को बहाने का असफल प्रयास करती है। कभी-कभी पानी बढ़ कर तख्तों के ऊपर तक चढ़ जाता है। पर पुल उसी भाँति झूलता हुआ रह जाता है।

इस नदी की कहानियाँ बड़ी दुखद हैं। मीलों तक इस पर कहीं कोई पुल नहीं है और गाँव वाले इसे, जहाँ कि तट चौड़ा होता है, वहीं से पार करते हैं। वहाँ इसमें घुटने-घुटने पानी रहता है, किन्तु बरसात में जब इसमें भीषण बाढ़ आ जाय, कोई नहीं जानता। फिर तो यह मानव और मवेशी किसी पर दया न कर, तूफानी वेग से सबको बहा कर उनके प्राण ले लेती है। उस समय लगता है कि मानों कोई बड़ी फौज बढ़ी हुई चली आ रही है। नदी के प्रवाह का भारी शब्द ठीक तरह कान में गूँज तक नहीं पाता कि बाढ़ का पानी पत्थर, पेड़, मवेशी आदि को बहाता हुआ सब कुछ ढक लेता है। उस भयानक दृश्य की कल्पना कोई नहीं कर सकता है? नदी का पानी अपने में सब कुछ समेट कर आगे-आगे बहता जाता है और उसकी गर्जन आसपास के पहाड़ी गाँवों के निवासियों के हृदय को उद्वेलित कर देता है। सहस्त्रों वर्षों से यह नदी इसी भाँति घाटी में बह रही है और इसके तट के निवासी इससे संघर्ष करते आए हैं। यह नदी मानव को नाश और निर्माण की भावना सौंपती है। वह मानव तो इसे प्रकृति का वरदान मान कर इसके भेद को आज भी समझ लेना चाहता है। वह इस पर विजय पाने की कल्पना करता है।

मैं पुल पर चुपचाप खड़ा-का-खड़ा ही था। रात पड़ गयी। सामने पहाड़ी गाँवों की रोशनी टिमटिमाने लगी। नदी का स्वर तीखा पड़ता हुआ मिला, लगा कि मानों वह रात को गुस्से में भर आयी है। आकाश पर कहीं-कहीं तारे झिलमिलाते, तो फिर पहाड़ों के शिखरों से कुहरा नीचे घाटी की ओर तैरता। कहीं दूर से बिजुली की कड़कड़ाहट का स्वर घाटी में गूँजा। मैं चौंक उठा और जब संभला तो अपने में ही न जाने क्या सोचता रह गया। आज मैं पन्द्रह साल के बाद इस पड़ाव पर आया हूँ। पिछली बार जब मैं यहाँ टिका था तो युद्धकाल में एक नई चमक मिली थी। लगता था कि यह छोटी चट्टी कस्बे के रूप में फैल रही है। उन सैकड़ों सिपाही छुट्टी पर पर आते-जाते हुए यहाँ विश्राम लेते थे।

युवकों को फौजी वर्दी में पा कर कुछ अचरज-सा होता था। उनकी बातों में दिलचस्पी के साथ देश-विदेश का ज्ञान-भंडार मिलता और ऐसा लगता कि वे भविष्य में एक सबल नई दुनियाँ का निर्माण करने में सफल होंगे। तब मैं मानव संघर्ष की बलवती भावना पर सोच कर दंग रह गया था। मुझे भविष्य पर अनायास ही विश्वास हुआ और लगा था कि उस संघर्ष के बाद जीवन में शान्ति आ जायेगी और मानव जीवन की झंझटों से छुटकारा पा जायगा।

आज मैंने पाया कि वह सब मेरा भ्रम था। जीवन में तो निरंतर संघर्ष लगा हुआ है। अब वे सैनिक पहाड़ी गाँवों में खो गये थे। उनकी स्मृतिस्वरूप किसी किसान के पाँव में पलटनी बूट तथा किसी के बरांड-कोट कठिनाई से दृष्टि में पड़ते। रास्ते भर मैंने देखा था कि वे ही सीढ़ी-नुमा खेत हैं और नारी-पुरुष का प्रकृति से वही सनातन संघर्ष चालू है। गरीबी है और वहाँ के मानव के चेहरे पर भूख की परछाईं पा कर मैं भयभीत हुआ। आज वह पड़ाव सूना-सूना निर्जीव-सा लगता है। आज वहाँ दो-चार मुसाफिर भी कठिनाई से टिकते हैं। रात पड़ते ही वहाँ मौत का सा सन्नाटा छा जाता है। समय ने जीवन की अवहेलना कर यहाँ के वातावरण में निराशा की भावना उडेल दी है।

पन्दरह साल का समय बहुत होता है। इसका ज्ञान मुझे पहले नहीं था। राह भर मैं इस पड़ाव की रूपरेखा के बारे में नई कल्पना करता आया हूँ। यहाँ मृत्यु का सन्नाटा पा कर आश्चर्यचकित, सा रह गया। इस नदी, पुल तथा यहाँ के वातावरण को स्मृति ने पिछले वर्षों बार-बार मुझे झकझोरा है। चाह कर भी इधर आने का अवसर न निकाल सका। आज इस पुल पर खड़ा होकर मैं किसी खोई हुई याद को ढूंढ रहा हूँ। एक क्षीण सी आहट कानों में सुनने को चाहता है। उसे अपने सामने बैठा कर मैं उससे पिछले पन्दरह वर्षों के संघर्ष की कहानी का ज्ञान प्राप्त करने की धुन में हूँ। वह कहानी जिसमें कि जीवन के चढ़ाव-उतार की झाँकी मिले। वह भावुकता जो कि मुझे तब नया साहस और प्रेरणा का परिचय दे गयी

थी। तब मैं निर्बल था, जबकि आज मैं सबल बन कर जीवन की सारी गुत्थियाँ सुलझाने की क्षमता रखता हूँ।

मालापती मुझे इसी पुल पर मिली थी। मैं कानून की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण कर नौकरी पर मैदान आ रहा था। ऐसा ही उमसपूर्ण बरसाती वातावरण था। नदी मे ऐसी ही बाढ़ थी। मैं इसी भांति पुलपर चुपचाप खड़ा हुआ अपने को सूना-सूना तथा एकाकी पा रहा था। भावी जीवन की कल्पना करना चाह कर भी अपने को असफल पाता। तभी मैंने एक नारी की खिलखिलाहट सुनी और पाया कि वह नारी मेरे आगे खड़ी है। उसने मुसकरा कर एक सिगरेट माँगी और बिना किसी हिचक के पीती हुई धुआँ आगे फैलाने लगी। मैं उस सुन्दर युवती को निहारता रह गया। सिगरेट के कई कश खीच, उसने सिगरेट नदी में फेंक कर कहा, 'यहाँ अकेले-अकेले खड़े क्या देख रहे हो? जीवन की गुत्थी इस एकाकी वातावरण में नही सुलझेगी। जीवन को उमंगों को व्यर्थ नष्ट करने से कोई लाभ नहीं है। पहले मैं स्वयं जीवन से ऊब कर नदी की भवरों में प्राण दे देने की बात सोचती थी, फिर मैंने अपना मन बलवान बनाया और आज मैं प्राणों को प्यार कर जीवन की रक्षा करने का संकल्प कर चुकी हूँ। क्या तुम जीवन और प्राण की परिभाषा जानना चाहते हो? आज मैं तुमको वह बता दूँगी। तुम फिर जीवन में अपने को कभी निराश नही पावोगे। मैं एक नाचने वाली चरित्रहीन युवती कही जाती हूँ लेकिन....?'

यह मालापती थी, जिसके सौन्दर्य की चर्चा उस घाटी में हीं नहीं, दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसका नाम नवयुवकों के हृदय में नवजीवन उड़ेलता था। वह सुन्दर गीत गाती और उसके नाचने की शोहरत चारों ओर थी। मालापती जीवन संगीत तथा नई प्रेरणा की प्रतीक थी। उसे हजारों सिपाही प्यार करते। वे उसके लिये विभिन्न उपहार लाते। वह पास बहती हुई नदी के समान अथाह थी। शान्त रहने पर वह नवजीवन प्रदान करती, जब क्रोध चढ़ता तो आवेश मे अपनी जीवन-भँवरों के बीच

युवतियाँ इसमें डूब कर प्राण गँवा देती हैं। तुम इसकी कल्पना नहीं कर सकते हो।'

मैं अवाक्-सा उसकी बातें सुनता रहा। वह कुछ देर तक टकटकी लगा मुझे देखती रही। बड़ी-बड़ी काजल से भरी हुई आँखें मन को मोह रही थी। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा,'मैं रात को आऊँगी। तुम प्रतीक्षा करना।'

इससे पहले कि मैं कुछ उत्तर दूँ, वह चली गयी। मैं चुपचाप उसे जाते हुये देखता रह गया। उसने तो एक बार भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। वह निश्चित डग भरती हुई चली जा रही थी। कुछ देर के बाद मैंने उसके गीत का स्वर घाटी में गूँजता हुआ पाया, बीच मे ढोलक बज रही थी और सिपाहियों का कोलाहल सुनाई पड़ता था। मैं बड़ी देर तक वह सुनता रहा और फिर लौट कर डाक बँगले चला आया।

चौकीदार को मैंने दो व्यक्तियों के लिये खाना तैयार करने का आदेश देकर बताया कि मालापती आवेगी। वह बूढ़ा मेरी बात सुन गदगद हो कर बोला 'वह यहाँ कभी नहीं आवेगी। वह बड़े लोगों से घृणा करती है। एक सौदागर ने दो सौ रुपया देकर उसे बुलाया था, तो उसने नोटों पर थूक कर कहा कि वह भजनू इसे चाट ले। सन्देश भेजा था कि वह वेश्या नहीं है। वह अपना शरीर रुपयों के लिये नही बेचती है। वह गाना सुनना चाहता है तो यहाँ चला आवे।'

जब मैंने उसे बताया कि उस नारी ने स्वयं ही आने का आग्रह किया है तो बूढ़े की आँखें चमक उठी। वह कहने लगा, 'सा'ब उसके गले में जादू है। जब वह गीत गाती है तो लगता है कि सारी घाटी मे खुशी की लहरें तैर रही है। सुनने वालों का मन प्रफुल्लित हो उठता है। लेकिन जब वह वेदना का गीत गाती है तो सारी घाटी में भारी निराशा फैल जाती है। लगता है कि प्रलय आने वाला है। आँखों से आँसू की धारा बहने लगती है। पाँच साल से वह यहाँ है और आज तक किसी ने उसकी शिकायत नही की है। सब उसका आदर करते हैं। सब उसे प्यार करते हैं।

पटवारी कई बार उसे फुसला चुका है कि वह उसको रखैल बन कर रहे; लेकिन यह उसे मान्य नहीं हुआ। एक बार उसने भद्दा मजाक किया तो उस नारी का चेहरा तमतमा उठा। गुस्से में बोली थी कि आगे ऐसी बात कही तो वह उसे उठा कर नदी में फेंक देगी। पटवारी ने दारोगा से शिकायत करने की बात उठाई तो यह तेज हो गयी। कहा कि जो मन में आवे कर लेना। पटवारी का चेहरा अपमान से तमतमाया तथा वहाँ बैठे हुये लोगों के बीच सन्नाटा छा गया। वह बात दूर-दूर तक फैली और लोगों ने इस पर प्रसन्नता प्रकट की थी। पटवारी चुपचाप बैठा नहीं रहा। उसने कुछ महीने के बाद उसकी रिपोर्ट ऊपर अधिकारियों को भेजी थी कि उनके यहाँ कच्ची शराब बनती है और फिर तलाशी लेकर मुकदमा दायर करा दिया था। अदालत में उसने बयान दिया कि वह केवल 'मिलीटरी रम' पीती है। फिर उसने पटवारी के व्यवहार की शिकायत कर गवाह पेश करने के लिये तिथि माँगी। मजिस्ट्रेट ने उसे छोड़ दिया और पटवारी का तबादला दूसरे हल्के में करने की सिफारिश की थी। मालापती अपनी उस विजय पर पिछला अपमान भूल गयी।'

उस दिन डाक बँगले का चौकीदार खाना बनाने के लिये चला गया था। बीच-बीच मे सुफा जाता कि वह कई पकवान बना रहा है। जब कि मैं बराडे मे कुरसी पर बैठा हुआ नदी को घाटी की ओर देख रहा था। मालापती के गाने का स्वर पूरी घाटी मे गूँज रहा था। उस सगीत लहरी के गुंजन से शरीर में कंपन फैलती और हृदय झंकारित हो, भावुक बन रहा था। वह नारी तो सारी रात इसी भाँति गाती रह जाती है। जब चिड़ियाँ घोंसलों मे प्रभात बेला के आगमन का स्वागत करने चिचियाती है तो सैनिकों की चेतना जागृत होती है। वे जल्दी-जल्दी उससे विदा ले अगली मंजिल के लिये रवाना हो जाते हैं। मालापती सबको विदा कर फिर निर्जीव सी नशे मे चूर सो जाती है। वह दिन मे बारह बजे तक नही उठती। वह किसी एक की प्रेयसी न बन सामूहिक रूप मे सबको अपना स्नेह बाँटती

है। वह सिपाहियों के साधारण उपहार स्वीकार कर बाकी दुतकारती लौटा देती है कि अपने परिवारों के लिये ले जावें। हँस कर कहती है कि उसे किसी के बीवी-बच्चे का हक छीनने का अधिकार नहीं है। भगवान ने उसे बहुत दिया है, अधिक की चाहना उसे नहीं है।

मेरी आँखों के आगे उस मालापती का विशाल व्यक्तित्व नाच उठा। मैंने उसे आमंत्रित नहीं किया। वह स्वयं ही मेरी अतिथि बन गयी। उसका वह आग्रह मैं समझ न पाया। आज वह सामूहिक जीवन से दूर हट कर एक व्यक्ति के पास आ रही थी। वह क्या कहेगी और क्या सवाल पूँछेगी ? क्या मैं उस भार को संभालने की क्षमता रखता था ? मैंने घड़ी देखी, आठ बज गया था। चौकीदार को एक प्याला चाय लाने का आदेश देकर मैं कमरे के भीतर से आराम कुर्सी उठा कर बाहर बरामदे में ले आया और उस पर लधर गया। चौकीदार गरम चाय लाया तो शरीर में नई चेतना उठी। वह बोला, 'सा'ब आप भीतर सो जायें। वह तीन बजे से पहले शायद ही आवेगी। आज सिपाहियों ने दो बकरे मारे हैं। वह खा पी कर ही आवेगी। आप खाना खा लें, उसने वादा किया है तो जरूर आवेगी। वैसे कई साहबों ने बुलवाया पर उसने सभी को दुतकार कर संदेश भेजा कि गाना सुनना है तो वहीं चले आवें। वह किसी की दासी नहीं है।'

मैं आँखें मूँद कर न जाने क्या सोच रहा था। चौकीदार ने बताया कि दस बज रहा है तो मैंने उससे कहा कि खाने का सामान मेज पर सजा कर रख दे और नींद आ रही हो तो सो जाय। पर उस बूढ़े ने बताया कि उसे नींद बहुत कम आती है और फिर रसोई के कमरे में चला गया। मैं बाहर कुरसी पर उसी भाँति लधरा रहा। भीतर चौकीदार हुक्का गुड़गुड़ा रहा था और मैंने एक-पूरी डिबिया सिगरेट की फूँक डाली थी। मुझे आलस्य आ रहा था, अतएव विवश होकर कमरे के भीतर पहुँच कर पलंग पर लेट गया। बड़ी देर तक मैं मालापती पर सोच, उसकी नई कल्पना कर अंत में सो गया।

किसी ने मुझे झकझोरा। मैंने आँखें मलीं तो पाया कि मालापती खड़ी थी। मैं उसे देख अकबका कर उठा। बाहर चौकीदार खाँस रहा था। उस रमणी के मुँह से रम की तेज महक आ रही थी। उसकी आँखें नशे में खिली हुई, गुलाबी थीं। वह खिलखिला कर हँसी, कहा फिर, 'वे लोग नहीं आने दे रहे थे। पर मैंने उनसे माफ़ी माँग कर कहा कि एक विद्यार्थी जी से वादा किया है। उसे धोखा नहीं दूँगी। एक घंटे की छुट्टी लेकर आयी हूँ। तुमने अभी तक खाना नहीं खाया है। ठीक किया। मैं भुनी हुई कलेजी लाई हूँ। तुम शराब पीते हो?'

नारी के उस रूप को देख कर मैं दंग रह गया। वह सुन्दर युवती नशे में चूर थी। मैं कुछ कहूँ कि उसने 'तामलेट' का काग खोल कर तामलेट मेरे मुह से लगा कर कहा कि दो-चार घूँट पी लो। मेरे अस्वीकार करने पर वह मुरझाई और कुछ देर तक न जाने क्या सोचा। फिर दुखी सी होकर बोली, 'पहले मैं नहीं पीती थी। लेकिन फिर ऐसी परिस्थितियाँ आयीं कि मैं विवश हो गयी। मैंने पीना सीख लिया। आज जितना ही पीती हूँ, मेरे हृदय की कली खिल उठती है, शरीर में एक नई थिरकन फैलती है और भावुकता का एक तूफान आता है। जिसमें कि मैं बह जाती हूँ। मैं अपने को भूल जाती हूँ, अतीत की याद नहीं आती। मैं कुछ नहीं सोचती हूँ। जब गाती हूँ तो लगता है कि इस घाटी की सारी धरती और यह नदी मेरी साँस में समा गयी है। मैं यहाँ के वातावरण को प्यार करती हूँ। मैं वह प्यार अपने अतिथियों को बाँट कर स्वयं प्यासी रह जाती हूँ।'

मालापती ने मेरे अनुरोध पर खाना खाया और उसका आग्रह मान कर मैंने थोड़ी पी। वह तो पानी की तरह पी रही थी, लेकिन उसने होश नहीं खोया। लालटेन के मंदे प्रकाश में उसका साँवला रंग चमक रहा था। वह बार-बार जमहाई लेती और मैं अनुभव करता कि उसका शरीर जीवन की भारी-भारी अंगड़ाइयाँ लेकर अब थक गया है। उसमें कोई असाधारण सौन्दर्य नहीं था। उसने कोई बनावटी शृंगार नहीं किया था।

मैंने उसमें कोई घमंड नहीं पाया। वह लुभावने वाली बातें तक न जानती थी। फिर भी उसका व्यक्तित्व अबूझा लगता था। वह चौकीदार से बोली, 'चाचा, तुम जानते ही हो मैं इस डांक बंगले में कभी नहीं आयी। आज भी न आती पर ....। तुम सो जाओ चाचा........
तुम सो जाओ। लो यह तामलेट, जितना पीना चाहो पी लो। आज मालापती अपने मन से रानी बन कर यहाँ आई है, वह दासी नहीं है।'

वह बूढ़ा अवाक् उसे देखता रहा और फिर साहस कर भीतर से गिलास ले आया। मालापती ने उसमें इतनी शराब उड़ेली कि कुछ फर्श पर बह गयी और उसकी तेज महक कमरे के भीतर फैल गयी।

चौकीदार चला गया तो उसने तामलेट मुँह से लगा कर एक भारी घूँट पी डाली। मुझे भी जबरदस्ती थोड़ी और पिला कर कहा, 'आज मैं जीवन से हार गयी हूँ। तुम हँसी तो नहीं उड़ाओगे। यह बूढ़ा चाचा मुझे बहुत प्यार करता है। बूढ़ा बार-बार मुझे समझाता है कि अभी नौजवान हूँ। बुढ़ापे के लिए कुछ रुपया जमा कर लेना चाहिये। पोस्ट-आफिस में रुपया जमा करने की सलाह दी। कहता है कि वह मेरे लिये यहाँ अच्छे ग्राहक देगा। डरता है कि बुढ़ापे में मैं क्या करूँगी।'

वह खिलखिला कर हँसी और गंभीर होकर बोली, 'मैं कभी बूढ़ी नहीं हूँगी, आप देख लीजियेगा।'

खाना खाकर मैंने हाथ धो लिए। तौलिये से हाथ पोंछ रहा था कि वह बोली, 'चलो बाहर बैठें।' उसने आराम कुर्सी उठाई और बाहर रख दी। जब मैं उस पर बैठा तो वह बिना किसी हिचक के कुरसी की बाँह पर बैठ गयी और अपनी गरदन मेरे वक्षस्थल से टिका कर बोली, 'नीचे वह पनचक्की है न। यहाँ न जाने कितने प्रेमी जोड़े मिलते हैं। मेरा प्रेमी मुझे पनचक्की के किनारे ही मिला था। आज जबकि तुम पुल पर खड़े थे तो न जाने क्यों मेरा मन व्याकुल हो उठा। फिर मैंने इस पनचक्की की ओर देखा और पाया कि मैं आज जीवन में बहुत आगे बढ़ गयी हूँ। उन मैंने जीवन में प्रवेश किया था। मेरी माँ बहुत अच्छा नाचती थी

जानते ही हो कि पहाड़ों में चैत्र के महीने गाँव के ओजी[1] उन गाँवों में जाते हैं, जहाँ उनके गाँव की लड़कियों की शादी हुयी होती है। एक बार वे सपरिवार वहाँ जाकर उससे भेंट करते हैं। लड़की अपने मायके के औजियों का सत्कार कर उनको कपड़े, अन्न आदि देकर विदा करती है। औजियों का एक परिवार इसी भाँति हमारे गाँव में आया था। उनके साथ एक युवक था। वह सुन्दर बाँसुरी बजाता था। वे एक सप्ताह हमारे गाँव में रहे। उसकी बाँसुरी की ध्वनि ने मेरा मन मोह लिया। मैं बावली-सी उसके पीछे डोलती थी। कभी वह गाय चराने वाले लड़कों के साथ चला जाता और ऊँची पहाड़ी की चोटी पर बैठ कर बाँसुरी बजाता या चाँदनी रात में किसी चट्टान पर बैठा नई तान सुनाता। जब वह जाने लगा तो मैंने चुपके उससे कहा कि रात को वह नदी के किनारे पनचक्की पर मेरी प्रतीक्षा करे। संध्या को मैं अपने भाई के साथ वहाँ अनाज पिसाने के लिये गयी। हम रात भर साथ रहे। उसने वादा किया कि वह जल्दी ही मेरे पिता के पास शादी का प्रस्ताव लेकर आवेगा, पर वह नहीं आया। मैंने पिता जी से कह कर उसकी ढूँढ करवाई तो उसका कोई पता नहीं चला। दो साल तक मैंने उसकी प्रतीक्षा की। मुझे वह अपना पता नहीं बता गया था।'

मालापती चुप हो गयी। मैंने पनचक्की की ओर दृष्टि फेरी। नदी के भीषण वेग में उसका स्वर दब गया था। मालापती खिलखिला कर हँस पड़ी और बोली, 'नदी के किनारे प्रेम के गीत चक्की के पहियों के घरड़-घरड़ के बीच छुपे हुये रहते हैं। जबकि प्रेमी अपने पास होता है तो नदी के किनारे काटी गयी रातें, आसानी से भुलाई नहीं जा सकती है। यह पनचक्की मुझे अपने प्रेम की 'प्रतीक' लगती है। वह युवक तुमसे भी सुन्दर था। पहले तो वह तुम्हारे समान ही मुझे देख कर बहुत भयभीत हुआ था। हम दोनों प्रेम का नया पाठ पढ़ रहे थे। उसकी उस प्रकार की उपेक्षा समझ में नहीं आई। जब मैं युवती हुई और अपने प्रेमी की याद में खिली तो गाँव के धनी घरानों के लड़कों को गंदे इशारे करते हुये पाया। मैं एकान्त

---

[1]—दरजी

मे रोती हुई उस युवक को कोसती थी, जो मेरे हृदय मे आग सुलगा कर चुपचाप भाग गया था। मुझे असहाय छोड गया........। मैं उसके पीछे पागल थी। वह न जाने कहाँ चला गया था ?'

कहीं दूर नदी का किनारा कट कर गिरा। भयंकर आवाज हुई। मैं भय से काँप उठा। मालापती ने मेरा सिर वक्षस्थल पर जोर से दबाया। मैं उसकी स्वांस में जीवन की भारी पीड़ा का अनुमान लगा रहा था। अब उसने अपने होठ मेरे होठों पर रखकर पूछा, 'सिगरेट होगी ? नदी ने किनारा काटा है। यह कितनी शक्तिशालिनी है। इन विशाल पहाड़ो की कोई चिन्ता उसे नही। वह उनको चीर कर रास्ता बनाती रहती है। वह असहाय नही है।'

वह सिगरेट फूंकती-फूंकती रही, पाया था मैंने कि उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें भीज गयी हैं। वह जोर-जोर से कश खीच कर धुआँ उलगती रही। फिर सिगरेट के टुकड़े को दूर फेंक कर कहा, 'सुनो, नारी जीवन मे केवल एक बार प्यार करती है और वह उसे जीवन भर नही भूलती। मैंने स्वयं अपने प्रेमी को भूल जाने की चेष्टा की, पर जानते हो छोटी जाति की लड़कियों का भाग्य क्या होता है ? गाँव मे कानूनगोय टिका था तो उसकी नजर मुझपर पड़ी। उस अधेड़ व्यक्ति ने अपनी सेवा करने के लिये मुझे रात भर अपने साथ रखा। वह शराब के नशे में चूर था। मेरे मना करने पर भी उसने जबरदस्ती मुझे शराब पिलाई थी। अगले दिन भर मैं नशे में चूर सी बेहोश रही। मैं शर्म के मारे एक महीने घर से बाहर नही निकली। उस अपमान से मेरे दिल पर बड़ी चोट लगी थी कि उसको क्या उत्तर दूँगी। इस पर मेरी माँ हँसी और ठट्टा किया कि मैं एक तहसीलदार की बेटी हूँ। माँ अपने मायके में तहसीलदार के साथ पूरे एक सप्ताह रही थी। उस बात को सुन कर मन टूट गया। मैं अपने पर विश्वास खो बैठी। लगा कि नीच कौम की लड़कियों का प्रेम बिकता है और बड़े घराने वाले उसका शोषण करते हैं। माँ ने मेरी शादी कस्बे मे कर दी। पति दरजी का काम करते थे। आमदनी अच्छी थी। पहली पत्नी से उनकी नही पटी।

वह उनको गाली देती, तो वे ताव में कहते कि मर्द का मया है, वे उस पर सौत लावेंगे। आठ सौ रुपया मेरे पिता को देकर उन्होंने अपना प्रण पूरा किया था। मेरी सौत के पाँच बच्चे थे। उस गृहस्थी को देखकर मुझे बड़ी हँसी आई। मेरी सौत ने गालियों से मेरा स्वागत कर कहा था कि मैं अपने पिता को क्यों नहीं बेठ गयी। वह भंडारे में मेरा गला काटने को धमकी देती थी। पति ने साहूकार से कर्जा लिया और वे इसीलिये बहुत चिंतित रहते थे। वे दिन-रात मेहनत करते, पर पेट भर खाना प्राप्त नहीं होता था। शहर का जीवन बहुत मँहगा था और इसीलिये उनकी परेशानी बढ़ जाती थी। पहले उनको मलेरिया हुआ, फिर डाक्टर ने 'निमोनिया' बताया। काफी परिचर्या करने के बाद मैं उनके प्राणों की रक्षा कर सकी। मैं एक साल तक कर्जा चुकाने के लिये महाजन के बेटे की रखेल रही और मैंने प्रति दिन उसके लिये घृणा बटोरी, कि वे कितने कमीने होते हैं। उस सेठ के बेटे की कई रखेल थी। जिनको कि वह आवश्यकता पड़ने पर अनाज तथा पैसा देता था। उसके लिये उनके जीवन का कोई मूल्य नहीं था। वह उनको भी बिक्री की वस्तु मानता था। जब पति काम पर लग गये तो मेरा मन वहाँ से ऊब गया और मैं मायके चली आयी।'

वह झटके से उठी और तामलेट मुँह पर लगा कर तीन चार घूँट पी गयी। कुछ देर तक कान लगा कर न जाने क्या सुनती रही। फिर चुपके मेरे कान पर मुँह रख कर बोली, 'मेरी कई बहनों ने जीवन से ऊब कर इस नदी में डूब कर प्राण गँवाये हैं। मैं रोज ही इस नदी की भीषण गर्जन के बीच उनके रुदन की सिसकियाँ सुन लेती हूँ। तुम नौजवान लड़के नारी के हृदय की पीड़ा कहाँ समझ पाते हो? वह असाधारण वेदना होती है। तुम प्यार करना नहीं जानते। मर्द को घमंड है कि वह बलवान है और नारी निर्बल। इस नदी के विशाल हृदय में हजारों नारियों का दुःख छुपा है। रात को नदी में इसीलिये बेचैनी मिलती है। रात को वह गुस्से में भरी हुई अपनी अभागिनी बहनों की कथा मनुष्य जाति को सुनाती है। भूख-प्यास, सास-ससुर का अत्याचार, पति की बेवफाई, महाजन तथा अफसरों के

अत्याचार के कई भयानक कथानक यह [illegible] अपने हृदय में छुपाये हुये है।

उठ कर वह मेरे आगे खड़ी हुई। [illegible] के [illegible] कर मेरा हाथ उठा अपने वक्षस्थल पर टिका कर [illegible] का स्वर मेरे प्रेमी का है।'

वह बड़ी देर तक मेरे हाथ को उसी भाँति दबाये रही। मानो कि वहाँ बड़ी पीडा हो रही हो। उसकी आँखों से आँसू की धारा बह निकली। वह शक्तिशाली रमणी इतनी वेदना मन मे छुपाये हुए होगी, इसका ज्ञान मुझे पहले-पहल हुआ। उसकी छाती गरम थी। गहरी साँस के साथ उसकी छाती ऊपर उठ कर फिर दब जाती थी। वह बड़ी देर तक उस स्थिति मे खड़ी रही। अब गहरी साँस लेकर बोली, 'अपने प्रेमी को याद भुलाने के लिये मैंने गाना और नाचना सीखा। फिर सारी दुनियाँ को भूल गयी। सात साल बाद वह आया और उसने बताया कि मुझसे मिलने के बाद वह गरीबी से तंग आकर मैदान नौकरी पर चला गया था। और आजकल फौज में नौकरी कर रहा है। लड़ाई पर जाने से पहले वह मुझसे मिलने के लिये आया था। यह सुन कर कि मेरी शादी हो गयी है, रूठ कर चला गया था। मैंने उसे बहुत समझाया पर वह माना नहीं। उसके चले जाने पर दिल टूट गया, मन में बड़ी बेचैनी उठी और अकेली ही उनकी ढूंढ मे निकली.... ...। पहली रात एक चट्टी पर काटी। वह दूकानदार हमारे पड़ोस के गाँव का था। उसने मेरा स्वागत कर मुझसे अनुरोध किया कि मुझे वहीं रह जाना चाहिये। मैं वहाँ रुकी नहीं, आगे भी लोगों ने मुझे रोकने की चेष्टा की। शहर के दरोगा ने तो गुस्से में मुझे बदचलन कह कर एक सप्ताह हवालात में बन्द रखा और प्रति दिवस रात्रि को अपने दोस्तों के यहाँ सौगात के रूप में भेजा। दिन में आस-पास के लड़के सीकचों के भीतर मुझे बन्द पाकर भगोड़ी औरत कह कर मजाक उड़ाते। हर एक चट्टी पर पुरुष ने मुझे धोखा दिया, सबकी सहानुभूति के भीतर मुझे कमीनापन मिला। इस चट्टी पर चक्की पाकर मैं रुक गयी और फिर यह ढोल बजाने वाला बूढ़ा भी पुत्र के मर जाने पर ऊब कर यहाँ आया हुआ था। मैं

उसकी बेटी बन गयी। मेरा प्रेमी यहीं से लौट कर घर जावेगा, इसी आशा पर मैं कई साल से यहाँ हूँ।'

यह कह कर वह रमणी फिर चुपचाप कुरसी की बाँह पर बैठ गयी। अब उसने मेरी ठोडी उठाई और मुझे ताकती रही। आकाश में बादल घिर रहे थे। नदी की गर्जन बढ रही थी, वह बोली, 'बाढ आ गयी है........ वह देखो........।'

वह उस अंधकार में न जाने क्या देखने का प्रयास कर रही थी। मैंने उठ कर नीचे की ओर दृष्टि फेरी। स्वाँ-स्वाँ करती हुई एक भारी आवाज दूर से आ रही थी। वह तो अब नीचे की ओर दूर बढ गयी। कहीं दूर शृगाल हूआ-हूआ-हूआ चिल्ला रहे थे। पहाड़ की चोटी पर घू-घू-घू करता हुआ उल्लू बोलने लगा। न जाने क्यों भय से मेरा समस्त शरीर सिहर उठा। मुझे लगा कि नदी के किनारे सैकड़ों नारियाँ सिसक रही हैं। वे गरीबी, पारिवारिक झंझटों तथा पुरुष के अत्याचार के कारण आत्महत्या करने के लिये विवश हुईं। यह मालापती जीवन की कठिनाइयों से भयभीत न होकर उससे संघर्ष करती है। वह प्रेम से प्रेरणा पाकर आगे बढती है। आज तक प्रेमी की प्रतीक्षा कर रही है जिसके साथ कि वह भविष्य में सबल परिवार का निर्माण करने की आकांक्षा रखती है। फिर भी वह नारी के समान ही कोमल भावनाओं में बहती है। उसने जीवन में एक विशाल सहानुभूतिपूर्ण हृदय पाया है।

मालापती ने सिगरेट सुलगा कर कहा, 'तुम भयभीत हो गये हो। मैंने आधी-आधी रात रास्ता तय किया कि पुरुष की छाया से बची रहूँ। तब मुझे जंगली जानवरों से अधिक भय मनुष्य से लगता था। उसका व्यवहार बहुत विचित्र होता है। वह मुझे पशु के समान अँधेरी कोठरी में बन्द रखता था कि कोई मुझे देख न ले। वह रात को प्रेम का राग अलापता हुआ मेरा बलिदान करता। वह भी सुझाता था कि मैं बहुत ठंडी हूँ। मैं विद्रोह न करती थी........' वह खिलखिलाई।

कुछ देर सन्नाटा रहा। कोई जानवर ऊपर पहाड़ी की ओर चढ़ रहा

था। उस आहट को पाकर मैं चौंका, पर वह तो गुमसुम बैठी ही रही। अब हताश होकर बोली, 'मुझे जीवन में अब कोई भय नहीं सताता है। फिर भी सुनो मैं बूढ़ी तो नहीं लगती हूँ। तुम युवक हो। यही पूँछने के लिये मैं आज तुम्हारे पास आई। तुम मेरी शोहरत सुन कर भी जब उधर नहीं आये, तो मुझे लगा कि मेरा आकर्षण नष्ट हो गया है। तब से मैं बेचैन हूँ। मेरी अवस्था तेईस साल की है। मेरी सहेलियों के अब तक कई कच्चे-बच्चे हैं। मैं चाहती हूँ कि वह मुझे देख कर घबरा न जाय। पुरुष का कौन सा भरोसा है। तुम मुझे भलीभाँति देखो। तुमको देख कर मुझे आज बड़ा भरोसा हुआ है कि तुम सच कहोगे। लड़ाई कब बन्द होगी? क्या लड़ाई में बहुत सिपाही मारे गये हैं। वह कहाँ होगा? ओफ़, मैं तो उसका नाम तक नहीं जानती हूँ। वह गुस्से में चला गया, मैं उससे बहुत सी बातें पूछना चाहती थी। ये सिपाही तो उसकी बात सुनकर हँस देते हैं। मैं फिर भी इन सबके चेहरों पर उसे पाती हूँ और मुग्धा-सी सबको अपना प्रेम बाँटती हूँ। अपने दिल की पीड़ा मैंने आज तक किसी को नहीं बतलायी है।'

वह फफक-फफक कर रो उठी। मैं उसे क्या समझता? मैं चुपचाप सोच रहा था कि यह नारी क्यों निर्बल होती है? मैंने उसे उठा कर समझाया था कि लड़ाई जल्दी ही समाप्त होगी और वह जल्दी ही लौट कर आ जावेगा। वह व्यर्थ घबराती है। फिर भी उसे पूर्ण विश्वास न हुआ था।

वह तो चौंक कर उठ बैठी और न जाने क्या सोच कर बोली 'सुबह होने वाली है।'

सच ही सुफ़ेद कुहरा हमारे चारों ओर फैल रहा था। तेज हवा चलने लगी थी। हवा में फूलों की सुन्दर महक थी। उसने तामलेट में से शराब की अंतिम घूँट पी और मेरे आगे खड़ी हुई। उसने अपनी विशाल बाहों में मुझे समेट कर चूमते हुये कहा था 'तुमको देख कर उस प्रेमी की याद आई। मालापती को भूल न जाना।'

वह छूट कर उस अंधकार में चली गयी। कुछ चैतन्य हुआ तो मैंने जोर से पुकारा 'मालापती. ....!'

मेरी आवाज गूंज कर फिर खो गयी। चौकीदार खांस रहा था। मैंने उसे पुकारा। वह पास आया और बोला 'सा'ब भीग क्यों रहे हैं ?'

मेह की बूंदें पड़ रही थी। मैं भीतर चला आया। कपड़े बदल कर दो प्याले चाय के पिये, तब स्वस्थ हुआ। चौकीदार बता रहा था, 'मालापती बहुत निडर है। वह आधी-आधी रात नदी के किनारे अकेली घूमती रहती है।'

तभी घाटी के हृदय को चीरती हुई गीत की एक लड़ी गूंज उठी :

'पूजारचूं की बाँकी सुरेशी मैं कू बोलद सेज्जा।'

उस स्वर में बड़ी वेदना छुपी थी। मेरा हृदय पीड़ा से भर आया। मैं चुपचाप बड़ी देर तक मालापती पर सोचता हुआ सो गया था।

—आज मैं उसी नदी के पुल पर खड़ा हूं। रिमझिम-रिमझिम पानी बरसा तो पाया कि मेरा चपरासी छाता और टार्च लिये हुये खड़ा है। मैं टार्च की रोशनी में डाक बँगले पहुँचा। बूढ़ा चौकीदार न जाने कब मर गया था। नये चौकीदार ने बताया कि मालापती वहाँ कुछ वर्ष और रही थी। उसने बहुत पीना शुरू कर दिया था। लड़ाई समाप्त हो जाने के बाद प्रति दिवस सैकड़ों सिपाही घर लौट कर आ रहे थे। वह चुपचाप सबको देखा करती थी। अंत में निराश होकर एक दिन वह एक सिपाही के साथ उसके गाँव चली गयी।

आज मालापती वहाँ नही थी, फिर भी न जाने क्यों नदी की गर्जन में मुझे उन नारियों की वेदना का स्वर सुनाई पड़ रहा था जो कि आज भी उस नदी में डूब कर प्राण देती है। मालापती, वह सिपाहियों की प्रेमिका, उसकी याद दूर-दूर पहाड़ी गाँवों में सिपाही बटोर कर ले गये थे। वह नारी के शोषण की प्रतीक थी और उसका नाम आज तक कोई शायद ही भूल सका हो।

जोगा

हमारे कस्बे में ग्रामोफोन का आगमन पहले-पहल फौज के पेनशन याफ्ता एक सुबेदार साहब की कृपा से हुआ। शादी, मुडन, होली, दीवाली आदि सभी उत्सवों पर हम उस मसीन का दिल खोल कर उपयोग किया करते थे। उसके साथ के रिकार्ड चिकने पड़ गये थे और तीखी चिरचिराहट के साथ बजा करते, पर सुनने के शौकीन घिसी हुई सुइयों को बार-बार उस पर लगाया करते और ऐसा मुंह बनाते कि मानो वे नयी हों। सुबेदार साहब का कहना था कि वह बहुत नाजुक मशीन है और शुरू-शुरू में वे स्वयं ही उसे बजाया करते, फिर उनके भतीजे को यह अधिकार मिल गया और अब तो ग्रामोफोन के साथ उनके भतीजे साहब को इज्जत बढ़ गयी। सुबेदार साहब उस भार से मुक्त हो गये। अब उसे व्यवहार में लाने के लिये उनकी इजाजत की आवश्यकता नहीं रह गयी थी। इससे उनके भतीजे साहब के नखरे बहुत बढ़ गये और उनको मनाने के कई नुस्खे वहाँ के लोगों ने निकाल लिये थे। जिस किसी परिवार को मशीन की जरूरत होती वह उनको खासी दावत दिया करता और कई परिवारों की महिलायें उनको मफ़लर, मोजे आदि बुन कर देतीं कि समय पर बाजा मिलने में कोई बाधा न पड़े।

ग्रामोफोन के आगमन के बाद पुश्तैनी से बाजा बजाने वाले हरिजनों के परिवार में हलचल मच गयी और लगा कि अब उनका कारोबार बन्द हो जायगा। उनको अपनी हालत नाइयों के समान मालूम पड़ी, जो कि

'ब्लेडो' के आगमन के बाद, परिवारों में सेफ्टीरेजर के साथ अपनी रोजी में मट्ठी पा रहे थे। इसीलिये हरिजनों का एक शिष्ट मंडल सुबेदार साहब के घर पर गया और उनसे आश्वासन पाकर कि अभी तो सारे कस्बे में एक ही ग्रामोफोन है, उनकी चिन्ता कुछ कम हो गयी। फिर भी वे लड़कों से जानकारी प्राप्त करते रहते थे और यह सुन कर कि ग्रामोफोन में वह सामूहिक आनन्द नहीं है जो कि शहनाई, ढोल, डमों, तुरही आदि बाजों में है, बड़ी खुशी हुई थी। सभी लोग उस मशीन के बड़े फूल को देखते, तो फिर घूमते हुये रिकार्डों पर; जिन पर कि बना हुआ 'कुत्ता' तेजी से चक्कर काटता था। *सुबेदार साहब ने बताया था कि 'कुत्ता' मजबूती का* निशान है और कम्पनी का 'ट्रेडमार्क' है।

वह ग्रामोफोन विलायत की किसी कम्पनी का बनाया हुआ था और सुबेदार साहब को कोई फौजी कप्तान जर्मनी की सन् चौदह की लड़ाई में जाने पर अपनी यादगार में दे गया था। उस अंग्रेज को वह अपनी ननिहाल से मिला था। सुबेदार साहब 'मेस्कोट' में काम करते थे और वह अंग्रेज वहाँ देखभाल करता था। सुबेदार साहब ने उसे फोकट की काफी शराब पिलाई थी, इसीलिये वह दयालु अफसर उस उपहार को उनकी सेवाओं के लिये दे गया। वह अफसर कहाँ चला गया, उनको मालूम नहीं। फिर *लड़ाई को बीते हुये भी कई साल गुजर गये थे और सन् १६२७ ई० में* तो सुबेदार साहब भी पेनशन पर आ गये थे। वह मशीन बहुत भारी थी। एक लड़का केवल उसका 'फूल' ही उठा पाता। जब उसे सजा कर किसी महफिल के बीच रखा जाता तो वह बहुत रोबीली लगती। बुढ़ियाओं का कहना था कि वह 'कल्की अवतार' है। सब हैरत में थे कि वह बोलती कैसे है। लेकिन जर्मन की लड़ाई से लौट कर आये हुये सिपाहियों ने बताया था कि अंग्रेज तो कुछ नहीं जानता और जर्मन वालों की बुद्धि की सराहना की थी। इससे लोग अनुमान लगाते थे कि वह बाजा जरूर ही जर्मन वालों ने बनाया होगा। कुछ हो, वह बाजा हमारा मनोविनोद किया और मुन्नी बाई तथा गौहर जान के गलों की कलाबाजियाँ सुन कर

सभी मुग्ध हुआ करते थे। कई संगीतज्ञों ने बीच में ताल देना भी शुरू कर दिया था और वे बीच में यह बताने में न चूकते कि बाई जी बेसुरी हो गयी थीं, तबले वाले ने संभाल लिया, नहीं तो सब रंग फीका पड़ जाता।

कुछ नौजवानों ने रिकार्डों मे गायी गयी गजलों के आधार पर नयी तर्ज की गजलें गानी शुरू कर दी थी, रामलीला मे उस साल गायकों पर उन तर्जों का असर पड़े बिना नहीं रह सका। कई संगीतविशारद हार-मोनियम पर उनको नकल उतारा करते। उस बाजे ने शहर मे एक नया संगीत युग आरंभ कर दिया था। पुराने बाजा बजाने वाले परिवारों के लोग उससे कुछ न कुछ सीख लेना चाहते और शहनाई वाले ने तो कई धुन इस तरह से उतार ली कि सब दंग थे। उस कस्बे के सामन्ती युग के पुराने पन में मशीन का यह नया युग प्रलय-सा ले आया और लोग सोचते कि भविष्य में कौन जाने कब चूल्हा-चौका भी मशीन का बन जायगा और खाना बनाना और कई घरेलू कठिनाइयाँ हल हो जावेंगी।

होली के दिन थे और रात को कई संगीत के नये कार्यक्रमो के बाद जब ग्रामोफोन चालू किया गया तो मुन्नी बाई कुछ देर तक नाज-नखरे के साथ गाती रही और फिर 'चट' की सी आवाज हुई और लगा कि मानो किसी ने बाई जी का गला दबोच दिया हो। भारी आवाज के साथ रिकार्ड का चलना धीमा पड़ गया। फिर वह अपने ही आप बन्द हो गया। सभी ने अपनी बुद्धि दौडाई पर नतीजा कुछ नहीं निकला। कानूनगो परिवार की महिला ने अपने पुत्र की ओर भारी उम्मेद के साथ देखा। लड़के के पिता ने बताया था कि वह सातवीं में साइंस लिये है और आगे चल कर बड़ा इंजीनियर बनेगा। पर वह भी राय देने मे असफल रहा। बड़ी मायूसी के साथ कार्यकर्ताओं ने एलान किया कि कार्यक्रम समाप्त किया जाता है। लेकिन सभी परेशान थे कि सूबेदार साहब को क्या जवाब दिया जायगा। वह बाजा लगभग एक साल से वहाँ के लोगो का मनोविनोद किया करता था। अब लगा कि हमारा वह अभिन्न मित्र सदा के लिये हमसे बिछुड़ गया है। लेकिन एक ढाढ़स था कि सूबेदार परिवार की छोटी बहू

समारोह में थी, वह अवश्य ही अपनी साग को बतायेंगी कि किसी ने जान बूझ कर शरारत नहीं की। उसने अपनी सहेलियों से यह बात कही थी कि किसी का कसूर नहीं है। समारोह समाप्त होने पर संयोजक मंडली बड़ी देर तक उस स्थिति पर विचार करती रही और काफी विचार-विनिमय के बाद तय हुआ कि वह मशीन जोगा लोहार को दिखलाई जावे।

कस्बे के नुक्कड़ पर मुख्य बाजार के पिछवाड़े जो हरिजनों की बस्ती थी वहीं वह अपनी दूकान पर काम करता था। वह बुड्ढा प्रतिदिन आँखों पर छोटे चश्मे लगाये हुये कई पुर्जों को बारीकी से आँका करता था। उस मोहल्ले में और कारीगर भी रहते हैं जो कि न जाने कितनी पीढ़ियों से अपनी कारीगिरी की वस्तुओं के निर्माण से कस्बे की आवश्यकतायें पूरी किया करते। जोगा के शरीर में उसके पड़दादा, दादा, पिता से पाया हुआ खून बहता था, जिसमें कि एक कुशल लोहार के सभी गुण थे। वह रावटी के पायों के साधारण खुरों से लेकर खेती की आवश्यकता के सभी सामान बनाया करता था। लोगों का कहना था कि उसका बनाया हुआ हँसिया इतना तेज होता है कि उससे भैंसे की गरदन एक बार में ही उड़ जाती है। इसीलिये पांडव नृत्य, अठवाण या अन्य समारोहों पर जहाँ कि पशुबलि हुआ करती थी, उसकी बनायी और तेज की गयी धमाली ही व्यवहार में लाई जाती थी। जिस गाँव में उत्सव हुआ करता वहीं का मुखिया आकर अपने हथियार ठीक करवा करके ले जाता था। समारोह के बाद उस कारीगर के सम्मानार्थ एक सीधा[1], पाँच आने और किसी जानवर का सिर उसके पास भेज दिया जाता। समीप के गावों के समारोहों में वह खुद भी शामिल हुआ करता था।

और उस रात्रि को जब कि सभी ग्रामोफोन की समस्या से उलझे हुये थे, न जाने किसने उस कारीगर का नाम लिया। सबको भरोसा हो गया कि वह अवश्य ही इस मुसीबत को हल कर देगा। फिर सब मिल कर उसके ज्ञान-भंडार की बातें करने लग गये थे। किसी ने उसका दावा बताया कि वह हर तरह की मशीन बना लेता है। एक बार उसने एक

---
१ खाने का पूरा कच्चा सामान

अलार्म की घड़ी ठीक की थी। दूसरे का कहना था कि वह बन्दूक तथा अन्य हथियार बनाना भी जानता है। एक वृद्ध महोदय ने उसके परिवार का इतिहास शुरू करते हुये बताया कि आज राजदरबार वहाँ से चला गया है, पर एक जमाना था जब कि उसके पुरखे रंगीन अंगरखा पहनते थे और सदा ही राजदरबार के शिकार में शरीक होते थे। वह परिवार युद्ध के अस्त्र-शस्त्र बनाने में निपुण था। गोरखो ने जब यह देश जीता तो उसके दादा को अपने यहाँ नौकर रखना चाहा। वे चाहते थे कि वह उनके लिये कुँकरिया बनाया करे। लेकिन उसने अपनी असमर्थता प्रकट की। उनका सेनापति उसके घर पर गया और उसने निवेदन किया था कि वह भ्रम में है। वे गढ़वाल को जीतने के लिये नही आये है। भारत में फिरगी अपना राज जमा रहा है। वह हमारे धर्म को मिटा रहा है। वे उसे निकालना चाहते है और उस बूढ़े ने उस चतुर राजनीतिज्ञ को अपना सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दे दिया था। नेपाली राजदरबार ने इसके लिये उसे सम्मानित किया था।

कुछ लोगों की धारणा थी कि उस कारीगर ने सेनापति की बात को स्वीकार नही किया इस पर उसे प्राणदड की सजा दी गयी और सेनापति ने राजदरबार में कुकरी से उसकी गरदन अलग कर दी थी। उसकी लाश को गंगा के किनारे फेंक दिया गया कि चीलें और शृगाल उसका भोग करें। यह भी एलान किया गया कि यदि कोई उसकी लाश को उठाने को चेष्टा करेगा तो उसे प्राणदंड दिया जायगा। प्रति दिवस रात्रि को वहाँ एक सिपाही पहरा दिया करता, उस सिपाही ने तो राजदरबार में एक दिन बड़ी सुबह को सूचना दी कि रात को गंगा में एकाएक बाढ़ आई और पानी इतनी तेजी के साथ बढा कि वह लाश के पास पहुँचा और न जाने कहाँ से एक सुन्दर नारी वहाँ से उठी और उस लाश को लेकर गंगा मे समा गयी। यह घटना अपना प्रभाव सब पर डाल गयी थी। उस समय यह बात फैल गयी कि गोरखे फिरंगी से हार रहे है और सच ही कुछ दिनों के बाद वे लोग उस कस्बे को वीरान कर गये थे।

उस अतीत की कहानी सुनाते हुये वृद्ध महोदय का स्वर गद्गद् हो उठा और आँखों में आँसू छलछला आये थे। लेकिन नौजवानों के दिमाग में तो सूबेदार साहब और उनका टूटा हुआ ग्रामोफोन ही उथल-पुथल मचाता रहा। जोगा की स्मृति और उसकी कारीगरी की बात से सबके मन में यह बात समा गयी थी कि वह उसे बनाने में अवश्य सफल हो जायगा। अब तक लगभग सभी लोग चले गये थे और आयोजकों में जो बचे, वे भी ऊँघते-ऊँघते सो गये।

अगले दिन हम लोग जोगा की दूकान पर पहुँचे थे। वह एक छोटा एक मंजला कमरा था। उसका लड़का आग पर लोहे के टुकड़े को गरम कर बार-बार हथौड़े की चोटें उस पर कर रहा था। उस लाल लोहे से चिनगारियाँ उड़ रही थीं। वह तो उस लोहे के टुकड़े को पानी में डालता और वह नाग के से स्वर में फुफकार उठता था। वह बूढ़ा अब उस लोहे को देख कर सावधानी से परख कर बोला कि वह जर्मनी का नहीं है, विलायती है। जर्मन वालों की तरह पक्का लोहा गलाना कोई नहीं जानता। फिर सावधानी से उसकी जाँच करके बोला—इसका पुरजा कमजोर रहेगा वह अधिक लचकदार होगा और ज्यादा दिन नहीं चलेगा। हमको देख कर बोला कि यह लोहा क्या मजबूत है? इससे तो अच्छा लोहा हमारी पहाड़ी खानों में पैदा हुआ करता था। हमारे पुरखे उसी से अपनी जरूरतों की चीजें बनाया करते थे। फिरंगी ने आकर उन खानों को बन्द कर दिया और न जाने कहाँ से यह कच्चा लोहा भेज दिया, जो हमारे यहाँ की आबोहवा के लिये बेकार है। वह बहुत मंहगा पड़ता है। हमारे लोहे के हथियार आज भी पुराने खानदानों के यहाँ पड़े होंगे, उनको देखने से पता चलेगा कि हमारा लोहा क्या था? एक बार दिल्ली के मुगल दरबार को यहाँ से कुछ हथियार बना कर भेजे गये थे तो वहाँ के राजा ने सोचा कि यह देश बहुत अमीर है और इस पर चढाई करने की ठहरायी। लेकिन हमारा दीवान वहाँ गया और उसने राजा को बताया कि उनका देश बहुत गरीब है। इस पर मुगल बादशाह हँसा और बोला कि वहाँ तो सोने-

चाँदी के पहाड़ होते हैं। इस पर दीवान ने अपनी जेब से करेला निकाल कर बताया था कि इस तरह की ऊँचाई निचाई है,| खेत नहीं, बाग नहीं। बस वह बादशाह खुश हुआ और उसी समय हुक्म दिया कि कोई टैक्स न लगाया जाय।

वह तो हमारी ओर देख कर बोला—राजा-महाराजाओं की आँखें नहीं होती हैं, कान से सुन कर ही वे राज-काज चलाया करते हैं। फिर कुछ सावधान सा होकर चुपके बोला कि फिरंगी की बात समझ मे नहीं आ रही है कि क्यों वह जो चीजें हमारे देश में होती है उनको बाहर से लाकर बेच रहा है, क्या उनका देश बहुत गरीब है। फिर बूढ़ों की सनातनी आदत के अनुसार बातें करता रहा कि हमारे यहाँ घरों मे कपडा बनता था, तेल यही निकाला जाता था। हमारे यहाँ खानों से ताँबा निकाला जाता था और उससे बरतन बनाये जाते थे; पर अब वह सारा कारोबार ही नष्ट हो गया है। सब चीजें बाहर से आ रही हैं। उसे इस बात का दुख था कि देश का कारोबार नष्ट हो जाने के कारण आज यहाँ के नौजवानों को नौकरी करने में लिये मैदान जाना पड़ रहा है।

हमें यह बताया जा चुका था कि जोगा हमारे इतिहास का एक बडा भंडार है और जब कभी कोई उसकी दूकान पर जाता है, तो वह पुरानी बातें बता कर बड़ा वक्त ले लेता है। हमें उसकी बातों को सुनने का उत्साह उस समय नहीं था और शायद वह इस बात को समझ गया। फिर बिना किसी भावुकता के वह मशीन ले ली और हँस कर बोला कि मशीन तो जर्मनी की है, पर उसका स्प्रिंग एकदम विलायती कच्चे लोहे का। इन विलायत वालों को तो बस दूकानदारी करनी आती है कि रुपया कमाया जाय। कच्चा स्प्रिंग लगा दिया जो कि जंक खा जाता है और फिर यदि कम्पनी से नया मँगाइये तो बस बीस रुपया। मानो कि वहाँ से हाथी-घोडा मंगवाया गया है। हम लोगों को संबोधित करके बोला—फिरंगी हमें लूट रहा है। उसे खुद तो माल बनाना आता नहीं, जर्मनी का माल अपने नाम से बेचता है।

तैयारी करने लगे। रात को कई स्वांग किये जाने वाले थे और हमने उस समारोह में आने के लिये जोगा को निमंत्रित किया था। उसे निमंत्रण देने वाले मसले पर आपस में बड़ी देर तक बहस होती रही। बूढ़े-बूढ़ियों ने उस समारोह का बायकाट करने का नारा दिया। लेकिन हमारे आगे उनकी एक न चली। अब जबकि वह ग्रामोफोन बजाया गया तो उससे आवाज और सुरीली निकल रही थी। जोगा आँखें मूंदे हुये उसे सुनता रहा और फिर बोला कि आवाज और साफ आनी चाहिये। उसे यह वहम सा हुआ कि शायद वह स्प्रिंग ठीक तरह नहीं काम पा रहा है और इसी-लिये उसने आश्वासन दिया कि अगले दिन उसे खोल कर ठीक कर देगा। लेकिन जब उसे बताया गया कि सुई को केवल दो बार व्यवहार में लाना चाहिये, जबकि एक सुई पचास-साठ बार चलाई जा रही है तो वह मुस्कराया और कहा कि फिरंगी सब चीजों में लूट मचा रहा है। उसने कुछ सुइयाँ लीं और उनकी नोक अपनी उंगलियों पर चुभाने की चेष्टा की तथा उनको परखा। अब कुछ देर तक न जाने वह क्या सोचता ही रह गया।

फिर वह सूबेदार साहब से बातें करने लगा। वे अंग्रेजों के भक्त थे और उसे बता रहे थे कि अंग्रेज बहादुर कौम है, लेकिन उसका कहना था कि जर्मन वाले ज्यादा बहादुर हैं। वे अच्छे कारीगर हैं। वह उनके इस्पात पर मुग्ध था और उसकी अपनी धारणा थी कि लोहे का सामान जर्मन वालों से अच्छा कोई नहीं बना सकता है। यह भी उसने कहा कि यदि जर्मनी वाले चाहें तो ऐसी सुइयाँ बना सकते है, जो कि एक हजार से अधिक रिकार्ड बजा सकें। जर्मनी से लौट कर आये हुये सिपाहियों से उसने वहाँ के सैनिकों की बहुत सी बातें सुनी थीं और चकित रह गया था। वह जर्मन वालों को 'लोहे का कारीगर' कहता था। मजाक मे कहता कि विलायत वाले बस टीन का सामान बना कर बेच सकते हैं। बनियों की बुद्धि पाई है।

मैं होली के बाद भी आगे लगातार उससे मिलता रहा और वह मुझे

कई बातें बताता था उसका कहना था कि पहाड़ी लोहे की खानों के पास ही उसे गलाने वाले मसाला मिली मिट्टी होती है। पहले वहाँ के आसपास के गाँवों मे लोहा गलाने के कारीगर परिवार रहते थे। फिरंगी ने जो पहला काम किया, वह हमारी लोहे और ताँबे की खानें बन्द करने का था। उसने फरमान निकाला कि जो उन खानों में खुदाई करेगा उसे जेल की हवा खानी पड़ेगी। लेकिन फिर भी वहाँ के लोग चोरी से खुदाई करते हैं और अपनी जरूरतों की चीजें बनाया करते हैं। उसने मुझे कई पुरानी ताँबे और लोहे की बनी चीजें दिखलाई थी। उस लोहे को देख कर मैं मुग्ध सा रह गया और वह ताँबे की गागरें तथा तमालियाँ जिन पर कि मुगल कारीगरी के बेल बूटे बने थे; ऐसा लगता कि पिछले सामन्ती युग में वहाँ कला का एक नया रूप निखर रहा था। यदि फिरंगी न आया होता और देश में लड़ाइयाँ न होती तो देश कला-कौशल में दुनिया की अगुआई करता। वह तो हँसी-हँसी में कहता रहा कि गोबर मिट्टी मिले ढाँचे पर कई चीजें ढाली जा सकती हैं।

उसका कहना था कि राजदरबारों में कलाकारों की इज्जत होती थी और उनको प्रोत्साहन मिलता था। यही कारण था कि उस समय कारीगर का ध्यान वस्तुओं के निर्माण की ओर अधिक था। फिर उसने बताया कि एक बार उसने एक बन्दूक बनाने की चेष्टा की और इसमें उसको सफलता मिल गई थी; पर उसे बताया गया कि यह काम गैर कानूनी है। इसीलिये वह चुप हो गया और कभी उस पर नहीं सोचा। उसने कहा था कि किसी मशीन को छूते ही यदि कारीगर चैतन्य हैं तो वह उसका ढाँचा समझ जायगा और फिर उसके दिमाग पर उसकी छाप पड़ेगी। उस पर कुछ विचार करने के बाद वह ढाँचा पकड़ में आ जावेगा। इसके बाद उसके लिये वस्तु का निर्माण करना आसान हो जाता है। इस बात की सच्चाई को साबित करने के लिये उसने हमें ग्रामोफोन की एक सुई बना कर दी थी। सच ही वह सुई मजबूत थी और उससे हमने सैंकड़ों रिकार्ड बजाये थे। उसके लड़के ने बताया कि लगभग बीस रोज की मेहनत के बाद वह

कारीगर सुई बनाने में सफल हुआ था। इससे मैं मशीन युग में मानव के श्रम की अपनी मान्यताओं पर विचार करता ही रह गया था। वह उस मशीन युग की हँसी उड़ा कर कहता कि वह सफल प्रगति नहीं है। उम्र के साथ उसने जो पुराणपंथी विचार मन में जमा लिये थे वह उनको बिसार देना नही चाहता था। अपने अंधविश्वास पर वह किसी की दलील सुनने के लिये कदापि तैयार नहीं था। हम उस बूढ़े कारीगर की बातों पर कभी बहस नही करते थे। वह जो कुछ कहता उसकी गहराई पर विचार कर चुप रह जाते थे।

जोगा से मेरी अंतिम मुलाकात सन् १९२९ ईस्वी में हुई। मेरा एक साथी मैदान से आकर हमारे परिवार में टिका हुआ था। उसने चुपके एक दिन मुझसे पूछा कि क्या यहाँ कोई पुराना लोहार परिवार तो नहीं है। उसकी बात को सुनते ही मुझे जोगा की याद आई और मैं उसे लेकर उसकी दूकान पर पहुँचा। उस समय उसकी सेहत भली नहीं थी और वह चारपाई पर लेटा हुआ था। मैंने जोगा को अपने मित्र का परिचय दिया तो वह बहुत खुश हुआ। उसके बाद मेरा दोस्त लगातार जोगा के यहाँ जाया करते थे। मुझे उन्होंने बताया कि वे भारत के पुराने कला-कौशल पर एक किताब लिख रहे हैं और उसमें ऐसे कारीगरों का एक बडा हाथ रहेगा। इनमें से हर एक अपने पेशे के इतिहास की जीवित डायरी है। दोस्त कुछ दिन वहाँ रह कर चले गये; जाते समय वे मुझसे कह गये थे कि जोगा की पूरी हिफ़ाजत की जानी चाहिये। आश्वासन दिया था कि वे कुछ रुपया भेजेंगे। यह भी बताया कि हमारे देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे कारीगरों को आज पेट भर खाना तक नही मिल पाता है।

—उस कस्बे को छोड़े हुये लगभग बीस साल हो चुके हैं। सामन्तवादी परिवारों का ढाँचा टूट जाने के कारण हमारा परिवार उस कस्बे से निकल आया। पिता जी ने पेंशन के बाद दूसरे शहर में मकान बना कर वहीं रहने का निश्चय कर लिया। हम लोग उन पुरानी बातों को भूल गये।

फिर इधर जमाना भी तेजी से बदल गया है।

कल मेरा पुराना मित्र एकाएक आ पहुँचा। वह आजकल एक बड़े सरकारी ओहदे पर है। हम लगभग बीस साल के बाद मिले और उसने पहला सवाल किया था कि जोगा के परिवार का क्या हाल है ? जोगा का परिवार ! कौन बचपन की सब बातों की गठड़ी को संवार कर रखता है ! लेकिन वे तो बोले ही कि पिछली बार जब कि वे हमारे परिवार में टिके थे तो उनको क्रान्तिकारी पार्टी ने देशी पिस्टल बनवाने का काम सौंपा था। इसी सिलसिले में वे मुझसे मिले थे। यह सुन कर सच ही मुझे आश्चर्य हुआ कि जोगा देशी पिस्तौल को बनाने में सफल हुआ था। वह और पिस्तौल भी बनाता, यदि दोस्त गिरफ्तार होकर आठ साल की सजा न पा गये होते।

जोगा के लिये श्रद्धा से मेरा माथा झुक गया और वही अंतिम बात उसके बारे में मैंने सुनी थी। शायद उसका परिवार आज अपना पेशा छोड़ कर कोई और रोजगार कर रहा होगा। नये जमाने के साथ नये आविष्कार हुये हैं, उनकी प्रगति देने में जोगा सरीखे कारीगरों का ही सबल सहयोग रहा है जो कि अपने पेशे की प्रगति की ओर सदैव चेतन रह कर मानव की भलाई की बात सोचा करते थे।

रामी

आटे की जलेबियाँ खाने में स्वादिष्ट होती है या मैदे की, यह सवाल तो आप लोगों के निर्णय करने की बात है; पर रामी ने कभी मैदे की जलेबियाँ नहीं बनाई और फिर भी उस नगर के सभी परिवारों के लोग उसकी दूकान की जलेबियाँ खाया करते थे। अमीर गरीब सभी को उसके यहाँ की जलेबियाँ खाने का शौक था। पहाड़ों में जलेबियाँ हलवाई सुबह-शाम दोनों वक्त बनाया करते हैं। उनकी दूकान पर सुबह के खरीददार अधिकतर नीचे तबके के लोग होते हैं, जो कि वहीं पर खाली कनस्तरों पर बिछे हुए तख्तों पर बैठ कर जलेबियाँ उड़ाते हैं। शाम की चाय के साथ तो संभ्रांत परिवार वाले जलेबियाँ खाते हैं, जो कि उनका नौकर दौड़ कर उसके यहाँ से ले आता था। सुबह की जलेबियाँ कुछ पतली होतीं और शाम वाली मोटी ताकि मेज पर पहुँचने तक उनके भीतर का रस गरम रहे; दोनों ही *वक्त के खाने वालों को उन जलेबियों से सन्तोष मिलता था। इसके अलावा वह कारीगर खोवा की कुछ चुनी हुई मिठाइयाँ बनाने में भी प्रवीण था।*

जलेबियों के अलावा उसकी दूकान पर मोटे बेसन के सेव, भारी पेड़े, सिगोरियाँ आदि मिलती थीं। शादी, मुंडन आदि शुभ अवसरों पर वह अपने खास जजमानों के घर जाकर अन्य मिठाइयाँ भी बनाता था। उन परिवारों *के साथ उसके परिवार का कई पीढ़ियों का सम्बन्ध था। अन्यथा वह किसी* परिवार में नहीं जाता था और उसका कहना तो था कि कारीगर को कहीं

भटकने की आवश्यकता नहीं होती है। वह तो उन पुराने परिवारों में जाता था जिनके साथ कि उसका पुराना सामन्ती नाता है। अंग्रेजी अमलदारी में कुछ नये परिवार पनप रहे थे, उसने उनसे सम्बन्ध नही जोड़ा। इससे कुछ लोगों की धारणा थी कि वह बहुत घमंडी है। जब वहाँ नया-नया थाना खुला, तो थानेदार ने उसे बुलवा कर कहा कि उसे जल्दी ही लड़के के मुडन पर उसके यहाँ मिठाई बनानी पड़ेगी। इस पर वह हंस कर बोला कि वह तो पुराने वजीर और कोतवाल खान्दानों को ही मानता है, उसकी इच्छा और फैलने की नही है। इस पर तीन पट्टी वाले दीवान ने घर पर आकर समझाया था कि दरोगा से बेकार झगडा मोल लेना ठीक नहीं होता है। तो वह फिर हंस कर बोला कि वह चोर, बदमाश तो है नही कि दारोगा से डरे। जो कोई कारण हो दरोगा ने उससे कोई झगडा मोल नही लिया और वह एक दो बार उसकी दूकान पर आकर जलेबियाँ उडा गया। उस समझौते पर बाजार के सभी लोगों को अचरज हुआ था। कुछ इसे दरोगा की चाल कहते थे, जब कि और लोग इसे उस कारीगर की विजय मानते थे।

जीवन से दूर भी संभवतः वह कारीगर नही था और मौसमों के साथ जीवन का नया रूप भी वह अनुभव करता। सामन्ती युग की परम्परा कि; 'दुई दाणी नरयून खँ छै भैना को बातों मा' यानि बहनोई की दिलचस्प बातों को सुनते-सुनते दो नारियल तोड़-तोड़ कर चबा गयी। सच ही वे बातें कितनी दिलचस्प नहीं रही होंगी? प्रेम की गाथाओं के साथ जहाँ कि नारियल का स्थान था वहाँ रामी की दूकान के पेड़े और सिगोरियों को अपनी जगह थी। पति अपनी नई बहुओं को छुपा कर उसकी दूकान के पेड़े और सिगोरियाँ खिलाया करते। यदि बहू लापरवाही से उसके पत्तों को फेंक देती और सास की नजर उन पत्तों पर पड़ती तो फिर बहू को काफी फूल-पुष्प सास से मिलते थे। सास-बहू की उस सनातन लड़ाई के बीच पति पिस जाता था। सासों का रामी पर आरोप था कि वह इस झगड़े का मुख्य कारण है। यदि कोई बुड्ढा सास समुदाय को उनकी जवानी के दिनों

की याद दिलाता तो वे कहती थी कि खाती तो वे भी थीं, पर सास को कभी वह चोरी मालूम नही पडती थी। यदि किसी बहू ने लापरवाही से पत्ते फेंक दिये और सास की नजर पड गयी तो बहू को उसी समय मायके रवाना कर दिया जाता और एक साल के बाद वह फिर किसी तरह काफी नम्र हो कर लौटती थी। हमारे गीतकारों ने भी जलेबियों पर अपनी रचनाएँ कर बताया कि जगल में यदा कदा प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं को मालू के पत्तो पर जलेबियां खिलाया करते हैं।

रामी से मेरी मुलाकात पहले पहल सातवीं कक्षा में हुई और मेरे चाचा के लडके ने एक दिन मेरा उससे परिचय कराया। फिर तो हमने शाम को वही दूकान पर बैठ कर गरम-गरम जलेबियाँ खाई थीं। मुझे इस बात से आश्चर्य हुआ था कि बिना नकद पैसे दिए ही उसने हमें मिठाई खाने को दे दी। राह में मैंने उनसे पूछा कि बात क्या है तो मुझे बताया गया कि उनका माहवारी हिसाब बंधा है और बड़े घराने वाले दूकानदारों को माहवारी पैसा चुकाया करते है। लेकिन रात को जब मैंने रोटी कम खाई तो माँ को आश्चर्य हुआ था और जब मैंने बताया कि किस तरह जलेबियाँ खाई तो वह बहुत गुस्सा हुई और कहा था कि भले घर के लडके इस तरह दूकान पर नही खाया करते हैं। फिर उधार खाना ठीक नहीं होता है, यह आश्वासन दिया था कि एक दिन वह वहाँ से मिठाई मगवा कर हम सब भाई-बहिनो को खिलावेगी।

माँ ने तो चाचा के लडके की बुराई की थी कि वह बहुत चटोरा है और चाची बहुधा शिकायत करती हैं कि वह घर से पैसे चुरा कर ले जाया करता है। यह सुझाया था कि भले घर के लड़के बाजार के बीच मिठाई नही खाते। उस सीख के बाद जब-जब मुझे जलेबियाँ खाने का निमंत्रण मिला मैंने अस्वीकार कर दिया, पर यह बात अधिक दिनो तक चल नही सकी। जाडो के दिन थे और सुबह से ही घना कुहरा छाया हुआ था। मै खा पी कर स्कूल जाने की तैयारी कर रहा था कि भाई साहब आ पहुँचे और सुझाया कि आज 'पिकनिक' रखी जाय। मेरी समझ में वह

बात नहीं भाई तो उन्होंने सुझाया, 'ठीक स्कूल के समय घर से चल देंगे और फिर दिन भर घूमघाम रहेंगे। तीन बजे हलवाई की दूकान पर जलेबियाँ उड़ेंगी और फिर स्कूल के लड़कों के साथ शाम को बस्ता बगल के नीचे दबा कर घर लौट जावेंगे।'

मैंने इस बात पर कुछ राय नहीं दी तो वे चटपट जेब से दो कागज निकाल कर बोले, तुम तो जानते ही हो मैं अपना 'गार्जियन' ऐसा बनाता हूँ कि किसी काम में कठिनाई न पड़े। वे बहुधा दौरे पर रहा करते हैं और मैं उनसे कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवा कर पहले ही रख लेता हूँ कि न जाने कब-कब छुट्टी लेनी पड़े। हम दोनों के गार्जियन एक ही थे अतएव छुट्टी की दरख्वास्त देने में अधिक कठिनाई नहीं पड़ी और जिस लड़के के हाथ हमने अपनी अर्जी भेजी उसे शाम को पेड़ा खिलाने का वादा हमने किया था। भाई साहब दिन भर मुझे इधर उधर घुमाते रहे और ठीक तीन बजे हम दूकान पर गरम-गरम जलेबियाँ खाने के लिए पहुँच गये थे।

भर पेट जलेबियाँ खाने के बाद हलवाई ने उनको पूरा हिसाब बताते हुए समझाया था कि दो महीने से कुछ नहीं चुकाया गया है। भाई साहब ने तो रोब से कहा कि सारा हिसाब एक साथ ही दे दिया जायगा। रास्ते में मैंने भाई साहब से पूछा कि इतना रुपया कहाँ से आ जाता है तो वे हँस कर बोले कि जब फीस देने का दिन आता है तो वे कई मद नई बढ़ा कर माँ से ज्यादा पैसे ले लिया करते हैं और इससे उनका महीना भर का जेब खर्च आसानी से निकल जाया करता है। उन्होंने यह भी सुझाया था कि मैं उसके यहाँ एक छोटा हिसाब खोल लूँ। स्कूल से लौटते हुए भूख लग जाती है और बिना नाश्ता किए तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है।

कुछ दिनों के बाद एक दिन वे फिर दूकान पर पहुँचे थे और दूकानदार को हिसाब में कुछ पैसे जमा करने को देने के बाद कहा कि उस दिन की मिठाई मेरे हिसाब में डाल दी जाय। मैं डरा सा उसकी ओर देख रहा था कि कहीं उसने मना कर दिया तो क्या होगा। लेकिन उसने कोई नहीं की। उस हिसाब के खुल जाने की बात को कोई नहीं

पर जब कि फीस देने का दिन आया तो मुझे बड़ी परेशानी होने लगी। भाई साहब ने सारा हिसाब दुहरा-तिहरा कर समझाया। इम्तहान की फीस दो रुपया, लाइब्रेरी एक रुपया, खेल का चंदा एक रुपया आदि और जब मैंने माँ के सामने हिचकिचाते हुए यह माँग रखी तो उसने बिना किसी आनाकानी के रुपया निकाल कर दे दिया था। स्कूल से लौटते हुए मैं चुपचाप अकेले ही हलवाई की दूकान पर गया और उसे रुपया चुका आया। भाई साहब ने साथ नही दिया। मैं जानता था कि इधर दूकान का उधार बढ गया है और वे बीस-पच्चीस दिन से उधर नहीं जा रहे थे। इस बार घर पर भी पैसे नही मिल सके, कारण कि उनकी बातें सभी जानते थे कि वे झूठ बोलते है और घर से पैसे ठग कर ले जाते है।

रामी को जब कि मैंने पैसे चुका दिए तो उसने मुझसे रुकने के लिए कहा। ग्राहकों के चले जाने के बाद एकान्त पाकर उसने मुझे समझाया कि उधार लेकर मिठाई खाना ठीक आदत नही है। भले घर के लड़कों को आवारा लड़के बिगाडा करते है। भाई साहब की शिकायत की कि मुझे उनकी संगति अधिक नही करनी चाहिए। यह बताया कि वह विवश हो कर उनको उधार दिया करता है कि कौन झगड़ा मोल ले। जब मैं लौटने लगा तो उसने मुझे कागज का एक पूड़ा देकर कहा कि मै अपने परिवार मे ले जावूं और पैसे वह मँगवा लेगा।

माँ को जब वह दिया तो वह हँस कर बोली कि बहुत दिनो के बाद उसे याद आई है। पहले तो तीसरे-चौथे रोज वह लड़के के हाथ मिठाई भेज कर महीने पर पैसे मँगवा लेता था, पर अब अच्छी मिठाई कम बनती हैं। मैंने बताया था कि उसकी मिठाइयाँ बहुत मशहूर है और वैसी मिठाइयाँ इधर कोई नही बनाया करता है। पहले तो मैदान के लोग भी यहाँ से मिठाइयाँ मँगवाया करते थे, पर अब वह बूढा हो गया है और उसका लड़का मन लगा कर काम नहीं करता है।

भाई साहब बहुत परेशान रहा करते और आजकल वे स्कूल सीधे रास्ते न जाकर काफी चक्कर वाले रास्ते से जाते थे। मुझे वे अपने साथ

चलने पर विवश किया करते। बताते कि रोज-रोज एक ही रास्ते से जाना ठीक नही लगता है। लेकिन एक रोज भेद खुल गया। हम लोग जब कि स्कूल से लौट रहे थे तो हमे पगडंडी पर एकाएक हलवाई का लडका दिखलाई पड़ा। उसने भाई साहब को रोक कर कहा कि बडी कठिनाई से वे मिले हैं। चार महीने हो गये है, अब तो हिसाब हो जाना चाहिए। भाई साहब पहले चुप रहे पर लड़का जो मन में आया कहता रहा। इस पर भाई साहब को ताव आ गया और वे गुस्से में बोले कि वह उनके सामने से हट जाय, शाला छोटे मुँह बड़ी बात करता है। बहुत घमंड करेगा तो टुकड़े-टुकड़े करके गंगा मे बहा दूँगा।

लेकिन वह लड़का दबा नहीं था और भाई साहब को सुना कर चला गया कि शरीफजादा होगा तो एक सप्ताह के भीतर पूरा हिसाब चुका देगा। भाई साहब उस अपमान की घूंट पीकर बोले कि वे पूरा हिसाब चुकता कर देंगे, कोई लाखों का तो है नहीं।

इस घटना के बाद मेरी समझ में नही आया कि भाई साहब क्या जादू करेंगे और फिर आगे एक दिन सुना कि उनकी माँ के सन्दूक मे से किसी ने दस रुपये का नोट चुरा लिया है। काफी छानबीन के बाद उनकी माँ ने औरतो के बीच बताया कि नया नौकर यह शरारत कर बैठा। कुल की रचा करने के लिए नौकर दो राज तक हवालात मे बन्द रहा और फिर छूट कर उस परिवार में नहीं लौटा था। भाई साहब ने हलवाई का पूरा हिसाब चुका दिया था और उस परिवार को भी घाटा नही हुआ। वह नौकर एक साल नौकरी कर चुका था और परिवार उसके वेतन से छुटकारा पा गया था। भाई साहब की बुद्धि की मैंने सराहना की और वे स्वयं अपने इस कौतुक की बात सुनाते हुए बोले थे कि उस हलवाई के छोकरे की चुनौती को पूरा करने के लिए उनके पास कोई चारा नहीं था। वैसे वे उस चोरी करने की बात को सिद्धात रूप में सही सबित करते रहे।

लेकिन उस चोरी की घटना के बाद भाई साहब का मान हमारे बीच घट गया और स्कूल में भी उस बात की चर्चा तेजी के साथ फैल गयी।

पिता का रुतबा उस बदनामी से उनको रक्षा नहीं कर सका था। माँ ने तो बताया था कि बाजार का बहुत सा कर्जा उन पर है और कई दूकानदार उनकी माँ के पास आकर हिसाब देने को कह गये थे। अब यह भेद की बात खुली कि भाई साहब का हिसाब बहुत लम्बा था और पान, सिगरेट, मिठाई आदि के अलावा और शौक की चीजें भी वे अपनी 'अरिथमेटिक' के अन्तर्गत उधार लिया करते थे। उस दिन गुस्से में उनकी माँ ने उनकी खूब पिटाई की। उस मार के बाद वे हम सबको बताते रहे कि वे इस शहर को छोड़ कर भागने का निश्चय कर चुके हैं। अगले दिन ज्ञात हुआ कि वे अपने मामा के घर चले गये हैं। फिर सुना कि वे मैदान अपने चाचा के पास चले गये और अब वहीं पढ़ेंगे।

बात कुछ हो भाई साहब के इस प्रकार भाग जाने से मन में पीड़ा जरूर पहुँची थी। उनमें बुराइयाँ कितनी ही रही हों एक गुण था कि वे अकेले किसी चीज को नहीं खाते थे और बहुत सहृदय थे। हरएक परिवार की सहायता करना वे अपना कर्तव्य समझते थे। किसी के घर में कोई बीमार हो जाय वे सरकारी दवाखाने से दवा लाकर उसका इलाज करवाते। यही नहीं नौकर के अभाव में वे एक बार एक गरीब मरीज को लाद कर अस्पताल पहुँचा आए और डाक्टर के बार-बार मना करने पर कि वहाँ जगह खाली नहीं है, उसे विवश किया कि उस मरीज को भरती करले। इसीलिए उस शहर के भीतर महीनों तक उनका अभाव सबको अखरता रहा। कई बार महिलाओं का समूह उनकी माँ के पास गया और अनुरोध किया कि उसे वहाँ बुलवा दें। लेकिन उनकी माँ तो हँस कर बोली थी कि रोज के झगड़े से पिंड छूट गया है।

बड़े भाई साहब के चले जाने के बाद फिर मेरी रामी की दूकान की ओर जाने की हिम्मत नहीं पड़ी। एक, दो बार उसका लड़का संदेश दे गया था कि उसने मुझे बुलवाया है। मेरा मन फिर भी उसकी दूकान पर जाने को नहीं किया। वहाँ के लोगों की धारणा थी कि रामी के कारण ही यह सब हुआ है। इन दिनों बाजार में हलवाई की कई नई दुकानें खुल गयी

थीं और उन लोगों ने भी रामी के खिलाफ प्रचार किया कि वह भले घराने के लडको को बिगाडा करता है। कुछ लोगों ने लडकों को उकसाया था। सच ही उन दिनो रामी के खिलाफ एक विचित्र सा वातावरण वहाँ हो गया। दरोगा ने उसको बुला कर डाँट-फटकार बताई कि वे उस पर कानूनी कार्यवाही करने पर विवश होगें। तीन पट्टो वाले दीवानजी उसके घर में आधी रात तक न जाने क्या फुसफुस करते रहे। लोगों ने बताया कि एक सौ रुपये दरोगा साहब ने इस मौके पर बनाए है।

भाई साहब के भाग जाने और रामी के दुकान की वायकाट की बात पुरानी पड गयी। उस घटना के बाद रामी ने अपनी दूकान बन्द करदी थी। उसे अपने जीवन का सबसे वडा दुख था कि उसने दरोगा को रुपया दिया है। यह बात सब जानते थे और दरोगा को इसके लिए कोसते थे। जब दरोगा की बदनामी बढी तो तीन पट्टी वाले दीवानजी फिर उसके पास पहुँचे तथा उसे समझाया कि रोजगार में इस तरह लापरवाही नही बरतनी चाहिए। उसने तो बताया कि वह बीमार है। उनकी धमकी थी कि जनता के हित में उसे दुकान खोलनी पड़ेगी, अन्यथा सरकार उस पर मुकदमा चलावेगी। असर यह हुआ कि वह सरकारी डाक्टर को सौ रुपया देकर एक सार्टिफिकेट ले आया कि वहुत बीमार है और अभी कई महीने काम चालू नहीं कर सकता है।

यह स्थिति कुछ महीने और चलती, पर इस वीच तहसीलदार साहव की लडकी की शादी की लगन पड़ गयी। रामी के पास कई भले लोग गये, पर उसने हरएक के आगे वह डाक्टरी सार्टिफिकेट रख दिया। काफी सोचने-विचारने के बाद बुजुर्ग लोग समझ गये कि उस कलाकार को समझाना आसान नही है। इसलिए अनुभवो तहसीलदार साहब ने ऊपर लिखा पढी करके दरोगा का तवादला करवा दिया। इस बात की चर्चा कुछ दिन तक शहर में रही और अब जबकि तहसीलदार का लड़का रामी की दूकान पर पहुँचा तो 'वह बूढा गदगद हो उठा। उसने उस लड़के को अगले दिन जलेबियाँ खाने का अनुरोध किया था। साथ ही उस लड़के से कहा कि

वह मुझे साथ लेता आवे ।

लगभग तीन मास बन्द रहने के बाद उसकी दूकान फिर खुली तो दिन दोपहर से ही शहर के बूढ़े वहाँ जमा हो गये थे । कुछ ने उसे धुधकारा कि दरोगा से लड़ाई होने पर वह उनसे उतना पुराना नाता क्यो तोड़ बैठा था । बुढापे मे जीभ चटोरी हो जाती हैं, इसका तो वह खयाल रखता । लेकिन उस दिन रामी ने बडे उत्साह से जलेबियाँ बनाई थी और अपने सभी ग्राहको को उसने पेट भर खिलाई । कौन कितने पैसे दे गया इसका कोई हिसाब नहीं रखा । नया दरोगा जो कि पिछली घटना को जान गया था वह अपने दीवान के साथ जलेबी खाने के लिए आया और उसने ठीक हिसाब करके पैसे चुकाए थे । जब कि बूढे ने उसकी ओर ध्यान नही दिया तो दीवानजी ने बताया कि वे नए दरोगा साहब हैं और नए दरोगा साहब ने मुस्कराते हुए कहा कि उसे कोई कठिनाई पड़े तो वे उसकी सहायता करेंगे । वे जनता के ताबेदार हैं । यह घटना नई थी और वहाँ बैठे हुए लोगों मे बडी देर तक इसकी चर्चा चलती रही ।

तहसीलदार का लड़का और मैं बडी देर में फुटबोल खेलने के बाद पहुँचे थे । हमारे पहुँचते ही उसने हमारा स्वागत किया । जब लोग चले गए तो हमें भीतर के खास कमरे मे बैठाया । हम लोग गरम जलेबियाँ उडाते रहे और वह बताता रहा कि बडे भाई साहब के भाग जाने पर उसको बहुत दुःख था । वह स्वयं कभी उनसे तकाजा नही करता था । यह कांड तो उसके लड़के की नालायकी से हो गया । बडे घरानों के लड़को का सदा ही वह आदर करता है । उस लडके में भले ही कुछ अवगुण हों उसमें गुण भी कम नही है और वह बहुत निर्भीक लडका है । उसकी बहादुरी के कारण ही वह उसे प्यार करता है । आज न जाने क्या बात थी कि पहले जैसे बहादुर लडके नहीं होते है । अपने जमाने के कई किस्से वह सुनाता रहा और बताया कि उन दिनों बड़े और छोटे घरानों के बीच इतना भेद नही था । आपस में स्नेह भी बहुत था और आज की तरह कचेहरी न होने पर भी सच्चा न्याय होता था । कभी गरीब सताया नही

जाता था। आज तो अब दुनिया ही बदल गयी है। कोई किसी का ख्याल नही रखता है। जब से कचेहरी, थाना खुला है लोगो की नियत बदल गयी है। उसने तो चुपके बताया कि अंग्रेज के आने के बाद आज हममें आपस में फूट बढ़ गयी है।

उस व्यक्ति की सच्चाई ने हमें मुग्ध कर दिया था। वह अंग्रेजो की इस अमलदारी से बहुत रुष्ट था। उसका कहना था कि अंग्रेज सौदागर है और उसने राजा के साथ बन्दर बांट करके आधा राज हथिया लिया। वह तो सामंती परम्परा के गुणगान करता रहा था। उसका कहना था कि राज दरबार में न्याय भली भाँति होता था और तब पटवारी, कानूनगो, थानेदार के पास इतनी ताकत नहीं थी। उसे इस बात का बहुत दुख था कि निर्दोष होने पर भी उसे थानेदार को घूस देनी पड़ी और डाक्टर से झूठा सार्टिफिकेट लेना पड़ा है। वह तो शहर की भीतरी व्यवस्था के बारे में बताता रहा कि पुलीस की चौकी खुल जाने के बाद किस तरह रात को चौकी पर शहर के गुडे इकट्ठा होते हैं और नागरिको के खिलाफ जालसाजी किया करते हैं। उसकी धारणा थी कि अंग्रेज ने एक ही भली और बुद्धिमानी की बात की है कि अच्छे घराने के लड़कों को नौकरियों पर रखा है। इससे कम-से-कम छोटी तबीयत के लोग शासन के भीतर नही घुस सके हैं।

अंग्रेजों के प्रति उसकी इस भावना को यदि कोई और जानता तो सच ही वह मुसीबत में फँस जाता। लोगो का कहना था कि फिरंगी के आगमन के बाद अमन-चैन हो गया है। बात यह थी कि नेपालियो के राज्य से सभी नागरिक परेशान थे और उससे छुटकारा पाने के बाद एक नई तरह की शासन प्रणाली वहाँ के लोगों को मिली थी। वह बूढा तो न जाने क्यों आज भी राजा का भक्त था और उसका अटूट विश्वास था कि राजा में भगवान का अंश होता है। वह कई बार राज दरबार में जाकर राजा के दर्शन कर आया था। उसे एक बात का बडा दुःख था कि उसका लड़का नालायक है और कोई काम नही करता है। भले लोगों की संगति न करके

वह शहर के लुंडरों के साथ अधिकतर रहा करता था। उसने उसे पढ़ाने की चेष्टा की, पर वह तो चार साल में तीसरा दर्जा पास नहीं कर सका था। उसने उसकी अच्छे घराने में शादी की, पर वह तो नीच जाति की नाचने वाली लडकियों के यहाँ पड़ा रहता है। एकलौते बेटे होने के कारण पिता कभी उसे कुछ कह भी नहीं पाता था।

उसने तो बताया कि उसकी माँ उस लडके को तीन साल का छोड़ कर मर गयी और उसने किसी तरह पालपोष कर उसे बड़ा किया है। वह चाहता तो दूसरी शादी कर सकता था, पर वह विमाता की सारी बातें जानता था। उसकी माँ तो उसे एक साल का छोड़ कर ही मर गयी थी और उसकी विमाता ने कभी उसे चैन से नहीं रहने दिया। ये सब बातें वह शायद हमसे इसी भरोसे करता रहा कि हम उसके बच्चे के लिए संभवतः कोई दूसरा रास्ता निकाल सकें। उसका कहना था कि छोटी-मोटी नौकरी तो वह उसे दिला सकता है, पर उसकी धारणा है कि किसी कारीगर को नौकरी नही करनी चाहिए। नौकरी सदा ही दूसरे की ताबेदारी है। जिसमें कि अपनी कोई स्वतंत्रता नही रहती है।

मै उस दिन पहले पहल जान सका कि उस व्यक्ति का कितना विशाल हृदय है। अपने नालायक लडके की बातें करते हुए उसका गला भर आया था। लगता था कि उसके हृदय को छूकर वे शब्द निकल रहे हों। हम फिर भी उस लडके के लिए क्या सोच सकते थे। वह तो उम्र मे हम से बहुत बड़ा था और नए-नए तरह के कपडे पहना करता था।

तहसीलदार साहब की लड़की की शादी मे हम उसके बहुत समीप आ लगे थे। हमें ही उसके साथ काम करने का भार सौंपा गया था। हम बारीकी से उसकी बातें भाँपा करते। बूढ़ी औरतें तो मजाक करती कि अबके ऐसी सिगोरियाँ बनाना कि लडकी की सास ही उस पर लट्टू हो कर यहाँ चली आवे। वह भी नए उत्साह के साथ उस शादी में काम कर रहा था। *बारात किसी बड़े कस्बे से आने वाली थी और किसी ने बताया* कि बारात के साथ में बैंड भी आवेगा। बैंड इससे पहले कभी किसी को

बनाना नहीं जानता है, वह हँस पड़ता था ।

उसी ने मुझे बताया कि वह हरएक मेले में हमेशा ही जाया करता है और वहाँ के लोगों से कई बातें सीख कर लौटता है । सदा ही मेलों में जाकर उसने अपनी दूकान लगाई और हरएक ही ग्राहक से कुछ-न-कुछ सीखा है । उसकी सबसे बड़ी सफलता का कारण यही था कि वह हरएक की रुचि को एक बार देख कर ही पहचान लेता है । उसे एक बात का बहुत दुख था कि उसके बाद आटे की जलेबियाँ नहीं बनेंगी । इस तरह की जलेबियाँ बनाना हरएक के बूते की बात नहीं होती है । वह अपने लड़के को उस कला में प्रवीण करना चाहता था, पर असफल रहा और यह गम उसके दिल पर सदा हरा घाव सा दुखता रहता था । जिसे कि कभी भला नहीं होना था ।

और उस शहर को छोड़े आज सालों बीत गये है । रामी को मरे हुए कई साल हो गये है । रामी को जिस बात का भय था कि आगे मशीनों से ही मिठाइयाँ बनेंगी, यह सच नही निकला । लेकिन आटे की जलेबियाँ तब मे मैंने नहीं खाई । यदि किसी से कहता हूँ कि आटे की जलेबियाँ बन सकती है तो वह मेरा मजाक उड़ाता है । और मैं चाहता हूँ कि किसी हलवाई से चुपके कहूँ कि वह मुझे आटे की जलेबियाँ खिला दे । लेकिन शराफत का तकाजा है कि मैं किसी से कुछ नहीं कह सकता हूँ ।

पिछले दिनों उस शहर मे गया और पाया कि वहाँ की दुनिया ही बदल चुकी है । आज वहाँ हमारे उस कारीगर को सब भूल चुके हैं । लेकिन मैं कला का पुजारी हूँ और जिस कलाकार की स्मृति को सालों तक अपने हृदय मे छुपा कर रखे रहा हूँ, उसे आज आप सबके बीच बांट देता हूँ ।

रामी ने ही तो बताया था कि चीज को बाँट कर खाया जाता है, पर मैं तो उसकी यादगार को ही अपने से हटा कर सबकी धरोहर बना रहा हूँ ।

शाहजी

लोगो का कहना था कि शाहजी के पूर्वज पहले कुमायूं से नेपाल गये और एक-दो पुश्त वहाँ रहकर फिर गढवाल आए थे। इस शहर में वे कब आए, यह विवाद का प्रश्न था। कुछ का खयाल था कि वे विजेता नेपालियों के सेनापति के साथ आए तो दूसरों का मत कि यहाँ के राजा के ऐश्वर्य की बात सुनकर वे यहाँ आने का लोभ न संवार सके। कुछ हो, वे नेपाली डिजाइन के पक्के गहने बनाने में प्रवीण थे। यहाँ आकर उन्होंने उसके साथ मुगल-कला का पुट देना शुरू किया और वे इस भाति नया रंग और रूप देने मे सफल हुए। यह सच बात थी कि सोने मे तांबा और चाँदी के गहनों मे गिलट मिलाने में वे प्रवीण थे, पर वे तो हँसकर बताते कि खान्दानी सुनार वह कहलाता है जो कि अपनी माँ के गहनों तक में मिलावट करके कपट करे। वे सुनारी के काम के अलावा गरीब किसानों को कर्जा देते और उनके गहने रेहन रखते थे। अकाल के दिनों मे सस्ते गहने खरीदकर वे उनको गला, नगर के दरोगा, तहसीलदार, डाक्टर आदि अधिकारियों को वह धातु सस्ते दामों मे बेंच देते थे। उनका साझा पुरोहितो के साथ भी रहता था, जो कि अपने चेलों के लिए यहाँ कर्जा तय कराते, गहने बनवाते और इसके उपलक्ष में जजमान तथा शाहजी दोनों के कृपापात्र बने रहते। वे पुरोहित दवा-दारू भी करते और कई तरह के भस्म यहाँ बनाया करते थे। शाहजी को आस-पास क्या, जिले के भीतर सभी भले घराने जानते थे।

मेरा परिचय उनसे पहले-पहल अपनी बहिन की शादी के अवसर पर हुआ। माँ और पिताजी के बीच उनको लेकर काफी झगड़ा चला था, माँ उनसे गहने बनवाने की पक्षपाती नहीं थी। उसका कहना था, जब उनके बनाए हुए गहने तुड़वाए जाते हैं तो कुछ हाथ नहीं लगता। पिताजी इस पर हंस पड़े, दलील दी कि कई पुश्तों से हमारा काम वे लोग कर रहे हैं। फिर उनके गहनों में सु ाग रहता है, यह तो व्यर्थ की बात है कि वह मिलावट करता है। कौन ऐसा सुनार है कि थोड़ा-बहुत मिलावट न करे। माँ इस पर बिगड़ पाँव का गहना भीतर से निकालकर ले आई और चिल्लाई कि यह अब अखरोट और बादाम तोड़ने के काम का ही रह गया है। इसमें एक तोला चाँदी नहीं रह गयी है। पिताजी इस पर हँसते ही रहे और इतना ही कहा कि पंडितजी अपने सामने सोने के गहने बनवावेंगे। लेकिन माँ को सन्तोष नहीं हुआ और उसने शाहजी को एक दिन बुलवाकर अपने मन की सब बातें खोल कर रख दी थी।

शाहजी ने उस चाँदी के गहने को सावधानी से देखकर कहा कि 'दिल्ली डिजाइन' का है। उनको बता दिया जाता कि गाँव के नमूने का बनाया जाय तो वह ऐसा ही करते। इसको पकाने में काफी मेहनत पड़ती है और खास मजदूरी भी नहीं मिलती। माँ इस पर गुस्सा हुई कि गाँव के सुनार सच्चे होते हैं, तो इस पर वे हमारे परिवार का गुणगान कर बताने लगे कि मेरे दादा कितने उदार थे। पुरखों की वह उदारता कि बकरा मारा गया और कोई मनचला कलेजी उठाकर चम्पत हो गया। देवी को क्या चढ़ाया जाय ? तो दादाजी हँसकर बोले थे कि काले बकरे की कलेजी नहीं होती· और पंडितजी ने भी झट से निदान निकाला कि देवी को तो कुछ भी प्रसाद चढ़ाया जा सकता है।

उस बड़ाई पर भी माँ नहीं पिघली और सावधानी से कहा था कि लड़की का मामला है। अब जमाना नाजुक है, अतएव इस मामले में उनको परिवार की लाज रखनी चाहिए। माँ की राय थी कि उसका भाई बुलवाया जाय ताकि वह अपने सामने बैठकर गहने बनवाया करे। पिताजी ने

माँ की बात नही मानी और यह भार पंडितजी पर ही सौप दिया गया। पंडितजी इससे सहमत नहीं थे और दिखलावे में इसका विरोध किया था। पन्दरह-बीस रोज के बाद गहने बनकर आए और माँ उनकी चमक-दमक देखकर दंग रह गयी। इसमें कोई शक नही कि उतनी सुन्दर गढ़ाई वहाँ कोई नही कर सकता था। यही विवशता थी कि शाहजी का भेद जानकर भी अच्छे परिवार उनको अपनाते थे। यह उनके सम्मान का सवाल होता था। वे भी इस बात को जान अपना पूरा कौशल दिखलाया करते थे।

उस शादी के बाद उनसे मेरा परिचय हो गया और स्कूल से लौटते हुए कभी-कभी मैं उनकी दूकान पर बैठ जाया करता था। वह हमारे तथा शहर के और घरानो की बहुत-सी बातें सुनाया करते। उनके पास कई पुराने सिक्के थे और वे यह कहा करते कि औरंगजेब के जमाने की मोहरें भी उनमें हैं। राजघराने की कई कहानियाँ वे सुनाते कि किस भाँति कभी-कभी दासियाँ पैदायशी बच्चो को बदल देती और यह कोई नही जान सकता है कि राजकुमार असली हैं या नही। फिर महलो की भीतरी कहानी कोई नहीं जानता है। उनकी भावना न जाने क्यों राजदरबार के प्रति भली नही थी और उनका अपना खयाल था कि अब राजा और प्रजा का सम्बन्ध पिता-पुत्र का नही रह गया है। वे बताते कि उनके पिता ने कभी राजदरबार की खुशामद नही की। उनका कहना था कि राजा उनकी कारीगरी को कहाँ समझ सकते हैं। उनके कान तो उनके मुसाहिबों के लिये होते हैं और वे जो राय देते हैं वह भी सुनी-सुनाई बातें ही होती है, जिसमें कि कोई मौलिकता नहीं मिलती है। लेकिन लोगों का कहना था कि उनके दादा ने कई बार राजदरबार के षड्यंत्रों में भाग लिया। बार-बार वे असफल रहे। राजा ने इस पर उनको दो साल की जेल की सजा दी थी।

यह सच था कि शाहजी के पूर्वजो का कई सेनापतियों के साथ गठ-बन्धन था। कुछ लोगो का खयाल था कि शाहजी के पुरखे कुमायूँ के राजा के कहने पर यहाँ का भेद लेने के लिए आए, तथा जब कुछ हाथ न लगा तो यहाँ का भेद नेपालियों को बताने में नहीं चूके थे। लोगों की धारणा

थी कि वे बहुत चतुर राजनीतिज्ञ थे। राजदरबार में कई बार उनको देश से निकालने का सवाल उठा, पर तब तक नेपालियों का राज आ गया। राजा यहाँ से भाग गया और जब नेपाली विदा हुए तो महारानी विक्टोरिया के राज्य में बाघ-बकरी एक घाट पानी पीने लगी थी। महारानी की कृपा के साथ-साथ दैविक कृपा भी हुई और अकाल पड़ा। उन दिनों शाहजी के पिता ने सैंकड़ो गावों के किसानों की चीजें हथिया ली और सोना-चाँदी गला-गलाकर ईंटें बना कर रख ली।

कबीलों के झगड़े वाली प्रवृति सभ्यता के फैलने के साथ-साथ नया रूप ले रही थी। और कई लोग चाहते थे कि उनके पिता को दंड दिया जाय। नेपालियों से मिलकर शाहजी के पुरखों ने जो कुछ कारनामे किए वे निःसंदेह निन्द्य थे, लेकिन धन के कारण वे अधिकारी वर्ग के प्रिय थे तथा अच्छे खान्दानवाले जो कि सदा ही शतरंज की चाल चलकर अपना प्रभुत्व बनाये रहते, उनका आशीर्वाद उनको प्राप्त था। अंग्रेज तो पुराने खान्दानों की सलाह पर ही अपनी हुकूमत चलाया करता था और उसने अपने नए कानून भी पुराने दस्तूरों पर आधारित किए थे। उसने अब जमीन की नई पैमाइश चालू की थी और रस्सी के नाप के आधार पर लगान लगाया था। यही नहीं, उसने वहाँ के निवासियों को अधिकारियों के सरकारी दौरे आदि पर कुली व आवश्यक खाने का सामान देने का पट्टा भी लिखवाया था। उन दिनों लोगों के मन में जमीन अपनाने के प्रति मोह उठा था, लेकिन इस परिवार ने उस ओर ध्यान नहीं दिया और जब कोई इस सम्बन्ध में कुछ कहता तो शाहजी के पिता हँसकर कहते कि कौन उनको यहाँ हमेशा रहना है। अब तो फिरंगी के राज में अमन होगा और वे अपने वतन को चले जावेंगे। उनका गाँव कहाँ था, यह ज्ञान किसी को नहीं था और उनके बेटे ने जब वह जानकारी चाही, तो उत्तर मिला कि कारीगरों का क्या है, जहाँ बस गये वहीं अपना घर समझ लिया।

सब कुछ होते हुए भी यह सबको ज्ञात था कि राजदरबार की रानियाँ र राजकुमारियाँ पहले दिल्ली के बनाए हुए गहने पहनती थी। जब कि

एक परिवार की महिला के पास उन्होंने नए नमूने के गहने देखे, तो बनाने वाले कारीगर को बुलवाया था। शाहजी का दादा राजदरबार में पहुँचा और वह अपने साथ कुछ गहने ले गया था। जिनको देखकर सभी दंग रह गये। उस कारीगर ने सबको मोह लिया और वहाँ की महिलाओं ने उसे अपना लिया था। शाहजी का कहना था कि इस पर दिल्ली के सौदागरों में बड़ी घबराहट पैदा हुई और कुछ ने राजा के कान भरकर सुझाया कि वह जासूसी करने के लिए आया है। राजपुरोहित किसी घटना से अप्रसन्न हो गया था और उसने भी उनको उखाड़ने में कोई कमी नहीं रखी। छोटी राजकुमारी को एक बार नीलम की अंगूठी बहुत पसंद आई और जब उसने उसे पहना तो उस दिन से अस्वस्थ रहने लगी। वह उस अंगूठी को नहीं छोड़ना चाहती थी। जो कुछ भी कारण हो, राजकुमारी स्वस्थ नहीं हुई और अन्त में उसकी मृत्यु हो गयी। इस घटना के कारण राजा ने उनको कारागार का दंड दिया था।

इस सब पर आज कोई विवाद नहीं करता और उन सब घटनाओं को लोग भूल गये थे। सरकारी समारोहों में उनको आमंत्रित किया जाता और एक बार जब कि उनके द्वारा कमिश्नर की मेम को एक पुराना गहना भेंट किया गया तो वह इतनी प्रसन्न हुई कि उसने अपने पति से अनुरोध किया कि उनको 'राय-साहब' के लिए सिफारिश छोटे लाट साहब से कर दी जाय। उनका कहना था कि वह गहना तो उनके पूर्वज नेपाल से लाए और उसका ऐतिहासिक महत्व था। जब कि लोगों ने उड़ाया था कि वह उन्होंने स्वयं बनाया है। मेम साहब ने वह गहना इतना प्रदर्शित किया कि तब से सभी डिप्टी-कमिश्नरों की मेमें कुछ-न-कुछ मांग करती रहती थीं और इस तरह उनकी पहुँच जिले के सबसे बड़े अधिकारी तक आसानी से हो गयी थी। उनके पिता के बारे में लोगों का कहना था कि वह बहुत खूबसूरत व्यक्ति था। वे हमेशा दिल्ली वाले बादशाहों की तरह का अंग-रखा पहनते और उसमें सुन्दर काम बना रहता था। उनकी टोपी पर भी सलमा-सितारे होते थे। वे आँखों में सुरमा लगाते और मेंहदी

करते थे। बुढ़ापे में वे हर तीसरे रोज अपनी दाढ़ी, बड़ी-बड़ी मूँछों व बालों में खिजाब लगवाते थे। वे बहुत ऐयाश थे और उनको जवानी में ही क्षय रोग हो गया था। दूर-दूर के हकीम और वैद्य उनका इलाज करते। एक अंग्रेज अधिकारी ने विलायत के डाक्टर को दिखलाने के लिए कहा, पर यह उनको मान्य नहीं हुआ था। वे वहाँ से बाहर इलाज के लिए जाने को तैयार नहीं थे। हार कर वह अफसर उनके रोग के बारे में विस्तार से लिखकर ले गया और उसने किसी आदमी के हाथ दवाएँ भिजवाई थीं। लेकिन उनका सेवन इस आधार पर नहीं किया गया कि वे मलेच्छ डाक्टर की दवा खाकर अपना धर्म नहीं बिगाड़ेंगे। वे सन ही वर्षों तक उस रोग से लड़ते रहे और नब्बे साल की उम्र में मरे थे।

शाहजी का कहना था कि उस रोग में लाखों का होम चढ़ाया गया। पिता की रंगीनी के दास्तान वे बहुधा अपने साथियों को सुनाया करते। उनका खयाल था कि उनके पिता के युग की महिलाएँ बहुत स्वस्थ थीं और उस समय चरित्र का प्रश्न साधारण वाद-विवाद का प्रश्न नहीं बन पाता था। आज तो न जाने क्यों लोग इस सवाल को व्यर्थ का तूल दिया करते हैं। उनका पारिवारिक जीवन बहुत सन्तोषजनक नहीं था। पहली पत्नी परिवार की बेल को पल्लवित नहीं कर सकी, अतएव उन्होंने नई शादी की और वह कुछ दिन उस परिवार में रहकर ऐसी लोप हो गयी कि फिर उसका कोई ज्ञान किसी को नहीं हो सका। लोगों का कहना था कि वह किसी सड़क बनानेवाले पठान के साथ भाग गयी है। लेकिन शाहजी ने नदी में कई मीलों तक खोज करवाकर एक अस्थिपंजर निकाल, पंडितों से बाकायदा विधिवत् अंतिम संस्कार करवाया था। उनको खेद था कि उस पत्नी के भाग्य में वह सुख नहीं बदा हुआ था। सब अपने-अपने भाग्य का फल भोगते हैं। किसी पुण्य से इस परिवार में आई होगी और कर्मफल प्रबल होने के कारण उसे अकाल-मृत्यु इस प्रकार मिली।

ब्राह्मणों की सलाह से पुत्र प्राप्ति के लिए आगे दो शादियाँ उन्होंने और की। उससे भी समस्या सुलझी नहीं। इससे घर में गृह-युद्ध अलबत्ता

बढ़ गया। रात-दिन चख-चख मची रहती। कभी-कभी बीच-बचाव करने के लिए वे पहुँचते तो पिट जाया करते और इस पर कई मनचले लड़के मजाक में कहते कि नियोग की प्रथा उनको फिर चालू कर लेनी चाहिए। उनकी गृहस्थी उलझती चली गयी और वे उस ओर से उदासीन होकर आगे यदा-कदा पीना शुरू कर बैठे। वह आदत बहुत बढ़ गयी और धीरे-धीरे वे अपने काम की तरफ उदासीन हो बैठे थे। लोगों ने उड़ाना आरम्भ कर दिया कि अब वे पिछले बूढ़ों की कमाई पर जी रहे हैं। कभी-कभी तो वे नगर की प्रधान गणिका के घर भी गाना सुनने जाने लगे। वह गणिका तो हँसकर कहती कि उनके पिता का देवरूप तथा स्वभाव वे नहीं पा सके हैं। वे इस पर बहुत सोचते और किसी निष्कर्ष पर न पहुँच पाते थे। जिस मदिरा-मांस को न छूने का प्रण उन्होंने पिता की कपाल-क्रिया करते समय किया, उसी को अपनाने के लिए वे एक दिन विवश होंगे; इस हार पर बहुधा उनको बड़ी झुंझलाहट उठती थी। पूजा-पाठ की और उनकी श्रद्धा-भक्ति बहुत बढ़ गयी। अब तो एक पंडित सदा ही उनके यहाँ पूजा करता हुआ मिलता और वे मन्दिरों के देवताओं के आगे माथा टेकते हुए कहते थे कि वे उनको इस कष्ट से मुक्ति दे दें।

देवी-देवताओं ने कलियुग में उनकी रक्षा नहीं की। मुझे वे बहुधा पुराने जमाने की चीजें दिखलाते हुए बताते कि किस भाँति वे लोग उस सबकी अब तक रक्षा करते रहते हैं। उनकी पत्नियों को, जो कि सुन्दरी थीं, लोग घाट-बाट शाहजी की दुलहिन कहा करते और उनमें से जो छोटी थी वह कभी-कभी मुस्करा देती थी। बात कुछ हो, उस परिवार की महिलाओं का पहनावा और रहन-सहन सच ही वहाँ की नारियों के लिए स्पर्धा की बात रहा करती और शाहजी अपनी पत्नियों की सजावट में काफी रुचि लिया करते थे। रासलीला तथा रामलीला में उन महिलाओं के गिरोह पर सारे समूह की नजर पड़ती थी पर वे उस ओर उदासीन रहतीं। घर में भीतर भले ही कलह हो जाय या छोटी अपना सिर फोड़ती, चंडी रूप धारण करके यह एलान कर दे कि उसके पिता ने उसका गला

घोट दिया होता। बाहर उनका व्यवहार आपस में बहुत शिष्ट होता था। लगता कि वे सगी बहनें हों। जो कुछ बातें बाहर फैलतीं वह तो शाहजी के मित्र फैलाते और शाहजी नशे में उनको इनका आभास दिया करते थे।

अब उनकी कला केवल अपनी पत्नियों को सजाने भर के लिए रह गयी थी। लेकिन उनको वे जो नए-नए डिजाइन के गहने आदि बना दिया करते या बाहर दिल्ली-बम्बई आदि से कपड़े मँगाते, उनकी माँग बढ़ती जाती। जो फैशन वे महिलाएँ चलातीं, वह शीघ्र ही प्रचलित हो जाता था। कई-कई शादी वाले युवक अपनी पत्नियों की फरमाइश पर शाहजी को घेर लेते और काफी अनुनय-विनय के साथ उनसे वैसी चीजें बनवा लेते थे। वे ब्याह, मुंडन तथा अन्य उत्सवों में बहुधा सम्मिलित होती थीं और उनकी सजावट युवकों के मनों को परेशान करती। लेकिन एक बार किसी नौजवान ने छोटी को देखकर कुछ गंदे इशारे किए, तो दोनों ने मिलकर उसकी ऐसी मरम्मत की कि आगे अब नौजवानों ने उसका नाम 'विष की पुड़िया' रख दिया था। महीनों तक वह चर्चा उस नगर में रही।

अब भी उनके ग्राहक कम नहीं थे और पंडित लोग अपने जजमानों को उनके पास ले जाया करते थे। विवश होकर इधर उन्होंने ज्यादा सूद पर रुपया उधार देना शुरू कर दिया था। पंडितों की शिकायत थी कि जजमान उनसे प्रसन्न नहीं हैं तो उनका रोना था कि एक भी लड़का होता तो वे उसे सब काम-धाम सिखाकर एक बार यात्रा करने चले जाते। लेकिन यहाँ तो इस गृहस्थी के मायाजाल से निकलना नामुमकिन-सा लगता है। जब आमदनी कम होने लगी तो उनकी पत्नियों ने एक दिन उनसे इसकी चर्चा की और निवेदन किया कि उनके लिए तो वे कुछ सोचें कि उनकी जिन्दगी का क्या होगा। उससे उनके मन में न जाने क्या भावना उठी कि कई महीने तक वे अपने दोस्तों की महफिल में नहीं गये। लेकिन उस स्थिति से कोई खास लाभ नहीं हुआ। उनके अधिकार की कोई बात नहीं थी। सच तो यह था कि जब वे पीते तो उनको जीवन की सब असफलताएँ कल्पना की दुनिया में उड़ती-सी लगती थीं। तब वे उन पर अधिक

विचार नही करते थे । और वे पत्नियाँ लगतीं कि रंगीन चिड़ियाँ हों, जो कि किसी भी गणिका से बाजी ले सकती हैं । लेकिन उनकी छोटी पत्नी को हिस्टीरिया अनायास शुरू हो गया । वहाँ का डाक्टर मजाक में कहता कि वह रोग असाध्य है और इसका इलाज उसके पास नहीं है । वह डाक्टर बड़ा ही मस्त था और उनकी ही अवस्था का होने पर भी अभी कहीं उसमें बुढ़ापे का आसार नजर नहीं पड़ता था । वह तो नगर की प्रमुख गणिका से पहले मजाक किया करते थे कि वे उसे साथ रखने की बात सोच रहे हैं और एक दिन जब कि वह महिला उनके घर पर स्थायी रूप से आ गयी तो शहर के कुछ मनचले नौजवानों ने अदालत में अरजी दी कि डाक्टर ने जनता की जायदाद पर अधिकार कर लिया है । स्वयं शाहजी उस दिन बहुत परेशान थे और उन्होने लड़को को उकसाया था । आगे वह महिला डाक्टर के यहाँ एक-दो बार मिली तो उसमें उन्होने हँसी का वह फुहारा नही पाया, जो कि वे उसमें उसके कोठे पर पाते थे ।

वह डाक्टर तबादले के बाद चला गया और उनको भेद की बात बता गया कि उनकी पत्नी का रोग नवयुवक हृदय की सहानुभूति चाहता है । यह आवश्यक नही है कि उम्र के साथ हृदय बदले जायँ । उनकी अवस्था पैंतालिस के करीब है, पर यदि उनका दिल चीर कर देखा जाय तो वह बीस साल के लडके के समान मिलेगा । डाक्टर के चले जाने पर शाहजी ने बडी चेष्टा की कि वे अपना हृदय उसी तरह का बनावें, पर सफल नहीं हुए । वह पत्नी बीमारी के साथ लडती रही और अनायास ही एक दिन उनको ज्ञात हुआ कि उसको क्षय रोग हो गया है । उसकी सब प्रकार की परवाह करके भी रोग कटा नहीं । वे अपनी पत्नी के समीप रहकर उसे सान्त्वना देते, पर वह पत्नी तो एक छोटी बालिका की भाँति टकटकी लगाकर उनको निहारा करती थी । उसकी आँखों में कई अबूझी भावनाएँ मिलती जिनको कि वे नहीं सुलझा सकते थे । इस स्थिति का ज्ञान उनको पहले नही था और डाक्टर की बात याद आती कि युवक-हृदय चाहिए । डाक्टर कहता था कि उसका हृदय चीर कर देखा जाय तो वह बीस साल के

नौजवान का सा निकलेगा। और वह युवती भी अभी तेईस या चौबीस साल की होगी। कौन जाने इसका हृदय तो अभी कठिनाई के साथ पन्द्रह-सोलह साल का ही हो, जब कि वे पचास पार कर चुके और उम्र से कुछ आगे बढ कर विचार करते कि साठ साल के है। जीवन की वह थकान सच ही दिल में बडी वेदना पैदा करती, पर वे तो थे विवश!

इस युवती के रोग ने उनके मन में नई जिज्ञासा फैलाई। समाज के प्रति एक विद्रोह भी उठा। उसने उनको एक नया जीवन सुझाया। वह सब सपना लगता। उसके लिए वे कुछ उठा नहीं रखते थे और एक दिन भावुकता मे कहा कि वे अपराधी है और वह स्वस्थ हो जायगी तो वे उसे मुक्त कर देंगे। वह युवती यह सुनकर सफेद पड गयी थी। उन रूढि वाले संस्कारों को दुहराया था कि पति के चरणों की सेवा करके मर जाना ही उसका धर्म है। यह एक बडी ठोकर उसने उनके लगाई थी। इसका कोई जवाब उनके पास नही था। उसने यों असहायता में यह सुझाया कि वह जीवन की कैद से मुक्त होना चाहती है, मौत ही एक ऐसा रास्ता है।

मौत? और वह वेश्या तो पैंतीस से ऊपर होगी और उसने नया जीवन चालू करने के लिए डाक्टर से शादी की थी। जीवन और मौत की यह नई व्याख्या उनके मन में उलझन लाती थी। नया डाक्टर बताता कि रोग असाध्य होने पर भी आज साइन्स मरीज को काफी सहूलियत देता है कि वह अपने को जीवित रखने की प्रेरणा पाता है। फिर एक दिन उन्होंने उसे भुवाली भेज दिया था।

उसको विदा करने के बाद उन्होने अपने कारोबार को सँभालने की चेष्टा की। अपने सभी अच्छे ग्राहकों के पास जाकर बताया कि अब उन्होंने नए सिरे से काम चालू कर दिया है। साथ ही उन्होने कई अच्छी फर्मों के कलकत्ते, बम्बई से डिजाइनों वाले केटेलाग मँगवाये थे, वे भी उनको दिखलाए। इस बीच उन्होंने अपने पंडितों को बुलवाकर अनुरोध किया कि अपने जजमानों को वे बता दें कि अब वे उनकी हैसियत के अनुसार गढाई लेंगे। यह बात धीरे-धीरे सभी को ज्ञात हो गई कि अब वे सच ही अपने

कारोबार की ओर ध्यान देने लगे है।

उन्ही दिनों फिर शाहजी हमारे यहाँ आए और माँ मे बड़ी देर तक बातें करते रहे। उनका कहना था कि पत्नी की अस्वस्थता ने उनकी आँखें खोल दी है। माँ को उन्होंने भुवाली सेनेटोरियम से प्राप्त पत्नी का खत भी पढकर सुनाया था। उसे पढते-पढ़ते उनकी आँखें गीली हो गयी थीं। माँ से पूछा कि मेरी शादी कब तक होगी। माँ ने तो मुस्कराते हुए कहा कि नए जमाने के लड़के अपनी पसन्द की शादी करना चाहते है। अपना हवाला दिया कि वह सात साल को अवस्था में इस परिवार मे आ गयी थी। सास का स्वभाव काफी तेज था और जब वे गरजती थी तो बहुतों के प्राण सूख जाते थे। आज तो बहुओ के लिए स्वराज्य आ गया है। लडके मनपसन्द शादियाँ करते हैं और बहुएँ जानती हैं कि वे परिवार की स्वामिनी बनाकर लाई गयी है।

सास और बहू के आदिकाल से चालू इस झगड़े पर मैंने विचार किया। लेकिन वह तो आज सामन्तवाद की सीमाओ को लाँघकर आगे बढ गया था। आज की पत्नियाँ जब सास बनेंगी तो परिवार का फैला हुआ ढाँचा बिलकुल ही टूटा हुआ मिलेगा। शायद कहीं भी संयुक्त परिवार न होंगे और यदि सास पति-पत्नी के किसी एकाकी परिवार मे रहेगी भी तो पीजडे में बन्द शेरनी की भाँति ही रहेगी। वह अपने पुराने सभी अधिकारों को भूल चुकी होगी। इस भाँति सदियों से चली हुई एक परम्परा का अन्त हो जायगा।

शाहजी का कहना था कि वे मेरी पत्नी के लिए कई नई डिजाइनों के गहने बनावेंगे। वे माँ को विश्वास दिलाते रहे कि कही कोई मिलावट नही मिलेगी। पिताजी के बड़प्पन की याद कर वे बडी देर तक आँसू बहाते रहे। उनका रोना था कि पुराने खान्दान लगभग सभी मिट चुके हैं। एक हमारा परिवार ही ऐसा था कि पुरानी मर्यादा को निभा रहा है। फिर मुझे समझाया कि माँ का हुक्म मानकर चलना चाहिए। यह भी सुझाया कि कभी इधर का तबादला मैं न करवाऊँ। उनका खयाल था कि अपने जिले

के लोग अपने लोगों की इज्जत नहीं जानते हैं । नौकरी के बारे में कई सवाल पूछे और यह जानकर उनको आश्चर्य हुआ कि अब बड़ी नौकरियों के लिए इम्तहान लिया जाता है । पहले तो अंग्रेज अफसर अच्छे खान्दान-वालों को ही नौकरियाँ दिया करते थे । अब तो जमाना ही बदल गया है, सुन रहे हैं कि हरिजन भी डिप्टी साहब बन रहे हैं ।

हरिजनों का अफसर बन जाना उनकी समझ में नहीं आता था और इस बात से वे बहुत परेशान थे कि आज धर्म मिट रहा है । यह बात वे बार-बार पूछते कि क्या सच ही सरकार नीच जाति वालों को इस प्रकार प्रोत्साहन देगी । इस सबका मैं कोई ऐसा उत्तर नहीं देता था कि उनका मन दुख जाय । वे माँ से यह आश्वासन पाकर कि अपनी बहू के गहने उनसे ही बनवायेगी, चले गये थे ।

लेकिन शाहजी की पत्नी की मृत्यु एक दिन हो गयी । इस समाचार ने उनको बहुत परेशान किया । उन्होंने फिर पीना शुरू कर दिया था और रात-दिन पीकर पड़े रहते थे । एक दिन रात्रि को वे नशे में शराब की जगह भूल से नाइट्रिक एसिड पी गये ।

शाहजी के मना करने पर भी मैं उसी शहर में मजिस्ट्रेट की हैसियत से आ गया था । मैंने ही उनका अन्तिम बयान लिया और उनकी लाश को 'पोस्टमार्टम' के लिए न भेजकर उनके समीप के नातेदारों को दे दी थी । जब कि शाहजी का शरीर गंगा के किनारे जल रहा था तब मैं उन चट्टानों पर बैठा हुआ था जो कि राजा के महल के खंडहर थे । वह राजधानी लगभग साठ साल पहले गंगा ने बहा दी थी । वह राजा भी आज अब अपना सामन्ती कलेवर बदलकर चुपचाप कहीं छुप गया था । शाहजी का शरीर राख बन गया, जिसे कि गंगा के पानी में बहा दिया गया था ।

उस दिन घर लौटकर माँ को बताया कि ऐसा कारीगर कहीं नहीं मिलेगा । वह कई सदियों पुरानी संस्कृति का सही प्रतीक था । उस शहर में उस कमी को कोई पूरी कर सकेगा, मुझे सन्देह था ।

कालू

शाम को स्कूल से लौट कर ग्राढत की बड़ी दूकान के पास पहुँचा था कि पाया पीपल के चबूतरे पर हमारे गाँव के लडके जमा हैं। हमारे एक बुजुर्ग चाचा उनको कुछ समझा रहे थे। मुझे देखते ही बोले कि पहले मेरी हजामत बनेगी। इससे पहले कि मैं कुछ कहूँ, कालू नाई ने मुझे चबूतरे के किनारे ले जाकर बैठाया, फिर सिर पर खूब पानी मला और खोपड़ी घोटनी शुरू कर दी। अपने बालों का मुझे बड़ा नाज था। कई सालों के परिश्रम से मैं उनको घुंघराले बनाने मे सफल हुआ था। मुझे झुँझलाहट उठी, लेकिन नाई तो उस्तरा से अपना काम चालू किए हुए था। चाचा जान मेरे मनोभाव को समझ कर बोले, 'बेटा अब तक मैदान में रहे हो। अब यहाँ पहाड का रिवाज बरतना होगा। तुम लोगों के बालों की शैय्या पर ही तो तुम्हारी बूढी ताई अब स्वर्ग में सोवेंगी।'

लेकिन बाल-मंडली का इससे विरोध था। परिवार बहुत फैल गया था। बुड्ढों की बड़ी संख्या थी और प्रतिवर्ष एक-दो परलोक सिधारते थे। इसके कारण त्योहार मनाने में अड़चन पड़ती और होली का त्योहार तो कई साल से नही मनाया जा सका था। अतएव वे इस व्यवस्था मे परिवर्तन कराना चाहते थे कि एक निश्चित उम्र के लोगों के लिए ही इसको बरता जाय। कभी-कभी तो साल भर में तीन-तीन-चार-चार बार सिर मुड़ाना पड़ता था और फिर ग्यारह दिनो तक उल्टी टोपी का पहनना भी कुछ जँचता नही था। एक कठिनाई और थी कि स्कूल में लड़के

साफ खोपडी पर पटापट टीप मार कर हँसते थे कि यह अच्छा खेल है।

चाचा जान स्वयं बुड्ढे थे और जानते थे कि न जाने किस दिन उनके लिए पैगाम आ जाय। उनको स्वयं परलोक में वालों की शैय्या पर सोने का शौक था। अतएव सामने गंगा के पार उँगली दिखला कर बोले. 'बच्चो अंग्रेज की हुकूमत में हो इसमे मौज करलो। सामने रजवाड़े में कोई राज दरबार का सम्मानित व्यक्ति मरा नही की सारी प्रजा को सिर घुटाना पडता है।'

हमारी बूढ़ी ताई मर गयी थी और हम अपना कर्त्तव्य निभा रहे थे। चाचाजान, बाजार कफन लेने के लिए आए थे और साथ ही नाई की व्यवस्था करने के लिए भी। अब वे हमें नाई के सुपुर्द करके बाजार चले गये थे। एक साहब बता रहे थे कि चाचा कफन मे से कुछ पैसा बचा कर अपनी भाभी जी को तारने के लिए एक पव्वा अवश्य पी लेंगे और कुछ चटपटा साथ में खा लेना नई बात नही थी। चाचा यह काम तीस साल से करते आ रहे है और इस काम मे माहिर समझे जाते हैं। पहले वे अपने साथ एक उत्तर-साधक लाते थे। पर लडके जो मन में आता है कहते हुए नही चूकते, इसीलिए उनको आज के नौजवानो पर भरोसा नहीं रह गया है।

कालू तो मौज में मेरी खोपडी घोट रहा था। एक बार मैं पीडा के मारे उठ खडा हुआ तो वह, 'अ-अ-अ, अ-अ-अ,' कहता हुआ मेरा कान पकड कर मुझे बैठाने में सफल हो गया। मैं पीडा को पीकर चुपचाप सिर घुटाता रहा। पन्द्रह मिनट के बाद छुटकारा मिला तो लगता था कि मेरा सिर जगह-जगह पर छिल गया है, उन स्थानों पर पीड़ा थी और मैंने हाथ लगा कर देखा तो खून की बूँदें वहाँ पर जम गयी थी। जब हम सब लड़के निपटे तो सात बज गये थे। इस बीच कालू कई बार पगलाया था और एक नटखट लडके के तो उसने चाँटा भी रसीद किया था। कालू की आदत से सभी परिचित थे, अतएव उसके इशारों को स्वयं ही समझ करके अर्थ निकालना पड़ता था। यदि कोई न समझता

तो वह दुबारा 'अ-अ-अ, अ-अ' करके समझाता था और फिर भी कोई न समझता तो ताव में दंड देकर अवल ठीक करता।

कालू से जीवन में वह पहली मुलाकात थी। उस पगले के लिए मन में न जाने क्यों सहानुभूति हो गयी। इस जिज्ञासा की जानकारी मैंने चाही तो बहुत-सी भेद की बातें भी उसके जीवन की मालूम हुईं। लोगों ने बताया था कि उसका परिवार बहुत पुराना है। जब कि वहाँ राजधानी बनी तो उसके पुरखे राजा के साथ आए थे। राजा ने उनके परिवार को जागीरें दी थी। जब नेपालियों ने उस देश पर हमला किया तो राजा भाग गया। नेपाली सरदार ने इस परिवार को अपनी ओर से सम्मानित किया था। लेकिन यह परिवार नेपाल दरबार की आज्ञाओं को स्वीकार करने में आना-कानी करता रहा। परिवार के मुखिए को जब नेपाली सरदार ने अपनी सेवा में बुलाया तो उसने स्वीकार नहीं किया। इस अपराध में उसकी गरदन उड़ा दी गयी और परिवार को बड़ी यातनाएँ सहनी पड़ी थी।

नेपाली चले गए तो अंग्रेज आए। इस परिवार को आशा थी कि राज परिवार फिर उस नगर में आवेगा, पर वह नहीं हुआ। परिवार अपनी धरती को छोड़ कर गंगा के उस पार वाले राजा के हिस्से में जाना नहीं चाहता था। उनको आशा थी कि नेपालियों की भाँति अंग्रेज एक दिन चला जायगा। लेकिन एक दिन गंगा में बाढ़ आई और पुराना नगर तथा राज दरबार बह गये। फिरंगी ने शहर बसाया था। इनका परिवार सारी स्थिति भाँप कर चुपचाप अपना रोजगार चलाता रहा।

उस परिवार का कालू अंतिम प्रतिनिधि था। उसकी आर्थिक हालत भली नहीं थी। उन दिनों 'ब्लेड' नए-नए चले थे और कुछ परिवारों में सेफ्टी उस्तरा का चलन हो गया था। इससे वह बहुत चिन्तित रहा करता था। उसकी धारणा थी कि अंग्रेज उनके देश को तबाह करने के लिए आया है। सन् १९१८ ई० में जब कि फौजी जर्मनी की लड़ाई में लौट कर आए थे तो वह उनसे बहुत सी बातें पूछा करता था। उसे यह

जान कर आश्चर्य होता था कि वहाँ नाई बड़ी-बड़ी दूकानें रखते हैं। उसकी धारणा थी कि नाई तो परिवार का एक अंग है। उसे अपनी जजमानी से बाहर नहीं जाना चाहिए ।

कालू पहले बावला नहीं था। उसने एक साँवली लड़की से प्रेम किया और उससे शादी की। उस लड़की को चेचक हुई और बड़े-बड़े दाग उसके मुँह तथा शरीर पर चमकते थे। स्वस्थ होकर जब वह बाहर निकली तो उसने पाया था कि उसकी कुरूपता पर सभी व्यंग्य करते हैं। उसे अनजाने ऐसा सा लगा कि कहीं उसके पति ने उसे छोड़ दिया और दूसरी शादी करली तो क्या होगा ? रात को उसने यह बात पति से कही तो वह हँस कर बोला था कि उसकी आँखों में जो भोलापन है उसे कोई नहीं छीन सकता है। वह लड़की कुछ न समझ सकी तो उसने फिर कहा था कि बाहरी सुन्दरता तो मिट जाती है पर हृदय के सौन्दर्य को कोई नहीं मिटा सकता है। वह लड़की रात भर रोती रही और वह उसे अपनी छाती से चिपकाए रहा था। न जाने वह कब उसकी बाहों में सो गयी तो उसे बड़ा सन्तोष हुआ था।

उस दिन से वह उसका मन रखने के लिए तरह-तरह की रंगीन चीजें लाया करता था। नए डिजाइन की साड़ियाँ, चूड़ियाँ आदि। बाहर की औरतें उसकी मजाक उड़ातीं तो वह हँस कर चुप रह जाता था। एक दो भाभियों ने मजाक किया कि भैंस मलने पर भी गोरी नहीं होती है। इस पर उसने जवाब दिया था कि वे अपना घर देखें; दूसरे की गृहस्थी में बैठने को न सोचें। वैसे वह उन जैसी कई दासियाँ अपनी बीबी के लिए रख सकता है।

उसकी पत्नी ने जब यह बात सुनी तो अनुरोध करते हुए कहा था कि वे सच कहती हैं। उसे स्वयं अपना चेहरा आइने में देख कर डर लगता है कि वह बहुत ही कुरूप है। उसने सुझाव रखा था कि वे उसके मायके चलें और उसकी अपनी तथा चचेरी बहिनों में से किसी एक को चुन लें।

गद्‌गद होकर विनती करते हुए उसने आश्वासन दिया था कि उसे बड़ी खुशी होगी अन्यथा उसके दिल में रात-दिन एक अबुझी आग सुलगती हुई रहती है। जब वह अपना हृदय का गुबार निकाल चुकी तो वह खिलखिला कर हँसा था। कुछ देर तक उसे निहार कर एक बार चूम कर कहा था कि कहीं वह उसे छोड़ने का बहाना तो नहीं बना रही है। कौन जाने किसी से आँख लड़ गयी हो। इस पर लाचार वह कुछ नहीं बोली थी।

उस घटना के बाद वह कभी ससुराल नहीं गया था। एक बार मेले पर उसके मायके के लोग आए थे, पर उसने अपनी सालियों से मजाक तक नहीं किया। उसे डर था कि कहीं वे कोई षडयन्त्र रच कर उसे मोह न लें। उसकी पत्नी यह भाँप कर चुप रही। उसे डर था कि उसकी जरा-सी असावधानी से कहीं पति नाखुश न हो जावे। उसके मित्र तो मजाक उड़ाते थे कि वह काली-कलूटी शाहजादी पर फिदा है। भला उस परी के आगे किसी की क्या चल सकती है। कुछ मित्रों ने सलाह दी कि एक शादी उसे और कर ही लेनी चाहिए। उनकी कौम के लोग तो तीन-तीन करते करते हैं। फिर उसकी आमदनी काफी थी। उसे कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। इस पर वह चुप रहता और खाली समय अपनी पत्नी के साथ घर गृहस्थी के काम में काट लेता था।

वह कभी-कभी नगर की गणिका के यहाँ गाना सुनने के लिए अपने साथियों के साथ जाया करता था। उसे वहाँ नई तर्ज सुनने को मिला करती थी। उसे गाना सुनने का बड़ा शौक था। वह चाहता था कि उसकी पत्नी भी गाना सीख ले। एक दिन एकान्त में उसने उस वेश्या से यह बात कही तो उसने हँस कर कहा था कि एक कव्वा न पाल लो। सुबह-सुबह भैरवी सुनाया करेगा। लेकिन वह अपनी धुन का पक्का था। उसने उस्तादों की खुशामद की और उनको नशा-पानी कराने का आश्वासन दिया। बस वे राजी हो गये और चन्द महीने बाद वह अपनी पत्नी के गाने सुन कर मुग्ध हो गया। उसकी धारणा थी कि जिन महिलाओं का बाहरी

सौन्दर्य होता है वे भीतरी सौन्दर्य को निखारने में असफल रहती हैं। जब पत्नी गाती थी तो वह उसकी आँखों को छोटे बच्चे की भाँति ताका करता था।

—एक दिन संध्या को उसकी पत्नी बाछी के लिए हरी पत्तियाँ लेने के लिए अपनी कुछ सहेलियों के साथ पास के जंगल गयी थी। नाले के पास वाले पेड पर से पत्तियाँ काटने के बाद वह उतर रही थी कि पीछे से बघेरे ने उसके पाँव पकड लिए। वह चिल्लाई पर जानवर तो खींच कर उसे नाले की ओर घसीट कर ले गया। साथ की और नारियाँ भय से घबरा कर लौट आईं। यह वहाँ के लिए एक नई घटना थी। जब तक लोग बन्दूक आदि से लैस होकर नाले के पास पहुँचे तो रात पड गयी थी। खून की धार को देखते हुए वे कुछ दूरी तक गये। एक चट्टान के पास उस नारी की घाघरी मिली थी। आगे कुछ झाड़ियों के काँटों पर सिर की चोटी और बाल उलझे हुए पाए। लगता था कि वह जानवर उस रमणी को घसीट कर ले गया था। अब उस दिन ज्यादा छानबीन करना व्यर्थ लगी। लेकिन वह तो कुछ आगे बढ गया और एक झाडी के पास पहुँचा था कि रुक पड़ा। उसने अपनी पत्नी की नग्न लाश के पास खडे हुए उस जानवर को पाया था। उसकी दहाड़ लोगों ने सुनी। बड़ी कठिनाई से लोग उस लाश को घर लाये थे।

उस घटना के बाद ठाकुर कुंवर सिंह महोदय काल्‌ हो गये थे। उस घटना से उसके बाल सुफेद पड़ गये थे। वह कुछ बूढा-सा लगने लगा। उसकी बोलने की शक्ति लोप हो गयी थी। कई महीने तक वह अस्वस्थ रहा था। अपने परिवार की पुरानी चीजें जो उसके पुरखों ने समय-समय पर राज दरबार से पाई थी, उसने लोगों में बाँटनी शुरू कर दी। वह किसी चेचक के दाग वाली नवयुवती को देखता तो टकटकी लगाकर उसमें कुछ ढूँढा करता, फिर खिलखिला कर हँसता और जमीन पर थूक कर पाँव से उस स्थान पर कई लातें मारता था। उस पागलपन में कई बार

तो वह रात-रात उस जंगल में घूमा था। लेकिन वह जानवर तो वहाँ से बड़ी दूर दूसरे प्रदेश मे चला गया और कई मानवो के प्राण लेने के बाद स्वयं भी मानव के हाथो प्राण गँवा चुका था।

उस व्यक्ति के जीवन से दिलचस्पी रख कर भी 'अ अ अ, अ अ अ' की शब्दावली के अलावा कभी कुछ नही मिला। वह परिवार के सामन्तवादी अवशेष का अन्तिम कलाकार था। उस परिवार के इतिहास के बारे मे उससे कोई जानकारी नही जानी जा सकती थी। वह तो वही आढत के पास उस पीपल के पेड़ वाले चबूतरे पर रोज सुबह बैठता है और दिन भर कई लोगों के बाल काटता है। वह तो अपनी मसीन से बाल बनाता है। माथे पर 'गिरदी' उस्तरे से निकालना नही भूलता। उस तरह के उस्तरे का प्रयोग नए लोग करवाना नही चाहते है तो वह बहुत झुंझलाता है। उसकी धारणा है कि वह फौजियों की अपनी निशानी है। माथे के ऊपर के बालों को उस्तरे से छाँटा जाना चाहिए, वह अंग्रेजी तरीके के बाल नही बनाता है। उनसे उसे बड़ी नफरत है और मोछ मुडाए हुए जवानो को वह पास बुलाकर 'अ अ अ, अ अ अ' कर डाँटता है कि यह क्या है ?

कालू नाई को अपनी मजदूरी से अधिक अपनी कला का ध्यान रहता था। जब तक वह पूर्ण रूप मे संतुष्ट न हो जावे तब तक वह ग्राहक को उठने नही देता था। कभी-कभी वह घन्टों तक देखता-भालता था कि किस तरह की कटान होगी। सिर को बनावट और चेहरे को गौर से भांप कर ही वह काम चालू करता था। इस कवायद से बचने के लिए लोग उससे कतराते थे और उसका रोजगार चौपट हो रहा था। उधर नजीबाबाद से कई नाई चले आए थे और एक मनचले ने तो मशहूर वेश्या के नीचे अपनी दूकान भी चालू कर दी थी। अब कालू की आमदनी का जरिया वही पुरानी जजमानी रह गयी थी। वह भी किसी के मर जाने पर सिर घोटना ही बचा था। नये जमाने के साथ अंग्रेजी कट

चल पडा, फिर अब परिवारों की वह सिर घुटाने की प्रथा भी कम हो चली थी। ब्याह-शादियों में वह बहुत पहले से ही नहीं बुलाया जाता था। कौन पाँच-सात घन्टे तक उसकी 'भ भ भ, भ भ' सुनता।

जो परिवार कि किसी जमाने मे राज दरबार में सम्मानित रहा। जिसके प्रतिनिधि सेनापतियो के साथ तिब्बत की लडाई में लड़े। उसका अन्तिम पुत्र कालू आढ़त के पास वाले उस पीपल के पेड के चबूतरे पर कई दिनों भूखा रहने के बाद एक दिन मर गया था। लोगों के लिये उसे भूल जाना स्वाभाविक बात है। पर मानवता के उस सच्चे कलाकार को भूल जाना मेरे वश की बात नही है।

—:o:—

दुनियाँ की ओर

आधी रात को चौका बरतन मँज जाने पर गोबरू के निकट जाकर गृहस्वामिनी गुस्से में, बुदबुदाई, 'सब के सब बिना कपड़े के नौकरी करने चले आते हैं।' फिर उसे गुसलखाने के बाहर का कोना बताया और एक फटी दरी तथा बहुत पुराना कम्बल दे कर कहा, 'सो जा।' यह भी आगाह किया कि उसे पांच बजे सुबह उठ कर पत्थर के कोयले वाला चूल्हा सुलगाना है, ताकि साहब को समय पर चाय मिल जाय। उसने बाहर दालान के दरवाजे पर ताला डाला और बल्ब बुझा कर अपने कमरे में जाकर सो गयीं।

गोबरू के नौकरी का यह पहला दिन था। नाके के हवलदार ने सुबह उसे बाजार में आवारा घूमते हुए देख कर अपने साथ ले लिया था। नाके पर पहुँच कर सब सिपाहियों ने उससे पूछ ताछ की; उसके घर का पता, माँ-बाप का नाम, गाँव आदि पूछ कर डाँट कर यह भी पूछा था कि वह घर से चोरी करके तो नहीं भाग आया? उसके मना करने पर हवलदार ने एक चाँटा मार कर कहा था कि रुपया-पैसा जो हो, उसे बता दे। क्या किसी देश के आदमी को दे आया है? वह शहर में कहाँ रहता है? उसके देश का कोई यहाँ रहता है, इसका ज्ञान उसे नहीं था। हवलदार ने उसे सुझाया था कि ऐसे आवारा लड़कों को सरकार जेल भेज देती है, पर वह ऐसा न करके उसे एक अच्छे परिवार में नौकरी पर लगा देगा।

हवलदार उसे रिक्शे पर चढ़ा किसी बड़े मकान पर ले गया और वहाँ एक अधेड़ आदमी को सलाम करके बताया था कि वह लड़का नया-नया देश से आया है। सीधा-सादा लगता है, कुछ यह भी दबे स्वर में कहा था कि मेम साहब से कह दें कि आजकल नौकर आसानी से नहीं मिलते। फिर उसकी ओर देख कर कहा था, 'छोकरे, काम ठीक करना, नहीं तो जेल हो जावेगी। हुजूर, इसे दो-चार महीने देख लें। काम ठीक करेगा, तो फिर तनखा ठीक कर ली जायगी।'

वह सलाम करके जाने को था कि किसी ने भीतर से पुकारा, 'गुलाम हुसेन, क्या फिर किसी लड़के को पकड़ लाए हो? चार दिन रह कर चोरी करना सीख जायगा और फिर एक दिन किसी के बहकावे में आ कर भाग जायगा। हमें अच्छा नौकर चाहिए।'

उस मोटी औरत की ओर गोबरू ने देखा था। गुलाम हुसेन बार-बार खुशामद सा करता कह रहा था, 'मेम साहब, जब तक कोई अच्छा नौकर न मिल जाय, इससे काम चलाइये, न होगा तो दो-चार रोज में सिपाही देहात भेज कर किसी को बुला लेंगे।'

मेम साहब ने गोबरू की ओर घूरकर देखा और साहब से कहा कि बहुत गंदा है। गोबरू यह सब न समझ कर चुपचाप खड़ा था। कई रात जगने के कारण उसे जुकाम हो गया था और उसकी नाक जोर से बह रही थी। बीच-बीच में वह सुड़क कर बहते बलगम को ऊपर खींच लेता था। मेम साहब को यह देख कर उबकाई आने लगी, तो गुलाम हुसेन ने उसका कान पकड़ कर कहा, 'बाहर जाकर नाक साफ क्यों नहीं कर आता?' गोबरू की आँखों से आंसू बेहे और वह चुपचाप बाहर जाकर नाक साफ कर आया।

गुलाम हुसेन ने माफी मांगते हुए कहा, 'हुजूर, जल्दी ही काम सीख जायगा, अभी नया-नया मैदान आया है।'

इस पर मेम साहब ने कुछ न कहकर बावर्ची को पुकारा और कहा कि छोकरे को काम सिखलाया जाय। गोबरू को धमकी दी कि काम ठीक

नही करेगा, तो जेल भेज दिया जायगा ।

गोबरू चुपचाप बावर्ची के साथ भीतर चला गया था । दिन भर में उसे कई काम करने पड़े थे । जब उसने छोटी बच्ची की टट्टी साफ करने से इनकार किया , तो मेम साहब बिगड़ कर बोली थीं कि वह नौकरी करने आया है या लाट साहिबी करने ? वे तो छड़ी लेकर उसे पीटने पर उतारू हो गयी थी । दिन में लड़कों ने उसे घोड़ा बनाया था । एक लड़के ने तो उसकी आँखों मे लाल मिर्च डाल कर परीक्षा ली थी कि इससे क्या होता है । उन बच्चो की शिकायत की तो फिर फटकार मिली कि वह कामचोर है । सब नमकहरामी करते हैं । दिन को जरा उसकी आँख झपकी थी कि उसके कान उमेठ कर बावर्ची ने कहा था कि क्या दिन भर सोता ही रहेगा । साहब के आने का वक्त हो गया है, उठ कर चूल्हा सुलगा । उस पत्थर के कोयले वाली अंगीठी सुलगाना आसान काम नही था । बावर्ची ने मजाक उड़ाया था कि माँ के पेट से निकलते ही साले नौकरी करने के लिए चले आते है और काम करने का कुछ भी शऊर नहीं होता ।

जब वह अंगीठी सुलगा रहा था, बावर्ची उससे मजाक भी करता जा रहा था, 'क्यों बे, घर पर कोई बड़ी बहिन है ? अब के देश जा, तो साथ लेते आना । मैं उसे रख लूँगा । तुम्हारे देश की औरतें बड़ी पाएदार होती हैं । पचास साल को होने पर भी उनको बुढ़ापा नही घेरता । ताजी की ताजी रहती हैं । यहाँ की औरत तो तीस-पैंतीस साल मे ही बुढ़ा जाती है ।'

गोबरू नौकरी का नया सबक सीख रहा था । उसने अंगीठी सुलगाना सीख लिया । उस बावर्ची के मजाक को सुन कर उसे गुस्सा आया और लगा था कि यहाँ के लोग इन्सानियत नहीं जानते । उसने मेम साहबा की अपनी सौतेली माँ से तुलना की । वह भी बड़ी क्रूर थी । उसकी माँ को ज्वर हुआ करता था, फिर उसका पेट खराब हुआ और उसी साल बरसात में वह मर गयी थी । फागुन के महीने मे पिता साहूकार से आठ

सौ रुपया कर्ज लेकर नई माँ ले आए थे। उस माँ ने आते ही घर की व्यवस्था बदल दी। वह बहुत आलसी थी, कोई काम उससे नहीं होता था। खेती में कोई बरकत नही थी। पिता बहुत झुंझलाया करते और माँ रोज ही मायके जाने की धमकी देती थी। कई बार तो वह आधी रात को उठ, अपने कपडे संभाल, फिर एक पोटली बनाकर निकल जाती थी। जब पिता की आँख खुलती तो वे उठ कर उसकी तलाश में जाते थे। बडी खुशामद के बाद कहीं वह लौटती थी। गाँव की बूढी औरतें उनका मजाक उडाया करती थी, पर पिता को उन रुपयों की चिन्ता थी जो वे अपने ससुर को दे चुके थे। साहूकार का कर्ज उसी के लिए तो उठाया था। वे बहुधा उसकी माँ की याद करते हुए आँसू बहाते थे।

माँ के साथ कुछ साल और कट जाते यदि उसके भाई ने जन्म न लिया होता। अब तो माँ की परेशानी बढ गयी थी। वह कमरतोड मेहनत करने लगी। उसे चिन्ता थी कि यदि वे कर्ज नही चुका लेंगे तो उनकी जमीन बिक जायगी। उन लोगों ने भैंस पाल ली और घी बेच कर रुपया कमाना शुरू किया। पिता चाहते थे कि वह गाँव के प्रायमरी स्कूल में पढे, जबकि माँ उसे एक धनी परिवार की नौकरी में लगाना चाहती थी। वहाँ खाना-कपडा मिल जायगा और वह आसानी से उनसे बीज के लिये नाज पा जायगी। उस परिवार की एक बहू माँ के ही गाँव की थी और माँ चाहती थी कि वह उसकी नौकरी करे। माँ ने पिता को बताया था कि वह बहुत धनी परिवार की लड़की है। उस परिवार के वैभव की चर्चा करते हुए वह इसका गौरव अनुभव करती थी कि वह उसी गाँव की लड़की है।

पिता ने माँ की एक न मानी और स्कूल में भरती कर दिया। माँ इस अपमान को न सह सकी और उसके प्रति बडा कड़ा रुख अपनाया था। वह उसे मंडुए की बासी रोटी खाने को देती थी जिसे वह नमक के साथ खाता था। माँ ने उसे धमकी दी कि यदि अपने पिता से शिकायत करेगा,

तो वह गँड़ासे से उसका गला काट कर गधेरे मे उसकी लाश फेंक देगी। बहुधा वह रात में सपना देखता कि उसकी माँ उसका गला घोंट रही है। वह चीख उठता था। पिता उसे जगा कर कुछ पूछना चाहते, तो वह चुप रहता था। उसे कांपता पाकर पिता बड़ी देर तक उसके पास बैठे रहते और माँ बड़बड़ाती थी कि वह इस घर मे ठीक से सो भी नही पाती। उधर बच्चा उठ बैठता और उसके रुदन से सारा वातावरण भर जाता था। उसके मन का भय न जाने क्यों पक्का हो उठता था कि एक दिन माँ उसकी हत्या कर डालेगी।

वह अपने छोटे भाई को प्यार करने के लिये गोदी में लेता, तो माँ गुस्सा होती थी। वह उसे गंदी-गंदी गालियाँ देती थी। कसम खाती थी कि वह अपनी मरी माँ का खून पीवेगा, यदि उसके बच्चे को छुवेगा। एक बार उसे चूमते हुए देख लिया था, तो चिमटे को गरम कर उसकी ठोढी दाग दी। वह तिलमिलाया था, तो गुस्से मे बोली थी कि उसके लिए कोई रोग भी तो नहीं आ रहा है कि मर जाता। काम कुछ नही करता और फोकट की रोटी खाकर मुटा रहा है। अब पढ़ कर न जाने किस कचेहरी में नौकरी करने के लिए जावेगा। वह आठ-नौ साल का बच्चा इस प्रकार के ताने सुन-सुन कर मुरझा जाता। पिता का स्नेह भी न जाने क्यों अब फीका पड़ता जा रहा था। उनका एक बैल मर गया और गाय को एक दिन बघेरे ने मार दिया था।

वह अपने पिता के साथ उसकी तलाश मे गया और एक स्थान पर उसने पाया था कि गाय मरी पड़ी थी और बघेरे ने उसके थन खा डाले थे। पिता तो फूट फूटकर रोए थे। मानो कोई भारी विपत्ति आई हो। सच ही परिवार के लिये समस्या खड़ी हो गयी थी। पिता ने वह गाय गोवरू के छोटे भाई के दूध के लिए ली थी और इसके लिए अपने दो अच्छे बछड़े दिए थे। माँ तो यह सुनकर स्तब्ध सी रह गयी और उसे गश आ गया। पिता बडी देर तक गाय की छोटी बाछी का गला सहलाते रहे। वह बाछी तो अनजान सी उसी भांति उछलती रही, मानो कुछ न हुआ

हो। पिता उठ कर गाँव में भैरव के चौक के पुजारी के यहाँ गपशप करने के लिए चले गये। माँ न जाने क्या सोच कर उठी और उसका गला दबोचने लगी। माँ की आँखें लाल थी और दाँत किटकिटा रहे थे। उसने शोर मचाया, तो अड़ोस-पड़ोस की औरतें इकट्ठी हो गयी। माँ जोर-जोर से बक रही थी। अब वह चिल्लाने लगी और उसके मुँह से फेन सा निकलने लगा।

ओझा ने आ कर बताया कि माँ पर कोई देवी आई है। उसी समय उस देवी को नचाने की व्यवस्था की गयी। माँ रात भर थाली और डफों की ध्वनि के साथ नाचती रही। वह वहाँ नहीं गया। वह रात भर उस बाछी को माँ! माँ! सुनता रहा, जिसकी माँ को बघेरे ने मार डाला था। वह बाछी पशु थी, शायद आगे अपनी माँ की याद को भूल जाय, पर उसके हृदय पर तो माँ के विछोह का वह घाव आजीवन दुखता रहेगा। रात भर वह सिसक-सिसक कर रोता रहा था। उसे याद आया कि जब उसकी माँ बहुत बीमार थी, तो उसका सिर सहलाती कहती थी कि बहुत अभागा पैदा हुआ है। मां की मौत पर गाँव की बुढ़ियों ने भी उसे कर्महीन घोषित किया था। मां के उस प्यार को वह तब नहीं पहचानता था। नई माँ ने आकर उसके हृदय के बन्धन खोल कर नई चेतना दी थी। जीवन के उस नए अनुभव ने उसे कभी खिलने नहीं दिया था।

सुबह को औरतों ने बताया था कि वह कुल की देवी जो कि मा के शरीर पर आई थी, बार-बार कहती थी कि कोई भयानक संकट आने वाला है। उस परिवार की दशा भली नहीं है। उधर स्कूल में भी गुरुजी उसे पीटा करते थे कि वह नालायक है। कभी ठीक तरह से सबक याद करके नहीं लाता। वे बार-बार उसे पाठशाला से निकाल देने की धमकी देते थे। वह स्वयं देखता था कि और परिवारों के लड़के गुरुजी के लिए घर से सौगातें लाते हैं, वह फसल पर नाज तक नहीं लाता था। गुरुजी कई बार इसकी शिकायत कर चुके थे। पिता से उसने कहा था, तो बोले कि यहाँ अपना पेट ही नहीं भरता, गुरुजी का पेट कहाँ से भरें।

इस रूखे उत्तर से उनका मन खट्टा हो गया था। कुछ लडकों ने सुझाया कि वह गुरुजी की सेवा किया करे, पर वह उसे मान्य नहीं हुआ। आग-तक उसके परिवार वालों ने कभी किसी के यहाँ चौका-बरतन या ऊपरी काम नहीं किया था। वह एक अच्छे परिवार का राजपूत था, जिनके परिवार के सैनिकों ने पिछली लड़ाई मे दुश्मन के सैनिकों के छक्के छुड़ाए थे। वह सब उसे मान्य नहीं हुआ और एक साथी के सुझाने पर कि मैदान भाग चलें, वह तुरन्त राजी हो गया था।

एक दिन उसका पिता जब दूसरे गाँव बीज लेने के लिए गया था, तो वह अपने साथी के साथ गाँव छोड़ कर मैदान की ओर चला आया। दो रात और दो दिन वे पैदल चलते रहे। उसके साथी के पास जो पैसा था, वह चुक गया था। एक रोज का और सफर करके वे रेलवे स्टेशन के पास पहुँचे और वहाँ से बिना टिकट सवारी कर मैदान की ओर भाग आये। एक बडे स्टेशन पर टिकट जाँच करने वाले ने दो-दो चाटे कस कर उनको उतार दिया था। बस वहीं से उसका नया जीवन शुरू हो गया था। उसके साथी को एक हलवाई के यहाँ नौकरी मिल गयी और वह भी आखिर इस परिवार में पहुँच गया था।

गोवरू को नींद नहीं आई। बहुत तेज जाड़ा पड रहा था और उसका अंग-अंग कांप रहा था। कल तक तो वह भविष्य के लिए चिन्तित था कि न जाने कहाँ जाना होगा; आज जबकि एक ठिकाना मिला, तो उसे खुशी नहीं हुई। गृहस्वामिनी के दिन भर के व्यवहार से वह ऊब उठा था और वे बच्चे तो उसके लिये सिरदर्द थे। सोने तथा खाने का ठीक-ठिकाना नही था। बाजरे की अधकच्ची रोटी और रद्दी पानी मिली बेस्वाद की तरकारी वह नही खा सका था। उससे अच्छा खाना तो साहब के कुत्ते, बिल्ली को मिला था। वह कुत्ता सुबह पाव भर गोश्त खा गया था। बिल्ली भी साहब के पास बैठ कर चबाए गोश्त के टुकडे नोचती थी। उसे न जाने क्यों अपने घर की याद आ गयी! वहाँ का एक-एक दृश्य हृदय

पर छा गया।

उसका छोटा भाई सो रहा होगा। पिता ने सुना होगा कि वह भाग गया है, तो बहुत दुखी होंगे। और वह मां क्या उसे बिल्कुल याद नहीं करती होगी? पाठशाला के लड़के उसकी याद जरूर कर रहे होंगे। इस तरह उसे भागना नहीं चाहिए था। लेकिन उसके साथी ने तो बताया था कि मैदान मे मौज स दिन कटेंगे। जरा नीद आई थी, तो उसने पाया कि वह अपने गाव के पास की ऊंची चोटी पर बैठा अपने साथियों के साथ बांसुरी बजा रहा है। तभी न जाने कहां से उसकी सौतेली मां आ गयी। उसके हाथ में गंड़ासा था। उसकी नीद टूट गयी। उसका सारा बदन कांप उठा। इस तरह अकेले सोने का उसका यह पहला अवसर था। उसे बहुत डर लगने लगा। यहा भी तो भूत होते होंगे। अब वह बैठ गया। उसने अपने घुटने पर पेट अड़ाए और कंबल ओढ़ लिया। फिर भी ठंड नही गयी।

वह उठ कर रसोई घर की ओर गया, पर वहां बड़ा ताला लगा था। बावर्ची अपने परिवार के साथ पास की ही किसी कोठरी मे रहता है। वह बहुत भाग्यवान है। कुछ देर तक वह उसी तरह बैठा रहा। एक बार फिर लेटने की चेष्टा की, पर ठंड से नीद नही आई। बड़ी देर तक न जाने वह क्या सोचता रहा। उसका मन बार-बार घर लौट जाने के लिए करता था। उसने कुछ सोच कर निश्चय किया कि वह यहा से भाग कर किसी दूसरे अच्छे परिवार में नौकरी करेगा। उसने कंबल ओढ़ा और बदन पर चारों ओर लपेट लिया। फिर उठकर आगन का दरवाजा खोला। सावधानी से भांपा कि कही चौकीदार तो आसपास नही है। वह चुपचाप उस बंगले से बाहर निकल कर सड़क पर चलता हुआ हलवाई की दूकान पर पहुंचा, जहां उसका साथी नौकर था।

उसके साथी ने आश्चर्य से उसे देखा और उसकी आप-बीती सुन कर समझाया कि नौकरी ऐसी ही होती है। वह स्वयं सुबह से रात के एक बजे तक काम करता रहा है। उसका सारा बदन दुख रहा है। गोबरू तो

पास वाले खड्ढे पर चीलें मंडरा रही है तो यह सुन कर उसकी बाई आँख फड़क उठी थी वह उधर जा रहा था तो बिल्ली रास्ता काट गयी और आगे हरिजन की एक लड़की खाली बरतन लिए भरने मे पानी भरने के लिए जाती हुई मिली। उसे इन लक्षणो से यह विश्वास हो गया कि हो न हो वह उसी का बैल है। बस उसका दिल टूट गया। वह बैल वहाँ कैसे पहुँच गया, इस पर विचार किया। दिन को बघेरा गिरोह पर हमला नहीं करता है। फिर सभी पशु तो वहाँ चरा करते है। दिन मे यह हमला नहीं हुआ होगा।

जब वह उस स्थान पर पहुँचा तो उसका दिल टूट गया। वह उसी का बैल था। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। सावधानी के साथ वह उसी चट्टान पर पसर गया। बड़ी देर तक बेहोशी की हालत में उसकी आँखें मुंदी रही। जब उसे होश आया तो वह दौड़ कर बैल के पास पहुँचा और उससे लिपट कर उसे पुचकारने लगा। कोई उत्तर न पा कर उसने सावधानी से उसे देखा, फिर उसका भयानक रूप देख कर सिहर उठा। अब वह बैल से लिपट-लिपट कर रोने लगा। उसके कपड़े खून से तर हो गये। कुछ देर तक उस स्थिति में बैठ कर, फिर वह उठा और ऊपर चट्टान के पास पहुँच गया। वह बहुत थक गया था। चुपचाप सुस्ताने लगा। उसके अंग-अंग में पीड़ा हो रही थी। मानो कि वह बड़ी दूर का सफर करके लौटा हो।

उसने अनुमान लगाया कि उसका बैल लोभी था और हरी घास के लोभ मे इधर आया होगा। इस भाँति वह अपने गिरोह से अलग हो गया। गोधूली पर बघेरे ने ऊपर की ओर से हमला किया है और वह खिसक कर घबराहट में नीचे गिर पड़ा। इस भाँति ही, वह बघेरे का शिकार बन गया। जब उसने वह बैल खरीदा था तो वह लोभी नहीं था। कभी वह खेतों पर भरी फसल की ओर आँख उठा कर तक नही देखता था। घर में आकर जब पूरा पेट दाना-पानी नहीं मिला, तो वह खेतों फसलों को चोरी से नष्ट करने लगा। गांव के लोगों से बहुधा

को मोक्ष दिलाया था ।

वह उन चार परिवारों के स्टाम्पों पर अब तक न जाने कितनी बार अंगूठा लगा चुका है । उसकी अवस्था साठ साल की है । चालीस साल तक उनका हल लगाने के बाद भी आज तक वह उस ऋण से मुक्त नहीं हो सका है । वह जानता है कि यह कर्ज चुकाया न जा सकेगा और उसे चुकाने की बात भी वह नहीं सोचता है । इसके अलावा कई बार और महाजनों से उसने कर्जा लिया और पन्दरह-बीस बार कुडक अमीन आकर उसकी कुड़की कर चुका है । शुरू में जब कि जमीन पर अच्छी उपज होती थी तो उसने कभी अपने साहूकारों की परवाह नही की । लेकिन आगे तो खेती से पेट भरना कठिन हो गया था ।

हर पांच साल बाद या तो सूखा पड़ता या फसल पर पुतंगे लग जाते। कभी गेहूँ की फसल ऐसी होती कि मानो राई के दाने पैदा हुए हों । कुछ लोगों का कहना था कि जब से फिरंगी पहाड़ मे आया है अकाल पड़ने लगे है । पहले कभी अकाल की बात सुनाई तक नही देती थी । फिरंगी ने आकर रस्सी से पैमायश की और लगान बढाया था । उसने तो बेगार का सिलसिला भी चालू किया । उनकी सरकारी अहलकारों की खिदमत करनी पड़ती थी। दौरा पड़ने पर अफसरों का सामान ढोना पड़ता और यदि किसी अफसर का पड़ाव गांव के पास पड़ गया तो फिर बकरा, घी, दूध, बासमती का चावल, अडा, मुरगी आदि जो भी मांग होती, उसका प्रबन्ध करना पड़ता था । लेकिन इस सबके बाद जंगलों का इन्तजाम भी सरकार ने अपने हाथ में ले लिया । वहाँ भी पैमाइश की; और आगे उनको घास-लकड़ी लाने तथा अपने पशु चराने तक की कठनाई हो गयी थी । इससे जीवन की कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयीं । उन लोगों मे गहरी निराशा छाई थी ।

वह भी सन् १९१४-१९१८ ई० की लड़ाई मे भरती होकर रंगरूट बन कर फौज में चला गया होता, पर पिता की एकलौती संतान होने के कारण उसके पिता ने कानूनगो को घूस देकर उसका नाम कटवा दिया । उसकी

फौजी बनने की हवस कभी पूरी नहीं हुई। जब उसके साथी फौजी वरदी में छुट्टियों में घर लौटते तो उसे उनकी बातों से बड़ा कौतूहल होता था। इसीलिए जब कि सन् १९३९ ई० की लड़ाई में उसका बेटा फौज में भरती हुआ तो उसे बड़ी खुशी हुई कि उसके परिवार का सैनिक परम्परा आगे बढ़ रही है। लेकिन वह लड़का अफ्रीका में रेगिस्तान की लड़ाई में मर गया था। उस लड़ाई में उनके गांव के सब नौजवान मर गये। उस समाचार से बुड्ढे का दिल टूट गया। उस लड़के की शादी करने के लिए उसने साहूकार से दो हजार का कर्जा लिया था। एक हजार और गहने लड़के वाले लावें, इस शर्त पर लड़की का पिता रिश्ता करने के लिए तैयार था। अच्छा किसान मजबूत और कार्य कुशल लड़की परिवार के लिए चाहता है। उसने इसीलिए पैसे की परवाह नहीं की थी। वह बहू उस घटना के बाद पांच-सात महीने वहाँ रही और फिर अपने मायके चली गयी। वहाँ उसके पिता ने उसकी दूसरी शादी करदी थी।

इसी अवसर पर साहूकार ने उसे बुलवाया था कि वह लड़की के पिता पर मुकदमा करके रुपया वसूल क्यों नहीं कर लेता है। पर उसे वह मान्य नहीं हुआ था। इस पर साहूकार ने अपने रुपए की वसूली के लिए अदालत में मुकदमा किया और उसकी कुड़की करवाली थी। लोगों ने उसे समझाया कि वह अपनी तीन लड़कियों के काफी रुपए लेकर उनकी शादी करे। पर उसने यही कहा कि यदि वह अधिक रुपए देकर लड़की न लाता तो शायद अपने लड़के को लड़ाई पर नहीं भेजता। अधिक रुपया लेने से उसके दामाद को अपना देश छोड़ कर परदेश नौकरी पर जाना पड़ेगा और उसमें उसकी लड़की सुखी नहीं रहेगी। उसकी सास सदा ताना मारेगी कि यदि उसके पिता ने ज्यादा रुपया नहीं लिया होता, तो उसके बेटे को साहूकार के पास जाकर कर्जा न निकालना पड़ता और वह जिन्दगी भर परदेश न पड़ा रहता।

उसने अपने तीनों समधियों से साफ-साफ कह दिया कि चुपचाप ब्राह्मण के साथ आकर लड़की को विदा करके ले जावें। इस पर जब गाँव

वालों को दस्तूरी दावतें न मिली तो गाव की पंचायत ने उस पर जुर्माना किया, फिर भी उसने उनकी बात नही मानी थी। वह अपनी लड़कियों का जीवन नष्ट करने का पक्षपाती नही था। लेकिन उसके बाद परिवार का आर्थिक ढांचा टूट कर चूर-चूर हो गया। साथ ही उसकी कमर भी टूट गयी थी। उसने चाहा था कि उसका दूसरा लडका पढ़ लिख जाय ताकि किसानी से छुटकारा मिले, पर वह प्रायमरी तक पढ़ कर आगे नही बढ़ा। उसने उसे बहुत समझाया पर वह गांव मे मटरगश्ती करता रहता था और गाय चराने के अलावा और किसी काम में उसने परिवार की सहायता कभी नही की। उसे कमा कर खिलाना बहरबार की शक्ति के बाहर की बात थी। उसने उसे समझाया कि वह उसकी मदद करे तो वह कुछ धनी परिवार वालो के खेत एक तिहाई नाज पर ले लेगा, पर लड़के ने इसे स्वीकार नही किया। वह लड़का अब गाव वालो की आंख मे खटकने लगा था। कोई उलाहना देने आता कि उसने खेत से ककड़ियाँ तोड ली है। दूसरा बताता कि उसने फलो की चोरी की। किसी के झाड़ू के तोडने की शिकायत होती, तो कोई बताता कि दाड़िम का पेड़ तोड़ गया है। वह यह सब सुनता ही रहता था, पर एक दिन मालगुजार ने आकर शिकायत की कि उसका बकरा कई दिन से गायब है और उसका शक है कि उसके लड़के के बहकाने पर कुछ लड़कों ने उसे जंगल में मार डाला और भून कर खा गये है। यह सच बात थी कि बकरा लापता हुआ, पर किसी से भी उसका भेद नहीं मिला था। सभी लड़के कहते थे कि बघेरा पकड़ कर ले गया है। लेकिन मालगुजार तो कहता था कि वह उसके लड़के को अदालत में ले जाकर वहाँ रिपोर्ट करेगा। इस पर उसने उसे पीटा था। फिर वह लड़का गाव छोड़ कर भाग गया। आज तक वह लौट कर नही आया है।

—एक हल्की सी चीख-सी सुन कर उसका ध्यान बँटा और उसने पाया कि पास की झाड़ी की ओर एक गीदड़ बढ़ गया है और कुछ चिड़ियाएँ उसके आगमन पर भयभीत हुई थीं। वह उठ कर ऊपर की ओर चली

साथ घर लौटेगा। वे मिल कर गांव की बंजर जमीन जोतेंगे। अब उनको एक तिहाई नाज पर अमीरों के खेत किराये पर नहीं लेने पड़ेंगे। यह तिहाई नाज की बात कभी भी उसकी समझ में नहीं आई है। वह खेत को जोतता है, अपना नाज बोता है और फसल की रक्षा करता है। लेकिन जब फसल तैयार होती है तो एक तिहाई नाज उसे मिलता है और बाकी साहूकार, जिसका खेत है वह ले जाता है साहूकार का उस पर कर्जा है, इसलिए वह विवश है।

फिर एक दिन तो गांव में पंचायत का निर्माण हुआ। गाव वाले अब छोटी-छोटी बातो का फैसला खुद ही कर लिया करते थे। लेकिन उसमें भी गरीबो की कोई जगह नही थी। पिछली बार जबकि चुनाव हुआ था तो पंचायत ने तय किया कि वे 'बैल की जोड़ी' वाले बक्से में अपना वोट डालेंगे। बैल शिवजी का वाहन है। उसकी पूजा होती है। बैल उनके खेतों को जोतता है। किसान का बैल से बहुत पुराना सम्बन्ध है। देवता तक उसे पूजते थे। वह उस तर्क को समझा हो चाहे नहीं, पर बैल की जोड़ी के साथ उसके जीवन का अटूट सम्बन्ध रहा है। वह उस मोह को आसानी से नही बिसार सकता था। उसने अपनी पर्ची उसी बक्स में डाल कर गांव की इज्जत रक्खी थी। लेकिन वह बात महीनों पुरानी पड़ गयी है।

आज अब जीवन में कठिनाई आ गयी है। सोचा उसने कि वह अपने बेटे को पत्र लिखावेगा :

'बेटा तुमको घर से गये हुए आठ साल हो गये हैं। अपनी माँ की मौत पर भी तुम नहीं आ सके थे। तुम्हारा रोना है कि बहू के साथ आने में सौ रुपया खर्चा होगा। क्या बम्बई इतनी दूर है। जगतराम महाजन का लड़का भी कहीं मैदान में पढ़ता है और वह सभी छुट्टियों में घर आया करता है। तुम्हारे बच्चों को देखने की बड़ी लालसा है। तुम्हारी माँ उस लालसा को लेकर ही मर गयी, पर आशा है कि तुम इस बूढ़े को निराश नहीं करोगे। फिर एक बार तुम लोगों को अपना घर देख लेना चाहिए।

अपनी धरती पर ही तुमको अपना बुढापा काटना होगा।

'पिछले महीने तुमने दस रुपए भेजे थे। तेरी बड़ी बहिन लड़के को लेकर आई थी, चार रोज यहाँ रही। घर में खाने के लिए मोटा अनाज नहीं था कि उसे ठीक तरह खिलाता। आज गाँव में कोई उधार अनाज भी चार बातें सुनाए बिना नही देता है। आठ रुपया कि मथुरा वाली धोती ली जो कि कभी सवा रुपया में मिलती थी। दो रुपया का नमक और गुड़ लिया। नमक का इधर बडा टोटा हो गया है। देवता की पूजा और उसकी विदाई के लिए कलेवा बनाने में पाँच रुपया उधार हो गया है। खेती का बुरा हाल है।

'बासमती खेत' के बड़े मैदान में किसी का नाज नहीं हुआ और बिना दराँती लगाए ही पशु चराने के लिए छोड़ दिए गये हैं। सब कुछ सूख गया था। और खेतों में आठवाँ हिस्सा अनाज हुआ है। आजकल पचायत वालों ने जंगल से घास-लकड़ी लाना बन्द कर दिया है। तेरी चाची एक बोझा पत्ते लेने के लिए गयी थी तो पंचायत ने उसे अपमानित किया और तीन रुपया जुर्माना किया है।

'पिछले दिनों तेरे ससुर आए थे। बडी कठिनाई से एक सेर आटा उधार लाया और दो छटाँक घी। आज कोई किसी पर भरोसा नहीं करता है। पंचायत के बाद तो आपसी मनमुटाव बहुत बढ गया है। तेरे चाचा ने भैंस ली तो पचायत वालो ने पाँच रुपया भैंस का टैक्स ले लिया। यहाँ सब की हालत खराब है। मैं गेहूँ पकने से पहले वाले तीन सप्ताह तक कन्द-मूल उबाल कर उनको नमक मिला कर खाता रहा हूँ। दुकानों पर सरकार ने अकाल के लिए बाँटने को सस्ता अन्न दिया है और सुना कि हमारी सहायता के लिए कुछ अनाज बिना पैसे के भी बाँटने के लिए दिया है; पर मालगुजार और उसके पंचायत वाले दोस्त सब कुछ बाँट लेते हैं। फसल से जो पैदा हुआ है वह बड़ी कठिनाई से एक महीने चलेगा। समझ में नहीं आता कि यह साल कैसे कटेगा। अब इस बुढ़ापे मे मजदूरी करने की ताकत मुझमें नही है। दोनो आँखों पर मोतिया बिन्दु है और

दाहिनी आँख बिलकुल बुझ गयी है। शाम को बाहर नहीं जाता हूँ।

'बेटा अब तो हमारे गाँव के नजदीक मोटर की सड़क बन गयी है। मैं वहाँ रोज काम करने जाता था, पर एक दिन बुखार आ गया और पाँच रोज तक वहाँ नहीं गया। पाँच दिन न जाने का पंचायत वालों ने पाँच रुपया चंदा लगा दिया है। समझ में नहीं आता कि वह कहाँ से चुकाऊँ। मैं उस सड़क पर भारी उत्साह से काम करने जाया करता था कि एक दिन तू मोटर से उस पर आवेगा। सुना कि असूज से उस पर मोटर चलेगी और मैदान से सस्ता गल्ला आया करेगा। पर मैं तो एक ही उम्मेद लगाये हूँ कि तू एक बार यहाँ आ जा, यदि बहू को यहाँ छोड़ सके तो ठीक है। नहीं तो मुझे भी अपने साथ मैदान ले जा। आज इस गाँव में अपनी इज्जत बचानी तक मुश्किल हो गयी है। पुरखों के इस गाँव पर अब मेरी कोई आस्था नहीं रह गयी है। जहाँ मेरा बेटा, बहू और उनके बच्चे हैं, उस धरती में मर जाने पर मुझे कभी दुख नहीं होगा।

'तूने कई बार लिखा था कि मैं तेरे पास चला आवूँ। यदि तू लिखे तो मैं तेरे चाचा के लड़के के साथ आ सकता हूँ। उसने पढ़ना छोड़ दिया है और डंगर चराया करता है। तेरे चाचा का कहना है कि उसे भी कहीं नौकरी पर लगा देता तो उनके कुल की रक्षा होती। उनकी हालत भी भली नहीं है। तेरी चाची को बुखार रहता है फिर भी बेचारी काम करती रहती है। वैद्य कहते हैं कि क्षय की शिकायत है। गाँव का हाल क्या लिखूँ। सभी परेशान हैं ऐसी मुसीबत लड़ाई के दिनों में भी नहीं आई थी।

'बेटा लौटती डाक से पत्र का उत्तर देना। चिट्ठी तेरे चाचा के लड़के ने कई दिन मेहनत करके लिखी है। वह बार-बार कहता है कि भाई साहब के पास जाकर दर्जा चार पास करेगा। तू उसका मन रख लेना। लेकिन यदि तू यहाँ चला आता तो मकान के पत्थरों को और तुन के कुछ पेड़ों को बेच देते। जो कुछ अपना है, उसे बेच-बूच कर यहाँ हमेशा के लिए

छोड देते। अब यहाँ की खेती पर मुझे कोई बरकत नही दिखाई पड रही है।

'बेटा मै बहुत दुखी हूँ। एक बैल मर गया है और अब बैल की पूरी जोड़ी कर लेने की सामर्थ मुझमे नही है। बैल को बघेरे ने मार डाला है और यह सब मेरे फूटे भाग के कारण हुआ है। अभी तो इस भाग्य में न जाने क्या-क्या लिखा हुआ है।'

बूढे बस्तवार सिंह ने कई बार उस चिट्ठी मे लिखाने वाली बातों पर विचार किया। उसके भाई का लड़का कम से कम एक सप्ताह इसे लिखने में लगावेगा। वह सारी बाते लिख देगा। अपने लड़के से कोई बात छुपाने से लाभ नही है। वह अपने लड़के के पास चला जावेगा। वहाँ बहू के हाथ की रोटी खावेगा। उसके लड़कों को खिलावेगा। उस परिवार मे दो चार साल जीवित रह कर फिर मर जायगा।

लेकिन वे चीलें उसी भाँति उड कर 'की ईं ईं ईं ...' करती मांस नोच रही थी और कव्वे काँव, काँव, काँव करते हुए अपनी चोंच मे मास उठा रहे थे। वह अब उस बैल से स्नेह करके भी उसकी लाश को घर नही ले जा सकता है। उसकी बैल की जोड़ी आज टूट गयी थी और आगे अब उसे बैल की जोड़ी नही रखनी है।

आखरी बार वह उसे देखता रहा। फिर उठा और लड़खड़ाता हुआ अपने गाँव की ओर बढ गया। उसने पीछे मुड़ कर नही देखा। मानो कि वह बैल उससे उठ कर सवाल पूछ सकता है कि जब वह उसकी रक्षा नही कर सकता था तो खरीद कर क्यों लाया।

वह पशु शायद नही जानता होगा कि बैल की जोड़ी किसान का सही हथियार युग-युग से रहा है। आज यह सच बात थी कि उसको अब बैल की जोड़ी पूरी करके खेत नही जोतना है। पर यह बैल की जोड़ी सदा से ही खेतो को जोतती रही है। खेत अन्न उगल कर किसान का भाडार भरते थे। वह अन्न देश मे खुशहाली का सही प्रतीक था। और आज जब कि किसान का अपने खेत से सदियों पुराना सबंध विच्छेद हो रहा था, तो यह भारी दरार देश को छाती पर बड़ा घाव एक दिन बना कर दुखती ही रहेगी।

कूकर-खाँसी

जाड़े की मध्य रात्रि, शीत हड्डी के भीतर पैठ कर कँपकपी पैदा करती है। उस शान्त वातावरण में सुन्दरिया और उसके भाई खाँसते हैं। बच्चों की खाँसी का स्वर तेज होता जाता है और अन्त में साँस फूल जाने पर वे हाँफते हैं। उनकी आँखों की पुतलियाँ विषाद पूर्ण लगने लगती हैं। छोटा बच्चा सिसक कर उठ, क्षीण स्वर में कहता है, 'पानी।'

जीर्ण रजाई के हट जाने पर उनके साथ सोये कुत्ते के पिल्ले ठंड से सिहर कर कुनमुनाते धीमे स्वर मे भू, भू करते हैं। रामदीन की नींद उचट जाती है। वह उठ कर पानी पिलाता है। अंधकार में केवल आकाश पर टिमटिमाते तारे प्रकाश फेंकते हैं। वह बच्चों को सुलाने की चेष्टा करता है। पिल्लों को भी सुला कर रजाई से ढँक देता है। पास मूक खड़े अशोक के पेड़ पर किसी चिड़िया के पंख फड़फड़ाते हैं। खटका सुन कर सोई कुतिया भू-भू-भू भूँक उठती है। वह स्वर बडी देर तक गूँजता रहता है। अंत में फिर नीरव शान्ति छा जाती है।

रामदीन को अब नींद नहीं आती। दिन भर काम करने के कारण शरीर थका हुआ होने पर भी बच्चों की बीमारी में वह रात झपकियों में काट रहा है। पत्नी की मृत्यु के बाद उस पर गृहस्थी का पूरा भार आ पड़ा है। पत्नी तो कभी-कभी कल्पना में ही रात्रि में समीप खड़ी धीरज बँधाने लगती है। वह उसके क्षीण स्वर का आभास पाता है—'तुमने अपना कर्तव्य निभाया था। मेरी अन्तिम धरोहर बच्चा है। बड़ा होकर

वह तुम जैसा ही बलवान बनेगा।'

वह चौंक, आगे-पीछे ताक कर भी कुछ नहीं पाता है। पत्नी डेढ़ साल अतिसार से पीड़ित रही। ऐसे रोगी की सेवा भले ही कठिन हो, उसने डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होमियोपैथी, ओझा आदि सब की सहायता ली। मोहल्ले के सभी छोटे महाजनों से कर्जा लिया। पत्नी की आयु पूरी हो जाने के कारण वह उसे सुन्दर शिशु प्रदान कर मर गयी। मृत्यु के एक सप्ताह पूर्व वह बेहोश हुई और चुपचाप बुझ गयी।

उसने अपने जीवन मे कुछ खाली पाया। पत्नी की परिचर्या में वह व्यस्त रहता था, लेकिन अब तो वह थी नही। उस दुख की घड़ी में कुतिया जिसे कि वह तीन साल हुए गंदे नाले से उठा कर लाया था, बड़ा सहारा देती। वह टुकर-टुकर देखती और उसे उसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई जान पडती। वह पशु अपनी मूक सहानुभूति से उसे बल प्रदान करने मे असमर्थ थी।

रामदीन को जीवन में निराशा और असन्तोष मिलता। उसकी नौकरी तक उसका उपहास करती हुई लगती। जहाँ वह नौकरी करता उसे 'कोचवान' कह कर पुकारा जाता। परिवार की छोटी-मोटी जमीदारी सरकारी पन्दरह साला बाड बन गयी और उसका पहला शिकार हुई घोड़ा-गाड़ी। अब तो वह गाय-भैंस की देखभाल, चौका-बरतन, चौकीदारी, माली का काम जो कुछ उसे सौंपा जाता, वही धन्धा करता है। इस परिवार में वह ग्यारह साल की अवस्था में नौकरी पर लगा। आज उसकी बयालीस साल की अवस्था हो गयी है। देखने में वह पचपन-साठ का लगता है। परिवार के स्वामी अठाईस साल नौकरी कर पेन्शन से आराम का जीवन व्यतीत कर रहे हैं और उसे बस मौत ही नौकरी से छुटकारा दे सकती है।

उसने अपनी गृहस्थी पर दृष्टि फेरी तो पाया कि मार्गशीर्ष के अंतिम दिन हैं और इस सर्दी में वह बरांडे में चारपाई की दीवाल बना कर रहता है। बीस वर्ष पूर्व गृहस्वामी ने इस भवन का निर्माण किया था और तब से गरमी, बरसात, ठंड, बसन्त आदि सभी मौसमों में वह इसी में रहता

है। यह मकान का पिछवाड़ा है और कुछ गज जमीन अस्थायी रूप में उसकी है। नाली से इतनी तेज बदबू चलती है कि रात को सांस लेने में कठिनाई पड़ती है। पर वह वहाँ रहने का आदि हो गया है। इस जमीन का उसे मोह हो आया है। इसके साथ जीवन की कई मधुर तथा दुखद स्मृतियों का संबंध है।

पहले गृहस्वामी को माली हालत भली थी और उदारता के साथ उसे कुछ वस्तुयें प्राप्त हो जाया करती थी। लड़ाई के बाद उस घर की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ गयी। परिवार के राजा बेटा पढ लिख कर भी बेकार है और रानी बिटियायें कितना ही बनाव श्रृंगार करें पर वर प्राप्त न होने पर प्रोढा हो रही है; सम्भवत. इस सब से गृहस्वामिनी अर्द्ध पगली सी रहती है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है। रामदीन दिन भर गालियां सुनता है। वह उसे एक मिनट बैठा रहना नही देख सकती है। वह उसे काम चोर, नमकहराम और न जाने क्या-क्या कहती है। जब उसकी पत्नी बीमार थी तो भंगी से कहती थी कि उसे सरकारी अस्पताल में भरती करा दो। रामदीन फिर भी उनसे सहानुभूति रखता है। वह यह समझ नही पाता कि वे पहले जितनी सहृदय थी अब उतनी ही कर्कशा कैसे हो गयी है। इसे वह अपने भाग्य की बात मान कर सन्तोष कर लेता है।

जब उसने नौकरी शुरू की तब जीवन मे कठिनाइयां नही थी। इस भवन तथा बाग के निर्माण में पति-पत्नी ने पूरा योग दिया था। गृहस्वामिनी उन दोनों में आपस मे झगड़ा करवा कर फिर उन्हे इनाम देती थी। गृहस्वामी की गृहस्थी को बनाने में वे पूरा श्रमदान करते। कभी यह प्रश्न नही उठा था कि मजदूरी क्या मिलेगी ? वह उनको परिवार का एक अंग समझता था। बात सही थी। लगभग तीन पुश्त से इस परिवार की सेवायें उन्होने की थी। पिता इस परिवार का वैभव तथा उसके बुड्ढों के रंगीन किस्से सुनाया करता और रामदीन से कहता कि उसका जीवन इस परिवार में भलीभांति कट जायगा। उसका लेखा-जोखा करने का

अधिकार मान' कि उसके खून में उसके पुरखों से ही चला आया था। वे स्वामी थे और व० वालों के परिवार का बेटा। उस सामन्ती व्यवस्था का वरदान स्वीकार कर भी आज उसकी आस्था मालिकों के परिवार से उठ गयी है। उसका विद्रोह यदा-कदा उभर आता है। गृहस्वामिनी जब अधिक बक-बक करती तो वह उत्तर दे देता कि उसका सारा जीवन ये लोग नष्ट कर चुके है। अब उसकी हड्डियाँ चाहें तो उनको भी ले लें।

वह स्वयं नही सोच पाता कि आज दुनिया में क्या हो रहा है। लडाई और कन्ट्रोल के बाद वह कितना ही संघर्ष करे, पेट भर खाना नहीं मिलता। कोई व्यक्ति सीधे मुँह बात नही करता। किसी के दुख मे कोई सहानुभूति नही दिखलाता। लगता है जैसे सब अपने में ही कोई बडा संघर्ष कर रहे हो। वह अपने को नितान्त अकेला पाता है। आज किसी की सहानुभूति पाता है तो उन छोटे महाजनों की जो रुपये का तकाजा करते हुए उसे सुझाते है कि वह भी मर्द की जात है। उसके दुख पर कहते है कि सब के ही फटेहाल है। रोजगार वालों की कठिनाइयाँ बताते है कि जो रुपया फँस गया, निकल नही पा रहा है। उसे उत्साहित करते हैं कि वह किसी औरत को घर मे डाल ले तो वह भी कुछ मेहनत-मजूरी करके कमायेगी। फिर फीकी हँसी हँसकर यह महत्वपूर्ण सत्य भी सुझा देते हैं कि ऋण यदि थोड़ा-थोड़ा करके चुका दिया जाय तो भारी नही मालूम होता है।

उस मोहल्ले के जीवन में उसने कई परिवर्तन भापे है। जो लड़के छोटे-छोटे थे और उसकी गाडी के पीछे बैठते थे जवान हो गये हैं, कई की शादियों की दावतें वह उडा चुका है। छोटी-छोटी लडकियाँ जो बस्ते लेकर स्कूल पढने जाती थी, आज अपनी-अपनी ससुराल मे है। परिवारों में नई पुश्त के बालक तथा बालिकाओं का जन्म हुआ है। सृष्टि के ये नियम मानो वैसे ही चल रहे हैं। मोहल्ले का जीवन कभी बूढा सा होता नहीं मालूम पडता है। साल भर की मौसमों के समान वह सुख-दुख आदि की करवटें लेता है। पर वहाँ भी कुछ नई घटनायें होने लगी है। उसे यह देखकर आश्चर्य

हुआ कि संभ्रान्त परिवार की लड़कियाँ भी अब प्रेमपाश में बंध कर अपने पसन्द से युवकों के साथ भाग जाती हैं। उनकी चर्चा मोहल्ले में होती है। लड़की का पिता पुलीस मे रिपोर्ट करता है, पर लडकी-लड़का शादी कर लेते हैं और हार कर पिता ही दावत देकर फिर शादी करवा देता है।

वह मोहल्ले के वातावरण मे पहले जैसी एकता नही पाता। आपस में गृहस्थो के बीच स्नेह की डोरियाँ टूट सी गयी है छोटी-छोटी घटनाओ को लेकर आपस मे झगडे होते हैं। कभी तो पुलीस को इन झगडों को निपटाने के लिये आना पड़ता है। एक परिवार दूसरे परिवार की निन्दा ही नही करता उसकी लड़कियो तथा औरतों को बदनाम भी करता है। यह बात भी सत्य है कि वह किसी परिवार मे चमक नही पाता। सभी परिवारों की नारियाँ श्रीहीन और थकी हुई सी मिलती हैं। लड़के लड़कियो में भी वह जीवन नहीं पाता। वे दुबले-पतले हैं और उनके द्वारा पुराने लड़कों की भाँति चहल-पहल मोहल्ले मे नही रहती है। इस वातावरण में वह अपना दम घुटता सा पाता है।

जब यह बात उसने एक व्यक्ति से पूछी, उसने समाधान कराया कि ये बच्चे नए जमाने के हैं और अपने पिता की अवस्था के लोगो से हिलते-मिलते नही हैं; उसकी अवस्था के युवक नौकरियो पर चले गये हैं। वह उनको अपना समझता था, बच्चो की इस नई फसल के साथ उसने नाता नहीं जोड़ा है। अन्यथा आज वह अपने को इस समाज से अलग नही पाता। उसने इस बात पर विचार कर देखा कि उसका हृदय आज बहुत कड़ा हो गया है। वह चेष्टा करके भी उन बच्चों के साथ हिल-मिल नहो पाता। अपनी भूल ज्ञात होने पर उसने भविष्य मे इस नए समाज के साथ संबंध स्थापित करने का निश्चय किया था कि एकाएक पत्नी बीमार पड गयी और वह अपने परिवार की सीमाओं के भीतर फँस सा गया।

पत्नी बीमार पड़ी तो वह बहुत चिन्तित हो उठा। धीरे-धीरे मोहल्ले की औरतों की सहानुभूति से कुछ खाना, कपड़ा आदि मिलने लगा। साधा-

रण पैसे की सहायता पाकर भी दवा की भली व्यवस्था नहीं हुई। उसे उस समय कई नये परिवारों का ज्ञान हुआ। रोग का समय ऐसा कटा कि उसे होश तब आया जब उसकी पत्नी मर गयी। वह एक पुत्र उसे यादगार स्वरूप छोड़ गयी। अब उसके परिवार मे वह, एक लड़का, एक लड़की तथा कुतिया की बच्ची थी। पहले भी चार थे और उस कुतिया के साथ आज फिर चार हो गये! उस कुतिया ने जब उसकी पत्नी बीमार रही सदा उसका साथ दिया। उस पशु की आँखों में उसे मानव-समाज से अधिक कृतज्ञता और सहानुभूति मिली थी। पशु और मानव की उस मैत्री ने उसे बल प्रदान किया था।

—फिर बच्चे खाँसने लगे। वह खासी बड़ी देर तक आती रही। लगता था मानो मानव के नही कुत्ते के पिल्ले खास रहे हों। यह कुत्तों वाली खासी पहले मालिक के परिवार के बच्चों को हुई थी। रामदीन उन बच्चों को डाक्टर को दिखलाता और उनके इंजक्शन लगते थे। वे इंजक्शन बड़ी पीड़ा पहुँचाते और बच्चे उस भय से चीख-चीख कर रोते थे। गृहस्वामिनी रोज झुँझलाती थी कि मोहल्ले के छोटे तबके के बच्चों से वह रोग आया है। बहुओं को कई बार मना किया कि पिछवाड़े बच्चों को न जाने दें। उन गंदे बच्चों के कारण सुकुमार बच्चों को व्यर्थ ही कष्ट उठाना पड रहा है। बड़ी बहू बताती थी कि अब तक दो-सौ रुपये दवा पर खर्च हो गये हैं। डाक्टरी दवा बहुत महगी पड़ती है। सबमे छोटे लड़के को तो निमोनिया हो गया था। वह बड़ी कठिनाई से बचा।

लड़की तो खाँसती रही फिर बड़ी पीड़ा से कराहते हुए उसने थूका। उस बच्चे की आँखों की पुतलियाँ पलट सी रही थी। वह खाँसते-खाँसते बेहोश हो गया था। उसका शरीर तप रहा था। वह जाड़े से काँपने लगा। रामदीन ने बच्चे को ठीक तरह ढँक लिया। वह उसे अपनी छाती से चिपका कर सुलाना चाहता था कि बच्चे की मा के स्नेह वाला भार सौंप सके, पर उस फटी रजाई से सबका तन नही ढक सकता था। वह विवश

था। उसने उसे थपथपाया और लडकी को पानी दिया। चुपचाप शून्य मे कुछ ढूंढता सा रहा। आसमान पर तारे टिमटिमा रहे थे। दूर शृंगाल हूआ! हूआ!! हूआ!!! कर उसकी गूँज से वातावरण मे भय भर लाते। कहीं दूर कोई पक्षी भयभीत सा बोल रहा था, मानो किसी शत्रु से अपना बचाव कर रहा हो। परिवार की काली बिल्ली ने एक चूहा पकडा और वह भीतर वाले कमरे मे उसके प्राणों से खेल रही थी। नियति के इस हिंसा वाले व्यवहार ने उसके कोमल हृदय को ठेस पहुँचाई और अनायास उसकी आँखो से आँसू की अविरल धारा वह निकली। तभी कुतिया भू, भू, भू, कर हल्के स्वर मे भौंको, मानो उससे सहानुभूति कर रही हो। वह कातर आँखो से उसे टुकर-टुकर देख रही थी।

यह पशु उसे मानव मे अधिक सहृदय लगा। पिछले दिनो इसके पाँच पिल्ले हुए थे। वह उनको अपने दाँतो से दबा कर इधर-उधर सुरक्षित स्थानों मे छिपाती थी कि उनकी रक्षा हो। मोहल्ले के छोटे-छोटे लड़के उनसे खेलते और वह असहाय सी सब देखती। वह भौंक कर उनको डराती थी, पर उन लड़को पर हमला न करती। उनके बाल-स्वभाव के लिए उनको क्षमा कर देती थी। उसके इस ज्ञान पर वह दंग रह जाता था। वे पिल्ले बहुत गंदे तथा घिनौने लगते। वह उनको चाटती थी और धूप सेकती हुई उनको दूध पिलाती था। इधर-उधर से वह लौटती तो पहले उनको चाट कर प्यार करती थी। माता का सारा स्नेह वह उनको सौंप देती थी। तीन बच्चे फिर भी मर गये। ठंड से वह उनकी रक्षा न कर सकी। जब बच्चे मरते तो वह उदास हो उठती, फिर अपना कर्तव्य पूरा करने को बचे हुए बच्चों की रक्षा मे सारा ध्यान लगाती थी। अब उसके ये दो बच्चे कुछ बडे हो गये थे और माँ उनको स्वभाविक रूप में बढ़ने देना चाहती थी।

मातृत्व की कोई नई व्याख्या रामदीन ने इससे नही बनाई। उसने पाया था कि मौत की भावुकता वह कुतिया देर तक हृदय मे संवारे हुए नही रखती है। वह सृष्टि के जीवन और मौत के नियम के प्रति सघर्ष

करती हुई आगे बढ़ अपना कर्तव्य पूरा करती है। भावुकता की परवाह उसे नहीं है। वह मानव की भांति जीवन के संघर्ष में मन छोटा करना नहीं जानती। इस सबसे रामदीन ने नया सबक सीखा और वह पत्नी के वियोग को भूल कर बच्चों की ओर मुड़ा। इन बच्चों को उसने अपनी पत्नी की यादगार समर्पित कर दी। उसके जीवन तथा हृदय में जो स्थान पत्नी खाली कर गयी थी उस स्थान की पूर्ति बच्चों के भविष्य की कल्पना ने भर दिया। इसके लिए वह उस कुतिया का आभारी था। उसका जन्म गंदी नाली के किनारे हुआ था। वह वहाँ से उठा कर लाया और अब उसे लगा कि उस कुतिया और उसके जीवन की सामाजिक स्थिति में समानता है। उनमें संघर्ष करने की बलवान शक्ति न हो, तो वे कभी भी नष्ट हो सकते हैं।

इस भीषण खासी के लिए वह भगवान को क्षमा नही कर सकता है। इन छोटे बच्चों ने उसका क्या बिगाड़ा है? वह बच्चे तो कुकर खासी के प्रकोप से खासते-खासते बेदम हो जाते हैं। उन अबोध बच्चों में इतनी ताकत कहाँ है कि इस रोग के भार को संभाल लें। वे निर्बल हैं। वह इस बात को यों सुलझाता है कि गरीब के बच्चों को जीवन पाते ही प्रकृति से संघर्ष कर शक्तिशाली बनना है ताकि आगे वे जीवन भर के लिये बल संचित कर लें। यह समाधान फिर पत्नी की स्मृति को आगे बिखेर देता। लगता कि पत्नी की आहट वह पा रहा हो। वह पत्नी अपने बच्चों को देखने के लिए आई हो। उसे शायद उस पर भरोसा नहीं है कि वह ठीक व्यवस्था कर रहा होगा। माँ अपने बच्चों का मोह त्याग नहीं सकती है। वह कुतिया तो मरे हुए बच्चों को सूंघती थी कि शायद उनमे प्राण हों। जब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि अब प्राण नही है तो वह लौट आई और फिर उनको देखने नहीं गयी थी। उसकी आँखों के आगे ही चील बच्चों को उठा कर ले गयी, पर उसने उधर आहट पाकर भी न देखा था। माँ की उस अवज्ञा के प्रति रामदीन ने शिकायत कर उस कुतिया को धुधकारा था। पर पशु तो भू-भू-भू करता उसके चरणों में सिर रख कर भाग गया था।

कुत्ते के भूखने की आवाज से रामदीन की आँखें खुलीं। सबेरा हो आया था। सुन्दरिया खाँस रही थी। वह बच्चा भी बेचैनी में तड़प रहा था। उसने बच्चे को देखा। वह कुछ ठंडा सा था। उस बच्चे का बुखार उतरा हुआ मिला। वह पसीने मे भीगा था। उसने पीने को पानी माँगा। रामदीन ने उसे पानी पिलाया पर वह तो खाँसने लगा, खाँसता-खाँसता रहा। वह तो कुत्ते की तरह खांस रहा था। उसको आँखें लाल हो आई, पुतलियाँ फैल गयी। गले की नसें उठी और फिर भी वह सारी शक्ति लगा कर खाँस रहा था। रामदीन ने उसे गोदी में लेकर अपने फटे हुए ओवरकोट से दबाया। वह बच्चा तो खाँसता-खाँसता एकाएक चुप हो गया था। रामदीन बड़ी देर तक उसे गोदी मे लिए रहा। वह उसकी पत्नी की अंतिम धरोहर है। भगवान उसे कष्ट से मुक्त कर दें। चाहे तो वह इसके बदले अपना जीवन उत्सर्ग कर सकता है। उसका गला भर आया। वह इस बच्चे का हर हालत में रक्षा करना चाहता है। वह बच्चा अब थका सा सोने लगा। रामदीन ने उसे अपनी छाती से हटा कर बिस्तर पर सुलाना चाहा कि चौक कर चीख पड़ा।

तभी सुन्दरिया रो उठी 'मेरा भैय्या।'

वह खांव-खांव-खांव करके बड़ी देर तक खाँसती रही।

रामदीन अवाक् उस फैली हुई गृहस्थी पर दृष्टि डालता रह गया। कुतिया चुपचाप उस बच्चे को निहार रही थी। दोनो पिल्ले सुन्दरिया के पास धीमे स्वर में भू-भू-भू कर माँग कर रहे थे कि वह उनको सहला कर प्यार करे।

वह कूकरखांसी संभ्रान्त परिवार ने उस कोचवान के परिवार को सौंप कर उसका बलवान बच्चा छीन लिया था।

फाँद

इधर बहुधा कामकाज से थक जाने पर जब मैं पलंग पर लेटा हुआ आराम करता हूँ, तो पुरातन की कई स्मृतियाँ याद हो आती हैं। उन दिनों मैं उनको साधारण घटना समझता था और इसीलिए कभी उस ओर ध्यान नहीं दिया, पर आज उनसे बल मिलता है। जहाँ मन में भावुकता का ज्वार उठा और मुझे दुर्बलता ने घेरा, तो पिछले जीवन की घटनाओं की ओर झाँक कर समकालीन किसी सबल संघर्ष से नूतन बल पा जाता हूँ। फिर वह तीव्र गति में एक प्रवाह-सा बाहर फूटकर निकल आता है।

लगभग तीस साल हुए मुझे उस कस्बे में जाने का पहला अवसर मिला था। पारिवारिक संकट के कारण हम मैदान छोड़कर उस पहाड़ी कस्बे में आ गये थे। वहीं के सरकारी स्कूल की पाँचवीं श्रेणी में मेरा नाम लिखवाया गया। कार्तिक चतुर्दशी के मेले में मैंने देखा कि एक बूढा कुम्हार सुन्दर मिट्टी के खिलौनों की दूकान सजाए हुए है। वे खिलौने साधारण फल, जानवर, चिड़ियाएँ अथवा कमकरों के दैनिक कार्य के प्रतीक ही नहीं थे, उनमें कुछ ऐतिहासिक परम्परा वाले थे और उनको स्वाभाविक रंगों से रँगा गया था।

मैंने सावधानी से उस व्यक्ति की ओर देखा। उसके चेहरे पर झुर्रियाँ थीं और सफेद दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। वह सफेद पगड़ी, गबरून का मोटा बन्द गलेवाला कोट तथा पायजामा पहने हुए था। उसकी आँखों पर पतली कमानी का छोटे लेन्सोवाला चश्मा था। मैं बड़ी देर तक उसके

खिलौनों को देखता रहा और फिर भारी हिचक के साथ कहा कि मुझे कुछ खिलौने पसन्द हैं, पर पैसे घर से लाकर दूंगा। मैं तब तक के लिए उनको छाँटकर अलग रख देना चाहता था कि कोई और खरीददार उनको न ले ले। मेरी बात सुनकर वह मुस्कराया और कहा कि मैं अपनी पसन्द के खिलौने ले लूं; पैसे वह मेरे घर से ले लेगा। उसके उस अपनत्व पर मैं गद्गद् हो उठा।

घर पर माँ ने बताया कि वह फौंदू है। उसका परिवार कई पुश्त से यह काम करता आया है। खिलौने के अलावा वह परिवार शाही सुराहियाँ बनाने में भी उस्ताद है। हमारे परिवार का उससे घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। पहले कई पुश्तों तक जबकि मेरे परिवार के लोग राजदरबार में नौकरी करते थे तो यह शाही परिवार का कारीगर, अन्य अधिकारियों की भाँति हमें भी मिट्टी का आवश्यक सामान समय-समय पर दिया करता था। राजधानी के वहाँ से हट जाने के कारण हमारे दादा ने फिरंगी की नौकरी स्वीकार कर ली। हम अधिकतर मैदान में ही रहा करते और इस परिवार से नाता टूट गया था।

माँ का कहना था कि शादी के अवसर पर वह जो सामान दिया करता, वह सजावट में अपूर्व होता। माँ ने बताया कि कई पुरानी सुराहियाँ आज भी घर में पड़ी थीं और वह उनमें बढ़िया तिल व बासमती आदि रखती है। वे बहुत मजबूत बनी हैं। वह तो इस बीच हमारे परिवार में दो बार आया और मुझे घर पर न पाकर उसे दुख हुआ था। वैसे तो वह कई बार मुझे खेल के मैदान में फुटबाल खेलते हुए देख चुका था। उसने माँ से कहा कि मैं अपने पिता की भाँति ही लम्बे शरीर का हूँ और मुझे देखकर आसानी से सैकड़ों लड़कों के बीच पहचाना जा सकता है। उस सहृदय व्यक्ति ने जिस भाँति मुझे खिलौने चुनकर बिना किसी मोल-भाव के ले जाने दिए, वह सौदागरी का मेरा नया ही अनुभव था। सौदागर तो कभी अपनी चीजों को इतनी आसानी से नहीं देते और फिर मेरा भरोसा कर लेना बिलकुल नई बात थी।

उस दिन हम प्रतीक्षा करते रहे पर वह नही आया और माँ ने बताया कि बडी रात तक मेला लगता है, अतएव उसके बाद आना संभव नही है। फिर भी न जाने क्यो विश्वास-सा होता कि वह अवश्य आवेगा। उसकी आँखों का आग्रह कि वह मुझे पहचानता है, मन मे नई उमंग लाता। वह फिर भी नही आया था। अगले दिन शाम को वह आया और कुछ और खिलौने लाया था, जिनम कि तीर कमान लिए हुए एक राजपूत सैनिक था। खिलौने रखकर बडी देर तक वह मुझे अपनी छाती से चिपकाए रहा और उसकी आँखो से आँसू की धारा बह निकली। वह गद्गद् स्वर मे बोला कि वजीरो का खान्दान फले फूलेगा, उन लोगों ने सदा ही गरीबो की मदद की है। माँ के पूछने पर कि मेला कैसा रहा, उसने बताया था कि अब इस कारोबार से गुजर नही होती है।

रात्रि को उसने खाना हमारे ही यहाँ खाया था और बड़ी देर तक राजदरबार, बाढ और अंत मे अकाल की कहानियाँ सुनाता रहा। वह सब बातो को, भले ही वे सालो पुरानी थी कल की ही कहता था और मेरे एक बार टोकने पर उसने बताया कि हमारी 'कल' ऐसी ही होती है। उसने बताया कि गंगा नदी पहले इस ओर नही बहती थी। वह राजमहल के दक्षिण की ओर बहती थी। गौना ताल मे पानी भर गया और विलायती चूहो को अंग्रेज ने मंगाया था। चूहों ने पहाड पर सूराख किए। सबको आशा थी कि पानी सीधे ही निकल जावेगा, पर पुल को सँकरी घाटी पर एकाएक बड़े-बड़े पेड़ों की दीवाल-सी बन गयी और बाढ का पानी पीछे की ओर मुडकर उस फैले हुए शहर के ऊपर छा गया था। उस समय सारा शहर जलमय हो गया और चार रोज के बाद जब पानी बह गया तो शहर का कोई निशान नही बचा था। वह बड़ा राजदरबार बिलकुल नेस्तनाबूद हो गया। उस सुन्दर दरबार का वर्णन करते हुए उसकी आँखें गीली हो आई थी। राजा के चले जाने पर उसके पिता ने अपनी मातृभूमि नहीं छोड़ी। इसी लिए वे लोग वही रह गये थे।

उसकी धारणा थी कि जब से अंग्रेज वहाँ आए, तब से वहाँ का कारो-

बार नही चलता। लोहे के खिलौनों के मुकाबले मिट्टी के खिलौने लोग नहीं लेते। बाजार में रबड़ और टिन के खिलौने आ गये थे। वह तो बतला रहा था कि उसके परिवार ने बड़ी मेहनत से इस कला की रक्षा की है। उसका पिता उसे कई रईसों के घर ले जाकर, वहाँ पुराने जमाने की तसवीरें दिखलाकर समझाता था कि इस तरह रंग भरा जाता है। अपने पिता के साथ वह सारा पर्वत प्रदेश घूम चुका है और वहाँ के सब जीव-जन्तुओं से परिचित है। उसका पिता सीख दे गया था कि अपनी जन्मभूमि नहीं छोड़नी चाहिए, चाहे कितनी ही मुसीबतें क्यों न झेलनी पड़ें।

पिता से उसने देश-प्रेम की सीख पाई और पिता ने ही उसे बताया कि जब तक वह झमता, जानवरों, पशुओं, फलों, पौधों आदि से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित नही कर लेगा तब तक वह अच्छा कारीगर नही हो सकता है और न जनता की रुचि के खिलौने ही बना सकता है। पिता से उसने प्राकृतिक रंगों का ज्ञान पाया था। वह देश की मिट्टी को भली भाँति पहचानता था।

उस व्यक्ति से बड़ी रात तक मैं इन सब बातों को सुनता रहा था। वह तो इन सबको चुपचाप छिपाए रखता है। उसका कोई लड़का नही है। उसकी पत्नी एक लड़की की पैदायश के बाद मर गयी और फिर उसने शादी नहीं की। लोगों ने समझाया कि अभी उसकी अवस्था ही क्या है, मर्द तो साठ साल तक भी दूल्हा बन सकते है, तो वह फीकी हँसी हँसकर बोला था कि यह बड़े घरानों के लिए है। गरीब की जिन्दगी तो रोज की रोटी जुटाने में ही बीत जाती है। उसने अपनी लड़की को अपनी कारीगरी को समझाने की चेष्टा की तो अड़ोस-पड़ोस की औरतों ने कहा कि वह तो पराया धन है। उसने अपने नजदीक के रिश्तेदारों के लड़कों को वह विद्या सिखलानी चाही तो उन लोगों ने कोई रुचि नही ली।

इस बात का उसे बहुत दुख था कि उसके परिवार की उस कला का अंत हो जायगा, पर वह विवश था। सुपात्र के न मिलने पर कुपात्र को इसे सौंपने का वह पक्षपाती नहीं था। वह तो कहता रहा कि इस काम में बड़ा

सब्र और मेहनत चाहिए। यदि आँख खोलकर आज की तब्दीलियाँ न देखी जाँय, आज के रीति-रिवाज न समझे जाँय, आज की रुचि न भाँपी जाय, बाजार में बाहर से आने वाले खिलौनों पर ध्यान न दिया जाय, तो कारोबार नहीं चल सकता है। फिर लकड़ी, लोहे और पत्थर के मजबूत खिलौनों के आगे साधारण खिलौनों को लेकर नहीं टिका जा सकता है।

माँ ने पूछा कि लडकी मेले में नहीं आई तो वह हँसकर बोला कि वह पुरखिन बनकर मुझे सीख दिया करती है। सन्देश भेजा है कि घर किसे सौंपा जाय। यह भूल हो गयी, लड़की दूर ब्याही है। किसी को भेजकर बुलाना आसान नहीं लगता है। नजदीक की बात होती तो वह स्वयं चला जाता। लड़की को तीन लड़कियाँ और चार लडके थे। यह भी बताया था कि लडके स्कूल में पढ़ते हैं। उसका बडा नाती मेरी उम्र का था। मुझसे उसने अनुरोध किया कि मैं जब कभी मैदान पढ़ने जाऊँ तो उसका ख्याल अवश्य रखूँ। हँस कर माँ से कहा था कि लड़की के दो जँवाई हैं और तीसरी लड़की की मँगनी हो गयी है। यह इशारा किया था कि लड़की कहती है कि अब मैं कारोबार छोड़कर उसी के पास रहूँ; पर लड़की के घर में रहना कहाँ संभव हो सकता है? वह तो अपने उस मकान पर, जहाँ कि उसका पिता मरा, अपना अन्त देखना पसन्द करेगा।

जब वह सोने चला गया तो मैं बड़ी देर तक उस अद्‌भुत व्यक्ति के बारे में सोचता रहा। उसकी जानकारी नई पीढ़ी के लोगों को कम थी। वह मिट्टी से निर्माण का सबक सिखाने वाला कलाकार बड़ी देर तक मेरे मस्तिष्क में कई चित्र बनाता रहा। मैं कब सो गया न जान सका, पर अगली सुबह उठा तो माँ ने बताया कि वह चला गया था। मैंने उसके लाए हुए खिलौने आतसखाने पर सजाए। बड़ी देर तक उनको देखता ही रह गया था।

—फौदू से फिर नगर के रोजाना जीवन में मिलना होता ही रहा। वह एक दिन अपनी दूकान पर ले गया और मुझे स्टूल पर बैठाकर सामने की

को मालूम थी।

अब चाक चलाना बन्द कर वह मुझे अपने कमरे में ले गया, जहाँ कि उसका खानदानी सामान संग्रहीत था। उसके दादा, पड़दादा, पिता तथा स्वयं उसके अपने बनाए हुए कई कारीगरी के नमूने थे। वह तो हँसकर बोला था कि यही उसकी जायदाद है और उसके पास कुछ नही था। वह चाहता था कि उनको सुरक्षित रखने के लिए दो-तीन आल्मारियाँ बनवा ले, पर पैसा बचता ही नही था। लोग केवल कुल्हड़ों की माँग करते तथा साल भर मे एक बड़ा मेला पड़ता, जिससे कि कोई खास आमदनी नहीं थी। उसकी उस हवस को पूरा करने के लिए मैंने वायदा किया कि उसे एक पुरानी आलमारी अपने घर से भेज दूँगा। वह चाहता था कि वे खिलौने कही ऐसी जगह भेज दिए जावें, जहां उनकी हिफाजत हो सके। मकान पर चूहे ही रात को उछल-कूद मचा, कई खिलौने तोड़ डालते, जबकि वह उनको जीवित प्राणियो की भाँति रक्षा करता था।

उसने मुझे एक सैनिक दिखलाया जो कि नेपालियों से लड़ाई लड़ता हुआ मारा गया था। एक लम्बी पूँछ की चिड़िया दिखलाते हुए कहा कि वह ऊँचे बर्फीले पहाड़ों पर रहती है। बाज पक्षी दिखलाया जो कि छोटी-छोटी चिड़ियाओं को खा जाता है। लड़ाई के जमाने में सिपाहियो के मुँह से सुने हुए कई हथियार उसने बनाए थे, भले ही उनमे वह सचाई न रही हो। मिट्टी के उस खजाने का मूल्य औरों के लिए भले ही कुछ न था, पर मेरे लिए वह सब एक नई घटना थी। जिस परिवार ने सदियो से देवी-देवताओं, बुद्ध, पाडव, रामलीला, मुगल-कला, राजपूत-कला के साथ-साथ पहाड़ी-सौन्दर्य की रक्षा की, उस परिवार के लिए श्रद्धा से मेरा माथा झुक गया था।

उसने डबडबाई हुई आँखों से कहा कि मेरे पिताजी जीवित रहते तो कोई प्रबन्ध अवश्य कर देते। उनसे सुना था कि लखनऊ मे कोई अजायबघर है, जहाँ कि ऐसी चीजें सुरक्षित रखी जाती हैं। मैंने भी वह अजायबघर देखा था पर वहाँ मुझे राजाओ का ऐश्वर्य ही अधिक मिला और फिर

मुझे वहाँ की अधिक जानकारी नहीं थी । पिताजी की कई बातें वह दुहराता था । उसी ने कहा कि एक बार वे उसे अपने साथ लखनऊ लेकर जाने वाले थे, पर उसे निमोनिया हो गया और बात टल गयी । वह उस नई सभ्यता की जानकारी चाहता था, जो कि देशों में फैली और जिसकी साधारण झलक भर वहाँ चमक के रूप में पहुँच पाई । मुझे स्वयं उस सबकी जानकारी कम थी और इसीलिए मैं उसकी बातों का कुछ समाधान नहीं कर पाता था । उसकी भावुकता के लिए मेरे पास क्या था कि मैं उसे सौंप सकता ? वह फिर भी न जाने क्यों मुझ से आशा करता कि मैं उसकी सभी बातों का समाधान कर सकूँगा । मेरे मना करने पर भी अपने पिता तथा दादा के बनाये हुए एक-एक खिलौने उसने मुझे दिए थे । यदि दूसरा इसके लिये सैकड़ों रुपये भी देता तो वह इनको उसके हाथ न बेचता ।

उस दिन मैं लौट आया था । इसके बाद सैकड़ों बार मैं उससे मिला। प्रति वर्ष मेले पर मैं उसकी दूकान पर बैठ कर उसे खिलौने बेचने में सहायता दिया करता । जब कभी मैंने परीक्षा पास की तो उसके पास जाकर इसकी सूचना दे आता था । घर पर यदि कोई बढ़िया पकवान बनता तो उसे दे आता । उसे जलेबियाँ खाने का शौक था और हँस कर कहता कि बुढ़ापे में जीभ चटोरी हो जाती है । भुना हुआ गोश्त उसे बहुत भाता था ।

वह एक बार रेलगाड़ी देखना चाहता था, पर सत्तर-अस्सी मील का पहाड़ी रास्ता पैदल तय करना बहुत कठिन था । इसीलिए मैंने उसे समझाया था कि जब मोटर चलने लगेगी तो मैं उसे अपने साथ ले जाकर दिखला दूँगा । रेल की एक तस्वीर मैंने उसे दिखलायी थी । कई और तस्वीरें उसे दिखलाता रहता था । वह तो हँस कर कहता कि जवान होता तो उनको भी बना लेता । अब तो बुढ़ापे में कुछ याद नहीं रहता और इधर-उधर हाथ उलझा करता है ।

मैं उसके भूगोल के ज्ञान पर मुग्ध था । गर्मियों में जब कि उस कस्बे से बद्रीनाथ जाने वाले यात्री गुजरते, वह उनसे सब बातें पूछा करता और मुझे बताता था कि ये यात्री ही उसके गुरू रहे हैं । इनसे उसने बहुत

कुछ चुन लिए और अपने घर लौट आया। उसके बाद कई दिनों तक मैं बेचैन रहा। जो चला गया उसकी कुछ याद भर ही तो मेरे पास थी।

फौंदू ने मुझे जीवन में बल दिया और सदा समझाया कि जीवन को समीप से देखने-समझने के लिए साधारण लोगों से बहुत कुछ सीखना है। उसी ने मुझे बताया था कि बिना अपनी धरती से प्रेम किए वहाँ के लोगों की जानकारी नहीं हो सकती है।

मेरे आलसखाने में उसकी बनाई हुई मूर्ति है—जिसमें कि एक पहाड़ी रमणी घास का पूला सिर पर धरे हुए खड़ी है।

दिया। वे चाहते थे कि उस लिपिक को तुरन्त 'कार्य विरत' किया जाय किन्तु मैंने कहा कि कल पूरी फाइल के साथ अपना सुझाव दें। वे कोतवाली फोन करके उस पर दबाव डलवाना चाहते थे कि वह लिखकर अपना अपराध स्वीकार कर ले। यह संदेह सा प्रकट किया कि वह शहर छोड़ सकता है; कम से कम उससे बातचीत करली जाय। सब सुनकर मैंने झुंझलाहट मे कहा कि पहले मुझे पूरी रिपोर्ट दी जाय और चुपचाप सिगार पीता रहा।

उस लिपिक ने पिछले तीन-साल मे पाच हजार का गबन किया जानकर मै दंग था। प्रति दिन समाचार पत्रो मे ऐसे समाचार पढने का आदी हूँ, यह काड मेरे कार्यालय मे हुआ तो एकाएक विश्वास नहीं कर सका। विवेक की कसौटी पर सब कुछ परखता रहा। मैं मानवता और क़ानून के पहलुओं पर सोच रहा था। तीन वर्ष पहले मैं यहाँ आया हूँ। गबन करने वाले युवक की अवस्था सताईस-अठाईस साल की होगी। वह बहुत सरल युवक लगता था। वह कार्यालय में आठ साल से कार्य कर रहा है, उसने अच्छी श्रेणी मे बी० ए० उत्तीर्ण किया। कालेज के जीवन में खेल, डिबेट तथा अन्य कार्यो में भाग लेता रहा। मुझसे पहले के दो अधिकारी उसके सम्बन्ध मे लिखकर छोड़ गये है कि वह आज्ञाकारी, चरित्रवान् तथा ईमानदार युवक हैं। वह सदा ही गोपनीय कार्य करता रहा है। मुझे स्वयं उसके कार्य से सतोष हुआ है। इसीलिए उसे पिछले साल अतिरिक्त वेतनवृद्धि दी गयी थी। जब कभी भी वह आवश्यक पत्रों पर हस्ताक्षर कराने के लिये आता था तो सदा मूक खड़ा रहता। उसके ड्राफ्टों में कुछ जोड़ने की गुंजायश नही होती थी। मैं सरसरी नजर से देखकर उन पर हस्ताक्षर कर दिया करता था। मै उसके कार्य से इतना प्रसन्न था कि शीघ्र ही उसे नए ग्रेड में रखने की बात सोच रहा था।

आज कार्यालय पहुँचकर मैंने उस घटना पर विचार किया। मन में कई बातें उठीं। मैं मानव स्वभाव की ऊँचाई और नीचाई की दूरी का

कोई ठीक सा अनुमान न लगा सका। मैं अपने विवेक से तोलता रहा कि जब वह सरल युवक अपराधी हो सकता है तो फिर भरोसा किस पर किया जाय ? बड़े बाबू को बुलाकर डाँटा कि वे कार्य का भली-भाँति निरीक्षण नहीं करते हैं। उनकी मेज के चारों ओर दिन भर बाबू लोगों का जमघट लगा रहता है और वहाँ गप्पें लगती हैं। उनको चेतावनी दी कि उनकी लापरवाही से यह सब हुआ है। गबन की पूरी जिम्मेवारी उनकी है। मुझे समय से रिपोर्ट मिल जानी चाहिए। उनके गिड़गिड़ाने पर मैंने उनकी कोई बात सुनने से अस्वीकार कर दी। गुस्से में कहा कि वे तत्काल मेरे कमरे से बाहर निकल जाँय। अब मैंने कई फाइलें एक-एक कर पढ़ीं और बिना कोई निर्णय लिए, वैसे ही रख दी।

मैंने कार्यालय के वातावरण में एक विचित्र सी चुप्पी पाई। जो कोई कारण हो आज मिलने के लिये कोई नहीं आया। बड़े बाबू का विवरण आने पर मैंने उसे गम्भीरता से पढ़ा। सब आंकड़े देखे। जाली हस्ताक्षर तथा मुहरें बनाकर ट्रेजरी से बिल पास कराकर बैंक से भुनाए गये थे। कुछ रकमें बिना खर्चे के जाली वाउचरों पर निकाली गयी थीं। सब पढ़कर मैंने उस पर विचार किया। अब उस चिट्ठी को खोलकर पढ़ा। घंटी बजाई और चपरासी से पत्रवाहक को भीतर बुलवाया।

आगन्तुक सहम कर भीतर आया और उसने मेरा अभिनन्दन किया। मैंने पूरी दृष्टि से उसे देखा और कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। फिर घंटी बजायी और रामनाथ बाबू को बुलवाया। अब मैंने सरसरी नजर उस रिपोर्ट पर डाली और अनजाने सा कोई हल ढूंढने लगा। रामनाथ के आने पर मैंने पूछा, 'आपने इसे देख लिया है।'

'जी नहीं।'

'आपने गबन किया है ?'

'जी हां।'

इस पर मैं कड़ा पड़ गया। गुस्से में बोला, 'मैं इस मामले को

पुलीस में दे रहा हूँ ।'

यह सुनकर वह गिडगड़ाया नहीं, चुप रहा। उसके चेहरे का रंग फीका नहीं पडा और न एक अपराधी वाला निम्न-आत्मभाव ही आया। मैं उसे अवसर देना चाहता था, कि वह सब बातों का लिखित उत्तर दे। 'बड़े बाबू से रिपोर्ट की नकल लेकर, उस पर अपना बयान चौबीस घंटे के भीतर दे दीजिए।'

उस रिपोर्ट पर मैंने वही लिखा और फाइल उसे दे दी। उसके चले जाने पर शून्य सा न जाने क्या हल ढूँढता ही रह गया। जब आंखें खोलीं तो पाया कि आगन्तुक सहमा सा खडा था। अब साहस कर बोला, 'मैं जा रहा हूँ।'

उसे बैठने को कहकर मैंने दुबारा पत्र पढा और फाड़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया। फिर पूछा, 'आपने कहाँ तक शिक्षा पाई है?'

'एम० ए० फाइनल में इस साल आर्थिक कठिनाइयों के कारण सम्मलित नहीं हो सका। अगले साल प्राइवेट परीक्षा देने का विचार है।' यह कहकर वह चुप हो गया। फिर कुछ सोचकर सा बोला, 'पिछले साल प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त हुए। इस वर्ष घरेलू झंझटा के कारण पढाई न हो सकी। गणित ऐसा विषय है कि नियमित पढाई चाहिए।'

उसका शरीर दुबला पड गया और चेहरे पर झाँई पड़ी हुई थी। शरीर पर भुखमरी के चिन्ह थे। वह सब देख कर मैं दंग रह गया। मन में उलझन हुई। फिर कुछ सोच कर बोला, 'आप कल से काम पर आइए। मैं आपको तीन मास के लिए सौ रुपया माहवारी पर अस्थाई नियुक्ति दे रहा हूँ। आगे के लिए कोई आश्वासन नहीं दे सकता हूँ। जब लिपिकों की नियुक्ति के लिए परीक्षा हो तो आप भी सम्मलित हो सकते हैं।'

यह सुन कर उसकी बुझी हुई आँखों में प्रकाश की लहर दौडी। उसके मुरझाये हुए चेहरे पर जीवन के लक्षण दीख पड़े। मैंने कार्यालय के लिए एक चिट लिख उसे दे कर सुझाया कि वह तुरंत बड़े बाबू से

मिल ले। उसके चले जाने पर मित्र के पत्र की पंक्तियाँ याद आईं। लिखा था कि कभी यह परिवार सम्पन्न था। कुछ जमीदारी थी। पिता सब फूंकफांक कर मर गये। आज आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गयी है कि दो वक्त भोजन प्राप्त नही होता है। उस युवक को नया जीवन देने का यह प्रयास सही सा लगा।

मैं उलझन मे सा था कि बडे बाबू चुपके आए और पूछा, 'रामनाथ बाबू को 'कार्यविरत' कर ही देना चाहिए। उसके परिवार की हालत भली नहीं है। रुपया वसूल होने की कोई संभावना नही है। उसकी पत्नी को दो साल हुए निमोनिया हुआ था, तब से वह बीमार रहती है। तीन बच्चे है। पिछले दिनों सुना कि बहिन की शादी के तिलक में चार हजार खर्च किया था। आफिस के लोगो का कर्जा अलग है। बाजार का भी बहुत लेन-देन है। सौ रुपया माहवारी तो सुना कि दवा में ही खर्च हो जाता है। यह मामला पुलीस को देना ही पडेगा।'

सब बातें मैंने गंभीरता से सुनी। रामनाथ के बारे में कुछ जानने की जिज्ञासा रख भी चुप रहा। उस पर अनुशासन की कार्यवाही की जानी चाहिए यह सच बात थी, फिर भी न जाने क्यों उसके प्रति मन मे सहानुभूति थी। क्या उसका कोई निकट संबंधी रुपया जमा नही कर सकता है। रुपया जमा न होगा तो फिर मामला पुलीस मे देना ही पड़ेगा। इससे रुपया भले ही न मिले उसे जेल हो जायगी। उसका परिवार नष्ट हो जायगा। यह विचित्र ही स्थिति होगी। रामनाथ इस पर क्या सोचता होगा? उसने अपराध स्वीकार कर लिया है। उसे तो पुलीस और हवालात किसी का भय नही है। उसकी बहिन की शादी नहीं हो सकेगी। मैं इसी उधेड़ बुन में था कि बड़े बाबू ने सुझाव दिया, 'आप उचित समझें तो उसको आपके सामने बुला कर बयान ले लेना चाहिए। यह कार्यवाही आवश्यक है। वह लिख कर देने के लिए तैयार है कि यह सब उसने ही किया है।'

मुझे कुछ उत्साहित न देख कर बोले, 'पीटर साहब के जमाने मे दस

साल पहले, सौ रुपए गबन का सवाल आया था तो उन्होंने उसी समय पुलीस को फोन कर दिया। वह बाबू हरासत मे ले लिया गया। इधर पिछले दिनों छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया इसीलिए यह सब करने का साहस बढ गया है।'

मैंने बड़े बाबू को इस पर कुछ न कह कर बताया कि कल से एक लड़के की नियुक्ति मैंने की है, तो वे हक्के-बक्के से रह गये। और अपने बुढापे का फायदा उठा कर बोले, 'सरकार ने बहिन के लड़के के लिए कहा था। वह एक साल से टाइप सीख रहा है।'

लेकिन मै चुपचाप फाइल खोल कर पढ़ता रहा और वे मेरा रुख समझ कर चले गये। उनके चले जाने पर मैं उस काइयाँ व्यक्ति पर सोचता रहा। वह एक-एक साधारण नियुक्ति पर दो सौ रुपये तक लेता है। नौकरी के दौरान में उसने अपने रिश्तेदारो के नाम चार मकान खरीदे हैं। इसके अलावा और छोटे-मोटे व्यवसायों में भी रुपया फँसाया हुआ है। दो साल पहले उसने अपनी लड़की की शादी में लगभग बारह हजार खर्च किया। पुलीस वाले अभी भी उसकी जाँच कर रहे है कि इतना रुपया कहाँ से कमाया है। बिना घूस लिए वे किसी कागज को आगे नहीं बढ़ाते हैं। यह सब अनैतिकता बरतने पर भी कानून उनका कुछ नही बिगाड़ सकता। कन्ट्रोल के जमाने में बड़े बाबू ने सब तरह कमाया और एक बार फँसने की नौबत आई थी कि उनके पुलीस के दोस्तो ने सारा मामला दबा दिया। अफसरों की सेवा कर वे चाँदी काट कर कहते हैं कि चाँदी के जूते से अफसर सीधे चलते हैं। उनसे नैतिकता की बात सुन कर मुझे बड़ी हँसी आई।

जब मैंने यहाँ पहले-पहल चार्ज लिया तो एक दिन संध्या को पत्नी ने बताया कि यहाँ के बड़े बाबू समझदार मालूम पड़ते है। राशन तथा सब सामान चपरासियों के हाथ भिजवा कर साथ में बिल भेज दिया है। दूसरे जिले के चपरासी तो मँहगा सौदा लाते थे और रुपये मे दो आना जरूर खा जाया करते थे। यहाँ उतना ही सामान आधे दामो में आ गया और बार-

बार सामान लौटाने की आवश्यकता भी नही पड़ती हूँ। मैंने सावधानी से बिल देखा तो दग रह गया कि बाजार के निर्ख से सब चीजें सस्ते दामों मे दी गयी हैं। इस पर मुझे बहुत गुस्सा आया था और मैंने बड़े बाबू को बुला कर चेतावनी दी थी कि भविष्य मे वे ऐसी हरकत करेंगे तो मैं उनको बरखास्त कर दूँगा। वे काफी गिड़गिड़ाये थे और पत्नी ने भी उनका पक्ष लेकर रात को काफी देर तक लेक्चर दिया था। उसने बताया था कि बच्चे तो उनसे इतने हिलमिल गये हैं कि एक मिनट भी उनको नही छोडते हैं।

मुझे पत्नी की बातों से आश्चर्य नही हुआ था। बड़े बाबू की चतुराई की सराहना की थी कि वे परिवार के सबसे निर्बल अंग पर धावा बोलते है। आगे वे बिना बुलाए परिवार मे कभी नहीं आए। न उनके बाग से फल आए और न कछियार से तरकारियाँ। उनके तालाब की रोहू मछलियाँ भी फिर नहीं दीख पड़ी। यह भी सुना कि वे अब मायूस रहकर कहते हैं कि अंग्रेज का जमाना ही नौकरी के लिए ठीक था, आज तो सरकारी नौकरी बनिये की मुनीमी से भी बदतर हो गयी है। आज जब कि अफसर ही अपने नीचे के अहलकारों की इज्जत नही करते हैं, तो फिर औरों की क्या बात है। अंग्रेज अपने मातहतो का बडा ख्याल रखता था। सब की हिम्मत उनके बँगले पर जाने की नहीं होती थी। जब वे आफिस में आते तो सन्नाटा छा जाता था। कोई चूँ नही कर सकता था। आज के अफसर तो न जाने कैसे हो गये हैं कि उनको अपनी मर्यादा का कोई ध्यान ही नही रहता है।

बड़े बाबू के चले जाने पर मैंने मानव की सबलता और निर्बलता वाली कसौटी पर सोचा। मेरी निजी धारणा थी कि रामनाथ सबल युवक है। इस घटना के बाद भी अपना मत न बदल सका। बडे बाबू मुझे उससे नैतिकता में सदा ही कच्चे मिले। आज वह निर्बल चरित्र का बड़ा बाबू जीवन में सफल था और रामनाथ जीवन के जुए में हारा हुआ खिलाड़ी। वह असफल रहा। उसक. कोई भविष्य नही है। उसकी रक्षा नहीं हो सकती

है। समाज के बनाए हुए विधान की कसौटी पर वह अपराधी था। मानवता के नाते उसकी कठिनाइयों पर सोच कर भी उसे क्षमा करने का अधिकार किसी को नहीं था। इसीलिए उस अपराध पर मैंने अपना कोई मत अभी तक नहीं दिया। मैं रामनाथ का तर्क जानना चाहता था कि वह अपने बचाव में क्या कहता है।

मैं संध्या को घर लौटा तो बहुत थका हुआ था। मैंने चाय पी और नाश्ता न करने पर पत्नी ने टोका तो चुप रहा। बाहर बच्चे खेल रहे थे। उनकी किलकारियाँ भी मेरे मुरझाए हुए हृदय में प्राण नहीं उडेल सकीं। मैं कुछ देर बाहर मोढा पर बैठा हुआ अपने मन मे ही जाने क्या बूझ रहा था। सामने बच्चे खेल रहे थे। मैं सूना-सूना सा उठा और उनके पास खड़ा हुआ। उनकी अबोधता को हृदय में भर लेने का निरर्थक सा प्रयास करता रहा। वे तो अपने में ही मस्त थे। मैंने भीतर आकर मुंह धोया, कपड़े बदले और अकेले ही घूमने के लिए निकला।

—मैं घूमते हुए अपने मित्र के बँगले पर पहुँचा। वे बाहर लाउन पर बैठे हुए अपने मुवक्किलों से बातें कर रहे थे। मुझे उस जाति की कार्य-प्रणाली के प्रति स्पर्धा हुई। ये लोग सुबह से मध्यरात्रि तक काम करने मे संलग्न रहते हैं, मानो कि मुव्वकिल और उनकी कानूनी दफाएँ ही उनकी दुनिया हो। उनकी मिसलें समाज के कई प्रश्नों को सुलझाने की चेष्टा कर भी न्याय की दृष्टि से असफल रहती हैं। उन्होंने मुझे देख कर बैठने का आग्रह किया। फिर जमहाई ली और मुवक्किलों से बोले कि सुबह को सात बजे आवें, फीस और खर्चे के बारे में मुशीजी से बातचीत करलें।

सबके चले जाने पर उन्होने नौकर को बुला कर दो गिलास शरबत के मँगवाए। अब बोले, 'मित्र, तुमने उनको उबार लिया है। लड़के की माँ भीतर बहूजी के पास बैठी हुई है। मझोली श्रेणी का परिवार है। गाँव में कुछ खेत थे और जंगल। खाने के लिए अन्न जमीन से मिल जाता था दस-पन्दरह साल में जंगल के बिक जाने पर परिवार बड़े खर्चों से उऋण

हो जाता था। जबसे जमींदारी टूटी, इनकी हालत नाजुक हो गयी है। सभी सर्वे कम किए पर अब तो रोटी-रोटी के लिए मोहताज हैं। पन्दरह साला बाँड आधे पर बेच कर खा गये हैं। यह होनहार लड़का है, पर आगे पढ़ने का साधन कहाँ है। फिर अब तो एम० ए० वाले भी बेकार फिर रहे हैं। ऐसे जमाने की कभी कल्पना नहीं की थी।

मैं उनकी बातें सुनता रहा। नौकर शरबत के गिलास दे गया था। मैं घूँट-घूँट पीता रहा। वह नीरस सा लग रहा था। मैं अपने मन की बात कहाँ उनके आगे रख सका था। शायद वे कोई हल सुझाते। तभी छोटी लड़की आकर बोली, 'चाचाजी नमस्ते।'

मैंने उसे पास लेकर थपथपाया। वह अपने पिताजी के कान में कुछ कह कर भाग गयी....। मैं उसी भाँति शरबत की चुस्कियाँ लेता रहा। तभी देखा कि एक अधेड़ महिला आई और वकील साहब के कहने पर पास की कुरसी पर बैठ गयी। वे उस युवक की माँ थीं जिसको कि मैंने नौकरी पर लगाया था। वे आभार प्रकट करने के लिए आई थी। मैंने उस महिला को देखा। बाल सुफेद पड़े हुए, आँखों के नीचे झाँइयाँ पड़ी थीं और चेहरे की हड्डी निकल आई थी। मध्य वर्ग की उस माँ को देख कर मैं दंग रह गया। लगा कि वह मौत की बाट जोह रही है। मैं उससे क्या कहूँ। वह तो मूक बैठी थी। उसकी आँखों की पलकें भीजी हुई थी। मानों कि वह अपने मन का सारा दुख आँखों के द्वारा बहाना चाहती हो, पर एक अजनबी के आगे क्या कहे!

मध्य वर्ग की उस माँ की मूकता ने मेरे हृदय को उद्वेलित कर दिया। उस नारी को मैंने उस वर्ग की प्रतीक पाया। वह वर्ग युद्ध के थपेड़ों से निर्बल पड़ कर अंतिम सांस ले रहा था, वह नरकंकाल भर में सीमित थी। मैं उसके भविष्य की कल्पना नहीं कर सका। वह माँ तो चुनौती देती लगी कि क्या वह वर्ग मिट जायगा। तभी नौकर आइसक्रीम की प्लेटें मेज पर लगा गया और मैं चुपचाप उसे खाने लगा।

वकील साहब बोले, 'शाहजादे ने आज दरोहरी आम की 'आइसक्रीम'

बनाई,' मैं तो चुपचाप खाता ही रहा। वह शरीर के भीतर जम सी रही थी। कभी लगता था कि मेरा हृदय उसी बर्फ के समान जम गया है और वहाँ धुक-धुक-धुक का स्वर सुनाई पड़ रहा था। वह मानो कि मरते हुए मध्य वर्ग की अंतिम सांस हो। उन प्राणों की ममता मुझे सदा ही रही है, वह मेरा अपना वर्ग है; जिस पर कि कभी मुझे गर्व था। उसकी निर्बलताओं को जानकर भी मैं संतोष सा कर लेता था कि उसमें प्रगति करने वाले तत्व विद्यमान हैं, उसके इस प्रकार नष्ट हो जाने की कल्पना से बहुत दुख हुआ।

महिला के चले जाने पर वकील साहब ने बताया कि वे इस परिवार को बहुत दिनों से जानते है। वह शहर में तहसीलदारों के परिवार के नाम से आज भी पुकारा जाता है। वह पच्चीस-तीस साल पहले यहाँ के गिने-चुने परिवारों में माना जाता था। वे उसकी कई बातें सुनाते रहे। अंत में बताया कि आज उनके पास रहने के लिए मकान भर है, जो कि टूटता चला जा रहा है, बच्चों को ठीक तरह से परवरिश न होने कारण वे आवारा हो गये हैं। घर में रोज गाली-गलोज तथा झगड़ा लगा रहता है। जान पहचान वाले सभी का कर्जा है। परिवार की बड़ी लड़की पिछले महीने एक युवक के साथ भाग गयी थी। पन्द्रह दिनों के बाद जब लौट कर आई तो उसका हाल देख कर बहुत तरस आया। लड़कियो में एक उम्र आती है, जबकि उनके हृदय मे सुनहरे स्वप्नों की कल्पना कली फूटती है। माँ की रोज की ताड़ना से ऊब कर उसने सुनहरा भविष्य बनाने की झूठी कल्पना पर विश्वास किया। उसका इसमे कोई दोष नहीं है। वकील साहब उसे बचपन से जानते है। लौटने पर जब माँ ने लड़की को घर मे रखने की स्वीकृति नहीं दी तो वकील साहब की पत्नी उसे अपने यहां ले आई। वह लड़की तो माँ से झगड़ी थी कि वह किसी और के साथ भाग जावेगी। उसे कही न कही ठिकाना मिल जायगा। वह झूठी चुनौती थी, पर उस विवशता पर सब ही दंग रह गये थे। माँ ने वकील साहब से बातें कही थी। वकील साहब का मत था कि वह लड़की बहुत कुशाग्र बुद्धि की है।

मारा, "आज रास्ता कैसे भूल गये है।"

"पिछले महीने तो आया ही था।"

"एक महीने के बाद, देखिए यह कहने के लिए आई हूँ कि अब के लल्लू के बर्थ डे पर कहीं दौरे पर न चले जाइयेगा।"

"वह तो अगले महीने पड़ेगा...." मै उलझन में बोला।

"इसीलिए इतने पहले नोटिस दिया है।"

यह परिवार पूर्ण लगा। बड़ा लड़का इजीनियरिंग में पढ़ रहा है। लड़की की शादी दो साल पहले पी. सी. एस. से हुई है। लड़के की शादी के लिए कई भले घरानों से प्रस्ताव आ रहे है। वह माँ लगभग पैंतीस साल की होगी; पर उसमें उत्साह है, प्राण है। उसकी चुटकियो मे एक नई प्रेरणा का आभास मिलता है। वहाँ जीवन मे निर्मल प्रवाह है।

तभी वे तो एकाएक पूछ बैठीं, "क्या रामनाथ ने सच ही गबन किया है। वीरेन्द्र बतला रहा था।"

"रामनाथ ने गबन किया है !" ताज्जुब मे वकील साहब ने दुहराया। मानो कि उनको विश्वास नही हुआ हो....बोले फिर, 'मुन्नी की शादी मे तो वह रात-दिन काम पर ऐसा जुटा रहा मानो कि अपने ही घर का काम हो। वह तो सच्चरित्र लड़का है।"

मैंने जब सारी बातें बतलाई तो वे दंग रह गये। दुखी होकर बोले, "सब भाग्य की बात है। उसका पिता दुनियादार नहीं था। उसने कभी बेईमानी से रुपया जमा नहीं किया। वह कलक्टरी में हेड नाजिर था। चाहता तो लाखो जमा करता। बेचारा जब मरा तो कर्जा छोड़ गया था। भले आदमियों के लिए तो आजकल जीना ही कठिन है।"

मैं उनकी राय पूछूँ कि वे बोले, "मामला संगीन है; पुलीस काफी परेशान करेगी, और वसूल कुछ न होगा।" यह कह कर वे चुप हो गये। मेरी उदारता पर हँसे कि इस तरह अफसरी नहीं चलेगी, फिर आश्वासन दिया कि कल तक कोई सुझाव देंगे। उनकी पत्नी को विश्वास ही न आता था कि उसने यह किया है। वे बार-बार कहती थी कि लड़का किसी

घाटे का बजट

डाक्टर ने दवा की दो टिकिया देकर कहा 'चबाइए और बरफ की डली चूस कर घूँट डालिए।'

किशोरी बाबू ने वही किया, फिर नीबू चूसा और लेट गये। कुछ देर तक सन्नाटा छाया हुआ रहा। अब उन्होने सिर उठा कर कै करने का प्रयास किया। वे गहरी साँस लेकर खंकारते रहे मानो कि पेट तथा आँतों से अटकी हुई किसी वस्तु को बाहर निकाल लेना चाहते हों। पेट से पानी ही पानी निकलता या अजीब पीले-पीले हरे-हरे छोटे-छोटे कतरे। आँखों की पुतलियाँ फैली और पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें आँखों से टपकी। अब उन्होने चिलमची पर थूका।

डाक्टर ने सावधानी से उसका परीक्षण कर बताया कि दवा पेट मे नहीं रुक रही है। उसने आँखें मूँद कर उस स्थिति पर विचार किया और फिर कागज के टुकड़े पर कुछ लिख दवाखाना आदमी भेजा।

मरीज के हाथ-पाँव की उँगलियाँ मुड़ रही थी। नसें सिकुड़ कर गाँठें बीच-बीच में पड़ गयी। लगता था कि उनका सब पानी निचुड़ गया है। इससे भारी पीड़ा होती। पत्नी तथा बड़ी लड़की मालिश कर रहे थे। वे तो पीड़ा से तिलमिला कर कराहने लगे। यह लगता था कि मानों किसी अज्ञात शक्ति से भीषण संघर्ष कर रहे हों। अब उन्होने इशारा किया कि वे थोड़ा चलना-फिरना चाहते है। धीमे स्वर में बोले थे कि हाथ-पाँव सुन्न पड़ गये हैं। चलने से यह संभव है कि रुधिर की गति तीव्र हो जाय और फिर गाँठें खुल जायँ। वे सच ही उठ बैठे और ठीक

के बहकावे में आ गया। वे उस परिवार को भलीभांति जानती हैं। वह शहर के गिने-चुने पुराने घरानों में से हैं। बहुधा वे भले-बुरे कामों में आपस में मिलते हैं। उस लड़के के प्रति पति तथा पत्नी दोनों की बड़ी आस्था मिली।

अब वे बोली, "टेलीफोन किये देती हूँ। खाना अब यहीं खा लीजिए।" उठ कर चली गयीं तथा कुछ देर के बाद लौट कर बोली, "इजाजत मिल गयी है।"

—हम खाना खा रहे थे। वह लड़की परस रही थी। मैंने उसकी आँखें बुझी हुई पाईं। उसके चेहरे पर जीवन के कोई चिन्ह नहीं थे। लगता कि मानो उसके जीवन की सारी खुशी लोप हो गयी है। मैं रामनाथ तथा उस लडकी की तुलना सा करता रह गया। वे दोनों एक से भविष्य की ओर बढ़ रहे थे। समाज की दृष्टि में दोनों ही अपराधी हैं। उनका भविष्य एक प्रश्न लगा। जिसकी कोई सुलझी हुई नीव वर्तमान में नहीं पड़ रही थी। वे अपने-अपने में ही न जाने क्या-क्या भावनाएं गढते होंगे।

मैं खाना खाकर घर लौटा। वकील साहब और उनकी पत्नी 'कार' से मुझे छोड़ने आई थी। कुछ देर तक हम बैठे हुए गपशप करते रहे। उनके चले जाने पर पत्नी बोली, "रामनाथ की माँ आई थी। वह बड़ी देर तक रोती रही। बार-बार कहती थी कि लड़का बेकसूर है। लड़के को जेल होगी तो सारा परिवार जहर पी कर मर जायगा। लड़की की शादी अगले महीने है...."

मैं पत्नी की ओर टकटकी लगा कर देखता रह गया, फिर चुपचाप कपड़े उतारे और सोने के कमरे में चला गया। बड़ी देर तक नींद नहीं आई। मध्यवर्ग की अजीबो-गरीब झाकियां आँखों के आगे आती थीं। कुछ की कल्पना मैंने आज तक नहीं की थी। उस वर्ग का भविष्य............?

शायद वह कल 'कठपुतली का खेल भर' नहीं रह जायगा।

———

घाटे का बजट

डाक्टर ने दवा की दो टिकिया देकर कहा 'चबाइए और बरफ की डली चूस कर घूंट डालिए।'

किशोरी बाबू ने वही किया, फिर नींबू चूसा और लेट गये। कुछ देर तक सन्नाटा छाया हुआ रहा। अब उन्होंने सिर उठा कर कै करने का प्रयास किया। वे गहरी साँस लेकर खंकारते रहे मानो कि पेट तथा आँतो से अटकी हुई किसी वस्तु को बाहर निकाल लेना चाहते हो। पेट से पानी ही पानी निकलता या अजीब पीले-पीले हरे-हरे छोटे-छोटे कतरे। आँखों की पुतलियाँ फैली और पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें आँखो से टपकी। अब उन्होने चिलमची पर थूका।

डाक्टर ने सावधानी से उसका परीक्षण कर बताया कि दवा पेट में नही रुक रही है। उसने आँखें मूँद कर उस स्थिति पर विचार किया और फिर कागज के टुकड़े पर कुछ लिख दवाखाना आदमी भेजा।

मरीज के हाथ-पांव की उँगलियाँ मुड़ रही थी। नसें सिकुड़ कर गाँठें बीच-बीच में पड़ गयी। लगता था कि उनका सब पानी निचुड़ गया है। इससे भारी पीड़ा होती। पत्नी तथा बड़ी लड़की मालिश कर रहे थे। वे तो पीडा से तिलमिला कर कराहने लगे। यह लगता था कि मानों किसी अज्ञात शक्ति से भीषण संघर्ष कर रहे हों। अब उन्होने इशारा किया कि वे थोड़ा चलना-फिरना चाहते है। धीमे स्वर में बोले थे कि हाथ-पाँव सुन्न पड़ गये हैं। चलने से यह संभव है कि रुधिर की गति तीव्र हो जाय और फिर गाँठें खुल जायँ। वे सच ही उठ बैठे और ठीक

तरह से खड़े भी न हो पाये थे कि आँखों के आगे धुंध छा गया। वे चुपचाप चारपाई पर बेहोश से हो कर गिर पड़े।

वे जब संध्या को घर आए तो स्वस्थ्य थे। कल पहली तारीख को वेतन मिलेगा। वे दिन भर इस चिन्ता में थे कि महीने का खर्चा कैसे पूरा पड़ेगा। उन्होंने कई बार आय और व्यय का ब्यौरा कागज पर लिखा। वेतन १४५ रु० मँहगाई का भत्ता ३० रु० कुल आय १७५ रु० जबकि खर्च का हिसाब इस प्रकार था। बीमे की तिमाही किश्त १८ रु० ११ आ०, कोआपरेटिव से लिए कर्जे की किश्त १५ रु०, लडकी की शादी मे लिए प्राविडेन्ट फंड की पेशगी १६ रु०, तीन महीने का मकान का किराया ५१ रु०, कपडे वाला ७८ रु०, बनियाँ ११२ रु०, दवाखाना ६७ रु०, मित्रों से ली हुई हथपँछ २५० रु०, कुल ६१० रु० ११ आ०।

मकान मालिक, कपड़े वाला तथा बनियाँ तो कल संध्या को ही घर पर धरना दे देंगे। लडकी शादी के बाद पहले-पहल लडका लेकर आई हैं, कई महीने से उसकी बिदाई का सवाल टलता जा रहा है। पिछले सप्ताह जवाई की चिट्ठी आई है कि तीन-चार तारीख को वह स्वयं आकर लड़की को साथ ले जायगा। उसकी विदाई करने मे कम से कम तीस-चालीस रुपये खर्च होगे। बड़ा लडका तीसरे साल मेट्रिक में फेल हो गया है। वह आवारा है, बहुधा यार-दोस्तों के साथ बडो-बड़ो रात तक बाहर रहता है। उस पर क्या भरोसा किया जाय? मैट्रिक पास तो चपरासी और दफ्तरी का काम कर रहे है। वह लडका न जाने क्या करेगा?' उसकी चिन्ता मन में पीड़ा पहुँचाती थी। राशन, नून-तेल-लकडी आदि का ही परिवार का खर्चा सवा सौ रुपया माहवारी है। जमाना बदल गया है।

इस चिन्ता को भूल कर उन्होने कपड़े बदले। रात्रि को खा-पी कर ऊपर चारपाई पर लेटे। मई की रातें बड़ी गरम थी और हवा बिलकुल बन्द। वे पसीने से लथपथ भीगे हुए नीले आकाश पर टिमटिमाते हुए तारों को निहार रहे थे। परिवार के भविष्य का प्रश्न नही सुलझ रहा

था। पाँच साल बाद पेन्शन हो जायगी। चार हजार नकद मिलेगा। दो हजार बीमे का और पचास रुपया माहवारी पेन्शन। अभी दो लड़कियों की शादी करनी है और दोनों लड़कों की पढाई का प्रश्न हल होना है। यदि बड़ा लडका धोखा न दे जाता वे तो घर का काम किसी तरह चला रहे थे। उनको लडके पर बड़ी उम्मीदें थीं। लेकिन सब के भाग्य में सुख नहीं लिखा हुआ रहता है।

वे नौकरी का इतिहास व्यक्त नहीं करना चाहते हैं। वह बड़ी करुण कहानी है। जब कि सन् १६३२ ई० में मैट्रिक द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण किया तो पढे-लिखो की बेकारी आरम्भ हो गयी थी। उनकी कोई सिफारिश करने वाला नहीं था। सन् १६३६ ई० तक बेकारी ने इतना भीषण रूप लिया कि सरकार को एक जाँच-समिति इस पर विचार करने के लिए बैठानी पड़ी थी। समिति ने तथा सरकार ने क्या किया इसकी जानकारी उनको नहीं। वे तो एक दफ्तर मे बिना वेतन के अप्रेन्टिस थे। साल में दो-चार महीने काम मिलता, अन्यथा बिना वेतन के काम करना पड़ता था। ट्यूशन तथा वेतन मिला कर २५ रु० माहवारी आमदनी थी। सन् १६३८ ई० मे वे ३०—१½—६० रु० के ग्रेड पर पक्के हुए और पेन्शन वाली नौकरी लगी, इससे कुछ स्थायित्व जीवन में आ गया और उनको अपने पर भरोसा हो गया था।

उनका गृहस्थी का जीवन सफल सा नहीं रहा। पिता दो हजार का कर्जा छोड गये थे। माँ का स्वभाव न जाने क्यों चिड़चिड़ा हो गया था। वह अड़ोस-पड़ोस की महिलाओं से बहू की शिकायत करती थीं। बहुधा दोनों का आपस में झगड़ा हो जाता। जब वे आफिस से लौटते तो समझ न पाते थे कि किसका कसूर है। दोनों ही अपने पक्ष की वकालत करते। माँ का स्नेह एक ओर होता और दूसरी ओर युवती पत्नी के नये अरमान? वे चुप रहते। लेकिन कुछ साल बाद वह साधारण झगड़ा "गृहयुद्ध" का रूप ले बैठा। एक दिन सास ने बहू की झोंटी पकड़ कर गरदन पर मुक्के मारे तो बहू ने सास की टाँग खींच कर उसे घसीटा था। अब सास ने

अपनी रक्षा के लिये चीखना-चिल्लाना आरंभ किया तो पास-पड़ोस की सहृदय बुढ़ियाओं ने आकर उसको छुड़ाया था।

बहू छोटी लड़की को लेकर पड़ोस में किसी सहेली के यहाँ चली गयी थी। मोहल्ले की बुढ़िया सास को सांत्वना देती रहीं। उसे हलवा बना कर खिलाया। उससे कहा कि लड़के से इसका फैसला करा लेना चाहिए। सास का यह सनातन अधिकार है कि बहू को समझावे, बहू ने मर्यादा भंग कर सास को पीटा है, जिसका प्रभाव कि मोहल्ले पर अच्छा नहीं पड़ेगा। कुछ ने घोर कलयुग की दुहाई देकर कहा, लगता है कि अब बहू सासों को घर से निकाल सड़क पर पटक कर कहेंगी कि भीख माँगो। रोना रोया था कि माँ अपने बेटों को इसी आसरे पर पालती है कि बुढ़ापे मे सहारा मिलेगा। उन लोगो ने कई स्थानों पर हल्दी लगाई थी। उसके मना करने पर भी सिर पर पट्टी बाँध दी थी कि बेटे को बहू का अपराध बढ़ा-चढ़ा कर बताया जा सके। उसे नाट्य करने के कई सबक भी सिखाये थे।

उन्होंने दफ्तर से लौट कर पाया कि माँ अपने कमरे में लेटी हुई कराह रही है और पत्नी घर पर न थी। माँ से जब पूछा तो पहले वह चुप रही और फिर एकाएक फूट-फूट कर रोने लगी। अपने पक्ष की बातें करते हुए बताया कि कसूर उसका ही है। बहू के लक्षण भले नहीं हैं। दिन भर शृंगार कर कभी खिड़की तो कभी दरवाजे पर खड़ी रहती है। खोमचे वालो से चाट और मिठाई खाने की आदत है। यह भी कह दिया कि अब उस घर में गुजर होनी मुश्किल लगती है। समझ में नहीं आता है कि उसका बुढ़ापा कैसे कटेगा? अपने पिछले त्याग की याद दिलाई कि किस कष्ट में बड़ी आशा के साथ उसने उसे पढ़ाया था। माँ उसके खोटे भाग्य को कोसती रही कि उसके लिए कहीं सुख नहीं लिखा हुआ है। अन्यथा दसवीं पास डिपुटी हो गये हैं। इससे तो गांव की धरती पर बरकत थी। वे अन्न के दाने-दाने के लिए तो मोहताज न थे।

वह उनसे सहानुभूति बरतती हुई कहती रही कि बहू कुलच्छिणी

चाहिए था और बहू में कुछ सहन शीलता होती तो व्यर्थ का बतंगड़ न बनता। न सास बहू का झगड़ा मोहल्ले भर की चर्चा होता और इससे उनकी बड़ी अप्रतिष्ठा होती है।

—किशोरी बाबू को चेतना आई। डाक्टर ने नई दवा की टिकियाँ खाने को दी। उसी भाति चबाने के लिए कहा था। उन स्वादहीन टिकियों को चबा कर उन्होंने बरफ चूसा और किसी तरह घूंटा। गले पर बड़ी पीड़ा हो रही थी। हाथ-पांव मुड रहे थे। बच्चे अवाक् मे दरवाजे से झांक रहे थे। रात के दो बज गये पर किसी की आंखों में नीद नही थी। वे उलझन में थे कि यह क्या हो रहा है। बडी लड़की अपने भाग्य को कोस रही थी। पत्नी टकटकी लगा कर उनको देख रही थी। उस वातावरण में विचित्र सी चुप्पी थी। ढाई का घंटा कही दूर बजा और वह आवाज कमरे के भीतर गूंजी। उस ध्वनि ने हृदय की पीड़ा को झंकारित कर दिया। शरीर निर्जीव सा लगा और हृदय में धीमी-धीमी धुकधुकी हो रही थी। उनको लगा कि शायद वे मर रहे है। धुंधली सी याद आई कि वे आफिस से लौट कर संध्या को घर आये थे। वे पिछले कई महीनों से बहुत परेशान है। सब चीजो के दाम इतनी तेजी से बढ़ते चले गये कि वर्तमान वेतन से परिवार की रक्षा करने में वे अपने को असमर्थ पाते है। मोटा-सोटा खाने पर भी खर्च नही चलता। बच्चों की पढाई ठीक नही हो पा रही है। उनको विश्वास है कि उनकी मौत के बाद यह परिवार नष्ट हो जायगा। उसमे जीवित रहने वाला बल नही है। शहर का जीवन है। इसके लिए बच्चे का नौकरी पर लगना आवश्यक है। आज तो उसे चालीस-पचास पर चपरासी की जगह मिल सकेगी। अपने वर्ग के पतन पर दुःख हुआ था।

वे खा पी कर छत में चारपायी पर लेटे थे कि एकाएक कै और दस्त शुरू हो गये। पहले डाक्टर ने कहा कि लू लगी है। टेम्परेचर न होने पर यह बताया कि खाने में संभवत कोई विषैला पतिंगा पड़ गया

होगा। लेकिन यह संभावना सही नहीं लगी। पत्नी ने स्वयं परस कर खाना दिया था। डाक्टर ने आश्वासन दिया कि घबराने की बात नही है, पेट में गरमी है। नीबू तथा बरफ चूसने को दिया। तीस पैंतीस बार दस्त और कै होने के कारण मोहल्ले के लोगों ने दूर-दूर से सहानुभूति बरतनी आरंभ की। कुछ अपने घरो की खिड़कियाँ खोल कर सुझाव दे रहे थे कि अस्पताल भेज दो। घर पर इलाज न हो सकेगा। डॉक्टर के आश्वासन पर कि ठीक हो जावेंगे, परिवार को बड़ा बल मिला था। डॉक्टर सावधानी से उनको भांप रहा था, पत्नी बेहोशी में भी सेवा करने पर जुटी हुई थी। वह अपना समस्त मनो बल एकत्रित कर परिचर्या कर रही थी। उसमें भ्रम तथा निर्बलता के लक्षण न थे। वह तो वर्तमान में डूबी हुई पति की रक्षा कर रही थी। भविष्य को तो सब जानते हैं। वह उस कल्पना को मन में नहीं उठाना चाहती थी।

किशोरी बाबू के मन में पिछली घटनायें फैल रही थीं। नौकरी के नये जोश में कभी उन्होंने उन्नीस रुपये में एक अच्छी सेकेंड हैंड साइकिल खरीदी थी। उन दिनों पाँच-सात रुपये में अच्छा सूट बन जाता था। चार रुपये की राशन महीने में खर्च होती। वे अच्छे ढङ्ग से रहते थे। बड़े बाबू ने दफ्तर में एक-दो बार टोका था कि क्लार्कों का साहबी ठाट अच्छा नहीं होता है। उनको काम पर मन लगाना चाहिए। इस पर उन्होंने तपाक से उत्तर दिया था कि वे शक्ति भर काम करते हैं और फिर कौन उसको वहां हमेशा ही नौकरी करनी है। वे अपने साथियों से हंस कर कहते कि भीषण बेकारी का समय निकल जाय तो वे कही किसी अच्छे ऑफिस में चले जावेंगे। सातवीं पास बड़े बाबू पढ़े-लिखे की कदर क्या जानें। साहब लोगों की चापलूसी करने से ही उनको फुर्सत नहीं मिलती है। बहुधा वे त्याग पत्र दे देने की बात उठाते। उनकी धारणा थी कि एक बार नौकरी करके व्यक्ति की जो कीमत लग जाती है वह आगे नहीं बढ़ती है। इससे व्यक्ति का मनोबल कच्चा पड़ जाता है। मनुष्य

बंध जाता है और उस दायरे से उसे आसानी से छुटकारा नहीं मिलता। लेकिन अनुभवी लोग सुझाते कि पहले कहीं नौकरी तलाश करलें फिर त्यागपत्र देने की बात मन में उठावें, यह समझदारी की बात होगी। लेकिन आगे स्थायी हो जाने पर वे नौकरी की उस लीक पर आखें मूँदे हुए चलते गये। पिता के कर्जे की साहूकार कई बार डिग्रिया लेकर आया पर उन्होंने अपनी विवशता व्यक्त कर दी।

पत्नी के गृहस्थी में आने पर कुछ दिन वहाँ हरियाली रही। बालिका की किलकारियाँ आगे गृहस्थी में थिरकन फैलाने लगीं। युद्ध जब शुरू हुआ तो बाजार के भावों में थोड़ी सी मंहगाई आई। उनका ख्याल था कि यह अस्थायी बात है। अतएव कोई चिन्ता नहीं की। कंट्रोल होने पर कठिनाइया बढ़ी और पाया कि पुराने ढर्रे से गृहस्थी नहीं चल सकती है। राशन तथा कपड़े पर आमदनी का बड़ा भाग खर्च हो जाता है। उन्होंने सिगरेट पीनी छोड़ दी और बीड़ी पर उत्तर आए। सभी शौक काट डाले। अब आफिस से लौटने पर संध्या को ब्रिज की चौकड़ी न जमती थी। ऑफिस में नाश्ता बन्द कर वे केवल चाय की एक प्याली लेते थे। पहले पति-पत्नी महीने में दो-तीन बार सिनेमा हो आया करते थे, अब साल भर मे एक-दो भी न देख सकते थे। घर पर मंहगाई का असर पड़ रहा था। उनकी माँ और बहू के बीच झगड़ा हो जाता। परिवार की धरती डगमगाने लगी थी। लड़ाई समाप्त होने पर लेखा-जोखा कर पाया कि वेतन तथा महंगाई मिला कर पिछले सालों मे पचास रुपया बढ़ा जब कि परिवार के बढ़ जाने तथा मंहगाई के कारण खर्चा पहले से तिगुना हो गया है। पत्नी और माँ के बीच के मनमुटाव के कारण घर की शान्ति नष्ट हो गयी थी। पुरानी साइकिल को वे घसीटते रहे। पर अब तो साधारण सी मरम्मत में पाँच रुपया खर्च हो जाता था। साढ़े तीन रुपये वाली गद्दी के दाम अठारह रुपये, बारह आना वाला टायर पांच रुपया था। उसे बनवाने में अपने को असमर्थ पा उन्होंने उसे चालीस रुपये में बेच दिया। अब वे गरमी-बरसात और जाड़ा सभी मौसमों में पैदल ही तीन

मे फैल गया। सभी परिवारों की हालत डगमगाती लगी। मोहल्ले में परिवारों का अपनपा टूटा सा गया। लगता कि सभी अपने-अपने परिवारों की रक्षा करने में लगे हुए हैं। दूसरों की ओर देखने का समय किसी के पास नही है। वह बिकट संघर्ष था, जिसका प्रभाव कि मोहल्ले के वातावरण मे फैल रहा था। वहाँ आए दिन लड़ाई-झगड़े होते, एक परिवार दूसरे को बदनाम करता और कुछ लोग तो ओछी बातों पर उतर आते थे। वे तो स्वयं अपने परिवार को झंझटों में खोये हुए से रहते थे। मानवता का थोड़ा परिचय बालकों की टोली मे मिलता, जो कि आज भी सामूहिक रूप मे खेलते और सभी परिवारो में बिना किसी भेदभाव के जाते थे। वे बालक मोहल्ले की कई घटनायें भी सुनाते। किसी परिवार के शादी के समारोह में नारी-पुरुष एकत्रित होते तो आपस मे साधारण व्यवहारिक बातें होतीं। वे पाते कि बाबू वर्ग पस्त हो गया है। लेकिन आज आपस में एक दूसरे की नुक्ताचीनी करने में सबसे आगे है। मोहल्ले मे जीवन के चिन्ह न पाकर वे घबरा कर सोचते कि उनके अपने संबंधी तो हैं। उन पर विचार कर पाते कि चाचा, ताऊ के लड़के अलग-अलग शहरों मे बिखर कर उनके समान ही झंझटों मे फँसे हुए हैं। किसी दुर्घटना पर ससुराल भी कोई सहायता न कर सकता था। वहाँ ससुर के मरने के बाद भाइयो में आपस मे जायदाद को लेकर मुकदमेबाजी चल रही थी। सब पर सोच कर इस निर्णय पर पहुँचते कि यदि उनकी आँखें मुद जायँ तो परिवार को कही आश्रय नहीं मिल सकता है। इस कठोर सत्य से तिलमिला कर वे अपने को विवश पाते। उस असहायता पर वे निराशा की फीकी हँसी हँस कर चुप रहते। यही सन्तोष मिलता कि भाग्य मानव जीवन का एक सबल सहारा है।

किशोरी बाबू का मन एकाएक बेकल हो उठा। लगा कि मृत्यु आ गयी है। उन्होंने कै करने का प्रयास किया। बड़ी देर तक गरड़-गरड़-गरड़ के साथ खँखारते रहे और पानी चिलमची पर थूका। थक कर गरदन एक

श्रौर तकिये पर झुका दी। मृत्यु से पहले पूरी श्राँखें खोल कर परिवार के सभी लोगों को भली भाँति देखा। उस वातावरण में उनकी गरीबी मुस्करा रही थी। वे जान गये कि वह गरीबी ही परेशानी लायी श्रौर फिर उनकी मृत्यु का कारण हुई है। वह उनको निगल रही है श्रौर वे इस परिवार को छोड़ने के लिये विवश हैं, जो कि कल बिना किसी छाँह के रह जायगा।

डॉक्टर उठ बैठा। उनकी पत्नी से बोला दवा पेट में टिक गयी है। श्रब चिन्ता की कोई बात नहीं। वह चला गया। किशोरी बाबू की समझ में वह बात नहीं श्राई। वे चिल्लाये "डाक्टर साहब रुकिए।"

पत्नी ने दिलासा दिया तो वे उलझन में पड़ गये कि क्या सच ही मौत टल गयी है। उनको विश्वास नहीं हो रहा था। प्राण क्या बच्चों के मोह के कारण शरीर से नहीं निकले थे। श्रन्यथा वे तो बहुत निर्बल हैं। फिर ये कोरी कै? वे बड़ी देर तक खँकारते रहे। गले पर पीड़ा होने लगी। खँकारते-खँकारते थक कर उन्होंने श्राँखें मूँद ली श्राँतो पर चिपकी वस्तु नहीं निकली। वे नीबू चूसने लगे श्रौर फिर बरफ की डली चूसी। हाथ पाँव मुड़े रहे थे। पेट गड़-गड़-गड़ कर रहा था, मानों कि वहाँ के सब श्रंग पिघल कर पानी बन गया हो। वे सावधानी से उठे, चाहा कि बाहर तक जावें, पर धड़ाम से गिर कर बेहोश हो गये। बेहोशी में ही एक बड़ा दस्त हुश्रा। उनकी श्राँखों की काली पुतली तिरछी पड़ गयी। वे ठंडे से हो गये। पत्नी घबराहट में चीख उठी श्रौर संभल कर पंखा करने लगी। बड़ी बेटी रोने लगी श्रौर वे सब बच्चे उनका साथ देने में नहीं चूके। सारे वातावरण मे विषाद फैल गया। सामने से पड़ोसी ने जोर से पुकार कर पूछा कि क्या बात है। कुछ उत्तर न पाकर उस परिवार की श्रौरतें तमाशा देखने के लिए छज्जे पर खड़ी हो गयीं।

किशोरी बाबू ने तो करवट लेकर श्राँखें खोली। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। ऐसा लगता था कि वे श्रब तक भारी संघर्ष करते रहे हैं। डाक्टर का श्राश्वासन पाकर उनको बल मिला था। वे स्वयं जीना चाहते

थे। इस परिवार की रक्षा करना उनका कर्तव्य है। उनके बिना यह परिवार अपाहिज हो जायगा। सब बच्चों को बुला कर उन्होंने बारी-बारी से प्यार किया। अभी तक उनके हाथ-पाँव की नसों पर गाँठें पड़ रही थीं। उनमें बड़ी पीड़ा होती रही। पत्नी और लड़का मालिश कर रहे थे। उन्होंने उस बालक को देखा और उनका हृदय पिघल गया। इस बालक का कोई दोष नहीं है। पहले वह कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करता था अब उसको पढ़ाई के लिए वे ठीक साधन नहीं जुटा पाते हैं। वे उसे बहुत कोसते हैं। आगे वे उनका विशेष ध्यान रखेंगे।

बाहर चिड़ियाँ चिचियाने लगीं। कहीं दूर मुर्गा बांग दे रहा था। सुबह का धुंधला प्रकाश कमरे के भीतर फैलने लगा। वे हारे और थके सोच रहे थे कि आज पहली तारीख है। संध्या को चपरासी वेतन लेकर आवेगा। उनको बजट बना लेना चाहिये। पत्नी से उन्होंने कागज और पेन्सिल माँगी। अंक लिखने की चेष्टा की, पर उंगलियों की पकड़ में पेंसिल नहीं आई।

—पत्नी बाहर पड़ोसिनों को बता रही थी कि अब ठीक हो गये हैं। एक रात में चालीस रूपया खर्च हो गया। किशोरी बाबू ने सोचा कि इसे भी घाटे की मद में डाल देंगे और वे चुपचाप सो गये।

———

तराजू के बाट

सुजाता किसन पर झुंझला रही थी कि वह आवारा था ही अब चोरी करना भी सीख गया है। पहले मिठाई, फल आदि गायब हो जाते थे, पर उसने आज पैसे चुराये हैं। उसने गुस्से में भर कर पूछा, 'बोल, अठन्नी कहाँ है ?'

वह चुप रहा तो उसने उसके कान उमेठ कर एक चांटा रसीद किया और हताश होकर बोली, 'निकल जा, पाल-पोष कर डाकू बन गया। मेरा फूटा भाग्य !'

किसन चुपके बाहर भाग गया। रमेश ने उस वातावरण को समझ लेने के लिए माँ की ओर देखा। वह भी बाहर खिसक जाने की सोच रहा था कि सुजाता ने आँखें दिखा कर कहा, 'उस बदमाश के साथ जायगा तो टाँग तोड़ दूँगी।'

रमेश ठिठक कर रुक गया। सुजाता ने उसका हाथ पकड़ कर कहा 'जा भीतर बैठ कर पढ़ ले।'

उसका चिल्लाना सुन कर पड़ोस से उसकी सहेली आई और बोली 'तू बेकार गुस्सा होती है। सभी लड़के शरारत किया करते हैं ! अपनी सेहत तो देख ?'

वह अपनी तन्दुरुस्ती खाक देखे ? स्कूल में पढ़ाती है, वहाँ प्रधानाध्यापिका से नहीं पटती। उसका कहना है कि उसे ट्रेन्ड टीचर चाहिए। वेतन इसीलिए कम मिलता है। गृहस्थी का यह हाल है कि बच्चे परेशान

पिछले महीने वह पति से जेल में मिलने के लिए गयी थी। उनकी नजरबन्दी का यह तीसरा साल है। उन्होंने भूख हड़ताल की, इसीलिए तीन महीने तक मुलाकात बन्द रही। उसे पति का शरीर देख कर रोना आया था। उनका शरीर टूट गया था। वे बहुत दुर्बल लगते। उनका वह विशाल व्यक्तित्व तिल-तिल कर मिटता हुआ मिला। उनके सब साथी छूट गये थे। जब पति से पूछा कि वे कब तक छूटेंगे तो उन्होंने हँस कर कहा, 'अभी एक महीने पहले ही सरकार ने छँ महीने की मियाद बढ़ाई है। जेल वाले भी सुना, 'अनुशासन-भंग' करने पर मुकदमा चलावेंगे।' इस पर वह मुरझाई तो हंस कर कहा था, 'अंग्रेज की सल्तनत में सब मिला कर बयालीस साल की सजा हुई थी पर तीन साल मे ही छुटकारा मिल गया था। देखें, अपनी सरकार कै दिन और बन्द रखती है।'

सुजाता इस पर उनको ताकती-ताकती रह गयी तो पूछा था, 'किसन कैसा है ? उसे साल भर से नहीं देखा। अगली बार साथ लेती आना।'

रमेश तो अवसर पाकर बोला 'पापा, वे आने के लिए तैयार थे, अम्मी नहीं लाईं। भैय्या हमें स्टेशन तक पहुँचाने के लिए आये थे।'

इस पर सुजाता ने समाधान किया, 'घर पर कौन रहता ?'

अविनाश ने रमेश की आँखों की उत्सुकता भाँपी। वह किसन के बारे में कुछ और बताना चाहता था। उसने सुजाता की ओर देखा। वह थकी और निर्जीव मिली। मानो कि उसमें कोई उत्साह न बचा हो। वह उससे क्या कहता ! जेल मे पुरानी साम्राज्यवादी मर्यादा अभी तक चालू थी कि राजनैतिक कैदी की मुलाकात के समय वहां खुफिया-विभाग का अधिकारी उपस्थित रहता। वह इसीलिए सुजाता से सहानुभूति के दो शब्द कह कर अपनी निर्बलता व्यक्त नहीं करना चाहता था। सुजाता को छेड़ कर रुलाना अनुचित होगा। वैसे मन कई बातें कहने के लिए व्याकुल था। सुजाता स्वयं भी अपने हृदय का प्रवाह दृढ़ता से बाँधे हुए रही।

रमेश उस वातावरण में उत्सुकता से बेड़ियाँ पहने हुए कैदियों को आते-जाते देख रहा था। वह छोटी से छोटी घटना को हृदय में संवार कर

रख लेता कि किसन को बतावेगा। किसन बड़ी उत्सुकता से उसकी बाट जोहता होगा। वह कभी माँ को ओर देखता तो फिर पिता को ओर। दोनों को गुमसुम पाकर उस खुफिया-पुलीस के अधिकारी को देखता रह जाता। माँ स्कूल की बातें बताती तो फिर पड़ोस की और पिता चाव से सब कुछ सुन रहे थे। माँ ने छुपा कर एक लिफाफा पिता जी को दिया जो कि उन्होंने सावधानी से लेकर जेब पर रख लिया। वह यह महत्व-पूर्ण घटना किसन को बतावेगा। अब वह चुप्पी से ऊब कर पूछ बैठा, 'पापा, आप घर कब आवेंगे ? भैया ने पूछा है !'

अविनाश ने रमेश को अपने हृदय से लगाया। वह पाँच साल का है और किसन दस का। किसन के प्रति उनकी बड़ी ममता है। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में बयालीस साल की सजा हुई थी, पर जब तीन साल बाद जेल से छूट कर आया तो पाया था कि पत्नी पिछले वर्षों बीमार रही। वह अब मायके रहने के लिए तैयार न थी। वे उसे अपने साथ ले आए। पहले ट्यूशन करके गुजर की और फिर एक दैनिक पत्र में पचास रुपया वेतन पर काम मिला। काम का समय अनिश्चित सा रहता। जब कि सारी दुनियां सोई हुई होती तो वे रात को समाचारों का संपादन करते रहते थे। प्रभात को जब दुनियाँ जागती, वे थके मादे घर पहुँच कर सोने का प्रयास करते। बहुधा डबल ड्यूटी भी करनी पड़ती। पत्नी झुंझलाती कि यह क्या जीवन है ? पति-पत्नी की गृहस्थी चलती रही। एक दिन रात को ऑफिस में पड़ोस के लड़के ने टेलीफोन किया कि तुरन्त घर चले आवें। उस दिन सुबह से ही पत्नी पीड़ा बता रही थी। वे आधी रात को 'अमब्यूलेन्स्' पर पत्नी को अस्पताल ले गये और सुबह को किसन पैदा हुआ था। जो कोई भी कारण रहा हो, पत्नी की सेहत टूटती चली गयी और किसन को ग्यारह महीने का छोड़ कर वह चुपचाप मर गयी थी। बच्चे को ससुराल वालों को सौंप कर वे चुपचाप नौकरी करते रहे।

देश उन दिनों नई करवट ले रहा था। दुनियाँ में नई घटनायें हो रही थी। वे उन पर सोचते। पहले कभी पत्नी से बातें हुई थी कि आगे

देश की राजनीति नया मोड़ लेगी और सब कुछ बदल जायगा। साम्राज्य-वादी शोषण के समाप्त हो जाने के बाद देश की धरती पर हरियाली छावेगी—तब नवजीवन आयेगा। उनको भले ही भारी संघर्ष के साथ जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है, आने वाली संतान का भविष्य सुखद रहेगा। पत्नी के मरने के बाद तो जीवन की कठिनाइयाँ और बढ गयीं थी। देश के दो टुकड़े होकर साम्प्रदायिक दंगे हुए। इससे मानवता के सदियों पुराने आपसी सम्बन्ध टूट गये थे। शरणार्थियों की एक नयी समस्या आई और देश की स्थिति संभल नहीं पा रही थी। स्वतंत्रता के बाद आर्थिक संकट बढ गया था।

कमरे के भीतर सिगरेट के जले हुए टुकड़े पड़े होते, अखबार की कतरनें रजिस्टर पर चिपका कर संवारी जातीं तथा किसी चाय की दूकान पर चाय के प्यालो के साथ गपशप करने से भी कोई समस्या सुलझती नहीं थी। ससुराल से पत्र मिलते कि किसन किस भाँति बड़ा हो रहा है। साली हर बार नई सूचना देती। दाँत आ रहे हैं। टेम्परेचर सा रहता है तथा पीले दस्त होते हैं। अब घुटनों के बल चलने लगा है। वह कुरसी और चारपायी पकड़ कर खड़ा होकर चलता है। ऊपर के चार तथा नीचे के तीन दाँत आ गये। दाढ़ निकलने पर कई दिनों तक बुखार रहा, बड़ा कष्ट उसे हुआ। जब गुस्सा होता है तो ओठ आगे करके सुबक-सुबक रोता है या गुस्से में जमीन पर लेट जायगा। जब वह भली भाँति चलने लगा तो उसकी सूचना मिल गयी थी। उसके कई फोटो अब तक उसे प्राप्त हुए थे।

नीरस अखबारी दुनियाँ, राजनैतिक उतार-चढ़ाव, शहर के जीवन की सीमित सी घटनायें, मित्रों की गपशप, चाय की दूकान में प्रति दिवस पिये हुए दस-बारह प्याले चाय, कैंची की सिगरेटों के बाद बीड़ियाँ फूँकना; अनियंत्रित दैनिन्दिनी के बीच कभी-कभी किसन की अज्ञेय सी किलकारियाँ सुनाई पड़ती थीं। तभी साली की लिखी लाइनें याद आतीं कि वह अब उसे अपने साथ स्कूल ले जायगी। वहाँ 'नरसरी' खुल गयी है। वह बड़ा शरारती हो गया है। पत्नी का प्रतीक किसन और उसकी बातें जीवन में

गति प्रदान करतीं। पत्नी की कई आकांक्षायें थीं। उसने जीवन में कभी रुकावट नहीं डाली। जब वे राजनीति में भाग लेते तो पत्नी चुपचाप उनकी बातें सुना करती। एक बार जब उसने सुना कि फिरंगी ने किसी लड़के को गोली से उड़ा दिया है, तो वह सिहर उठी और उसका चेहरा तमतमाया था। मौत की कल्पना कर वह पति के वक्षस्थल से चिपक सिसक-सिसक कर रोई थी। वह जेल मे उससे मिलने की चाहना रख कर भी भेंट न कर सकी। पति का पत्र तक उसे न मिला था। अपनी भावुकता को मन में छुपा कर उसने घाव बना लिया। इससे उसकी सेहत गिरती चली गयी। वह यह सोचती थी कि पति से अब भेंट नहीं होगी। संभवतः वे लौटकर नहीं आवेंगे। बस उसने अपने प्राणों का मोह बिसार दिया था। वह उनको प्यार करना भूल गयी। वह जीवन गति में कहीं कोई आशा नही पाती थी। आगे पति का प्यार नहीं मिलेगा, इस स्थिति ने उसका मनोबल तोड़ दिया था।

अविनाश जेल से लौट कर पत्नी के आगे खड़ा हुआ तो उसे विश्वास नहीं आया। वह तो सोचा करती थी कि अब जीवन की दूरी कैसे पार होगी? पर पति तो जल्दी ही लौट कर आ गये थे। उसे अपनी भूल ज्ञात हुई पर अब क्या हो सकता था? पति बेकार से थे। ट्यूशन करके गुजर नहीं होती थी। वह जी तोड़ कर मेहनत करती। कमर की पीड़ा बढ़ रही थी। डाक्टर बताते कि खाना हजम नही होता, इसीलिए खून नही बनता है। लेकिन जब कि जी मचलाने और खट्टे के प्रति वाली रुचि उसने अपनी सहेलियों को बतलायी तो वे हँस पड़ी थीं। कुछ ऐसी बात सुझायी कि अनायास जीवन के प्रति मोह हो आया। उन दिनों ही पति को अखबार में नौकरी भी मिल गयी थी। पति ने समाचार सुना तो खिलखिला कर हँस पड़े। बालक के आगमन के बाद घर में नवजीवन आया लेकिन फिर............। वह पत्नी मर गयी और उसके लिए एक कल्पना मात्र रह गयी थी।

किसन उसके मन में नई आशायें उड़ेलने की चेष्टा करता। कभी

लगता कि वह उसके कमरे की फर्स पर खेल रहा है। अब बड़ी 'ऐश ट्रे' लानी पडेगी कि उसमें सिगरेट के जले हुए टुकड़े डाले जायें, अन्यथा फर्स से उठा कर बच्चा उनको मुंह में डाल लेगा। वह उस बालक को देखने का लोभ नहीं संवार सका और एक दिन ससुराल पहुँच गया। सुजाता उसी समय स्कूल से लौट कर आई थी। वह उसका हाथ-मुंह धोकर कपडे बदल रही थी। किसन झूठ-मूठ रो रहा था। वह चुपचाप मोढ़ा पर बैठा हुआ उनको देख रहा था कि, वह उसे पास लाकर बोली 'नमस्ते कर।'

किसन ने हाथ जोड़ दिये तो वह बोली, 'तेरे पापा आए हैं। बोल उनके साथ जावेगा?' बच्चा अवाक् सा पिता की ओर देख रहा था। वह परिवार के बच्चों की भांति मौसी को बुआ कहा करता। पिता ने ममता के साथ बालक को अपने समीप लाने की चेष्टा की तो वह भयभीत हो, भाग कर अपनी मौसी से चिपट गया।

वह वहाँ दो दिन रहा। सुजाता को भली-भाँति देखकर पहचाना। वह युवती बार-बार चुटकी लेती थी। मध्यवर्गीय परिवार में सब उसके लिए चिन्तित थे। उसकी शादी की बातें कई घरानों में चलीं और दहेज के कारण सफल नहीं हुई। वह पक्के रंग की थी तथा चेहरे की बनावट सुन्दर नहीं थी। पहले वह भली लगती थी, पर अब इतनी दुबली हो गयी थी कि चेहरे की हड्डियाँ दीख पडती। जब वह हंसती थी तो दांतों की सुफेद पांतियाँ चमक उठतीं। माँ कोसती थी कि पच्चीस साल की हो गयी है, अभी शादी नहीं हो पायी। अभी तीन और लड़कियाँ थीं। सुजाता ने एम० ए० किया। एक साल बेकार घर पर बैठ कर शादी की प्रतीक्षा की और अब नौकरी कर रही है। घर पर उसे कोई आजादी नहीं है। वह अपने मन से किसी सहेली के घर नहीं जा सकती है। अवस्था बढ़ जाने के कारण शादी के बाजार में उसका मूल्य घटता जा रहा था। कोई प्रस्ताव आता तो उन विधुरों की ओर से जिनको कि एक 'आया' की आवश्यकता अपने बच्चों के लिए होती। तीन बच्चों की अम्मा वाली कल्पना कर वह बहुत हँसती थी। लेकिन विषाद से मन भर आता, तो वह

फूट फूट कर रोती थी। ऊबकर उसका मन करता कि वह इस परिवार से नाता तोड़ कर किसी दूसरे शहर में जाकर रहेगी।

अविनाश ने जब किसन को अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव किया तो वह हँस पड़ी थी। अविनाश ने सुझाया कि वह उसे यहाँ किसी अच्छे स्कूल में रख देगा तथा कभी-कभी उसे देख लेगा। उसकी ममता बालक के प्रति बहुत बढ़ गयी थी। उसने सुजाता को अपनी गृहस्थी का ढांचा बताया। कहा था कि छुट्टियों में वह उसे बोर्डिंग से ला अपने साथ रख कर मन बहलावेगा। वह किसन पर सारा स्नेह केन्द्रित करके भावी जीवन की सुखद कल्पना करता था। सब सुन कर सुजाता ने डब-डबाई आँखों से उसे देखा था वह कुछ कहना चाह कर भी न जाने क्यों चुप रह गयी थी। वह किसन को नहीं छोड़ सकती थी। उसने पिछले तीन साल उसे बल प्रदान किया था। अन्यथा उसे अपने जीवन से घृणा हो आई थी। समाज ने उसका अपमान किया, परिवार में उसको कोई प्रतीष्ठा नहीं थी। वह माना कुरूप ही हो, इसमें उसका क्या दोष है?

दो-तीन दिनों में ही किसन अविनाश से बहुत हिल गया था। मानो कि वह उसे पहचान गया हो। जब वह लौट कर आने के लिए रिक्शे पर बैठ रहा था तो उसने किसन को पुकारा। बालक ने उसकी ओर देखा। उसके बुलाने तथा लोभ दिलाने पर भी वह उसके पास नहीं आया। मौसी की गोदी से चिपका हुआ रहा। अविनाश ने उसे पकड़ने की चेष्टा की तो वह मुंह बना कर रोने लगा और मौसी का आंचल मुट्ठी में जोर से ले लिया। अविनाश तो चुपके बोला, 'बदमाश हो गया है?'

सुजाता चुप रही। अविनाश ने उसे देखा। किसन के गाल पर हल्की चपत लगायी और स्टेशन चला आया। अब किसन की बार-बार याद आती और वह पाता कि उसकी आड़ लेकर सुजाता आँख-मिचौनी खेलती हुई मुस्करा रही है। वह तो मूक सुझाती थी, 'किसन आपको नहीं दूँगी।'

वह उस युवती पर सोचता। उसे भले ही किसन का त्याग करना पड़े,

वे सुजाता का जीवन नष्ट नहीं करेंगे। यह बात सुजाता को लिख दी कि किसन पर उसका पूरा-पूरा अधिकार है। वे उसे पाने के अधिकारी नहीं है। सुजाता की कोई चिट्ठी नहीं आई। एक महीने से अधिक समय बीत गया। उन्होंने दूसरी चिट्ठी लिखी और एक सप्ताह तक उत्तर की प्रतीक्षा कर फिर तार भेजा था। साले का उत्तर मिला कि वह बीमार है।

अविनाश तत्काल वहाँ के लिए रवाना हुआ और पहुँच कर पाया कि वह सच ही अस्वस्थ थी। सुजाता ने बताया कि न जाने क्यों उसे जीवन से बड़ी निराशा हो गयी है और वह कल्पना करती है कि किसन बड़ा होने पर उसे एक दिन छोड़ देगा। उसने जहर खाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया, पर असफल रही। वह मरी नहीं, उसके बाद बीमार पड़ गयी थी। अब वह भली है। इस घटना की चर्चा परिवार की परिधि से बाहर फैल गयी। इससे उसका मान बहुत घट गया है। हर एक उसे अपराधी मानता है। माँ तो बहुत दुःखी होकर कोसती हैं कि वह डायन है, सबको खाकर चैन लेगी। माँ-बेटी में नहीं पटती थी। अविनाश ने सुजाता के निर्बल शरीर और फीकी आँखों को ताक कर उसका हाथ अपने में ले कहा था, 'किसन के साथ तुझे पाया है सुजाता। तुम मेरे परिवार में चलना चाहो तो चल सकती है। इसके लिए अपने मन से पूछ लो।'

सुजाता ने आँखें मूँद ली थी। वह मूक रही। एक सप्ताह के बाद जबकि वह वहाँ से लौट रहा था तो पाया कि सुजाता उस परिवार को त्यागने का निश्चय कर चुकी थी। उसे पुराने संस्कारों पर कोई आस्था नहीं रह गयी थी। यह ऐलान कर कि वह 'सिविल-मैरिज' करेगी, किसन को साथ लेकर आ गयी। पिता का घर उसने आसानी से त्याग दिया। इस घटना पर सब लोग चकित रह गये। वह किसी की बात सुनने को तैयार नहीं थी। अविनाश के सुझाये हुए रास्ते पर वह उस परिवार की रक्षा करने का प्रण ठान कर चली आई।

सुजाता ने अपना हृदय अविनाश को समर्पित कर दिया। वह उनकी

विद्वता से प्रभावित होकर आदर करती। जीजी के मरने के बाद जब किसन उसके पास रहा तो उसने उस व्यक्ति के लिए सहानुभूति बटोर ली थी। वह बहुधा उनके बारे में सोचा करती। पिता के घर से ऊब गयी थी। जब वे किसन को देखने के लिए आए और माँ ने उनसे कहा था कि उसका कहीं प्रवन्ध करा दें तो नारी की विवशता पर वह बहुत दुखी हुई। बड़ी रात तक उसे नींद नहीं आई थी। उसे बहुत दुःख हुआ कि माँ ने जीजाजी को उसके लिए वर ढूँढने का भार सौंप कर उसकी तौहीनी की थी। उसने मन में निश्चय किया था कि वह शादी नहीं करेगी। लेकिन जब अविनाश ने किसन को साथ ले जाने का प्रश्न उठाया तो उस बात ने अनायास ही उसे उद्विग्न कर दिया था। उसे कुछ ऐसा लगा कि कोई उससे उसके प्राण छीन रहा है। उसकी चिन्ता बढ़ गयी। उसने किसन को देख कर पाया कि वह अपने पिता के समान ही है। वह रात भर उसे अपने से चिपकाये रही कि वह कहीं भाग न जाय। वह भागे चला ही जावेगा, यह सत्य था। वह न जाने क्यों किसी अज्ञात भय से संघर्ष करती रही।

अविनाश के चले जाने पर लगा कि किसन का पिता है। उसका अपना घर है। उसका अपना समाज है। जब कि वह अकेली है। पिता के परिवार में वह अतिथि के समान है और अधिक दिनों तक रहने के कारण अब उसका मान वहाँ घट गया है। पिता जी के परिवार की आर्थिक स्थिति भली नहीं है, फिर भी माँ पड़ोसिनों से कहेगी कि वे उसकी नौकरी से प्रसन्न नहीं है। आज तक उस परिवार की लड़कियाँ बाहर नहीं निकली है। यह कलयुग की बलिहारी है। माँ जरा-जरा बात पर उससे रूष्ट हो जाती है। छोटे भाई परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण भले ही हों, उसका मजाक उड़ाते है। उसकी शादी का प्रश्न प्रति दिवस माता-पिता, भाइयों तथा पड़ोसियों के बीच विवाद का प्रश्न बन जाता है। माँ भुँझला कर कहती कि मोहल्ले में उसके साथ की सभी लड़कियों की शादी हो गयी है। पर उसके लिए कोई वर नहीं मिलता है। भाई मजाक उड़ाते कि

पहले उसके लिये ग्राई० सी० एस० तलाश किये गये, अब तो क्लार्क भी उसे ले जाने को तैयार नहीं हैं। पिता प रह ।

किसन का पिता के साथ चला जाना सभव बात थी। वह उस कल्पना से बहुत चिन्तित हुई। घर के वातावरण ने उसे निराश कर दिया था। उसने अनायास एक दवा की गोली खाली जिसकी सीसी पर कि जहर लिखा हुग्रा था। वह बच गयी, पर फिर टाइफाइड हो गया। वह अविनाश के पत्रों का उत्तर देना चाहती थी पर विवश थी। उसने अपने भाइयों से उत्तर देने का ग्राग्रह किया तो वे हूँ-हाँ कर टाल गये। वह कभी निराश सी सोचती थी कि अब क्या होगा ? किसन उसके पास बैठा रहता। वह एक दिन उससे पूछ बैठी, 'किसन, बुग्रा मर जायगी तो क्या होगा ?'

उसने सरलता से उत्तर दिया, 'पापा के पास चला जाऊँगा।'

वह इस पर क्या कहती ? उसे अपने पास चिपटा कर रो पड़ी। वह उसे देख कर पूछ बैठा, 'लोती क्यों हो ?'

माँ दूध लाई तो उसने आँसू पोंछ लिए। माँ बोली, 'अविनाश ग्रा रहा है। किसन पाँच का हो गया। अब उसे उसके साथ भेज देंगे। वह पिछली बार ही ले जाने को कह रहा था।'

सुजाता को अविनाश का ग्राना भला लगा। वह उससे अपने मन की सारी बातें कह कर रास्ता पूछना चाहती थी। उसका उस पर विश्वास था। वे कुछ न कहेंगे तो वह किसन को माँग लेगी। किसन बड़ा होगा। वह उसके लिये सुन्दर बहू लावेगी। उसके बच्चे होंगे ग्रौर वह उस परिवार मे बूढ़ी होकर मर जावेगी। अब वह ग्रौर कोई बड़ी आकांक्षा नहो रखती है। उसने निश्चय कर लिया कि अगली जुलाई से वह बाहर किसी दूसरे शहर में नौकरी करेगी। पिता के परिवार में उसका व्यक्तित्व नष्ट हो रहा था। जब अविनाश ग्राया तो वह उससे कई बातें करना चाह कर भी चुप रह गयी। अविनाश ने साधारण व्यवहारिक बातें पूछी ग्रौर फिर किसन को दुनिया मे रमा रहा। बीमारी के दौरान में किसन उससे अलग रखा गया ग्रौर उसने पाया कि वह कुछ दूर सा हट गया है। पिता उसे

पर सुजाता तो फफक-फफक कर रो पड़ी। उसने चुपके से कहा, "जीजा जी, इस घर मे मेरा दम घुटता है। आप अपने साथ ले चलिए, नहीं तो मै मर जाऊँगी।'

अविनाश उस स्थिति के लिए तैयार नहीं था। क्या वह परिवार इस प्रस्ताव को मान लेगा। वह सास से पूछेगा। वे क्या सोचेंगी। बहुत सोच और साहस कर उसने अपने ससुर के नाम एक पत्र लिखा और साले के मार्फत भेज दिया। कुछ देर बाद बाहर आंगन मे उसके ससुर पुकार कर कह रहे थे, 'सुजाता की माँ, घर बैठे ही वर मिल गया है।'

सुजाता ने वह सुना तो कृतज्ञता से आँखें मूँद ली थीं। उस स्वीकृति के बाद उसने स्पष्ट कह दिया कि वह रूढ़िवादी रस्में नही अपनावेगी। वह 'सिविल-मैरिज' करेगी। वह पड़ोस की औरतें, जो कि उसकी हँसी उड़ाती थी, उनको बता देना चाहती थी कि वह असाधारण लड़की है। वह किसी के झुकाने से टूट नही सकती है। उसकी बात का प्रतिवाद किसी ने नही किया। वह चुपचाप अपनी ससुराल चली आई।

उस नई गृहस्थी को देख कर वह बहुत हँसी। सारा सामान व्यवस्थित ढंग से सजा कर उसने उसे सही ढर्रे पर चलाने का भार लिया। वह अविनाश पर बहुत विश्वास कर, स्नेह वश बार-बार कहती थी, 'जीजा जी आप व्यर्थ शर्मिन्दा करते हैं। मैंने कोई त्याग नही किया। किसन ने मुझे आत्म-बल प्रदान कर मृत्यु से बचा, यह नया जीवन दिया है।'

अविनाश की भावुकता का उत्तर देती हुई कहती, 'मुझे आपकी बातों पर विश्वास रहा और भरोसा करती थी कि आप मुझे सही राह सुझावेंगे।'

जीजा जी वाला आकर्षण वह साथ लाई। इस नाते से वह अपनी जीजी के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करती रही। वह किसन को बहुत प्यार करती थी। परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए उसने एक स्कूल में कुछ समय की नौकरी कर ली। वह निपुणता से गृहस्थी चलाती और किसी प्रकार की तंगी भी नहीं थी। जब रमेश अस्पताल में पैदा हुआ तो वह

खिल उठी। वह बहुत प्रसन्न थी। मातृत्व का उभार आया। वह भली लगती और उसकी सुन्दरता निखर आई थी। आइने में अपनी प्रतिछवि देख कर वह पाती कि मायके वाली लड़की न थी। आज वह पक्की गृहस्थिन थी—दो बालकों की माँ।

जब वह किसन तथा रमेश को लेकर मायके गयी तो उसकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई। सबने उसका सम्मान किया। मोहल्ले मे उस लायक बेटी की चर्चा रही, उसने अपनी छोटी बहिनों की शादियो की बातचीत भी चला दी। वहाँ वह विशेष अतिथि के रूप में दो मास रही। वह बार-बार जाने का आग्रह करती हुई कहती थी कि वहाँ का ठीक सा प्रबन्ध नहीं है। वे होटल का खाना पसन्द नहीं करते हैं। फिर भी माँ का आग्रह नही टाला जा सकता था। विदा होते समय माँ ने अनुरोध किया था कि बहिन की शादी से तीन महीने पहले वह आ जाय। यहाँ का सारा कार्य उसी को संभालना है। मायके के प्रति उदासीनता की बात पर कहा था कि आजकल की लड़कियाँ रूखी है, उनका मन तो इस उम्र में भी मायके जाने के लिए तड़फता है।

सुजाता की गृहस्थी ठीक चल रही थी कि तभी एक दिन अविनाश 'नजरबन्द' कर लिया गया। सुजाता ने हाई-कोर्ट में दरख्वास्त दी जो कि स्वीकृत नहीं हुई। पहले वह किसन और रमेश को साथ ले जाती थी। अविनाश हँस कर कहता कि दोनों बालकों को कहानी सुनाया कर सुजाता? किसन की कहानी जीवन में प्रगति लाई और रमेश ने जीवन पूर्ण कर दिया था। लेकिन जीवन में अब रुकावट पड़ रही थी। वह अविनाश को यह न बताती थी कि स्कूल में संघर्ष चल रहा है। उसे भय लगता था कि नौकरी छूटने पर कही मायके की शरण न लेनी पड़े। वह मायका...? मनुष्य द्वारा निर्मित समाज आज केवल स्वार्थों पर ही जीवित था। मानवता आज जीवन के कच्चे रिश्तो पर कहाँ टिक पा रही थी। वह अपने में बहुत सारी बातें सोच कर कुढ़ा करती थी। पति जेल चले गये, वह राजनीति कुछ समझ में नही आती थी। पति जिस सामाजिक-व्यवस्था

की चर्चा करते वह भी उसके लिए ही संघर्ष कर रही है। मन न जाने क्यों बहुत निर्बल होता जा रहा था। कई कोमल-भावनायें मन को दबाती थी। किसन बड़ा होकर इस परिवार से अलग हो जायगा। जब वह बच्चा ही था, तभी उसने उसकी उपेक्षा कर पिता पर सारी आस्था रख दी थी। रमेश उसका बेटा है, उस पर विश्वास करके वह भरोसा रख सकती है। उसका शरीर उसी के रक्त से बना है। वह उसको माँ है। किसन आज उसकी चिन्ता नहीं करता है। वे पति भी उससे अधिक बातें नही करते। परिवार की आर्थिक स्थिति डावाडोल हो गयी है। उसकी आस्था पति और किसन से हट कर न जाने क्यो रमेश पर केन्द्रित हो गयी। इस स्थिति पर सोच कर वह अपना विवेक खो बैठती थी। किसन तो उसके स्नेह की परिधि से हट कर बड़ी दूर चला गया था।

साँझ हो आई। उसका मन बहुत व्याकुल था। रमेश आज उससे बिल्कुल नहीं डरता है। वह जरूर किसन के पास भाग कर चला गया होगा। किसन बड़ा लडाकू है। वह इस मोहल्ले के लड़कों का सरदार है। अभी हाल ही में वह दूसरे मोहल्ले के लड़कों के साथ लडाई करके लौटा और उसकी टांग पर चोट लगी थी। लगता था कि किसी ने डंडे से मारा। हड्डी पर सूजन थी। वह चुपचाप लेटा हुआ था कि रमेश ने सब बातें माँ को बतायी। दवा लगाने पर भी रात भर वह ज्वर से कराहता रहा। वह बेहोशी में अनर्गल बकता था। कई बार उसने उसे उठ कर देखा और अन्त में सो गयी। वह रात भर उसके बिस्तर के समीप बैठने वाली अनुभूति बिसार चुकी थी। वह इसे अपनी निर्बलता मान लेती है। एक पड़ोसिन ने सुझाया था कि वह व्यर्थ ही किसन पर बिगड़ती है। किसन तो रमेश पर प्राण देता है। इस पर उसने ताना मारा 'वह सौतीली माँ है न ? यही उसके भाग्य में बदा हुआ था ?'

पड़ोसिन ने सुजाता की ओर देखा और चुप रही। सुजाता से उसे यह आशा नही थी। उस पढ़ी-लिखी युवती का यह व्यवहार अनुचित लगा।

सुजाता ने फिर कहा था, 'सौतीली माँ का दुनियाँ में यही दर्जा माना गया है। वह चाहे अपने प्राण दे-दे पर उसको सभी दोष देंगे। आज भी सब यही कहते हैं कि मैं बुरी हूँ।'

वह इस पर बहुत सोचा करती है। उसकी रुचि आज गृहस्थी के किसी निर्माण पर नहीं है। पति से उसने कुछ नहीं पाया है। उसने मायके के जीवन से ऊब कर आँखें मूद कर यह रिश्ता स्वीकार किया और इस गृहस्थी के दलदल मे फँस गयी। पति परिवार के प्रति अपनी जिम्मेवारी सही रूप में नही निभा सके हैं। उसका आज कोई भविष्य नही है। पति नेता हैं और उसे नौकरी के साथ-साथ गृहस्थी देखनी पड़ती है। फिर वे तो बहुत बीमार से लगते हैं। कौन जाने इस भूख हड़ताल के कारण आगे वे आजीवन अपाहिज बन जायें। यह नयी चिन्ता मन में नासूर बन रही थी।

............रात पड़ रही थी। नौकरानी ने पूछा, 'बहू जी, तरकारी क्या-क्या बनेगी ?'

वह उसे समझा कर चुपचाप उठी और भीतर चली गयी। स्विच दवाया तो कमरा जगमगा उठा। सामने दीवाल पर बडा फोटो टँगा हुआ था। पति के अनुरोध पर वह फोटो उसने शादी के बाद खिंचवाया था। उन दोनों के बीच किसन खड़ा है। वह किसन पहले कितना प्यारा था, पर आज सारे झगड़े की जड बना हुआ है। वह उसकी बातों की अवज्ञा करता है। उसे जान से भी मार डाला जाय, पर उसके मन से कोई बात नही निकाली जा सकती है। दूसरा उसकी 'जीजी' का बड़ा इंलार्जमेंट था। पति हृदय मे आज भी उसे पूरा स्थान दिये हुए है। वे सदा उसके गुणगान करते रहते हैं। वे सुजाता के प्रति अहसान सा व्यक्त करते हैं कि उसे 'उबारा' है। वे इसे उसका त्याग नहीं मानते हैं। इस घर में उसकी कोई प्रतिष्ठा नही है। वह अपनी हैसियत एक कमाऊ नौकरानी की पाती है। पति जेल-यात्रा करें और वह उनके बच्चों को पालें। वे नौकरी छोड़ दें और वह बालकों का लालन-पालन करे।

दूसरे कमरे में किसन तथा रमेश गुपचुप कुछ बातें कर रहे थे। कमरे

में अंधियारा था। वह चुपचाप स्विच बन्द कर दरवाजे के पास खड़ी रह, उनकी बातें सुनने लगी। रमेश कह रहा था, 'तुम भागना मत भैया। मैं अम्मा से सच बात कह दूँगा कि मैंने पैसे चुराये और टॉफी खरीदी।'

किसन इस पर झुंझलाया, 'रमेश, सच बात कहेगा तो मैं भाग जाऊँगा।'

'क्या तुम्हारी माँ नहीं है भैया? माँ तुमको बहुत डाटती है।' रमेश का दवा हुआ सा स्वर था।

'तुमसे किसने कहा रमेश? कौन माँ लड़कों को नहीं डाँटती है? तू चुपके चला जा। मैं अब नौकरानी के लड़को को देख आऊँ। वे बहुत बीमार हैं। डाक्टर के यहाँ से अभी दवा लानी है।'

रमेश किसन के चले जाने के बाद भीतर आया। सुजाता उससे सब बातें पूँछना चाह कर भी चुप रही। उसकी समझ में नहीं आया कि यह किसन किस धातु का बना हुआ है? वह रमेश के लिये प्राण देने को तैयार है, जबकि वह उसे बार-बार टोकती रहती है।

रमेश तो खाना खाकर सो गया। किसन चुपके कब चला आया यह सुजाता नहीं जान सकी। उसने रसोई घर की कुंडी खोली तो खटका सुन कर वह चौंकी और पुकारा, 'किसन?'

कोई आहट न पा बाहर आंगन में जाकर पुकारा 'किसन?' लेकिन किसन तो भय के मारे संभवतः अपने कमरे में जाकर भीतर कुंडी लगा भूखा ही सो गया था। उसने उस कमरे का दरवाजा खटखटाया तो किसन ने दरवाजा खोला और चुपचाप सिर झुकाये हुए खड़ा रहा। सुजाता की सारी ममता उमड़ पड़ी। उसने उसे अपने हृदय से लगाया और बोली, 'माँ से गुस्सा नहीं होते बेटा।'

वह उसे खाना खिलाने के लिए ले गयी। किसन चुपचाप सिर झुकाए हुए खाना खा रहा था। वह उससे बोली, 'अगले महीने पापा के पास चलना, वे बहुत याद कर रहे थे।'

किसन ने आँखें उठा कर उसे देखा और फफक-फफक कर रो उठा।

सुलताना की आत्मा

जब कि हम फौरेस्ट के बंगले पर पहुँचे तो पांच बज गये थे, मई की गरमी से वह बंगला तपा था और साठ मील का सफर तय करने के बाद हम बहुत थक गये थे। हम फौरेस्ट की अपनी निजी सड़क से आए थे, जहाँ कि शिकार खेलने की मनादी है। ड्राइवर ने बताया कि किसी जमाने में अंग्रेज अफसर वहाँ जाड़ों में शिकार खेलने के लिए आते थे, फिर राजा-महाराजाओं को भी इसका शौक हुआ और अब तो लगता है कि शिकार खेलने की प्रथा बन्द हो जायगी। राह में शाल, तुन, जामुन आदि के घने जंगल थे। बांस तथा और झाड़ियाँ भी दूर-दूर तक चली गयी थीं। आस-पास मीलों तक बस्ती का कोई पता नहीं था।

हिमालय का इतिहास जितना पुराना है, इस तराई का उसके समकालीन ही होगा। यह तराई का हिस्सा पंजाब को छूता हुआ बिहार और आसाम तक फैला हुआ है। यहां का सही ज्ञान उन निवासियों को है, जो कि सदियों से कई पुश्तें यहाँ काट चुके हैं। जिनका काम कि अधिकारियों, राजा-महाराजाओं तथा और शौकीनों को शिकार खिलाना रहा है। वे स्वयं इस कला में प्रवीण हैं और जङ्गल की सारी विद्या जानते हैं। उनको सब मौसमों तथा जङ्गल के विधान का ज्ञान है।

चीतल, चीता, हिरन, सुअर, बारहसींघा, लकड़बग्घा आदि जानवरों के अलावा भाँति-भाँति की जङ्गली चिड़ियाएँ तथा सांप के परिवार के रेंकने वाले जन्तु यहाँ स्वतंत्रता से विचरण करते हैं। शिकारियों ने इन सुन्दर जङ्गलों में प्रवेश पाने का सदा ही निरर्थक प्रयास किया। यहाँ के निवासी

उस धरती के भीतर का ज्ञान स्वयं छुपाए हुए रखते हैं। उस भेद की बात को और कोई नहीं जानता। परदेशी अनुदार होता है और जङ्गलों को अपने स्वार्थ के लिए रौंदता है, इससे सभी परिचित हैं। राह में एक विशाल बड़ के पेड़ के नीचे एक मरा चीतल पड़ा हुआ था और चीलें तथा काले पङ्खों वाले भयानक गीद्ध चारों ओर चक्कर काट कर उस पर झपट रहे थे। लोमड़ियाँ और जङ्गली कुत्ते भी अवसर पा कर बीच-बीच में उसे नोच लेते।

हमें ड्राइवर ने बताया कि रात को चीते ने उस जानवर का शिकार किया होगा तथा पेट भरने के बाद झाड़ियों में इसे छुपा गया। जङ्गल मे सब आजाद हैं। लोमड़ियों ने उसकी गंध पाकर उसे झाड़ियों के बीच से हटा कर यहाँ घसीटा और अब सब अपना-अपना हिस्सा बांट रहे थे। चीता को गंध का ज्ञान नहीं होता, वह अपनी शक्ति के बल पर शिकार करता है और निर्बल लोमड़ियाँ गंध आने के कारण ही अपना भोजन पाती हैं। अब हम एक संकरे से रास्ते से गुजर रहे थे, जिसके दोनों ओर कि बांस के बड़े-बड़े जङ्गल थे; तो हिरनों का एक गिरोह हमारी कार के आगे से चौकड़ी भरता हुआ निकल गया। यदि ड्राइवर ने कार धीमी न कर दी होती तो वह जरूर किसी जानवर से टकरा जाती। जङ्गली मुरगियाँ तथा और पक्षी स्वच्छंदता से उड़ रहे थे। मानों कि वे निर्भय हों। एक बड़ा हरे रंग का मटमैला साँप कार के पहिए से चिपका हुआ बड़ी दूर तक चला आया था। यह सब देख कर सोचा कि आदि मानव को कितना संघर्ष नहीं करना पड़ा होगा। आज अब वह अपनी बुद्धि पर अधिक भरोसा करके आपस ही में एक दूसरे का शोषण करना सीख गया है। उसकी शासन करने की लिप्सा बढ़ गयी है।

खानसामा ने बाहर बरामदे में कुरसियाँ डाल दी थीं और हमारे नौकर ने सामान कमरों में लगा लिया। इस डाक-बंगले में गरमियों में बहुत कम अफसर टिकते हैं। अधिकतर शिकारी व अधिकारी जाड़ों में शिकार खेलने के लिए आते हैं। चौकीदार ही खानसामा का काम करता है और वह

साहब लोगों की रुचि के कुछ सामान भी रखता है। भंगी को भी सरकारी वेतन मिलता है और वह मुरगियों का एक बाड़ा रखे हुए है। साहब लोग इनाम दे जाया करते हैं, इससे इनकी आर्थिक स्थिति बुरी नहीं है। ये लोग सभी मौसमों में यहां रहते हैं और जंगली जानवरों से इनको कोई भय नहीं लगता है। चौकीदार की अवस्था लगभग साठ साल की होगी, आज वह सब काम नहीं करता है। उसका लड़का चार साल हुए फौज से छूट कर आया है और वही सब काम करता है। अफसरों ने वादा किया है कि वे उसे शीघ्र ही पक्का कर देंगे व बूढ़े की पेन्शन चालू हो जायगी।

हवा बिल्कुल बंद थी और बड़ी उमस हो रही थी। लगता कि उस गरमी में हम पिघल जावेंगे। वह बूढ़ा ताड़ के एक पुराने पंखे से हवा करने का निरर्थक प्रयास करने लगा। गरमी से परेशान हो कर मैं गोसल-खाने पहुँचा और गुनगुने से पानी में नहा कर बाहर आया। बिस्कुट का एक टुकड़ा दांतों से दबा कर चबाया और चाय के दो प्याले पी गया। मेरा साथी ठेकेदारों तथा और सरकारी अधिकारियों से बातें कर रहा था। सरकार अपनी नई योजना के अन्तर्गत यहां की धरती पर फौज से छूट कर आए हुए लोगों की बस्ती बसाना चाहती है। पेड़ों को बड़ी-बड़ी मशीनों से उखाड़ कर, फिर उस धरती के हृदय को ट्रैक्टर से चीर एक नई दुनियाँ बसाने की कल्पना है। यह कल्पना पांच साल तक दिल्ली के लाल-फीतों वाली फाइल से निकल कर, फिर दो साल लखनऊ की फाइलों से उड़ कर अब आठ साल बाद यहाँ पहुँच सकी है।

सांझ हो आई और मैं बरांमडे पर खड़ा होकर सामने दूर तक फैले हुए विशाल जंगल की ओर देख रहा था। वह स्वस्थ और सबल जंगल न जाने क्यों हृदय में एक अज्ञेय बल प्रदान करने लगा। गरमी अभी उसी भांति पड़ रही थी और मन बेचैन था। मैं अनमना सा बाहर आकर टहलने लगा। इस स्थान का यह मेरा पहला अनुभव था। अब रात पड़ने . और कुछ अंधियारा सा हो आया, तभी मैंने पाया कि दक्षिण की

ओर से एक भारी सी आवाज आई और वह फिर समीप ही सुनाई पड़ने लगी। मैं चौंक उठा कि क्या बात होगी और उधर बढा, पर आगे धुंधले मे कुछ साफ-साफ नही दीख पड़ा। फिर वह आवाज तो जंगल की ओर से लगातार प्रतिध्वनित होने लगी और उसका वेग कम नही हो रहा था। इससे पहले कि मैं सवाल पूछूं, चौकीदार ने बताया कि भोंतू चल रहा है। उस प्रदेश की वह भाषा मेरी समझ मे नहीं आई। वह यह बता चुका था कि सामने जो नदी बह रही है उसमे बहुधा संध्या को इसी प्रकार तेज आंधी चला करती है। उस आंधी की आवाज को सुनकर लगता था कि पुराने जमाने की कोई बहुत बडी सेना उधर से गुजर रही हो। फिर भी वह भोंतू का चलना एक कौतूहल की बात थी।

उस समय नदी की ओर जाने का प्रयास करना ठीक नहीं लगा। सुबह वहाँ जाने का निश्चय करके मैं लौट आया। सामने जंगल से कभी किसी जानवर, तो कभी किसी पक्षी की तेज भयानक चीख कानों में पड़ती थी। दोस्त ने बताया कि इस जंगल मे इस समय एक मादा चीता अपने बच्चे के साथ रहती है। वहाँ का एक निवासी बता रहा था कि इस समय वहाँ कितने जानवर हैं। साहब चाहे तो कल वह उनको अच्छा शिकार करवा सकता है। वह नौजवान लड़का सारी बातों का वर्णन करते हुए उत्तेजित हो उठा था। उसने यह भी बताया कि चार-पांच रोज पहले जब कि वह जंगल से भैंसे चरा कर लौट रहा था तो उसने उस चीते को अपने बच्चे के साथ नदी के पास वाली खादिर मे देखा। उसका विश्वास है कि वह वही पर बांस की घनी झाड़ियों के बीच रहती है। वहां पर नदी के कारण नमी रहती और पानी समीप ही है।

उस निर्भीक सत्तरह-अठारह साल के लड़के की बातों को सुन कर कौतूहल हुआ। वह तो स्वयं एक बार चीते के पंजों के पीछे-पीछे वहां तक गया और उसने पाया था कि उस समय वह वहाँ लेटी हुई है। यदि वह उस पर हमला करती तो क्या होता, यह बात उसने न तब सोची और आगे भविष्य में ऐसा अवसर आवेगा तो निर्भीक हो तत्काल कुछ सोच

लेगा। कारण कि रोजाना जीवन में जंगल के जानवरों से भेंट होती ही रहती है और मौका पड़ने पर मोरचा उसी स्थिति के अनुसार सोचा जा सकता है। मुझ से कुछ लोगों ने यहाँ के शिकार की चर्चा की थी, दोस्त एक बड़े ओहदे पर नियुक्त हो कर यहाँ की जांच व प्रारंभिक कार्य की रूपरेखा निश्चित करने के लिए आए हैं अतएव हर एक ठेकेदार चाहता है कि उनको खुश करके कृपा पात्र बना जाय।

रात को हम खाना खा रहे थे। हम सब मिला कर सात व्यक्ति थे। पास की नदी से पकड़ी हुई मछलियाँ तथा जंगल से लाई गयी मुरगियों का गोश्त था। इसके अतिरिक्त ठेकेदार समाज की अपने उपयोग के लिए लाई हुई विलायती शराब की बोतलें थीं। खाने में काफी गम्मत रही और दो-तीन ठेकेदारों की हालत हो यह थी कि वे बिल्कुल बेहोश होने पर भी पेग पर पेग चढ़ा रहे थे कि कोई यह न समझ बैठे कि वे पीने में कमजोर हैं। मैं जंगली मुरगी की हड्डियां चबा रहा था। मछली का शोरबा भी काफी पी गया। तभी मैंने एकाएक अपने साथी से पूछा कि यह भोंतू नदी में क्या चला करता है। मेरी उस अज्ञानता पर सब के सब अवाक् मुझे देखते रह गये। दोस्त ने बताया कि आज से बहुत साल पहले सुलताना भोंतू की फौज इसी तेजी से जंगल पार किया करती थी। सालों तक उसने हमारी सरकार के नाकों चने चबवाए थे। मीलों तक फैले हुए इस तराई-भावर में उसका राज्य था।

'सुलताना भोंतू', एकाएक मेरे मुंह से छूटा।

उस वातावरण में मेरे वे शब्द छुप गये। उस व्यक्ति की बात बहुत पुरानी हो गयी थी। वह एक साधारण डाकू था, जिसे कि किसी अंग्रेज पुलीस के अधिकारी ने पकड़ा और कानून ने उसे फांसी की सजा दी थी।

नौ बज गये और सब लोगों को विदा करके मेरा साथी मेरे पलंग के पास आराम कुरसी पर बैठ गया। मुझे नींद आ रही थी। उसने मुझसे पूछा, 'सुलताना के बारे में जानना चाहते हो?'

'सुलताना के?' मैंने आश्चर्य में दुहराया

'हाँ बूढ़ा गोवर्रसिंह उसे भली भाँति जानता था और जब जवान था तो उसके तूफानी हमलों में कई बार शरीक हुआ।

गोवर्रसिंह, वह बूढ़ा खानसामा सुलताना के साथ रह चुका है जान कर मुझे खुशी हुई। दोस्त ने बताया कि शुरू में तो वह रोज संध्या को नदी के किनारे चलती हवा को सावधानी से सुना करता था। उसकी धारणा थी कि सुलताना मरा नहीं है। इस दुनियाँ में उसे कोई मार नहीं सकता। उसे लोगों ने बताया था कि वे सुलताना की सरे बाजार सिपाहियों से घिरा हुआ कचेहरी जाते हुए देख चुके हैं। उसके पांवों पर बड़ी-बड़ी बेड़ियां व हाथों में हथकडी पडी रहती हैं।

और वह बूढा गोवर्रसिंह तो हंस पड़ा था। हंसते-हंसते उसकी आँखों से आसू की धारा बह निकली और फिर उसकी सिसकियां बंध गयी। मैं समझा कि वह पागल हो गया है। दोस्त ने शराब का एक पेग उसे दिया। अब नशे मे उसकी आखें चमक उठी थी।

उसने बाहर जा कर दो-तीन बार थूका और फिर जोर से बोला, "नमकहराम कुत्ते, जो कि कभी सुलताना के आगे डर से नही पड़ते थे और उसका नाम सुनते ही जिनको कंपकंपी आने लगती थी, उनकी हिम्मत पड़ी कि वे सुलताना को बेड़ियां पहनावें।"

गोबर्रसिंह अब भीतर पहुँचा और कहने लगा, "सरकार, वह देवता था। मेरा वास्ता पहले-पहल उससे तब पड़ा जब कि मैं रुपए न होने के कारण अपने पुरखों की जमीन का पट्टा साहूकार के नाम लिखा आया था। वह खान्दानी कर्जा कई पुश्त से नही दिया जा सका और उसे चुकाने की सामर्थ मुझमें नही थी। साहूकार से हमेशा ही किसी न किसी काम के लिए कर्जा निकालना पड़ता है। उससे झगडा करके गाँव मे कोई नही रह सकता है।

"पुरखों की जायदाद को कर्जे मे चुका कर मैं दुखीसा घर लौट रहा था कि जंगल की राह, पर मुझे एक नौजवान मिला। उसने मुझसे शहर का

समाचार पूछा। वह न जाने कैसे जान गया कि बहुत दुखी हूँ, फिर मेरी सारी बातें सुन कर उसने अपनी कमर से एक थैली निकाल कर मुझे दी और कहा कि मैं साहूकार के यहाँ जा कर अपना पट्टा वापस ले लूं। इससे पहले कि मैं उसे धन्यवाद दूँ, वह चला गया था। साहूकार ने रुपया लेकर कहा कि वह चोरी का माल है जो कि उसे भौंदू ने दिया है। उसने धमकी दी कि वह उसे पुलीस में दे देगा। तभी मुझे ज्ञात हुआ कि वह कौन व्यक्ति है। उससे यदि बेईमान साहूकार घबराते थे तो यह ठीक ही था। उससे स्वयं मुझे प्यार हो गया। उस सरल व्यक्ति ने तो मुझे मोह लिया था। यही कारण था कि गरीब जनता उसे प्यार करती थी और हरएक अपनी जान की बाजी लगा कर उसकी रक्षा करना चाहता था। वह गरीब बुढ़ियाओं का बेटा था। जहाँ भी कोई मुसीबत जादा दिखलाई पड़ा, वह वहाँ पहुँच कर उसकी मदद करता। कभी उसने बेकसूर को नहीं सताया। सरकारी पैसा खाने वाले पुलीस के जासूस कभी भी जनता के हृदय को नही टटोल सकते हैं और सुलताना तो उसी जनता के हृदय में छुपा रहता था। हरएक उसे आश्रय देना अपना गौरव समझता था।

"मैं तीन साल उसके साथ रहा। उसको सभी जंगलों की पूरी-पूरी जानकारी थी। उसका प्यारा कुत्ता सदा उसके साथ रहता। जंगली पशु शायद उस सहृदय व्यक्ति को पहचान गये थे। वह जानता था कि एक अंग्रेज अधिकारी उसे पकड़ने के लिए तैनात किया गया है, लेकिन कभी भी उसने उसकी हत्या करने की नहीं ठहराई। वह तो एक बार उस पुलीस के अफसर से जंगल में निहत्था ही मिला था और उसे एक तरबूज भेंट करके कहा कि वे बेकार एक डाकू के पीछे अपनी जान जोखिम में डालते है। सावधान किया था कि सुलताना अपने दुश्मन को धोखे से नही मारता और न वह पीछे से ही हमला करता है। यह भी वह जानता है कि वे अपने परिवार से दूर यहाँ नौकरी करने के लिए आए है। उसकी उनसे कोई लड़ाई नही है। साहब ने समझौते की बात चलाते कहा था कि वह बिना किसी शर्त के यदि सरकार की शरण में आ जावे तो सरकार उसकी

माफी पर विचार करेगी। इस पर वह हँसा था कि एक सिपाही कभी माफी नहीं माँगता है। वह तो केवल हार या जीत ही जानता है।

"बदमाशों के लिए सुलताना का नाम परेशानी पैदा करता था। उसकी ग्राँखों से कभी कोई ग्रपराध छुपा हुग्रा नहीं रहता था। मनों सोना लूटने वाला सुलताना सब कुछ गरीबों में बाँट देता ग्रौर उसके हाथ सदा खाली रहते थे। वह कभी शराब नहीं पीता था। एक बार उसके दल के कुछ साथियों ने एक बारात लूटी। एक मनचला नववधू को पकड कर ले ग्राया। सुलताना ने जब सुना तो उस युवती को स्वयं उसके पिता को सौंप कर माफी माँगी। उस वहिन की विदाई में सोने के कई गहने दिये थे।

"सरकार ने ग्रपनी सारी शक्ति लगा दी थी। जिस गाँव पर भी उसे ग्राश्रय देने का शक होता वहाँ पुलीस वाले पहुँच कर मनमाना ग्रत्याचार करते थे। सैकड़ों निरपराध युवकों को पुलीस पकड कर ले जाती कि वे उसकी सहायता करते है। गाँवों का उस प्रकार लुटने का हाल सुन कर उसका हृदय काँप उठता था। इसीलिए एक दिन उसने ग्रपने चुने हुए साथियों के ग्रलावा सब को विदा कर दिया। वे उसे नही छोडना चाहते थे, पर उसकी ग्राज्ञा का उलंघन करने की शक्ति किसी में नहीं थी। विदाई के दिन वह बहुत दुखी था, पर बेबशी में क्या करता।"

गोवरसिंह उसके बाद का समाचार इतना ही जानता है कि सुलताना को फाँसी लगी थी। उसका पूरा विश्वास था कि सुलताना चाहता तो कोई शक्ति उसे नही पकड़ सकती थी। वहाँ की सारी जनता का वह प्यारा बेटा किसी के पकड़ में न ग्राता। यह उस देश के लिए कलंक की बात होती। सुलताना इसीलिए एक दिन ग्रपने साथियों के साथ युद्ध करता हुग्रा पकडा गया था। वह बहादुर सिपाही था, इसीलिए उसने ग्रात्महत्या करना स्वीकार नहीं किया। वह तो दिखा देना चाहता था कि ग्रंग्रेज की कचेहरी वाला न्याय कितना भूठा है।

सुलताना ग्रपने कुत्ते को उस ग्रंग्रेज ग्रफसर की संरक्षता में सौंप गया था जिसने की उसे पकडा था। इन जंगलों मे रह कर उसने मानव हृदय

पाया था। दुनिया में इतने सहृदय व्यक्ति शायद कम पैदा होते हैं। पुलीस विभाग मे सैकड़ों फाइलें मिलेंगी, जिसमें कि पेशेवार पुलीस के अधिकारियों की झूटी रिपोर्टें होंगी। न्यायालय की फाइलों जहाँ कि इंगलैंड के बड़े घरानों के बच्चों को जज बनाया जाता है, वहाँ उपनिवेश के इस नागरिक को खूनी और बदमाश बताया गया होगा। लेकिन उसकी कहानी तो यहाँ का बच्चा-बच्चा जानता है। हरएक चाहता है कि उसका बच्चा वैसा ही नेक, सहृदय, चरित्रवान और बहादुर बने। वह उस धरती का बेटा था जिसका शोषण करने के लिए अंग्रेज आया था। तरायी का चिप्पा-चिप्पा आज भी उसकी जीवन घटनाओं की गूँजों से भरा हुआ है।

भोतू चल रहा है, यह सुन कर मेरे मन में कम कौतूहल नहीं हुआ। वह गति कैसी स्वस्थ थी। वह बूढ़ा चला गया और सोने से पहले दोस्त ने पूछा, 'जानते हो यंग कहाँ है ?'

"यंग ?"

"वह पुलीस का सिवीलियन अधिकारी जिसने की भोंतू को गिरफ्तार किया था—वह आजकल मलाया मे विद्रोहियों को दबाने की मोरचा-बन्दी कर रहा है।"

मलाया की जनता को कुचलने का प्रयाय..... ...?

—और अगले दिन मैं शाम को कार से रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। दोस्त ने मुझे विदाई दी। शाम का वक्त था सूर्य की लाली पश्चिम में फैल रही थी। गाड़ी तेजी से चल रही थी। सामने एक पुराने किल्ले के अवशेष दिखलाई पड़े। पूछने पर सहयात्री ने बताया कि इस किल्ले मे, जैराम पेशे वालों को सरकार रखती थी और सुलताना का बचपन इसी में कटा था। यही से भाग कर वह स्वतंत्र हुआ था।

वह किल्ला पीछे छूट गया और सोचा मैंने कि यदि उस व्यक्ति को अवसर मिला होता....? लेकिन डाक-बँगले के पास बहती नदी तो सदा बहती रहेगी और गरमियों की संध्या में सदा ही वहाँ भोतू चलेगा........

कम्मो

गृहस्वामिनी ने अतिथियों को सूर (एक तरह की शराब) पीने के लिए देते हुए उदास होकर कहा—सयाणाजी, (मालगुजार) कम्मो का क्या होगा ?

कम्मो परिवार की एक मात्र लड़की है। उसके पांच पति हैं। जब वह चार साल की थी, उसकी शादी एक बड़े परिवार में हुई थी और अब उसकी अवस्था अठारह साल की है, लेकिन उसके एक भी संतान नही हुई। इस प्रदेश में नारी का मूल्य परिवार को स्वस्थ संतान प्रदान करने पर ही निर्भर है। आज उसके पति चाहते हैं कि उससे किसी तरह छुटकारा मिल जाय, ताकि वे दूसरी पत्नी परिवार में ले आयें। माँ पुत्री के इस अपमान की बात की कल्पना भर से सिहर उठती है। वह फिर भी जानती है कि उसकी बेटी का कोई भविष्य नहीं है। उसके परिवार वाले कई जगह बातचीत चला चुके हैं। वे तो कम्मो को विवश करना चाहते हैं कि वह अपनी ओर से ही छूट (तलाक) का प्रस्ताव रखे। यह स्थिति अब अधिक दिनों तक नही टलेगी।

गृहस्वामिनी अपने समय की सब से रूपवती नारियों में से रही है। अब तक उसने दो परिवारों से छूट पाकर यह तीसरा परिवार अपनाया है। पिछले परिवारों को उसने एक-एक पुत्र भेंट किया। इस परिवार को तो वह अब तक तीन पुत्र तथा एक पुत्री सौंप चुकी है। चार बच्चों के साथ वह यहाँ टिक-सी गयी है। उसकी अवस्था चालीस की है, पर देखने में वह तीस की लगती है। उसका कद लम्बा, रंग गोरा और ललाट ऊँचा

तथा चौड़ा है। उसकी नीली आँखों मे चमक और घुँघराले बालों में मोहनी छुपी हुई है। वह गहरे नीले किनारे का घाँघरा तथा काली चोली पहने थी, जिसके निचले हिस्से में चुन्नट पड़ी थी। उसकी नाक में सोने की बडी गोल नथ, कानों में चाँदी की बालियाँ तथा गले में चंद्रहास लटक रहा था। सिर के बालों से चांदी की जंजीर उलझी हुई थी; हाथ की एक उंगली पर सोने की तथा बाकी पर चाँदी की अँगूठियाँ थी, पाँव को सभी उँगलियो में बिछवे सजे थे।

वह अतिथियो के साथ सूर पी रही थी। उसके हाव-भाव में मोहनो थी। आँखो में गुलाबी नशा छाया हुआ था। पर यदा-कदा पुत्री की याद चेहरे पर विपाद की छाया ला देती थी। वह सदा ही जीवन में सफल नारी रही है। सारे प्रदेश मे उसकी प्रतिष्ठा है। वह ससुराल में कम रहा करती है, कारण कि वहाँ परिवार को स्वामिनी होने के कारण सारी जिम्मेदारी उसे निभानी होती है। वह मायके में स्वतन्त्र है, फिर अधिकतर नारियाँ मायके में रहना पसन्द करती है। वहाँ वे सदा ही कुमारियों का जीवन मुक्त रूप से बिताती हैं। यह सभी जानते है कि इस नारी का प्रेमी एक बनिया है, जो कि साल मे एक सप्ताह के लिये उसके मायके आता है। उसके इस प्रेम पर एक अश्लील गीत, 'लेंचू, लेंचू·····' चालू है, जिसे सभी बिना किसी हिचक के गाते है। यह प्रेम वहाँ नारी-अपमान नही माना जाता है और न यह घटना कलंक है। कोई इसकी चर्चा नहीं करता है और न वहाँ प्रेम के आशा-निराशावाले खेल ही होते है। वहाँ आज तक किसी निराश प्रेमी और प्रेमिका की आत्महत्या की कहानी भी किसी ने नही सुनी है। यहाँ की नारी का सामाजिक अधिकार है कि वह मायके में आजादी के साथ रहे। उस धरती और वहाँ के लोग सदियों से इसी रूप मे रहते आए है। दुनियाँ की तब्दीलियों का कोई असर उनके जीवन पर नहीं पड़ा है।

यह नारी जिस परिवार मे गयी, वहीं उसने शासन किया। यदि उस परिवार में कोई कमी लगी, तो उसने अपने नारी-अधिकार छूट की माँग

माता-पिता के आगे रखी । पिता के मरने के बाद भाइयो के आगे भी इस माँग को रखते हुए उसे कोई हिचक नही हुई । पिता तथा भाइयो ने सदा ही अपना सामाजिक कर्त्तव्य निभाकर तलाक की व्यवस्था करवायी । पति का कोई अधिकार नही है कि वह पत्नी को उसकी इच्छा के विरुद्ध रोक सके । वह तो केवल विनती कर सकता है । इस नारी को अपनाने के लिए सदा ही दूसरे परिवार लालायित रहे है । आज भी वह चाहे तो इस परिवार को दूसरे परिवार से खर्चा दिलाकर वहाँ चली जाय । वहाँ का पुरुष-समुदाय नारी के इस अधिकार का आदर करता है । यहाँ की नारी अधिक भाइयोंवाले परिवार की पत्नी बनने मे अपनी सुरक्षा समझती है । उसकी धारणा है कि इकले-दुकले भाइयो के परिवारो मे उसे सुख नही मिल सकता । घर और वाहर का काम करने के लिए जितने अधिक भाई होंगे, गृहस्थी उतनी ही आसानी से चलेगी । इसीलिए वह छोटे परिवार में रहना नही चाहती । इनका आज भी वही पुरातनवाला विश्वास है कि प्रकृति से सघर्ष करने के लिए बड़ा परिवार चाहिए । आधुनिक विज्ञान की शक्ति का ज्ञान उनको नही है ।

सयाणाजी गृहस्वामिनी को बहुत दिनो से जानते है । एक बार इस परिवार के बड़े भाई ने उससे अनुरोध किया था कि वह उनके परिवार का दायित्व संभाले । सयाणा-परिवार की माँग को साधारणतया नारियाँ नही ठुकराती, पर इस नारी ने उन सोने के जेवरों और अच्छे खाने-कपड़े के प्रति उदासीनता दिखलायी थी । सयाणा-परिवार इस अपमान को बहुत दिनो तक न भूल सका । वह तो आज भी मुस्कराकर कहती है कि वह वहाँ चली जाती, पर प्रस्ताव सही ढंग से नही रखा गया था । मेले से लौटते हुए चुपके से वह बात उससे परिवार के ज्येष्ठ पुरुष ने कही, तो वह डर गयी थी । कुछ दिन उससे संपर्क स्थापित करके वह बात कही जाती, तो वह उसपर अवश्य विचार करती । यदि परिवार का चौथा पुत्र उसके लिए ढाँटा (रेशमी रूमाल) लाकर उसे अन्य वस्तुएँ भी उपहार स्वरूप देता, तो वह इसपर विचार करती । भला सात भाइयों के उस

परिवार में जाना कौन नारी अपना सौभाग्य नही समझती ? सयाणा वह बात भूल चुका है। उसे बहुधा सरकारी काम से कचहरी जाना पड़ता है। लौटते हुए रात पड़ जाती है, तो वह इस परिवार में टिक जाता है। वह उस नारी का कृपा-पात्र है। यहाँ उसका अच्छा सत्कार होता है। आज तो वह एक अधिकारी के साथ आया है। यह अधिकारी सरकार-द्वारा वहाँ भेजा गया है। वह सनातन से परिवारो से बँधी हुई धरती की पैमायश कर उसे कानूनी रूप देगा।

इस नई व्यवस्था के बारे में यहाँ के लोग बहुत संदिग्ध हैं। लोग आपस मे गुपचुप इशारों में बातें किया करते है। यहाँ की धरती परिवार से बँधी हुई है। परिवार सामूहिक रूप में रहते है, अतएव बँटने का सवाल कभी नही उठा। यहाँ व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है। धरती अन्न देती है और नारी परिवार की शाखा को आगे बढाती है। दोनो ही संयुक्त परिवार की संपत्ति हैं, सदियो से परिवार उसी पुराने रूप मे चले आ रहे है। सदर सयाणा को सरकार ने ठेका दिया है कि वह एक निश्चित राशि खजाने में प्रति छमाही जमा करे। वह उसका अंश-अश करके गाँव के सयाणो से जमा करता है। अब पैमायश के साथ सब सीधा लगान सरकार को देंगे, इस पर वे गम्भीरता से सोचते है कि क्या होगा ? उस पुरानी सामाजिक केंचुली को उतार फेंकने का उत्साह किसी को नही है। गाँव की पंचायतें गाँव के झगड़ो का निपटारा करती है और सदर का सयाणा बड़ी पंचायत बुलाकर गाँवों के बीच के आपसी झगडों का निपटारा करवा देता है। धरती और पत्नी का परिवार के साथ बँधे रहने के कारण आबादी नहीं बढी और अधिक खाने वाले मुँह न होने के कारण अन्न की उपज बढ़ाने की ओर भी किसी का ध्यान नहीं गया।

किसान को अधिक जमीन कमाने की लालसा नहीं है और न उसे देश छोड़कर मैदान जाकर धन कमाने की भूख है। वह उस धन का क्या करेगा। वह अपनी आवश्यकता की जमीन जोतता-बोता है। बहु-पति के कारण नारी की फसल भी नही बढ़ती है। अपने देश और

धरती की साधारण जानकारी के अलावा उनका बाहर का ज्ञान आवश्यक नहीं लगता है ।

अब वह बाहर चली आयी । उसे घर के काम की व्यवस्था करनी थी । अतिथियों के आगमन पर बकरा मारा गया था, वहाँ की प्रथा के अनुसार एक टाँग सुबह सदर सयाणा के यहाँ भेजनी थी । वह काम दूसरे पति को सौंपा गया । तीसरे भाई की पांड (आज खेत पर रहने की बारी) है । उसे रात को खेत मे डंगरों के साथ रहना है । ऊँचे-नीचे खेत होने के कारण बारी-बारी से खेतो में रात को जानवर बाँधे जाते हैं । इससे वहाँ गोबर डालने की समस्या सुलझ जाती है । डंगरों की रक्षा के लिए एक या दो व्यक्ति रात को वहाँ सोते हैं । और चौथा दाई भाई (कोढी) बुरा मान रहा होगा कि आज उसे अतिथियों के साथ बैठकर पीने का अवसर नहीं दिया गया है । उसका यह पति कोढ़ी है, लेकिन उससे कोई घृणा नहीं करता है । हर परिवार में एक-दो दाई-भाई हैं, जिनका कि कोई तिरस्कार नही करता है । वह तो परिवार का एक अंग है । लेकिन सयाणा ने कहा था कि आज उसे न बुलाया जाय, जो अतिथि आया है, उससे यह बात छुपायी जानी चाहिए । वह दाई-भाई को समझा लेगी । वह उसकी भी पत्नी है और उसका उसके प्रति अपना कर्त्तव्य है ।

वह चाहती थी कि सदर सयाणा को भी बुलवा लिया जाय, पर सयाणा ने समझाया था कि इसकी आवश्यकता नही है । वह कम्मो को खाने की व्यवस्था समझाती रही । अपनी माँ के समान ही कम्मो इस काम में दिलचस्पी लेती है । माँ ने अपने पतियों को बताया था कि वह सभी को उचित समय पर आमंत्रित करेगी । इस सब के बाद भी तो उसका मन उदास था । बार-बार मन मे हूक उठती थी कि कम्मो····? कब इस परिवार में सम्मानित अतिथि नहीं आये है । पिछले दिनों जंगलात का अधिकारी टिका था । उसकी और लड़कियाँ नहीं हैं कि वह ठीक तरह से अतिथियों की सेवा कर सके । आज उसने कम्मो से कहा था कि अतिथि के पाँव धुलवा दे, पर कम्मो यह भार उठाने के लिए तैयार नहीं हुई । वह चुपचाप

अपनी माँ को ताकती रह गयी, मानों माँ से पूछ रही हो कि क्या वह सच कह रही है ? माँ जानकर भी उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी। वह प्रश्न कभी-कभी शूल की भाँति हृदय में चुभकर बड़ी पीड़ा फैलाता है। वह कम्मो से और कोई बात न कह सकी। लेकिन अतिथि के सम्मान का प्रश्न भी तो था। वह क्योंकर इस प्रश्न को सुलझाये ? मन न जाने क्यों बेचैन था। इस परिवार में सब-कुछ होने पर भी स्वस्थ लड़कियाँ नहीं हैं। अन्यथा आज उसे अपमानित नहीं होना पड़ता। वह नया अतिथि क्या सोचेगा ? परिवार आज अपनी परम्परा के अनुसार उसकी सेवा के लिए अपनी बेटी देने में असमर्थ था।

उस अतिथि से वह बहुत प्रभावित हुई है। वह बातों को सावधानी से सुनता है और फिर तोलकर उसका उत्तर देता है। उसमें कोई उतावलापन नहीं है। बीच-बीच में आँखें मूँदकर न जाने क्या सोचता रह जाता है। उसका कहना है कि पैमायश के बाद इस देश में नई रोशनी फैलेगी, घाटियों के बीच से चक्करदार मोटर की सड़क निकलेगी। फलों के बगीचे लगाये जायेंगे। स्कूल खुलेंगे, जहाँ बच्चे पढ़ने जायेंगे। लेकिन बच्चे पढ़ने जायेंगे, तो जंगल घरेलू पशुओं को चराने के लिए कौन ले जायगा ? उनके यहाँ काम करनेवालों की वैसे ही कमी है। संयुक्त-परिवार न होते, तो अब तक जमीन गज और फुट में बंट गयी होती और नारी परिवार से बँधी न होती, तो परिवार भी बिखरकर फैल जाते। लोगों को नौकरी करने के लिए देश जाना पड़ता। आज तो एक-एक व्यक्ति का अपना-अपना मूल्य है। पिछले साल सरहद पर का पेड़ काट लेने पर उसके सबसे छोटे पति से दूसरे गाँव वालों का झगड़ा हो गया था। उसमें उसकी मृत्यु हो गयी थी। सदर सयाणा ने पचायत करके आखिर फैसला दिया था कि जिस व्यक्ति के परिवार-द्वारा वह मारा गया है, उसका एक बेटा इस परिवार को दे दिया जाय। इस भाँति उस क्षति की पूर्ति हुई थी। उसका वह नया पति अब इस परिवार में ही रहता है। वह इसी का सदस्य बन गया है।

वह दाई भाई के पास पहुँची। उसकी अवस्था लगभग तीस की होगी। सारा शरीर सुफेद पड़ गया था। नाक चपटी-सी थी। उस प्रदेश के लिए जहाँ कि नब्बे प्रतिशत आबादी घृणित रोगों से बीमार रहती है, हर परिवार में एक-दो दाई भाई का होना असाधारण घटना नहीं है। लेकिन उसे अपने उस पति की कुरूपता से कोई घृणा नही है। उसने उसे उसकी प्रिय शराब 'रावण' पिलायी, और उसके साथ स्वयं भी पी। वह उसे मासू देवता (महाशिव) के उनके गाँव मे आने की बात सुनाता रहा। गाँववालो ने उस घुम्मकड़ देवता को कुछ दिनों के लिए अपने गाँव में आमंत्रित किया था, वह देवता शीघ्र ही पालकी पर चढ़ कर उनके गाँव आयेगा। महीने भर तक वह वहाँ के मंदिर मे अस्थायी रूप से टिका रहेगा। दाई भाई ने बताया था कि वे उस देवता से अनुरोध करेंगे कि इस पाप से छुटकारा मिल जाय। वह इस पर हँसने लगी। पहले उस परिवार की धारणा थी कि वह दाई भाई के दायित्व को निभाना संभवतः स्वीकार न करे। इसीलिए उस परिवार के ज्येष्ठ पुरुष ने अपने भाइयों को सुझाया था कि दाई भाई को जिन्दा ही खेत में जला दिया जाय। ऐसा विश्वास है कि जिस परिवार का कोढ़ी जिन्दा खेत में जला दिया जाता है, उस परिवार में फिर कोई व्यक्ति कोढी नही होता है। इस नारी ने उस बात का प्रतिवाद किया था। वह दाई भाई घर के लिए अनाज पिसाकर लाया करता है, जंगल से जड़ी-बूटियाँ लाता है और फलों के संरक्षण में प्रवीण है।

कुछ देर के बाद दाई भाई खा-पीकर ऊंघने लगा, तो वह चुपचाप नीचे उतरी। आज वह बहुत बेचैन थी। सब मंजिल उतरकर वह नीचे-वाली मंजिल में भेड़ों को देखने पहुँची। बड़े पशु रात के लिए खेत चले गये थे। उसकी आहट पाकर मेमने मिमयाने लगे। उसने एक को पकड़-कर गोदी मे ले लिया और उसकी कमर पर फैली हुई ऊन को सहलाती रही। फिर उस कमरे का दरवाजा ठीक तरह से बन्द करके वह ऊपर पहुँची। दूसरी मंजिलवाली कोठड़ी खोलकर उसने अपने अन्न तथा अन्य

वस्तुओं के भंडार को देखा। वह अन्नपूर्णा भी आज उसे संतोष नहीं दे सकी। कोने में रखी कीम (जौ तथा जड़ी बूटियों) की रोटी को सावधानी के साथ उसने पात्र के घोल में (शराब बनाने के लिए) मिला दिया। कम्मो ने कहा था कि माँ, लाल पांखुड़ी मदिरा बहुत दिनों से नहीं पी है। उसके लिए वह इसे ढालेगी। वह सुन्दर शराबें बनाने में प्रवीण है। कम्मो को भी उसने वह कला सिखलायी थी। लेकिन उसका परिवार केवल मदिरा पीकर ही संतोष नहीं कर सकता है। उसे पुत्र और पुत्रियाँ चाहिएँ।

तीसरी मंजिल पर खाने के कमरे से उसने लड़कियों की ठिठोलियाँ सुनीं। कोई लड़की कम्मो से पूछ रही थी कि वह अतिथि कैसा है? उसके लिए क्या उपहार लाया है? वह कहाँ से आया है?

कम्मो चुप थी और वे लड़कियाँ उसमें नवजीवन उड़ेलने का निरर्थक प्रयत्न कर रही थीं। वह जल्दी से कमरे में घुसी। इस डर से कि लड़कियाँ उससे भी सवाल न पूछ बैठें, उसने उबले हुए अंडे, भुना हुआ गोश्त निकाला और तेजी से ऊपर की ओर बढ़ गयी। अतिथियों के आगे रखकर उसने कहा—सयाणाजी, यह घिन्टी (एक शराब) ताजी बनी हुई है—और बोतल उसके आगे रख दी।

वे उसे पी रहे थे। बाहर तेज हवा चल रही थी। पास जो देवदारु का घना जंगल था, वहाँ से एक विचित्र-सी स्वर-लहरी बह रही थी। अब उस नारी के तीन पति भी उस खान-पान में सम्मिलित हो गये थे। वह नारी सब का आतिथ्य-भार उठा रही थी। बार-बार वह नीचे जाकर आवश्यक सामग्री ले आती थी। वह अतिथि उस नारी की इस कार्य-कुशलता पर मुग्ध-सा था। वह उसे सम्मानित अतिथि मान रही थी, इससे वहाँ के वातावरण में गंभीरता फैल गयी थी।

सयाणा बीच-बीच में स्थानीय बातें छेड़कर उस वातावरण में जीवन लाने की चेष्टा कर रहा था। लगता था कि उसके पति जीवन-हीन हैं और वह नारी उनमें भी जीवन डालती लगती थी।

एकाएक न जाने क्या सोचकर सयाणाजी ने प्रश्न किया—कम्मो कहाँ है ?

गृहस्वामिनी इस प्रश्न को सुनने के लिए तैयार थी। चुपके बोली—खाना बना रही है।

"अब तो खाना हो गया। उसका काम था कि सबको खिलाती।"

सयाणाजी की इस बात पर संभवतः गृहस्वामिनी बुरा मान गयी। वह चुपचाप उठकर बाहर चली गयी। उसने नीचे जाकर कोल्टा (हरिजन नौकर) को पुकारा और उसे खेतवाले पति के पास खाना लेकर भेज दिया। फिर उसे जोर से सुझाया कि घंटे भर में वह भी वहाँ आयेगी।

उसके पतियों, सयाणा तथा कम्मो, सबने वे शब्द सुने। कम्मो तो समझी कि माँ पागल हो गयी है। आज तक कभी खेत मे नहीं सोयी, फिर आज जाकर क्या करेगी? भला औरतें कहीं खेत में सोने के लिए जाया करती हैं ! पति समझ गये कि यह सयाणाजी को धमकी है कि अब आगे से इस परिवार में उनका आतिथ्य नहीं होगा। इस अपमान का बदला वह चुकायेगी। सयाणाजी उलझन में पड़ गये और चुपचाप उठकर बाहर निकले।

गृहस्वामिनी नीचे गुमसुम चूलू के पेड़ के नीचे खड़ी थी। पीली-पीली पकी चूलू टपक रही थी। सयाणा ने आकर कहा—ममी (श्रीमतीजी) ?

ममी वहाँ की नारी के लिये बहुत ही आदर का शब्द है। वह उसकी ओर देखकर पूछ बैठी—सयाणाजी, क्या है ?

"अतिथि का भार क्या कम्मो उठा सकेगी ?"

इस कम्मो के सौन्दर्य की चर्चा चारों ओर आज भी है। सयाणा का ख्याल था कि परिवार अतिथि को उसे सौंपेगा। लेकिन गृहस्वामिनी मूक थी। वह बस इतना कहकर चुप रह गयी कि कम्मो से पूछेगी।

—कम्मो चुपचाप चौके मे बैठी अपने पिछले जीवन के पन्नों को बिखेरकर वहाँ कुछ ढूंढ़ रही थी। उसकी सहेलियों का कहना था कि आज का अतिथि सुन्दर युवक है। उसके लाए हुए उपहार आज न सही, कल-परसों

वे देख ही लेंगी। उसने भी उस अतिथि को देखा है, पर उससे बातें करने का कोई उत्साह उसे नहीं है। इस परिवार में उसने जीवन पाया, पाँच साल की अवस्था में उसकी शादी हुई। उसके तीन पिता और गाँव के सात-आठ आदमी लड़के के घर शादी करने गये थे। उसका पहला पति आठ, दूसरा छै, तथा तीसरा उस समय दो साल का था। ज्यों-ज्यों वह बड़ी हुई उसके पतियों की संख्या भी बढ़ती चली गयी। और जब चौदह साल की उम्र में वह ससुराल गयी, तो ज्ञात हुआ कि उसके सात पति हैं। सास अंतिम बेटे के बाद दूसरे परिवार में चली गयी थी और नयी सास की अवस्था बडी नही थी।

उसकी मा ने माघ के महीने उसके लिये शराब की एक बोतल तथा भेड़ की रान भेजी थी। फिर बैसाख में बिस्स (वैशाखी) पर चावल और चिवड़ा भेजा था। उसकी सास एक सप्ताह उसके आने के बाद रही और फिर मायके चली गयी थी। वह पाँचवें महीने मायके लौटना चाहती थी, पर एकाएक उसके एक पति की मृत्यु हो गयी और उसने अपनी नथ निकालकर एक दिन का शोक मनाया था। उस पति को तो वह भली भाँति पहचान तक नहीं पायी थी। पहला पति ही परिवार, खेत, बाग, पशु-धन आदि का स्वामी होता है। पर नारी तो सबकी है और वह अपने सभी प ।

ससुराल में उसका शासन था। सभी पति उसके आदेशों का पालन करते थे। लेकिन वहाँ व स्वतन्त्र नही थी। अवस्था कम होने पर भी वह घर की *मालकिन थी और बड़ी-बूढ़ियों के समान ही* उसका आदर होता था। किसी युवक के साथ वह हँस नही सकती थी। एक-दो सामूहिक नृत्यों मे उसने भाग लिया, पर वे उसे नीरस लगे थे। मायका उसकी स्वतन्त्रता का क्षेत्र था, वहाँ उसका जीवन निखरता था। मायके में वह गाँव के युवकों के साथ पहाड़ की चोटी पर बैठकर घाटी में बहती हुई नदी का दृश्य निहारा करती थी। कभी-कभी वह उनके साथ घने देवदारु और बांज के जंगलों में, जाती और वहाँ फैली पयाल पर बैठकर उनके साथ

सिगरेट पीती हुई गीत सुनाया करती थी। उसके बाग में खुबानी, आड़ू, नासपाती, सेब, चूलू आदि फलों के पेड़ थे। उसे फूल बहुत पसन्द थे और जंगली फूलों को भी अपनी क्यारियों में लगा देती थी। अखरोट के मौसम में वह अपनी पसन्द के अखरोट जमा करके रखती थी। अखरोट के साथ चिवड़े और पोस्त के बीज खाने का उसे शौक था।

जब वह ससुराल से पहली बार मायके लौटकर आयी, तो उसने जीवन में एक नई उमंग पायी। गाँव के युवक उसके निखरे हुये सौन्दर्य की चर्चा करते थे। कुछ उसे ताककर मुस्करा देते थे। कई उसके लिए उपहार लाये थे। हर एक युवक उसे अपनाना चाहता था। एक नौजवान तो उसे चिढ़ाया करता था—ममी। और वह हँसकर उत्तर देती थी—धुत, मैं ससुराल की ममी नहीं, मायके की ढाटी (कुमारी) हूँ।

लेकिन वह भला चुप क्यों रहता—ममी के सात पति हैं, वह रांठी (विवाहिता) है।

तो वह चटपट कहती—ससुराल में कहाँ हूँ कि रांठी कहोगे, मैं तो मायके की ढाँटी हूँ।

फिर सभी खिलखिलाकर हँस पड़ते और वह अनजान-सी बनी अपने प्रिय युवक से कहती—मेरा ढाँटो कहाँ है ?

उस युवक ने सुन्दर रेशमी रूमाल निकालकर उसे दिया था और कम्मो ने जल्दी से उसे अपने सिर पर बाँध लिया और उठकर भाग गयी थी। उस समय उसकी काली-लम्बी चोटी झूलती हुई अपूर्व लगी थी।

मायके के वे कितने सुन्दर दिन थे! दीवाली कब बीती, उसे मालूम नहीं हुआ। फिर माघ का महीना भी कट गया और आषाढ़ का मछली मारने का त्योहार आ गया। वह उस मेले में बड़े उत्साह से गयी थी। दो नदियोंके संगम का वह स्थान नगारा, तुरी, मकोरा आदि वाद्यों की ध्वनि से गूँज रहा था। उस घाटी की वायु मादकता के हिलोरों में झूम रही थी। उसने उस दिन खूब सूर गाँव के नवयुवकों के साथ पी थी। कई बार अपनी हमजोलियों के साथ सामूहिक रूप से नाची भी थी। वहाँ कई

गाँवों के लोग आये थे । बारी-बारी से सभी गाँव के पुरुष और नारियों ने सामूहिक नृत्य किया था । सदर सयाणा गाँव के लोगों के साथ संगम के पास के स्थिर, गहरे पानी में जड़ी बूटियाँ और जाल डाल कर मछली मार रहा था ।

मेले में कई परिवारों के युवकों ने उसे उपहार दिये थे और कुछ ने अनुरोध किया था कि वह पुराने परिवार को छोड़कर उनके नये परिवार में चली आए । वे छूट का तिगुना-चौगुना हरजाना देने के लिए तैयार थे । वहाँ के युवकों ने उसे मेले की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी घोषित किया था । उसकी माँ उस घटना से बहुत प्रभावित हुई थी । हँसकर उसने परिवारवालों से कहा था कि उसकी पुत्री का भविष्य उसी के समान उज्ज्वल रहेगा ।

शाम होने से पहले मेला समाप्त हो गया था । लोग अपने-अपने गाँवों को लौट रहे थे । तभी उसकी माँ ने बताया था कि वे लोग आज वहीं पटवारी की चौकी पर रहेंगे और कल सुबह गाँव लौटेंगे । धीरे-धीरे शाम हो आई और रात का धुंधला अंधकार फैल गया । अभी तक पर्वत के शिखरों और आस-पास के गाँवों से बाजों की गूँज सुनायी पड रही थी । उन बाजों की गूँज, उस घाटी में थिरक रही थी ।

वे पटवारी की चौकी पर गये थे । वहाँ कई फिरंगी भी टिके हुए थे । वे भी उनके साथ सूर पीने में शामिल हुए थे । पटवारी ने दावत की बड़ी सुन्दर व्यवस्था की थी । कई नये-नये खाने थे, जो कि उसने पहले कभी नहीं खाये थे । उन लोगों ने बड़ी रात तक खाना खाया था । अपनी माँ के अनुरोध पर उसने फिरंगी अधिकारी का रात का आतिथ्य स्वीकार कर लिया था । वह बड़ी उमंग में थी । पटवारी ने बताया था कि वह एक बड़ा अधिकारी है, जो उस छावनी में तीन-चार दिन के लिए आया था और यह तो मौके की बात थी कि यह मेला उन दिनों पड़ गया ।

—वह एकाएक चौंक उठी । सयाणाजी न जाने कब उस कमरे में चला आया था । बोला—कम्मो, तू ऊपर क्यों नहीं आई ? ऐसे अतिथि कब-कब आया करते है ?

वह चुप रही। सयाणाजी की उस बात को तोलती रही। सयाणाजी ने एक बार सावधानी से उसे देखा और लगा कि अपनी माँ का सारा सौन्दर्य कम्मो लायी है। तभी तो उस प्रदेश की श्रेष्ठ सुन्दरियो मे उसकी गणना होती है।

माँ के कहने पर उसने खाना खाया था और खूब लाल पालुणी पी थी। माँ ने उसे ताजो गुर भी पीने को दी थी। वह चाहती थी कि वह पीकर दुख भूल जाय। फिर माँ ने चुपके से कहा था—कम्मो, सयाणाजी का आग्रह है कि अतिथि का सत्कार तुझे करना है।

"अतिथि का सत्कार, ईजा (माँ) ?" कम्मो अवाक्-सी माँ को देखती रह गयी कि वह माँ बावली तो नही हो गयी है। तभी उसे कुछ साल पुरानी घटना याद आ गयी।

—आज से चार साल पूर्व इसी भाँति माँ ने एक अनजान अतिथि का सत्कार करवाया था। वह मेले का त्योहार उसके जीवन की सबसे दुखद घटना बनी थी। मेले के बाद वह अपनी ससुराल चली गयी और वहाँ बहुत अस्वस्थ रही थी। छठे महीने उसके मरी हुई लड़की पैदा हुई थी। अस्पताल मे वह दो महीने रही। डाक्टरनी ने बताया था कि उस रोग का इलाज न हो सकेगा। भविष्य मे वह मातृत्व प्राप्त न कर सकेगी। उसी दिन से पति-गृह मे उसका मान घट गया। वह बडा परिवार अब एक माह बाद नई नारी को ले आयेगा ! आज तक वह उस परिवार की स्वामिनी थी। अब भविष्य में उसका जीवन मायके में ही असफल रूप मे कटेगा।

कम्मो का अभिमान उभरा। उसे गुस्सा चढा उस अतिथि पर, जिसने कि उसका जीवन नष्ट कर दिया। ये अतिथि यहाँ आकर उनका जीवन नष्ट कर देते है ! वह उस अतिथि से आज पूछेगी कि यह उनका कैसा न्याय है ? वह जोश के साथ बोली—माँ, मैं अतिथि के पास जाऊँगी।

माँ का चेहरा खिल उठा। जिस अपमान की बात वह सोच रही थी, वह लज्जा धुल गयी थी। कम्मो ने तो आसानी से समस्या को हल कर दिया। उसने सयाणाजी को सारी स्थिति बताकर, उनके अनुरोध का पालन करने

को बात कह दी।

वह अतिथि उस प्रदेश की बात सोच रहा था, जहाँ कि फिरंगी ने अपनी छावनी की स्थापना कभी की थी। मिस्कोट और छावनी की इमारतों को लाल टीन से छायी छतें याद दिलाती हैं कि अंग्रेजी साम्राज्य कभी यहाँ तक छाया हुआ था। फिरंगी ने गदर के बाद भारत में छावनियों का बड़ा जाल बिछाया, देश की पुरातन आर्थिक व्यवस्था को ही नष्ट नहीं किया, साथ ही इस प्रदेश के वासियों को ऐसे-ऐसे रोग सौंपे कि जिनका असर वहाँ के मानव पर पड़ा है। अंधे, कोढ़ी मानव यहाँ बड़ी तादाद में हैं। फिर यहाँ की अधिकांश नारी अपना मातृत्व का रूप भी खो बैठी हैं।

—कम्मो की आहट से वह चौंक उठा था। सयाणा राह भर इस नारी के रूप और सौन्दर्य की चर्चा करता रहा है। वह उस नारी को बड़ी देर तक देखता रह गया। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में उसने आँसू छलछलाते हुए पाये। लगा कि वह नारी बहुत दुखी है। उसने सुना था कि वहाँ की नारी अपने हाव-भाव से अतिथि को लुभाया करती है। वह उच्छृंखल है, उसका धर्म है कि वह अतिथि को वासना बुझाये। लेकिन कम्मो की कातर दृष्टि में उसने वेदना पायी। कौन कहता है कि वहाँ की नारी में भावना नहीं है? यह झूठ है कि उसके हृदय में ज्वार-भाटा नहीं उठता है। निराधार बात है कि वह केवल एक खिलौना है, जिससे पुरुष जिस तरह चाहे, खेले। यह सब बाहर के उन लोगों की बातें हैं, जो भोली और सरल नारी की कोमलता को नष्ट करने वहाँ आते हैं। इन अतिथियों ने जान-बूझकर वहाँ की नारी को बेड़ियाँ पहनाकर उसे गुलाम बनाने की चेष्टा की है।

कम्मो अब संभल गयी थी। अपना विद्रोह रोक, आँसू का घूँट पीकर वह बोली थी—मुझे ईजा ने भेजा है।

वह उस पुरातन को फिर मानो कि दुहराना चाहती है। वह अधिक कुछ न कहकर फफक-फफककर रो पड़ी। उसने उसे देखा और पाया कि

इमली की पत्तियाँ

पंजाब मेल लेट था और हम स्टेशन पर चक्कर लगाते रहे। गाड़ी के लेट होने से मन में व्यर्थ कई सवाल उठते हैं। कुछ देर के बाद तो एक अधिकारी ने बोर्ड पर खड़िया मिट्टी से लिखा कि गाड़ी एक घंटे लेट है और चुपचाप अपने ऑफिस की कुर्सी पर बैठ कर टेलीफोन का चोगा कान पर लगा लिया। वह 'हलो', 'हलो', इस तेजी से पुकार रहा था कि वह आवाज दरवाजे से बाहर तक सुनाई पड रही थी। मेरा साथी जब कि उससे पूछने गया कि क्या गाड़ी घंटे भर बाद आ जावेगी तो वह सूखे स्वर में बोला—अभी यही सूचना मिली है। उसके कहने से लगता कि नई सूचना प्राप्त होने पर वह बोर्ड पर समय बढा सकता है। इसका अर्थ था कि हम दिल्ली रात के करीब ग्यारह बजे पहुँचगे और घर का दरवाजा मध्य रात्रि को खटखटाया जावेगा।

मेरे साथी ने पहले सोचा था कि चाय आगरा पी जायगी, पर अब वे यहां के रिस्तोरां में पीने के पक्षपाती थे। मैं बिना आनाकानी के उनकी बात मान गया। उन्होंने 'फ्राई अंडे' और 'टोस्ट' की मांग की और एक-एक प्लेट 'मीट चॉप' मँगवा लिया। चाय कुछ तेज लाने को कहा। वे चाय की चुस्कियों के साथ वहाँ बैठे हुए सभी मुसाफिरों को गौर से देख रहे थे। यह उनकी बहुत पुरानी आदत है कि जो कोई व्यक्ति उनकी आँखों के आगे गुजरता है उसे वे घूर कर देख, एक बार उसके मन की बातों की दूर से ही छान-बीन करते हुए से लगते हैं। वे पुलीस के उच्च अधिकारी हैं और एक मामले में भारत-सरकार की ओर से जाँच करने कुछ दिनों

के लिये ग्वालियर आए थे। होटल में मुसाफिर आ जा रहे थे। वे चुपचाप अपना सिगार सुलगा कर अधमूँदी आँखों से कुर्सी की पीठ पर सिर रखे हुए थे।

उनका कहना था कि हर एक व्यक्ति को देख कर उसके बारे में तत्काल राय कायम करने की आदत उनकी सफलता की बडी कुँजी है। एक बार उन्होंने सरे बाजार एक डाकुओं के गिरोह के सरदार का हाथ पकड कर कहा कि कोतवाली चलिए। वह व्यक्ति अवाक् उनकी ओर देख रहा था कि वे बोले, 'पंजाब की पुलीस आपको तलाश करते-करते थक गयी और आप यहाँ चाँदनी-चौक की हवा खा रहे हैं।'

वह व्यक्ति विवश हो गया और जब उसकी तलासी ली गयी तो उसके पास भरा हुआ पिस्तौल मिला। चाँदनी चौक की उस भीड़ को इस घटना का कोई ज्ञान नहीं हुआ और अगले दिन जबकि सुबह को समाचार पत्रों में यह समाचार छपा तो सबको आश्चर्य हुआ था। वे यू० पी० के थे और डिपुटेशन पर वहाँ पाँच साल से काम कर रहे हैं। उनसे उनके खास दोस्त भी खुलकर बातें नहीं करते थे। कौन जाने कब क्या बखेड़ा उनके द्वारा खड़ा न हो जाय। एक बार उनके एक मित्र की पत्नी के यहाँ उनकी पत्नी .लडके होने के उत्सव में शरीक हुई। उसने लौट कर बताया कि आज उसकी सहेली का नया जड़ाऊ हार पहना हुआ था और उसने एक हीरे की अंगूठी अभी हाल मे खरीदी है। यह सुन कर वे चुप रहे। लेकिन स्पेशल पुलीस के एक दस्ते ने अगले रोज उस सिवीलियन के यहाँ छापा मारा और उन पर लोहे के गैर कानूनी परमिट देने के सिलसिले में सरकार ने मुकदमा चलाया था। जिसमें कि 'सेसन जज' ने सात साल की जेल तथा पचास हजार जुर्माना किया। यह सबको विश्वास था कि वे आगे छूट जावेंगे। इस पर हमारे इन दोस्त की दलील थी कि कानून में न्याय नहीं है। अपराध इसीलिए बढ़ रहे हैं। उनका खयाल था कि सारा अपराध कानूनी बहसों पर निर्भर ९९, और वकील की बहस अपराधी के प्रति जज का रुख बनाती है।

परेशानी थी कि सबसे ज्यादा रुपया काटता है पी० डवलू० डी० जब कि वदनाम है पुलीस का महकमा।

गाडी स्टेशन पर रुकी तो उन्होंने कुली से सामान इंटर क्लास में रखवाया। वे कभी ऊँचे दरजे में सफर नहीं करते। वैसे उनको अधिकार है कि वे फस्ट में चलें। उनका कहना है कि उनको इंटर में सफर करने में यह सुविधा होती है कि मध्य वर्ग के लोगों की जानकारी होती है उनका कहना था कि नये स्कूल-कालेज के लड़के जो कम्यूनिस्ट होते हैं वे इसी में सफर किया करते है। ये सदा ही सिवीलियन लिवास में रहते और उनको देख कर कभी किसी को यह सन्देह न होता था कि वे इतने वड़े अधिकारी हैं। कुली से 'हालडाल' एक खाली वर्थ पर बिछवा कर, वे आराम से उस पर लधर गये। हमारे कम्पार्टमेंट मे चार मुसाफिर और थे। मारवाड़ी सेठ जी अभी तक मजदूर से झगड़ रहे थे। कुली का कहना था कि दो कुलियो का सामान है और सेठ ने उसे तीन आना देकर टरकाना चाहा था। सेठ एक पैसा फिजूल मे नहीं देना चाहता था और उसका कहना था कि ये लोग इसी तरह मुसाफिरों को ठगा करते हैं। सरकारी रेट दो आना है। कुली नोजवान था और उसने सेठजी को खरी-खोटी सुनानी शुरू करदी। हमारे बहुत कुछ कहने पर वे एक आना और देने के लिए विवश हुये। कहा आप लोग ही भाव बिगाड़ देते हैं।

मुझे मारवाड़ियों से सदा एक दूरी का भाव रखने की आदत पड़ गयी है। मेरे दोस्त की राय है कि भारत में यह यहूदियों की दूसरी जाति है। हिटलर ने जव यहूदियों को जर्मनी से खदेड़ा तो मेरे ये अजीज दोस्त सोचते थे कि एक दिन यही वर्ताव इस कौम के साथ वरतना पड़ेगा। उनका कहना था कि हिमालय की बीहड़ पहाडी चट्टियों के लेकर रेगिस्तान में चले जाइए मारवाड़ी बनिये के दर्शन आपको अवश्य हो जावेंगे। वह अपने व्यापार वढाने में बहुत कुशल हैं। उनकी वाणी में मिश्री का घोल मिलेगा। लेकिन वह अपने कर्जदार को कचेहरी भेजने में उतना ही उदार है। सेठजी से वातें करने पर ज्ञात हुआ कि वे पहले दिल्ली जावेंगे और

फिर वहाँ से कलकत्ता। उनकी पत्नी खिड़की के ऊपर लगाये गये पर्दे व सीटों के बीच टंगी चादर के बीच छुपी हुई शायद ऊँघ रही थी। उनके सामान से लगता था कि शायद वे नई शादी करके लौट रहे थे। वे अधेड़ थे, पर इस कौम के अधिकतर पुरुष युवा अवस्था धनोपार्जन में व्यतीत कर प्रौढ़ अवस्था मे परिवार बसाते हैं। कलयुग के देवता अर्थ की उपासना का सिद्धान्त वे भली-भाँति निभाते हैं।

दो खद्दरधारी मुसाफिर किसी आपसी चुनाव की बात कर रहे थे। उनकी राजनीति का दायरा अपने जिले तक ही सीमित था। एक बात की चर्चा उनकी बातों में उभर रही थी कि कांग्रेस में भ्रष्टाचार हो रहा है। वे चुनावों से दुखी थे। उनका खयाल था कि कुछ गिने-चुने हुए लोग ही गद्दी नसीन हुए हैं। वे संभवत: उस गुट के थे, जिनका बाहुबल वहाँ की कांग्रेस मे नही था। कई बातो में उनमे आपसी मतभेद था और बीच-बीच में वे किसान-मजदूर पार्टी और सोसिलिस्ट पार्टी की चर्चा कर बैठते थे। चीन के राज्य के बारे में उनमे से एक अपनी राय देता हुआ कहता कि वहाँ दो साल में ही हालत सुधर गयी है। उनकी बातो मे साधारण कार्यकर्त्ताओं की विरोधी भावना के अलावा और तथ्य कुछ नही मिलता था।

डिब्बे में एक मुसलमान सज्जन बैठे थे और पहनावे से लगता कि वे कही दक्खिन के है। उन्होने रेलवे का नया टाइम टेबुल मेरी सीट से उठा कर पूछा कि दिल्ली रेलवे स्टेशन के नजदीक कोई अच्छा होटल है। वे दिल्ली पहली बार जा रहे है और हैदराबाद मे किसी सरकारी नौकरी पर थे। पहले उनकी दुनिया हैदराबाद के भीतर सीमित थी, पर अब वे विशाल भारत की परिधि को जान लेने के लिये विवश थे। उनके अधिकारी हवाई जहाज से उड़ कर कल पहुँच जावेंगे और दफ्तर के बाबू लोग इंटर के तीन टिकट आने-जाने के सफर खर्च का पाकर सन्तोष कर लेते है। वे लगभग चालीस के थे और उनकी सारी जिन्दगी हैदराबाद के किसी छोटे शहर में कट गयी थी।

हमारे दोस्त ने अपनी आदत के अनुसार एक अमेरिकी जासूसी उपन्यास अटैची से निकाला और उसे पढ़ने लगे। जासूसी उपन्यास पढ़ने की उनकी आदत बहुत पुरानी है। उनका कहना है कि इधर दुनियाँ में खून तथा डकैती में अमेरीका ने दुनियाँ के और देशों को पछाड़ दिया है। उन उपन्यासों के टाइटिल काफी दिलचस्प रहते हैं। एक फ्राक पहने हुए लड़की, ताश के कुछ पत्ते, एक खाली पिस्टल बर्फ पर पड़ी हुई, किसी के पाँव के निशान और टूटा हुआ वायलिन? इन सबको लेकर ही मनो-वैज्ञानिक ढंग से अपराधियों को पकड़ने की नई व्यवस्था की जाती है। *यहाँ के अपराधों का मनोविज्ञान आज दुनियाँ के सब देशों से आगे बढ़* गया है। मेरे दोस्त अपने उपन्यास की दुनिया में मौज लेते हुए कभी-कभी बाहर प्लेटफार्म पर एक नजर डाल लेते थे। मुझे स्वयं यह नहीं मालूम था कि वे यहाँ क्यों आए हैं। मुझे एक सप्ताह पहले उनका फोन मिला था कि वे एक जरूरी काम से ग्वालियर जा रहे हैं, मैं भी चलना चाहूँ तो चल सकता हूँ। मैंने ग्वालियर नहीं देखा था। फिर मुझे अकेले सफर करने की आदत नहीं है। इस सन्देश को पाकर मैं तुरंत तैयार हो गया। हम एक सप्ताह वहाँ रह कर लौट रहे थे।

गाड़ी चलने को थी कि एकाएक एक युवती ने हमारे कमरे में प्रवेश किया। वह बहुत घबराई हुई लगती थी और जब डिब्बे में उसका सामान कुली ने ठीक तरह लगा दिया तो वह जैसे होश में आई। कुली को आठ आना पैसा देकर विदा किया और उस मारवाड़ी महिला की सीट पर बैठ गयी। उस युवती को मैंने देखा, लगता था कि वह बहुत परेशान है। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था। वह ऐसे बैठी हुई थी कि मानो कोई स्टेचू वहाँ सीट पर स्थापित कर दी गयी हो। उस मारवाड़िन को एक सहेली पाकर संभवतः बहुत खुशी हुई और वह बार-बार उसे इशारे से अपने पास बुला रही थी। पर उस युवती का ध्यान उस ओर नहीं गया। वह तो अपने में ही डूबी हुई न जाने क्या सोच रही थी। लेकिन मारवाड़िन ने किसी तरह से उसे अपने उस परदे के भीतर बुला लिया, वह भी संभवतः उस

आश्रय को पाकर खुश थी। अपनी उस अस्तव्यस्तता को अपने में संभालने का अवसर शायद उसे वहाँ मिल जाय।

जब गाड़ी चली तो लगा कि मैं एक ऐतिहासिक नगर को छोड़ रहा हूँ जो कि आज से लगभग पांच सौ साल पहले सङ्गीत का केन्द्र था। मान-मंदिर, गूजर महल आदि राग-रागनियों की गूंज से जीवन की भावुकता में बहते होंगे। गूजरी टोड़ी, ध्रुपद और धमार की स्वर-लहरी में लोग झूम-झूम उठते होंगे। और बैजू बावरा अपनी वीणा पर, यह तान, वह तान, यह गमक, वह गमक की धुन में नई-नई राग-रागनियों का निर्माण करता रहा होगा। उन दिनों अमीर खुसरू द्वारा निर्माणित सितार को सभी नागरिक अपनाते रहे होंगे। अमीर खुसरू ने वीणा को नया रूप देकर जन-सुलभ सितार का आविष्कार किया था। यहाँ के विद्यापीठ में दूर-दूर के विद्यार्थी संगीत का ज्ञान प्राप्त करने आते थे। इसी धरती ने प्रसिद्ध गायक तानसेन की स्वासो मे संगीत की लहरो का किल्लोल सौंपा होगा। वहाँ का वह महल जो कि अपनी निराली सजावट रखता है; हरे, पीले और बैजनी रंगों के पत्थरों से पटा हुआ महल का आंगन। देश के सांस्कृतिक उत्थान का वह नया युग था जो कि आगे आपसी गृह-युद्ध की आग मे झुलस कर नष्ट हो गया। जो थोड़े से अवशेष बचे थे, उनसे अतीत की याद आती और लगता कि उस परम्परा की रक्षा करके, उसे आगे बढ़ाना है।

उस नगर का ऐसा प्रभाव मुझ पर पड़ा कि वहाँ के लोगों के बताए हुए ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन मन पर छा गये। मेरे साथी अपने सरकारी काम में व्यस्त रहते और मैं सुबह की चाय होटल में पीकर बावला बना उन ऐतिहासिक वस्तुओं मे कुछ ढूंढने का निरर्थक प्रयास करता था। मेरा अपना विश्वास था कि राजा मानसिंह भविष्य का ज्ञाता होगा और अपने परिवार की परम्परा को तोड़ कर उसने साधारण गूजर परिवार की एक युवती की वीरता पर मुग्ध हो कर उसे अपनी रानी बनाया था। वह रानी जनता की भावना को व्यक्त करती थी। यदि युद्ध

न होते तो यह कला आगे बढ़ती। आज अब केवल कुछ परंपरायें उस युग की बाकी रह गयी थीं। अब देश से राजा मिट गये, अंग्रेज विदा हो चुका और ग्वालियर राज्य भारत का एक सबल अंग बन गया था।

गाड़ी तेजी से बढ़ रही थी। मेरे साथी मुझे चुनौती दे रहे थे कि यदि मैं जासूसी-उपन्यास पढ़ा करूं तो अपने 'डोमेन्टी' के रोग से मुक्त हो जावूं। वे तो अमेरीका के उन लेखकों पर फिदा थे जिनकी बुद्धि इतनी पैनी है। लेकिन मैं हंस पड़ा और बोला, "आप उनकी अपराधियों वाली मनोवृति पर मुग्ध हैं, पर मुझे लगता है कि पिछली लड़ाई ने उस देश में अपराध करने की प्रवृति बढ़ा दी है। इन उपन्यासों का असर उनके यहाँ बच्चों पर पड़ रहा है। आज वहाँ बच्चों के अपराधों की संख्या बढ़ रही है। यही नहीं आज अमेरीका का वातावरण संदिग्ध हो गया है और वहाँ के राजनीतिज्ञ व्यर्थ ही अपने दाँव-पेंच की बातों से नागरिकों को बहकाते हैं कि लड़ाई होने वाली है। इस लड़ाई वाली मनोवृति के कारण वहाँ का नागरिक-जीवन बहुत ही विषम हो गया है।"

मित्र अमेरीका के भक्त हैं। उनका कहना है कि विज्ञान, कला और संस्कृति में आज वह देश सबका अगुवा है। वे उस देश के खिलाफ कोई बात सुनने के लिए तैयार नहीं। कुछ लोगों का ख्याल है कि वे वहाँ सरकार की ओर से निमंत्रण पाकर घूमने के लिए जाने वाले हैं। दोस्त सन् तीस में हमारे साथ मैट्रिक में पढ़ते थे। वे पढ़ने में होशियार नहीं थे पर परिवार ने अंग्रेजों की सेवाएँ पिछली कई पुश्तों से की थी। इसीलिए वे दरोगा बना दिए गये। फिर वे विद्यार्थी-आन्दोलन की देखभाल करते रहे तथा अपने साथियों के साथ रह कर ही उनके भेद पुलीस को देते रहे। यह कम लोगों को ज्ञात हुआ कि वे नौकरी पर लग गये हैं। कारण कि दो साल तक तो वे कालेज में नाम लिखा कर होस्टल को रोशन करते थे। जब दोस्तों को उनका सही रूप ज्ञात हुआ तो वे एकाएक लोप हो गये।

मैंने सन् बयालीस में फिर उनके दर्शन किये और उन्होंने बताया था कि अब वे डिप्टी हो गये हैं। उन दिनों विद्यार्थी-आन्दोलन की देखभाल करने

के लिए सरकार ने उनको नियुक्त किया और वे लखनऊ में रह कर सारे प्रान्त का संचालन करते थे। यही नहीं पहला काम जो उन्होंने किया वह मेरे घर की तलाशी ली और जब मुझे नजरबन्द कर लिया गया तो एक बार जेल में मुझसे मिलने के लिए आए। कहा कि मैं कोई चिन्ता न करूँ, वे माहवारी मेरे परिवार की खबर ले लिया करते हैं। खीसें निकालते हुए हँसे कि नौकरी में व्यक्ति की आत्मा का खून होता है, पर दुनिया मे सभी लोग चरित्रवान नहीं होते। भला पुलीस की क्या बसात है कि सब बातों का पता चला ले। आन्दोलन में लगे हुए कुछ व्यक्ति भेद दे देते हैं। उन दिनों चर्चिल की तारीफ करते हुए बताते कि सच ही उसमें मनोबल है। जापान पूर्वी दरवाजे पर खड़ा है और उसने बिना किसी हिचक के कांग्रेस पर हमला कर दिया। आन्दोलन उभरा और एक मास में समाप्त हो कर रह गया। उनका कहना था कि अंग्रेज दुनिया में सब से सुलझा हुआ राजनीतिज्ञ है।

जब एक दिन अंग्रेज चुपचाप यूनियन जैक समेट हिन्दुस्तान छोड़ कर चले गये तो मैं सोच रहा था कि मेरे वे दोस्त पेनशन लेकर घर बैठ गये होंगे। मै काफी ठोकरें खाने के बाद अब दिल्ली के एक दैनिक पत्र में सहायक सम्पादक हो गया था। एक दिन एक मिनिस्टर की प्रेस कान्फरेन्स में बैठा हुआ अपने पत्र का प्रतिनिधित्व कर रहा था कि एक सज्जन ने प्रेम से हाथ मिलाते हुए कहा, 'क्या गरीबों को भूल जावेंगे ?'

उन खद्दरधारी नेताजी को याद करने की कोशिश की और समझा कोई नए आए हुए प्रतिनिधि होंगे। लेकिन वे तो चुपके मेरे कान पर अपना नाम बता बैठे और मैं दंग रह गया। कान्फरेन्स के बाद मै बाहर जा रहा था कि वे बोले, 'सात साल में मिल रहे है क्या एक प्याला काफी का नही पीवोगे।' मैं इंकार नहीं कर सका था। उन्होंने बताया था कि अब वे बड़े अफसर हो गये हैं और नेताओं की रक्षा का भार लेने के लिए उनको न जाने कहाँ-कहाँ दौड़ना पड़ता है। अपनी सरकार है और हम सबका कर्तव्य है कि आज देश की रक्षा करें। उनको यह खतरा था कि,

आज देश को कोई भय है तो मुसलमानों से । वे यहाँ पाँचवें दस्ते का काम करते हैं । नेहरू के प्रति उनकी शिकायत थी कि वे मुस्लिम परस्त हैं । मौलाना आजाद से उनको देश के लिए बहुत सतरा था ।

वे आज टी० ए० आदि मिला कर तीन हजार का बिल प्रति मास सरकारी ट्रेजरी से भुनाते थे और अपने पुराने 'करेक्टर रोल' तथा 'सरविस बुक' के आधार पर सबसे चुस्त तथा विश्वसनीय अधिकारी माने जाते हैं । आज वे नेताओं के प्रिय थे और यदा-कदा वे उनके लिए रियासतों में जाकर रिपोर्टें ले, उनको अपने अफसरों को देते थे । उनसे प्रान्तीय मंत्री तक घबराते हैं ।

अब वे अपने जासूसी उपन्यास में डूब गये । मैं सोच रहा था कि यदि यह व्यक्ति आज अमेरीका में पैदा हुआ होता तो न जाने कितनी बड़ी-बड़ी फर्मों का डाइरेक्टर होता तथा वहाँ की राजनीति में प्रमुख भाग लेता । उनका तन्दुरुस्ती को ठीक रखने का नुस्खा है जासूसी उपन्यास पढ़ो और उसकी गुत्थियों में न उलझ कर केवल मन बहलाने का साधन इसे समझा जाय । हरएक को उनकी यह नेक राय रहती है । उनका यह कहना भी है कि वे तो उपन्यास में इतने डूब जाते हैं कि दीन दुनिया की खबर नहीं रहती तथा वे उपन्यास के पात्रों को केवल एक साधरण खेल समझते हैं । यदि उसमे कोई खून हो जाय या रोमाचकारी घटना आवे तो उसे वे अपनी चेतना से अलग ही रखते हैं । उनको अपराधियों के मन की हालत का ज्ञान इससे मिलता है और बहुधा मानव-स्वभाव की गहराई पर वे विचार करते हैं । इस सबका असर उनके मन को भावना पर नहीं पडता है ।

—अब मैं गाड़ी से बाहर देख रहा था । डाक-गाडी पूरी रफ्तार से चल रही थी । शायद ड्राइवर समय को पूरा करने के लिए उत्सुक था । ग्वालियर तथा उसकी धरती हमसे दूर छूट गयी । कभी शायद इसी राह सिकन्दर लोदी ने ग्वालियर पर हमला किया होगा और बार-बार हार कर लौट गया । सिकन्दर ने आगरा का निर्माण ग्वालियर के राजाओं को परास्त करने के लिए किया था । उसकी फौजें इधर से गुजरी होंगी और

उसके लगभग चार सौ साल बाद उस दूरी को इस आसानी से छै घंटे में पार किया जा सकता है। आज तो फौजें पैदल नहीं चलती है और न हाथी व छोटी तोपों के बल पर लड़ाई जीती जाती हैं। ये किल्ले आज कोई रक्षा नहीं कर सकते हैं। विज्ञान ने दुनिया की दूरी को अपने में बाँध लिया है। फिर भी ग्वालियर के उस विशाल किले का इतिहास में नाम रहेगा और वहाँ की संगीत की परम्परा को नया जीवन देने वाले संगीतज्ञ बैजू बावरा तथा तानसेन का नाम हम नहीं भूल सकते हैं।

अब मेरे साथी ने सिगार निकाल लिया और उसे सुलगा कर पीने लगे। वे मुझसे कई बार कह चुके थे कि कम से कम सफर में सिगरेट पी लिया करूं। उन्होंने सिगार पीना तब शुरू किया जब कि उनको तीन बिंदियों वाली तनख्वाह मिलने लगी थी। अब तो वे प्रति दिन संध्या को नशा करते थे। उनका कहना था कि पुलीस के महकमे की जान तो वे ही हैं। इसमें उनका वेतन का एक बड़ा भाग व्यय हो जाता है। वे सिगार पीते हुए पूंछ बैठे, "तुम क्यों नहीं अमेरीका जाने की कोशिश करते हो। पत्रकारों का एक प्रतिनिधि-मंडल भेजने की बात आज-कल चल रही है।"

उनका ख्याल था कि यदि चेष्टा की जाय तो आसानी से वहाँ जाया जा सकता है और फिर उसमे खर्चा कुछ नहीं है। अमेरिका वाले स्वयं ही चाहते हैं कि यहाँ से अधिक से अधिक लोग वहाँ जावें। इस सम्बंध में वे मेरी सहायता करने के लिए तैयार थे। मैं उनको किताबों के ढेर को देख रहा था। स्टेशन की दूकान से उन्होंने चार किताबें ली थी। उनका ख्याल था कि वे छै घंटे में दो किताबें आसानी से समाप्त कर लेंगे। उनको लगभग सभी टाइटिल याद थे और स्टेशन पर एक बार किताबों पर नजर डाल कर उनको ये चार किताबें ही नई मिलीं। उनको लाइब्रेरी बनाने का शौक नहीं है और किताबों को पढ़ कर वे गाड़ी पर ही छोड़ दिया करते हैं। एक बार पढ़ कर उसका मूल्य उनकी दृष्टि में मिट जाता है। फिर वे उसे कूड़ा समझते थे। एक बार वे इसी भाँति कुछ किताबें कम्पार्टमेंट में छोड़ कर उतरे और किसी दूसरे मुसाफिर ने जो कि उसी

स्टेशन से गाड़ी पर चढ़ा, उनको याद दिलाई तो उसे धन्यवाद दे कर उससे कहा कि वे उनको पढ़ने के लिए रख लें। उनका ख्याल था कि इस तरह वे औरों को भी उस साहित्य को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका तो कहना था कि जब वे पेन्शन ले लेंगे तो फिर जासूसी उपन्यास लिख कर भारतीय साहित्य की एक भारी कमी को पूरा करेंगे। सरकार की योजना थी कि उनको विलायत भेज कर स्काउटलैंड-यार्ड में इस सम्बंध की विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा जाय। लेकिन उनका कहना था कि अमेरिका आज इस मामले में आगे बढ़ा हुआ है और वे छुट्टी लेकर वहाँ जानकारी प्राप्त करने के लिए जाने की सोच रहे हैं।

गाड़ी किसी छोटे स्टेशन के सिगनल पर खड़ी थी। किसी दूसरी गाड़ी को वहाँ से गुज़रना था। देर में आने के कारण डाकगाड़ी को और गाड़ियों को ठीक समय पर चलने के लिए इसी भाँति कई स्टेशनों पर रुकना पड़ा है। मैं खिड़की से बाहर सिर निकाल कर बोला कि क्रासिंग है। वे मुसलमान सज्जन तो बुद बुदाए कि तब दिल्ली रात दो बजे जाकर पहुँचेगी। बताया कि इटारसी पर टिकट चेकर ने कुछ कालेज के लड़कों को बिना टिकट पकड़ लिया। चुप न रह कर उसने लड़कों को देश भक्ति का पाठ पढ़ाने के लिए पैसा देने के लिए विवश किया। वह शायद यह न करता पर उस गाड़ी से एक मिनिस्टर साहब सफ़र कर रहे थे, टी० टी० आई० साहब इससे और गरम पड़ गये। लड़के भी पीछे नहीं हटे, एक के पास कुत्ता था, उसने टी० टी० साहब के ऊपर उसे छोड़ दिया। बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गयी। अब तो नेताजी ने अनुशासन पर एक व्याख्यान दे डाला। उनका कहना था कि देश आजाद हो गया है और विद्यार्थियों को पिछली बातें भूल जानी चाहिएँ। आज उनको देश के नवनिर्माण में भाग लेना चाहिए। तभी कोई चिल्लाया, 'आपने कितने पेड़ लगाए हैं।' दूसरा बोला,'ब्लेक मार्केट में कितने परमिट बेचे?' तीसरा चिल्लाया, 'दो लड़के तो सरकारी वजीफा पाकर विलायत चले गये, अब भतीजों की बारी है।'

मिनिस्टर साहब सिट्टी-पिट्टी भूल कर अपने कम्पार्टमेंट में चले गये।

गाड़ी चल दी और वे लड़के बीच-बीच में जंजीर खींच कर उसे रोकते रहे। और अपनी बे टिकट की यात्रा करके झाँसी उतर पड़े।

उनकी बात को सुन कर मैं तो हँस कर बोला, "साहब, लड़कों को छेड़ना और बर्रों के छत्ते पर ढेला मारना बराबर बात है।"

पर दोस्त साहब के माथे पर सिकुड़न पड़ गयी। वे गंभीर हो कर बोले, "इधर विद्यार्थियों मे एक नया रोग फैल गया है। सरकार को जल्दी ही इस पर कोई कार्यवाही करनी चाहिए। अन्यथा यही हाल रहा तो आगे बड़ी कठिनाई पड़ेगी।"

मैं जानता था कि सरकार इस ओर काफी सावधान है और वाइस-चांसलरों तथा और अधिकारियों की बैठकें करती है। उन बैठकों में सी० आई० डी० के अधिकारी भाग लेते हैं। सी० आई० डी० वालों मे इस बात की चर्चा है कि जल्दी ही इस विद्यार्थी-आन्दोलन के खिलाफ सरकार जिहाद बोलेगी। सरकार साधारण कपड़े वाले पुलीस अधिकारियों तथा भेदियों की भरती तेजी से विद्यार्थियों के बीच कर रही है।

वे मुसलमान सज्जन बोले, "जनाब, वे लड़के क्या करें। फीस बढ़ गयी है। उनके घरों की हालत भली नहीं है। सन् १९४२ ई० मे कितने विद्यार्थी आन्दोलन में शरीक नहीं हुए। कई ने अपनी शहादत दी। उन लोगों ने अपनी बहादुरी से देश का झंडा ऊँचा रखा था।"

इस बात को सुन कर मेरे दोस्त मन में जरूर ही खिन्न हुए होंगे और यह सोच लिया होगा कि यह दाढ़ी वाला हैदराबाद का मुस्लिम लीगी है। वहाँ किसी गुप्त संगठन मे काम कर रहा होगा। कौन जाने दिल्ली स्टेशन पर किसी के कान में मंत्र फूँक दें कि इसकी निगरानी की जाय। फिर इनकी एक फाइल खुल जायगी जो दिल्ली से हैदराबाद तथा हैदराबाद से दिल्ली घूमती फिरेगी और किसी दिन इन सज्जन को नोटिस मिल जायगा कि देश की रक्षा के लिए उनको नौकरी से हटा दिया गया है।

मैंने देखा, वह युवती हमारी बातों में दिलचस्पी लेने लगी। बात … तो शायद वह उस परदे से बाहर निकल कर इस बहस … मैंने उस बात को नया रुख दे डाला। उन महाशय से .

हुए आगरा और ग्वालियर जरूर देखें। जब कि उत्तर भारत आए हैं तो इन ऐतिहासिक नगरों को देखना चाहिए। इसमें आपके दो रोज और लगेंगे।"

वे सज्जन मेरी बात से काफी प्रभावित हुए और कहा, "पहले मालूम होता कि तानसेन की 'उर्स' इस बीच पड़ रही है तो चार रोज पहले आ जाता। सुना दूर-दूर से लोग आए थे।"

तानसेन के प्रति उनकी श्रद्धा देख कर मैं अवाक् रह गया। मैंने अपना अटेची खोला और इमली की कुछ पत्तियाँ निकाल कर उनको दीं। कहा फिर, "ये पत्तियाँ उर्स वाले दिन तोड़ी गयी हैं। तानसेन की कब्र के पास जो इमली के पेड़ हैं, ये पत्तियाँ वहीं से आधी रात को तोड़ी गयी। कहा जाता है कि जो इनको चबाता है, रस घूँटते ही उसके गले से ध्रुपद की तान उठती है। मैंने उनकी कब्र के पास बैठ गया, माथा झुका कर प्रणाम किया है कि नियमित रूप से प्रतिदिन संगीत का पाठ किया करूँगा।"

उन्होंने वे पत्तियाँ लेलीं और सँभाल कर रख दी। फिर उठ कर नीचे पलँगपोश बिछाया और पच्छिम की ओर सिर करके नमाज पढ़ने लगे। मेरे दोस्त इस पर मेरी ओर देख कर चुपचाप मुस्कराए और उन्होंने सिगार का आखिरी कश खींच कर नीचे फेंक दिया। वे फिर उपन्यास पढ़ने में डूब गये। वे बीच-बीच मे एक नजर हम लोगों पर डाल देते थे। वे काँग्रेसी तो पीछे किसी स्टेशन पर उतर गये और मारवाड़ी सज्जन ऊँघते-ऊँघते सो गये। बीच-बीच में उनकी नाक गरड़, गरड़, बज रही थी। उन मुसलमान महाशय ने अब इमली की पत्तियाँ लीं और कई बार अल्लाह का नाम लेकर चबाईं और फिर घूँट ली। कुछ देर चुप रह कर बोले, "बचपन में हमें भी इसका मर्ज था। हैदराबाद में कई उस्तादों की खाक छानी। पर जनाब वह तो अजीबो-गरीब जमाना था। हरएक उस्ताद कहता कि पहले हुक्का भरना सीखो। इस तालीम में ठीक निकल जाओगे तो फिर आगे देखा जायगा।"

पुराने उस्तादों की बातें करते हुए वे बीच-बीच में हँस पड़ते। अंत में

कहा, "साहब उस इल्म को सीखने की हवस दबा कर मैंने मैट्रिक पास किया और नौकरी करली। फिर कस्बे में कहाँ कोई शौक पूरा होता है। उधर हालत कुछ ठीक थी, पर अब मँहगाई का बोझा नहीं ढोया जा रहा है। आखिर कब तक यही हाल रहेगा। हम लोग मर जावेंगे।"

उनकी बातों में एक गहरी निराशा थी। हैदराबाद आज भारत का एक अंग है और उसमें फैली हुई बेकारी और मँहगाई से वहाँ के लोगों की कमर टूट रही थी। बात आगे बढ़ कर कहीं हमारे दोस्त के दिल पर साँप बन कर लोटने न लगे; अतएव मैं उनको ग्वालियर के अतीत के वैभव का हाल सुनाता रहा। मैंने राजा मानसिंह और उनकी गूजर रानी की सांस्कृतिक परम्परा की बातें बताईं। वह सब सुन कर वे दंग रह गये। वह युवती तो दिलचस्पी के साथ हमारी बातें सुन रही थी। धीरे-धीरे परदा छोड़ कर वह उससे आगे सरक आई। वह तो सावधानी से मुझे भाँप रही थी और मैं चंबल की घाटी को ओर देख रहा था जिसे कि हमारी गाड़ी पार कर रही थी।

एकाएक मेरे दोस्त उठ बैठे और खिड़की से बाहर देखने लगे। इस चंबल की घाटी में बड़े-बड़े डाकुओं के गिरोह रहते हैं और यू० पी० की पुलीस को यहाँ सदा ही लँगड़ियाँ खानी पड़ती हैं। मध्य भारत और यू० पी० की पुलीस न जाने कितनी बार यहाँ मात खा चुकी है। हमारे दोस्त ने कभी बहुत पहले यहाँ की खाक छानी थी। वे यहाँ के दास्तान मुझे बता चुके थे और आज भी वे यहाँ की बातों में दिलचस्पी लेते हैं। लेकिन डकैतों से अधिक वे आजकल दिमागी-डकैतों से परेशान हैं, जो कि कुछ चोरी न करके भी लोगों के दिलो में सरकार के प्रति नफरत भर देते कि वह निकम्मी है। साधारण डकैतों को पकड़ने के लिए सिपाही चाहिए पर यह जो कि एक नई जाति उठ रही थी, उसके लिए वे अभी कोई खास सा उपचार नहीं निकाल पाये थे।

उस चंबल की घाटी की धरती में तो अतीत का एक इतिहास छुपा हुआ है। वह इतिहास आज चमकता नहीं था। मैं अनायास उस पर सोचने

लगा। पर मेरे मित्र ने ध्यान बाहर की ओर बँटाया। वे सावधानी से दूर-दूर तक देख रहे थे। लगता कि वे किसी गहरी बात पर पैठ रहे हैं। वे मुझे कई स्थान उँगली दिखा कर समझा रहे थे कि वे यहाँ रह चुके हैं। उनको याद था कि कहाँ पर उनके कैम्प लगाए गये और कहाँ-कहाँ उनकी डकैतों से मुठभेड़ हुई। वे चुपचाप बता रहे थे कि वे लोग बहुत बहादुर होते हैं और उनका अनुशासन पक्का होता है। वे उनकी बहादुरी के कायल थे। वे हृदय के दृढ़ होते हैं। कभी अपना भेद किसी को नहीं बताते। पुलीस को उनमें से भेदिया निकालना एक परेशानी का और टेढ़ा सवाल होता है। मेरी अपनी धारणा थी कि पुराने राजाओं की सेनाओं में इनके पुरखे रहे होंगे फिर वे बड़े राज्य टूट गये और सरदार आए। उनकी टुकड़ियाँ यह भार उठाती रहीं। रूप बिगड़ कर डाकुओं में परिणित हो गया। कुछ साल पहले बड़े गिरोह राजाओं का आश्रय पा जाते थे, लेकिन जब कि रियासतें मिट गयीं तो उनके आगे एक विषम परिस्थिति उठी है कि वे क्या करें ?

मेरे अपने विचार से डाकुओं की वह परम्परा नष्ट हो जानी चाहिये थी, पर दोस्त का खयाल था कि आज जो देश की हालत है उससे क्रान्तिकारी आन्दोलनों के उभरने का खतरा था। कौन जाने कि ये डकैत उसके एक सबल अंग बन जावें। आखिर हैदराबाद में क्या हुआ था ? वे तो उन हैदराबाद वाले सज्जन से पूछ ही बैठे, "क्यों जनाब, अब आपके देश का क्या हाल है ? आप लोग कुछ नहीं कर सके और भ्रष्ट कांग्रेस जीत गयी। पाँच साल से उनका राज्य हो गया है। मेरा वश चलता तो एक भी वोट कांग्रेस को न पड़ने देता। हिन्दुस्तान का आदमी तो पशुओं की भाँति बैल की जोड़ी वाले सन्दूक में वोट डाल आया, मानों कि उससे उसका हित ही होगा।"

दोस्त के इस चुग्गे से मैं सावधान हो गया। लगा कि अब वे उन सज्जन के दिल से सही बात उगलवा कर ही छोड़ेंगे। मैं नहीं चाहता था कि वे ऐसे व्यक्ति के शिकार बनें जो कि इनसानियत की कोई कदर

नहीं जानता। अतएव उस स्थिति से उबार लेने के लिए मैंने पूछा, "क्या आप कभी अजन्ता गये हैं ?"

इस पर उन्होंने सिर हिलाया, बोले, "यह सब धूमधाम बड़े लोगों की बात है। मैं जिन्दगी में सिर्फ चार बार हैदराबाद गया हूँ। मेरी दुनियाँ तो अपना शहर है।"

बातों का वह सिलसिला आगे न बढ सका। वह युवती न जाने कब से हम से बातें करने के लिये उत्सुक थी। उसने मुझसे कुतूहल पूर्वक पूछा, "क्या सच ही उन इमली की पत्तियों का रस चूसने से गाना आ जाता है ?"

"वहाँ के लोगों का कहना तो यही है और स्वयं मेरा मन कई बार आधी रात को ध्रुपद गाने को करता है। हो सकता है कि जो उस्ताद वहाँ इकट्ठा हुए, उनका प्रभाव मुझ पर पड़ा हो। फिर भी मैं एक बात मान लेता हूँ कि उस उर्स में उस्तादों का अलाप और फिर मध्य रात्रि को इमली की पत्तियाँ तोड़ कर रस चूसने के बाद जरूर ही मन पर संगीत का गहरा प्रभाव पड़ता है।"

हमारे बीच की बहस में उस लड़की के आ जाने पर मेरे निरस दोस्त कुछ रसिक बन गये और कह बैठे, "चार साल पहले एक अभिनेत्री वहाँ आई और लगातार उसने उस समारोह में भाग लिया। उसके बाद वह बम्बई गयी तो उसे एक साथ आठ कम्पनियों के कान्टरेक्ट मिल गये। यही नहीं हिन्दुस्तान के सभी उस्ताद जो कि तानसेन के चेले अपने को मानते हैं, वे जब तक यहाँ नहीं आते, उनकी साधना पूरी नहीं होती है। जिस तरह पहले जमाने में साधू-संत कुंभ या और किसी मेले में इकट्ठा हो कर सारे देश की राजनीति पर बहस करके अपने-अपने देशों को लौटते थे, उसी भाँति संगीत के पारखी आज यहाँ संगीत पर बहस करके अपने पुराने घरानों की रक्षा करने का हल ढूँढ़ निकालते हैं।

वह युवती तो बिना किसी हिचक के मुझसे कुछ पत्तियाँ माँग बैठी। मैंने उदारता पूर्वक उसे कुछ पत्तियाँ दीं और पूछा, "क्या आप ग्वालियर

से नहीं आ रही हैं।"

वह तो साधारण सा उत्तर दे बैठी, "जी, तीन रोज से ग्वालियर में थी, पर अपनी ही झंझटों में रही। एक नौकरी के सिलसिले में आई थी। ये लोग पहले ही से सब कुछ तय कर लेते हैं और दिखलावे के लिए बाहर से 'इन्टरव्यू' के लिये लोगों को बेकार बुलाकर परेशान करते हैं। अब तक तीस-चालीस जगह इस तरह घूम आई हूँ।"

मैंने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "आपने क्या परीक्षा पास की है ?"

"जी, पास तो पंजाब की बी० ए० हूँ, पर मुसीबत यह है कि सार्टिफिकेट नहीं है। मैं तो कहती हूँ कि सरकार हमारा इम्तहान लेकर जो सार्टिफिकेट चाहे दे दे। कहीं मैट्रिक वाली ही नौकरी मिल जाय, पर कोई नहीं मानता है। चार साल से रोजगार नहीं मिल पाया फिर आगरा की आबहवा किसी के माफिक नहीं। रहने का ठीक ठिकाना नहीं है। बचपन से मुझे गाने का शौक था। आपकी बातें सुन कर न जाने क्यों लाहौर की वे बातें याद आ गयीं, जब कि हम पढते थे।"

इस बात पर कोई कुछ नहीं बोला। लेकिन कुछ देर के बाद वे मुसलमान सज्जन बोले, "आप हिन्दी तो पढा लेती हैं न ? आप अपना पता देदें, हो सकता है कि हमारे शहर में आपको कोई नौकरी मिल जाय। आप वहाँ आवेंगी न ?"

"जी, आपने ठीक बात पूछी। जब वतन छूट गया तो क्या आगरा और क्या हैदराबाद ? हमारे लिये सभी बराबर है। लेकिन यहाँ के लोगों को न जाने क्या हो गया है। उनको हमसे कोई हमदर्दी नहीं है। मैंने एक फौजी जनरल से कहा कि वह मुझे फौज में भरती करले। मुझे फौज में सिपाही बनना पसन्द है, पर पुलीस की नौकरी ठीक नहीं। 'इम्पलाईमेंट इक्सचेंज' तो पुलीस में नौकरी करने की बात कहती थी। यहाँ उनकी सिफारिस पर ही आई थी। लेकिन हर जगह किसी न किसी का अपना कन्डिडेट है। हम कहाँ से सिफारिस लावें।"

प्लास्टिक का हृदय

केप्टिन प्रभाकर की विदाई की दावत पर हम सब शामिल हुए थे, इसका आयोजन वाजपेयी ने किया और इस अवसर पर हम सभी सहपाठी जमा हुए थे। विश्वविद्यालय के पाँच साथी यदि दस साल बाद किसी एक शहर में जमा हो जायें तो फिर क्या कहना ? नई और पुरानी विचारों की *लड़ी के साथ-साथ उनके अनुभवों का ज्ञान कौतूहल लाता है।* वैसे हम सभी साथी विश्वविद्यालय की दुनियाँ के बाद इसी शहर में किसी न किसी नौकरी पर लगे थे। वाजपेयी ने एक कांग्रेसी नेता की सिफारिश पर दैनिक पत्र में 'रिपोर्टर' की नौकरी कर ली। अखबार की हालत खास भली नहीं थी, फिर वेतन कम था, इसीलिए वह कई किताबों की कम्पनियों की ऐजेन्सियाँ लिए हुए था और जब मिलता कोई न कोई नई बात सुनाने में नहीं चूकता था। अपने कारोबार के सिलसिले में उसे कलकत्ते, बम्बई और न जाने कहाँ-कहाँ जाना पड़ता था। शहर की कोई घटना उससे छुपी नहीं रहती थी। वह रोज ही शाम को शहर के भले-बुरे समाचार हमें बताते हुए कहता कि यह सब समाचार-पत्रों में नहीं छपता है।

हमारे दूसरे दोस्त थे रामजीदास। जब वे पढ़ते थे तो इम्तहान के बाद रोज ही कहते कि भाई अभी तो सातवाँ, आठवाँ और नवाँ पर्चा बाकी है। इन तीन पर्चों का ज्ञान हरएक को नहीं था, लेकिन हमारी मंडली जानती थी कि इम्तहान समाप्त होने के बाद हमारे वे अजीज दोस्त परीक्षकों की दरबारी करने गये हैं। पन्द्रह-बीस दिन के बाद वे थके-मांदे लौटते और एक रोज आईस-क्रीम की पार्टी देकर बताते कि वह परीक्षा भी

टली। भाई कलयुग का मतलब है, तिकडमवाद! उन्होंने वकालत पास की और दिखाने को हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील से काम सीखने लगे। लेकिन सन् बयालीस में एकाएक एक दिन सुना वे गिरफ्तार हो गये हैं। यार-दोस्त हैरान थे कि बात क्या हो गयी तभी एक पुलीस ग्राफिसर ने बताया था कि रामजीदास नाम का एक व्यक्ति सन् '२२, सन् '३० और सन् बत्तीस में जेल गया था। उसी के नाम का पुलीस ने वारंट कटवाया। वे सज्जन तो नहीं मिले और पुलीस ने अपनी वफादारी जताने के लिए इन सज्जन को ही नजरबन्द कर लिया। हम चुप थे और जब हमारे अजीज दोस्त छूट कर आए तो हमने अपने इस नेता का ऐसा शानदार स्वागत किया और वाजपेयी ने ऐसी रिपोर्ट छपवाई थी कि हमारे इन दोस्त को चार रोज में ही सारा शहर जान गया। कई स्कूली-कालेजी लड़कियों ने अपने फोटो के साथ उनसे नाता जोड़ने की प्रार्थना की। दोस्त की वकालत तो पहले खूब चली और वे सेकिंड-हैंड कार खरीदने में सफल हो गये। हमने कई बार उसकी सैर की और हमेशा ही उसे ढकेल कर चलाया भी था। इधर आमदनी कम थी और 'कार' या तो पेट्रोल की कमी के कारण ठप्प रहती या फिर पैसा न चुकाने के कारण 'वर्क शाप' में बन्द!

हमारे तीसरे दोस्त विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। उन्होंने अभी-अभी शादी की और रोज रोना रोते थे कि खर्चा नहीं चलता है। सदा वे कालेज के जमाने के कपड़े पहने रहते और बताते कि शादी में ससुरालवालों ने कुछ कपड़े सिला दिये, अन्यथा उनकी न निभती। वे कई तिकड़मबाजियों में रहते और इधर-उधर से अब कुछ कमाई करने लगे थे। कुछ स्कूली-किताबें लिखी थी और इम्तहान की कापियों को देखने का डौल लगाया था।

केप्टिन प्रभाकर तो एकाएक एक दिन हमारे बीच टपक पड़े। एक रोज यार-दोस्त काफी हाउस में बैठे थे कि देखा लम्बा-चौड़ा कोई व्यक्ति उनकी मेज की ओर बढ़ा चला आ रहा है। उसने बैंटर से एक कुरसी मँगवाकर उसी मेज के पास बिछा कर कहा, 'केप्टिन प्रभाकर?'

हम लोग अपने उस फुटबौल के कप्तान को पहचान गये जो कि

विश्वविद्यालय में माना हुआ खिलाड़ी था और लंगड़ियाँ खाता हुआ किसी तरह सात-आठ साल की जिन्दगी यूनीवर्सिटी में काट कर रामजीदास की मदद से तीसरी श्रेणी में एम० ए० पास हुआ था। वाजपेयी ने कभी बताया था कि वह रेडियो मे नौकरी करता है। हमें उलझन में न डाल वह बोला, 'दोस्तों, रेडियो में रह कर मैंने गाने की तालीम ली और एक दिन सरकार को मिश्र में अपनो फौजो के लिए एक नाच-पार्टी की आवश्यकता हुई, जो कि वहाँ आमोद का साधन बनावें। बिना किसी हिचक के मैंने दरख्वास्त दे दी। बस चुन लिया गया और अब तो जनाब 'डिमोब' होकर यहाँ इम्प्लाइमेंट-इक्सचेंज में आ गया हूँ।'

उस लड़ाई मे हमारे दोस्त को लड़ाई से कोई वास्ता नही पड़ा था। जब वे वहाँ पहुँचे तो गोमेल साहब अपनी फौजों को वहाँ की धरती से उतार कर इटली चले गये थे। हमारे ये दोस्त कुछ पुराने फिल्मी रेकार्ड, हारमोनियम, तथा और साज-सारंग के साथ वहाँ पहुँचे थे। उनकी पार्टी के कलाकारों को फौजियों का मनोबल बढ़ाना था। और कुछ हुआ हो चाहे नहीं, उनको तरक्की मिलती गयी और यदि कुछ दिन वहाँ लड़ाई और चलती तो वे नया ओहदा पाकर लौटते। हमारे दोस्त को वैसे फायरिंग की ट्रेनिंग भी दी गयी थी और प्रति सप्ताह उनको बाकायदा उनकी मूक-लड़ाइयों मे भाग लेना पड़ता; पर वह सब तो आत्म सन्तोष के लिए था। दुश्मन वहाँ से भाग गया था और केवल सुरक्षा के लिए ही इनकी फौज वहाँ पड़ी हुई थी। कई महीनों से बाद वे वहाँ से आए और उनके काम की आर्मी हेड क्वाटरस् ने इतनी सराहना की थी कि उनको यह नया काम सौंपा गया।

कुछ हो, एक नये साथी को पाकर हम बहुत खुश हुए और दिलचस्प बात यह थी कि वे यदा-कदा हमें दावतें दिया करते, सिनेमा दिखाते और उनकी 'स्टेशन वेगन' सदा यार-दोस्तों की सेवा करने के लिए तत्पर रहती। वकील साहब की कार का ध्यान किसी को नहीं आता था। वैसे केप्टिन ने फौजी वर्क-शाप से एक बार उसे ठीक करवा दिया और अब उसकी

हालत सेनिटोरियम से लौटकर आए हुए टी० बी० के मरीज की सी हो गयी थी। रोगी होने पर भी जिसका चेहरा सदा चमका करता है। बाजपेयी उनका रोब नहीं पड़ने देता और एक रोज हँस कर जर्मन दार्शनिक की बात दुहराई थी, 'मुझे हँसी आती है इन मसीनी सिपाहियों पर, जो बैंड की आवाज पर चलते हैं ! मुझे ऐसा लगता है कि इनके केवल कान होते हैं, न कि दिमाग ?'

लेकिन केप्टिन ने हँस कर उत्तर दिया, 'दोस्त, तुम शिविलियन उन भेड़ों की तरह हो जिनकी हिफाजत के लिये उनको बाड़े के अन्दर बन्द रखा जाता है।'

यह सच बात थी कि कप्तान के आने के बाद हमारी चौकड़ी में रंगीनी आ गयी थी ! साल भर तक हम उसके फौजी दास्तानें सुन-सुन कर भी नहीं थके। वह बताता कि उनकी मंडली में एक मोटल्ली नाचने वाली थी जिसे कि स्वयं आखरी वक्त तक यह मालूम नहीं हो सका कि वह किस फौजी से प्रेम करती है। हरएक के उपहार वह इस अदा से स्वीकार करती थी कि उपहार देने वाला अपने दिल में एक पीड़ा बटोर कर चला जाता। जिस दिन उनकी मंडली विदा लेकर भारत लौट रही थी तो वह फूट फूट कर रोई और बताया कि वह चाहती थी कि सदा उन हँस मुख चेहरों के साथ रहे। उसका कहना था कि आगे उसके कद्रदान कम मिलेंगे। उसके सौन्दर्य का बखान करते हुए वह हँस पड़ता। वह बहुत मोटी थी और उस स्थूल बदन के साथ जब नाचती तो लगता था कि कोई बौना नाच रहा हैं। वह फिर भी गजल गाने में बहुत उस्ताद थी और इसी कारण उसे सब चाहते थे। उसकी धारणा थी कि वह अख्तरी बाई से अच्छी गजलें गा लेती है। उसकी इस बात का कोई प्रतिवाद नहीं करता था। उसने हमारे केप्टिन से अनुरोध किया था कि भारत लौटने के बाद में उसके रिकार्ड किसी कम्पनी वालों से अवश्य भरवादें। वह बार-बार शिकायत करती थी कि वे रसिक नहीं हैं अन्यथा वह उनकी हर तरह से सेवा कर सकती है। उसकी कदर फौज में बढ़ गयी थी और बहुधा अफसर उसे

अपने यहाँ विशेष खाने पर निमंत्रण देते थे। जब उनकी वह टुकड़ी सरकार ने समाप्त करदी तो बेचारी फूट-फूट कर रोई थी। सच ही उसके लिए अब रोटी की समस्या खड़ी हो गया और उसके गजल सुनने वाले कद्रदान ही कितने थे ?

वे बताते कि किस तरह बड़े अफसर वहाँ चोर-बाजारी करके खाने-पीने की चीजें बेच दिया करते थे। इस लड़ाई ने सच ही सोना बरसाया था। अस्पताल के डाक्टर दवाओं की बोतलों में मोहरें बन्द करके व ठीक से उनको पैक करके मोहरें भारत में लाकर मौज उड़ाने में सफल हुए। वहाँ की औरतों की बातें सुनाते कि वे किस तरह हिन्दुस्तानियों का आदर करती थीं। वहाँ के लोग जानते थे कि ये लोग मिश्र, जिसने कि कभी दुनिया को नई सभ्यता दी, उसकी रक्षा के लिए आए हैं। लेकिन वाजपेयी ने एक दिन पूछ ही डाला, 'कप्तान क्या मिस्ती, भंगियों, व नौकरों को 'कमीशन' मिलता है। वह मोटी बाई भी सुबेदारिन हुई या नहीं ?'

इस पर तिवारी साहब कुछ गुस्सा हो कर उबल पड़े थे, 'सिली, कभी तमीज नहीं आवेगी। हम लोग अपनी जान हथेली पर रख कर गये थे, न कि मौज करने।'

और वाजपेयी से कहा था कि वह फौजी बातों का कुछ ज्ञान प्राप्त कर ले। उसे एक अमेरीकन किताब लाकर दी, 'फौजियों के लिए मनोविज्ञान।' वह किताब अमेरिका के आर्मी-हेड-क्वाटर ने निकाली थी। उसे सभी ने बारी-बारी से उलट-पुलट कर देखा। कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई तो कप्तान हँस पड़ा। बोला फिर, 'हिन्दुस्तान सच ही गुलामी के लिये है। यहाँ के सिवीलियनों को बातें करने तक की तमीज नहीं। सच बात यह है कि अंग्रेजों ने दोनों के बीच एक गहरी खाई रखी। आप लोगों को माफी इसीलिए देता हूँ। अन्यथा काम आप लोगों ने 'कोर्ट-मार्शल' होने के लिए किया था। फिर भी मैं हुक्म देता हूँ कि सब लोग बारी-बारी से इस किताब को पढ़ें। जो इसे नहीं मानेगा, उसे तीन महीने के लिए इस पार्टी से हटा दिया जावेगा।'

कप्तान का फौजी मूड उस दिन बिगडा हुआ था और कुछ ऐसा सा भास हो रहा था कि यही तनावट की वजह से क्लब कुछ महीने के लिए बन्द न हो जाय। लेकिन वकील साहब ने बात सुलझाने के लिए कहा कि पन्दरह रोज बाद वे कप्तान का एक लेक्चर इस विषय पर करावेंगे और उसमें बाहर के लोग ग्रामंत्रित होंगे। प्रोफेसर ने आश्वासन दिया कि वे यूनियन के सभापति से बातचीत करके एक लेक्चर करवा देंगे। वाजपेयी का ख्याल था कि उसके एक मित्र जो कि हाल ही में एक बोर्डिंग के सुपरिटेंडेंट हो गये हैं, वह उनसे कह कर किसी उत्सव में कप्तान को बुलावेगा। इस बड़ी योजना की चर्चा के साथ वह बैठक समाप्त हुई। कप्तान ने बिल चुकाते हुए शिकायत की कि आज खास खाया-पिया नही गया, अतएव सिनेमा देखा जाय। यही नही खुश होकर बेटर को दुअन्नी की जगह चवन्नी टिप कर दी।

हम लोग परेशान थे। हमारा एक चित्रकार साथी उस शहर में आ गया और पाँच साल से इमप्रूवमेंट ट्रस्ट में काम करता था। वह भले ही हरएक से अलग-अलग मिल कर बातें करता और अपनी योजना बताता; पर सामूहिक रूप से वह कभी हमारी किसी बैठक में सम्मलित नही हुआ। जब कि पहली बार वाजपेयी उसके पास गया तो उसने कहा था कि वह जयपुर दफ्तर के एक जरूरी काम से जा रहा है। वही बात जब कि वाजपेयी ने सब दोस्तों को बताई तो वकील साहब हँस पड़े और बोले, 'वह शाला झूठ बोलता है। मुझसे कहा कि वह ट्रस्ट की मीटिंग के सिलसिले मे बहुत व्यस्त रहा है। उसके वेतन का सवाल था। इधर-उधर सभी लोगो से मिलना-जुलना पड़ा।'

वकील साहब हँस पड़े कि बात सरासर झूठी है। ट्रस्ट की मीटिंग अगले महीने होगी। लेकिन वह बात उन्होने उससे नही कही। कप्तान की समझ मे बात नही आई तो वह सुलझाई प्रोफेसर ने। कहा कि पिछले दिनों समाचार पत्रों में छपा था कि श्री चंद्रकान्त को ट्रस्ट बम्बई वहाँ की 'घर बसाने की नई स्कीम' की जानकारी के लिए भेज रही है। वे शाम

की गाड़ी से रवाना होंगे। लेकिन दोस्त तो हफ्ते भर घर पर ही पड़े रहे और जब प्रोफेसर वहाँ पहुँचे तो पता चला कि वे हैं तो घर पर, लेकिन नौकर को हिदायत दी गयी है कि किसी को न बतावें, नौकर ने हाथ जोड़ कर विनती की कि यह बात उनके साहब से न कही जाय। वह बहुत घबरा गया था। जब प्रोफेसर पीछे के दरवाजे से घुसे तो पाया कि हजरत दालान में कुर्सी पर बैठे हुए हैं। बस तपाक से बोले, 'क्या करूँ दोस्त, कल रात से जुकाम हो गया है। मेरा शरीर तो देखो एक साल की नौकरी के बाद ही नष्ट हो गया है। आज बाहर जाना आवश्यक था, पर विवश हूँ। इधर पिताजी के एक दोस्त जो कि दिल्ली एक बड़े सरकारी ओहदे पर हैं, उनका आग्रह है कि पुरातत्व-विभाग में एक जगह के लिए दरख्वास्त दे दूँ। वेतन तो खास नहीं, यही सात सौ से बारह सौ का ग्रेड है। लेकिन उनका कहना नहीं टाला जा सकता है। उनका लिखना है कि वे ही हर्ता -कर्ता हैं। 'इन्टरव्यू' तो एक दिखलावा है। वह जगह उन्होंने मेरे लिए ही निकाली है।'

सब ही चन्द्रकान्त से परेशान थे। वकील का कहना था कि वह चार सौ बीस हो गया है। जब मिलता है तो बताता है कि फिर उसकी तरक्की हो गयी है। साल भर में आठ बार तरक्की होना और फिर हिसाब लगाया जाय तो उसके कहने के मुताबिक अब तक उसकी तनखा तीन हजार हो जानी चाहिए, जब कि वही टूटी पुरानी साइकिल ही अभी तक चालू है, जो कि उसने पन्द्रह रुपए में स्कूल में खरीदी थी। कई बार कायाकल्प करके भी हालत काफी खराब रहती है।

वाजपेयी न जाने क्यों अपनी रोजाना की डायरी में उसके बारे में भी जानकारी प्राप्त करना था। उसी ने एक रोज बताया कि वह दिल्ली वाली नौकरी नहीं मिली है। कोई कांग्रेसी उसमें लिया गया और उसका दावा था कि वह कमीशन की सिफारिस को लागू नहीं होने देगा। कई मिनिस्टरों की धारणा है कि उसके प्रति सरासर अन्याय कमीशन ने किया है। भेद की यह बात बताई कि उसकी भाभी के चाचा के लड़के का ससुर एक

मिनिस्टर का अच्छा दोस्त है और उसने यह आश्वासन दिया है कि चाहे कुछ हो यह नियुक्ति नहीं होगी। उन्होंने सब मिला कर बारह साल कांग्रेस के आन्दोलन में जेल में काटे हैं। वे इस भ्रष्टाचार की बातें सभी मंत्रियों के कान में डालेंगे।

वाजपेयी पूरी बात नहीं कर पाया था कि वकील ने बीच में ही कह दिया, 'नेताजी का भतीजा ही तो उस जगह पर चुना गया है। चंद्रकान्त ने यह बात मुझे बताई थी।'

कप्तान ने मुस्करा कर कहा कि है चंद्रकान्त उस्ताद। और उसको इस झूठ बोलने की आदत ने सबको परेशान कर रखा था। आखिर वह क्यों इस तरह हरएक से झूठी बातें किया करता है। इस पर सब की अपनी-अपनी राय थी। कप्तान का कहना था कि जीवन में उसे कहीं कोई बड़ा धक्का लगा होगा। बचपन में बहुधा ऐसा होता है कि किसी घटना से हरएक के प्रति अविश्वास पैदा हो जाता है। इसके लिए उसे किसी डाक्टर को दिखलाना आवश्यक है।

वकील का कहना था कि वह स्वभाव तो एक बड़े क्रिमिनल का लाया है, पर बन गया कलाकार उसकी निर्माण करने वाली प्रवृत्ति ने उसे उस राह जाने से बचा लिया और अब वह अपने साथ ही तरह-तरह के अपराध लागू किया करता है। उसे इस समाज के प्रति कोई सद्भावना नहीं है। वह मानव की विशालता पर विश्वास नहीं करता है। उसकी धारणा है कि वह एकाकी जीवन व्यतीत करके अपने व्यक्तित्व को उठा रहा है। अपनी इस कला को भी वह अपने रोग का पुट देता है, इसीलिए वह कभी सफल नहीं हो सका है, वह मानसिक रोगी है। यह तो उसका सौभाग्य था कि प्रकृति का सौन्दर्य उसे पसन्द है और वह उसे खूबी से चित्रित भी करता है, अन्यथा वह अब तक किसी पागलखाने में होता।

लेकिन हमारे प्रोफेसर का खयाल था कि वह अपनी किसी महत्वकांक्षा के लिए यह सब किया करता है। न तो वह पागल है और न वह साधारण व्यक्ति। वह जिस चीज की आकांक्षा रखता है उसके लिए जीवन के सभी

साधन लगा देता है, वह जीवन को साधारण खेल नहीं मानता है। वह जीवन को प्यार करता है। किसी व्यक्ति की महानता उसके लिए उसकी किसी भावना की मौत है। रोज वह समाचार पत्र पढ़ता है, वहाँ यदि किसी की तारीफ छपती है तो वह मान लेता है कि वह उसकी हार है। *कभी वह सोचता था कि वह हिटलर की तरह अपनी कला में महान है।* उन दिनों उसके मन की यही स्पर्धा थी, फिर यह रोजाना जीवन में साधारण घटनाओं से भी हार मानने लगा। एक दिन किसी मित्र ने मजाक में कह दिया कि उसकी पत्नी सुन्दर है तो वह अपनी पत्नी के उस सौन्दर्य को अपने अपमान की बात समझने लगा और इससे पति-पत्नी में उस दिन किसी साधारण घटना को लेकर ही लड़ाई हो गयी। उससे कोई कह दे कि उसका बेटा होनहार है तो शायद वह इसे भी अपना अपमान ही समझेगा।

हम सबके एक बंगाली फेमली डाक्टर थे, वे पुरुष जाति के सही प्रतीक थे। शादी नहीं की और अपना सारा जीवन मरीजों पर अर्पित कर दिया। उनके मरीज बहुधा नीचे तबके के थे। डाक्टर कभी किसी मरीज को ऐसी दवा नहीं बताता था जो उसकी पहुँच के बाहर की हो। न उनको अनार, सेब, अंगूर फल खाने के लिए प्रेरित करता था। उसकी धारणा थी कि मरीज का आर्थिक आधार देख कर ही परिचर्या बतानी चाहिए। सच ही इससे मरीजों को लाभ होता था। चंद्रकान्त हमारे डाक्टर का मरीज था और उनकी दवा पर उसको बहुत भरोसा रहा करता। डाक्टर का कहना था कि वह जुकाम का मरीज है, बचपन में निमोनिया हुआ और यही कारण है कि वह कमजोर है। इसीलिए वह गुमसुम रहा करता है। वे तो बताते थे कि वह निम्न आत्मभाव का शिकार है, वह सदा दुनियाँ के किसी भी व्यक्ति से अपनी तुलना चुपचाप कर पाता है कि वह उससे अशक्त है। इसीलिए वह दूसरो के अवगुणों को ढूँढ़, उनको ब्राडकास्ट किया करता है। लेकिन वकील साहब से डाक्टर ने एक रोज बताया था कि उसकी पारि-वारिक हालत स्वस्थ नहीं है। इससे अधिक अपने उस मरीज का भेद वे

नहीं बताना चाहते थे।

कप्तान का कहना था कि वह हमारा दोस्त है और डाक्टर से हमको सब कुछ सुनने का अधिकार है। लेकिन वकील इस पर सहमत नहीं था। एक दिन सब दोस्तों का डेपुटेशन डाक्टर के घर गया और उनसे माँग की कि वे उस अजीज दोस्त के बारे में कुछ बतावें। डाक्टर ने हँसी में बात टाल कर दस्तूरी चाय का एक-एक प्याला सब को दिया। डाक्टर की केतली में चौबीसों घंटे पानी गरम रहता और समय बे समय हरएक से पूछते थे कि चाय तो नहीं पीवेंगे। चाय जो व्यक्ति जितनी पीता था वह उतना ही डाक्टर के हृदय में बास पाता। चंद्रकान्त चाय बहुत कम पीता और डाक्टर मजाक में कहता था कि उसकी बुजदिली का एक कारण यह भी है।

लेकिन डाक्टर के यहाँ पूरे दो घंटे जमे रहने पर व चाय के दरजनों प्याले निपटाने पर भी हाथ कुछ नहीं आया और हम कोरे के कोरे ही वहाँ से लौट आए। पर वाजपेयी इस तरह आसानी से हार मानने वाला नहीं था। उसने सभी दोस्तों के आगे प्रण किया कि वह एक मास के भीतर सारे भेद का पता लगा कर बतावेगा। हमें इससे कोई दिलचस्पी भले ही रही हो, पर हमने उस पर कोई टिप्पणी करना उचित नहीं समझा। लगभग चार साल हम इस ओर उदासीन से रहे थे। जो थोडी बातें हमें ज्ञात होती रहती थीं, उनको तो चंद्रकान्त स्वयं ही किसी न किसी को अपने आप बता दिया करता था। वह यह खेल क्यों खेलता था, हमने आज तक यह जानना नहीं चाहा। उसके जीवन से हमें अनायास ही निकट का सम्बन्ध बनाना होगा, यह बात आगे आती; मानो कि किसी जासूसी उपन्यास को पढना हमने शुरू कर दिया था। वाजपेयी ने उस प्रसिद्ध डिटेक्टिव ब्लेक का भार उठाया था जो कि अब 'कानन डायल' को हराना चाहता था।

कप्तान ने वाजपेयी की पीठ थपथपाई। उसका ख्याल था कि चंद्रकान्त का हमसे दूर रहना हितकर नहीं। कौन जाने कहीं वह आत्महत्या न कर ;

ने । हम उस दोस्त को आसानी से छोड़ देने के पक्ष पाती नहीं थे। डाक्टर से जब कप्तान ने यह बात कही तो उसने उसे लिफ्ट न देकर प्रोफेसर से कहा कि अब पहले बालक का जन्म होने वाला है और हनीमून के पहले पेड़े तो अकेले वाजपेयी को खिला कर ही आपके मित्र सस्ते छूट गये थे।

अब चंद्रकान्त की जानकारी के लिए हमें अधिकतर वाजपेयी पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन वकील ने एक दिन बम्बई का एक समाचार पत्र हमारे सामने पटक दिया, जिसमें कि हमारे दोस्त का एक लेख 'नगरों का नया निर्माण कैसे किया जाय' छपा था। उसमें लेखक का फोटो था और सम्पादक ने अपना नोट दिया था कि लेखक ने भारतीय दृष्टिकोण से उसे लिखा है। उस फोटो को हम देखते ही रह गये थे। फोटो को कप्तान टक-टकी लगा कर देखते ही रह गये थे। फोटोग्राफर ने रिटचिंग करके उसे इतना सजीव बना दिया कि दोस्त का लटकता हुआ चेहरा गायब था। उसके स्थान पर तो हंसमुख चेहरा था। कप्तान पर उस लेख का काफी रोब पड़ा। लेकिन प्रोफेसर ने रंग में भंग कर दिया। उसने बताया कि वह तो पुराने बंगला के एक लेख के आधार पर लिखा गया है और उसे आधुनिक रूप देने के लिए 'पिनग्विन' की किताब से सहायता ली गयी है। उसने अपने एक दोस्त से जो कि अंग्रेजी के प्रोफेसर हाल ही में नियुक्त हुए हैं, समूची पाडुलिपि शुद्ध करवाई थी।

वकील को इस बयान से असन्तोष हुआ। उसका तर्क था कि हम लोग बेकार उसकी सारी बातों पर गलत नजरिया रखते हैं। कौन नहीं अपनी पांडुलिपियाँ दूसरों को दिखलाता है। चाहे उसने कुछ चोरी ही की, सूझ मौलिक है। वह दावे के साथ बोला कि दुनियाँ का सभी साहित्य पिछली परम्परा की चोरी है। यह भी कहा था कि उसकी एक किताब शीघ्र ही छपने वाली है। उसे एडवान्स एक हजार का चेक मिल चुका है और उसने वायदा किया है कि वह जल्दी ही सबको दावत देगा।

लेकिन पक्ष और विपक्ष की लड़ाई शुरू हो गयी। हमारा एक मोर्चा

दो में बंटता हुआ लगा। बाजपेयी ने बहस चालू की। उसका कहना था कि ट्रस्ट जिन दूकानों से पंखा खरीदता है, वहीं से वकील साहब को सस्ते दामों पर एक पंखा दिलवा दिया गया है। उनका अपराध इतना ही नहीं है, वे तो उसके कार्यालय से एक सुन्दर पेंटिंग भी झटक लाए हैं। चेक की कहानी यह है कि कहीं से दोस्त कोरा चेक मार लाए और यार-दोस्तों पर रोब गालिब करने के लिए वह हरएक को दिखलाया जा रहा है।

इस पर वकील ने निवेदन किया कि मरे हुए को मारने से कोई लाभ नहीं है। कप्तान ने ताव से फैसला दिया कि वकील साहब पर अनुशासन की कार्यवाही करके उनको छै महीने क्लब से अलग क्यों न कर दिया जाय? इस पर सब के सब चुप रहे तो वे बोले, 'एक व्यक्ति को लेकर वकील ने सामूहिक निश्चय की उपेक्षा की है। यह बहुत बड़ा अपराध है। वकील साहब को चेतावनी दी जाती है कि भविष्य में वे बाजपेयी की बातों में दखल न दें। इतना ही नहीं उनको अगले रविवार की पिकनिक का सारा खर्चा चुकाने का दंड दिया जाता है।'

वकील साहब ने तो मानो चन्द्रकान्त को अपना मुवक्किल मान लिया हो। वे कहने लगे, 'जिन्दगी से हारे हुए किसी व्यक्ति के साथ हमारा यह व्यवहार ठीक नहीं है। उसने कहलाया है कि वह बहुत अभागा है। उसका दुर्भाग्य था कि उसे आधुनिका-पत्नी मिली है। जब कि वह रूढ़िवादी है। उनका आपसी झगड़ा इधर ज्वालामुखी के रूप में फूट निकला है। पत्नी नोटिस देकर अपने पिता के घर चली गयी और उसने तो यह भी धमकी दी है कि वह वहाँ की अदालत में अपने हक के लिए लड़ कर माहवारी बंधवा लेगी। चन्द्रकान्त ने तीन साल के बच्चे को साथ नहीं जाने दिया है। उसका कहना है कि वह उस बच्चे को नहीं छोड़ सकता है। अब वह बच्चे को पाल कर इसी प्रकार जीवन व्यतीत कर देगा। वह अपनी पत्नी को माहवारी खर्चा देने के लिए भी सहमत है। उसकी हालत तो दयनीय है। उसने कल मुझे बुलाया था। वह तो

हारे हुए जुआरी की तरह था। उसका दुबला शरीर बार-बार गुस्से से काँप उठता था। उसका कहना था कि इस गृहस्थी को संभालने की कई बार चेष्टा की पर असफल रहा है। वह पत्नी सदा ही उस पर ताना मारती थी कि वे महान हैं। उसका कहना था कि उसके पिता ने उस परिवार में देकर सदा के लिये उसकी आत्मा का हनन किया है। वह संभवतः उस आधुनिका के साथ निभने में असफल रहा है।'

उन्होंने तो उसकी वकालत करते हुए बताया कि झगडा इतना तूल न पकड़ता, पर एक घटना ने आग लगा दी। उसकी पत्नी अपने मामा के लड़के की गुपचुप सहायता करती थी। वह विश्वविद्यालय में पढता है। वह छुट्टियों में घर आया और अपनी बहिन से कहा कि उसे डेढ़ सौ रुपये की बड़ी आवश्यकता है। पत्नी ने चुपचाप रुपये दे दिए। पति ने पकड़ लिया और यही बात तूल पकड़ बैठी। गुस्से में चंद्रकान्त पर उसके साले ने हमला किया। अपने बचाव के लिये चंद्रकान्त ने बड़ा ताला उठा कर मारा। वह उसके माथे पर लगा था। कुछ देर के बाद ही पत्नी ने अपने कपड़े वगैरह संभाल कर जाने की तैयारी करली। उसने मना नहीं किया। पर उससे अपना लड़का छीन लिया। पत्नी बिना लड़के के ही चली गयी।

इस घटना से हम सब सन्न रह गये। कप्तान तो पिघल कर मोम बन जाना चाहते थे, पर वाजपेयी ने दूसरा दृष्टिकोण रखा। उसका कहना था कि चंद्रकान्त की पत्नी उसको पत्नी से जाने से पहले मिली थी। बेचारी के पास एक पैसा भी नहीं था। वह बहुत दुखी थी। उसका कहना था कि पति सदा से ही उसके चरित्र पर लांछन लगाते रहे हैं। जब उसका पहला लड़का हुआ तो उनको संदेह था कि उसमें कोई गड़बड़ है। नर्स के समाधान कराने पर भी कि उसका चेहरा उनका सा ही है, उनको विश्वास नहीं हुआ। वे उसकी चिट्ठियाँ खोल-खोल कर पढते थे और कई गायब भी करदी। वे अक्सर ताना मारते कि उसका यार कब उसे लेने आवेगा। यह भी उनका कहना था कि धोखा देकर यह हुआ है। पिता जी ने

उसके पिता पर विश्वास कर एक चरित्रहीन लड़की को उसके गले मढ दिया है। उसे उसके बचपन के सभी रोमांसों की जानकारी है। इस बार तो यह हुआ कि उसका मामा का लड़का उनकी अनुपस्थिति में आया। वे कार्यालय के काम से दिल्ली गये हुए थे। जब वे पहुँचे तो नौकर से उसके आगमन की बात सुन कर फौजदारी करने पर उतारू हो गये। पत्नी कुछ समझावे कि उसने ताला जोर से उसके माथे पर मारा। पत्नी ने अपने भाई से अनुरोध किया कि वह वहाँ से चला जाये। जब उसका भाई चला गया तो वे शेर हो गये। गोसलखाने में ले जाकर पत्नी का गला घोटने की चेष्टा की। वे तो हत्या कर देते यदि पास के बँगले के लोग आकर उसकी रक्षा न करते। अडोस-पडोस की महिलाओं की सलाह से ही पत्नी अपनी मायके चली गयी है।

यह सब सुन कर तो कप्तान खड़ा हो गया और चिल्लाया था, 'वह शूअर है। अभी चल कर उससे मिलना चाहिए और सजा देनी चाहिए। उसकी हर एक हरकत की जिम्मेवारी हमारी है।' कप्तान ने तो वाजपेयी से निवेदन किया कि वह अपनी पत्नी से उस महिला को एक पत्र लिखा कर भिजवा दे तथा उन सबकी सहानुभूति प्रकट करदे। उनका कहना था कि यह उन लोगों की गफलत से हुआ है और वे उसके लिए माफी माँगते हैं। वे उस महिला के अधिकारों की रक्षा के लिए जो रास्ता उचित हो अपनाने के लिए तैयार हैं। नारी के अधिकारों की रक्षा करना युग-धर्म है।

प्रोफेसर जो कि अब तक चुप था। वह अपनी मूकता को हटा कर बोला, 'दोस्तों, सच कहा जाय तो कसूर मेरा भी कम नहीं है। मैं बहुत सी बातें जान कर भी आज तक चुप रहा। सच बात यह है कि मैं विश्वविद्यालय में चंद्रकान्त का सबसे निकट का साथी रहा हूँ। होस्टल में वह मेरा रूम मेट चार साल रहा। मैं पढ़ने में तेज था और इससे उसे बड़ी जलन होती थी। कई बार तो उसने मेरे नोट्स गायब कर दिए

और एक बार इम्तहान से एक सप्ताह पहले उसने मेरी कई जरुरी किताबें लापता करदीं। वह यह कभी नहीं देख सकता था कि मैं प्रथम श्रेणी में पास होऊँ और वह तीसरी। यही नहीं वह सदा प्रोफेसरों के बंगलो में जाकर चापलूसी किया करता था। उनसे मेरी बुराइयाँ करता था। इस सबको मैंने कोई परवा नहीं की। लेकिन एक बार बड़े दिनों की छुट्टी में मैंने पाया कि वह बदल गया है और उसने स्वयं ही मुझे बताया कि वह जीवन की एक बड़ी असफला ले कर लौट रहा है! बात यह थी कि वह उन दिनों एक सुन्दर लड़की के प्रेम का शिकार हुआ था। वह लड़की उसकी बातें बड़ी दिलचस्पी से सुनती थी। ये हजरत उसके आगे दून की हाँकते थे। अपनी बहिन के द्वारा जब प्रेम का सन्देश भेजा तो लड़की ने कहा कि वे 'ईडियट' हैं। बहिन के मुँह से वह आशीर्वाद पाकर उसने यह प्रण किया कि वह शादी करेगा तो उसी से और अपने पिताजी से उसके पिता के लिए पत्र लिखवाया था। लेकिन साधारण सा उत्तर मिला कि लडकी की शादी तय हो चुकी है। यह जान कर वह उसके भावी पति से मिला और उसे समझाया कि वह विवाह ठीक नहीं है। वह लड़की उनके अनुकूल नही है। लेकिन शादी हो गयी और यह धक्का उसको जीवन की एक नई पगडंडी पर ले जाने में सफल हुआ।

यहीं से उसकी महत्वकांक्षा शुरू होती है। वह उस लड़की को दिखा देना चाहता था कि उसका व्यक्तित्व असाधारण है। वह अपनी हार को जीवन में जीत साबित करने के लिए ही इस प्रकार अकेले में शतरंज की गोटियाँ चलाया करता है। उस लड़की का आज सफल परिवार है। चार बच्चे है, पति फौज में मेजर हैं। सच पूछा जाय तो उस लड़की ने इसके जीवन में यह परिवर्तन किया है, अन्यथा हजरत किसी दफ्तर में अस्सी-सौ रुपये की क्लार्की करते हुए होते। कभी-कभी कोई साधारण घटना इनसान के जीवन में बहुत बड़ी तबदीली ला देती है। आज भी वह सुबह-शाम यही सोचता है कि उस लड़की से अपमान का बदला कैसे चुकावे। वह मेजर एक बार ब्रह्मा में कैद हो गया और बार-बार यह व्यक्ति मनाता था कि वह मर जाय। एक

बार सूचना मिली कि उसका पति लापता है, लोगों का अनुमान था कि वह मर गया है। उस अवसर पर इसने उस लड़की को सहानुभूति का साधारण सा पत्र भेजा था। वहाँ से कोई उत्तर न पाकर इसकी प्रतिहिंसा जाग्रत हुई। उन दिनों ही इसने शादी कर डाली। यह लड़की बहुत सुन्दर थी। लोगों का कहना था कि इस लड़की के पीछे कई युवक पागल हैं। कुछ का खयाल था कि वह किसी आई० सी० एस० से शादी करेगी। कोई कहता था कि वह एक डाक्टर के साथ प्रेम करती है। कई बार वह उसके साथ सिनेमा जाते हुए देखी गयी थी। उस सबके कारण इसने अपनी सारी शक्ति उसे प्राप्त करने में लगा दी और जिस दिन उसे विदा करा के घर लौटा तो पाया कि सैकड़ों नौजवानों ने उसे उपहार दिये हैं। वह लड़की उसके जीवन की निराशा बन कर आई। वह रूप उसे डसने लगा। उस दिन वह फूट-फूट कर रोया था। लेकिन जीवन में अपनी असफलता के बाद वह नए खेल खेला करता है। पिता के जान-पहचान के अंग्रेज अफसर के साथ वह दो-तीन साल रहा। वह अवेतनिक रूप में उनके दफ्तर में काम किया करता था। पर लोगों को बताता था कि वह सरकार की ओर से ट्रेनिंग ले रहा है। मद्रास, कलकत्ता, नेपाल, तक्षशिला आदि कई जगह वह घूमा और आखिर किसी तरह इस शहर में सौ रुपये की नौकरी पाने में सफल हो गया था।

कप्तान तो हँस पड़ा, कहा फिर, 'तब तो हमारे इस दोस्त का दास्तान हीर-राँझा, लैला-मजनू आदि की तरह ही अमर रहता यदि वह अपनी प्रेमिका के पीछे शहीद हो जाता। लेकिन उसकी सारी हरकतें तो एक पक्के क्रिमनल की सी है। क्यों वकील ऐसे व्यक्ति जो कि समाज के लिए खतरनाक है, उसके लिए सरकार ने कानून में कोई व्यवस्था की है या नहीं। लगता है हमने आज तक गलती की। यह हमारा कर्त्तव्य है कि उससे सम्पर्क स्थापित कर, उसे सही रास्ता दिखलावें। अभी देर नहीं हुई है। मेरा प्रस्ताव है कि अगले रविवार को सब साथी शाम को चार बजे वहाँ इकट्ठा हों। वकील साहब इसका नोटिस उसे दे आवें।'

लेकिन वकील ने सुझाव दिया कि सबके हस्ताक्षर से एक रजिस्ट्री एकनौलेजमेंट पत्र भेजा जाय। इस पर सभी सहमत हो गये और एक कोरे कागज पर सबने हस्ताक्षर करके वकील को दे दिया। यह तय हुआ कि वकील उस पर जरूरी मसौदा टाइप करवाकर भिजवा दें। वह पत्र एक प्रस्ताव के रूप में होने वाला था, जिसमें कि पहले प्रेम से लेकर बीवी के साथ की घटना का जिक्र किया जाय। सारी स्थिति पर खेद प्रकट करते हुए चेतावनी दी गयी कि यह उन दोस्तों का कर्तव्य है कि असामाजिक जन्तु को सही रास्ता दिखावें। उसकी हिंसा वाली प्रवृत्ति की घोर निन्दा करते हुए निवेदन किया गया कि वह रविवार को चार बजे घर पर उनसे मिलने के लिए तैयार रहें। साथ ही चाय तथा खाने-पीने की कुछ चीजों का उल्लेख किया गया, जो कि यार-दोस्तों को पसन्द थीं।

वह नोटिस लौट आया और दफ्तर वालों ने बताया कि वह कहीं छुट्टी पर चला गया है। बात सच थी। वाजपेयी ने दफ्तर से पता लगाया कि एक महीने की छुट्टी ली है। लेकिन वह छुट्टी तो बढ़ते-बढ़ते चार महीने की हो गयी और वह लौट कर नहीं आया। कप्तान का ख्याल था कि अब वह इस नौकरी से इस्तीफा दे देगा। लेकिन वकील का कहना था कि उसे पचास की नौकरी भी नहीं मिल सकती है। कुछ दिन तक इस पर बहस चली। वाजपेयी को हिदायत दी गयी कि वे अपनी पत्नी से कह कर उसकी पत्नी को चिट्ठी लिखवादें। पर वहाँ से कोई खास उत्तर नहीं मिला। पत्नी को उनकी कोई जानकारी नहीं थी। उसके पिता को जरूर धमकी का पत्र मिला था, कि वे अपनी लड़की को सदा अपने परिवार में रखें। यह उसे छोड़ चुका है। जरूरत के लिए बीस रुपया माहवारी खर्चा देने का आश्वासन दिया, यदि उसको कोई बुराई नहीं सुनी जायगी। प्रोफेसर से दोस्तों ने निवेदन किया कि वे उनके पिता को पत्र लिखें; पर वह उस परिवार वालों के साथ व्यर्थ में उलझना नहीं चाहता था।

कप्तान ने कहा, "आज न सही कल हम उसे ढूंढ़ ही लेंगे, वह जावेगा कहाँ।"

वाजपेयी इस पर हंस पड़ा और उसने एलान किया कि वह महीने दो महीने में लौट कर आ जावेगा। जब वह नगर मे रहता था तो हमारा चद आपसी बातो के अलावा उससे कोई नाता भी तो नही था।

अब हमारी पार्टियाँ कुछ फीकी लगने लगी थी कि, एक दिन वकील ने एक निमंत्रण पत्र मेज पर रख दिया और फिर कप्तान ने। लेकिन वह तो सभी को प्राप्त हुआ था। हम सबने अपने-अपने निमंत्रण पत्र मेज पर फैला दिए। उनमें नाम तथा पता किसी महिला का भरा हुआ था। उन निमत्रण पत्रों को उस तरह पाकर हम सबने अपनी हार महसूस की। वह चंद्रकान्त की दूसरी शादी के निमत्रण-पत्र थे। हम सबको उसने आमंत्रित किया था। शादी हमारे ही शहर मे होने वाली थी और देवीजी एम० ए०, एल-टी० पास अध्यापिका थी।

वाजपेयी ने वादा किया कि वह उस महिला का पूरा पता लगावेगा। लेकिन वकील का कहना था कि पिछले महीने एक विज्ञापन दैनिक-पत्र मे छपा था। लगता है कि वह उसी का था। उसको देख कर कोई भी परिवार अपनी लडकी को आसानी से दे देता। पत्नी अस्वस्थ और संबंध विच्छेद हो गया है। सालाना आमदनी दस हजार। एक अच्छे साथी की आवश्यकता? पत्र व्यवहार करें : पोस्ट बाक्स....?

कप्तान का कहना था कि यदि वाजपेयी चैतन्यता से काम लेता तो उस विज्ञापन की पकड़ हो सकती थी। अब तो वह बाजी मार कर ले गया। उनके सामने सवाल था कि कौन-कौन शादी मे जा वें। इस बार तो सामूहिक रूप में बायकाट करना नहीं जँचा। प्रोफेसर का कहना था कि अब भी हमे दोस्त के साथ सम्पर्क स्थापित करके उसे सुधारना चाहिए। हमारा पिछला प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हुआ था। काफी विचार विमर्श के बाद निश्चय हुआ कि इस अवसर पर उसे बधाई देने वाला

प्रस्ताव पास करके वकील तथा प्रोफेसर उस शुभ अवसर पर शामिल हों। 'कार' वकील साहब की जायेगी और बहू को उपहार देने के लिए दो सौ रुपए का बजट स्वीकार हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि वाजपेयी अपनी पत्नी के साथ उसके घर पर वधू का स्वागत करने के लिए जायगा।

शादी के बाद पता चला कि चंद्रकान्त उस दिन से ससुराल ही में सप्ताह भर के लिए जमा रहा। उधर वाजपेयी सपरिवार रात भर वर-वधू की प्रतीक्षा में जागरण करते रहे और वकील साहब की कार रास्ते में खराब हो गयी थी, अतएव वे रात भर अपनी कार पर ही वहीं नींद में खुमारी भरते रहे।

—आज हम कप्तान की विदाई में शरीक हुए थे। चंद्रकान्त ने उस नई शादी के बाद हमसे बिलकुल नाता तोड़ दिया था। यदि वह कहीं रास्ते में हम में से किसी के आगे पड़ता तो कन्नी काट कर निकल जाता। बारी-बारी से हम सभी की पत्नियों ने उस जोड़े को आमन्त्रित किया पर काफी प्रतीक्षा करने के बाद भी वह किसी परिवार में नहीं आया। दो-तीन बार कप्तान अपने बाल-बच्चों के साथ उसके घर गया तो पता लगा कि नया जोड़ा पत्नी के घर पर ही है। नौकर को टिप करके भेद की बातें जानने की चेष्टा की तो वह गूँगा मिला। कप्तान का कोई रोब उस पर नहीं पड़ सका। इस सब से हमारे कल्ब की दिलचस्पी कम हो रही थी कि प्रोफेसर ने एक दिन सुनाया कि उसकी पत्नी तो उनकी श्रीमती की सहेली है। सिविल लाइन्स में एक दिन दोनों अनायास मिल गयीं। वह कुछ बातें न कर सकी। चंद्रकान्त ने एक रिक्शा मँगवा कर माफी माँगते हुए कहा था कि उनको एक जरूरी काम से जाना है।

इस बात ने एक नई आशा हमें दी थी। पर हमारी बीवियों को हमारी बातों के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी धारणा थी कि हम बूढ़े हो गये हैं, पर लड़कपन नहीं छूटा है। सब ने एक स्वर में विरोध किया कि इसमें वे हमें कोई सहयोग नहीं देंगी। अपनी बीवियों की इस

सत्याग्रही भावना ने हमें परेशान कर दिया। प्रोफेसर की पत्नी से सबकी ओर से विनती की गयी तो वह कुछ पिघली और इतना ही बताया कि श्रीमती चंद्रकान्त शीघ्र ही किसी सरकारी नौकरी पर जाने वाली हैं। यह नौकरी पर जाना किसी के समझ में नही आया।

फिर सुना कि एक दिन वे नौकरी पर चली गयी। प्रोफेसर की पत्नी से केवल इतना ही कहा था कि यह प्लैस्टिक का युग है। उसका पति भी 'प्लैस्टिक का दिल' रखता है।

प्लैस्टिक के दिल रखने वाली बात से अधिक वह कुछ नही बताना चाहती थी।

कप्तान की आज को विदाई सबको अखर रही थी। सच ही पिछले चंद सालों में हमारे कल्ब का वह प्रमुख स्तम रहा। अब हम इस 'काफी हाउस' में इस शान से नहीं बैठ सकेंगे। कौन जाने कभी-कभी महीने में ही अब जुड़ें और वकील की मोटर को धक्के लगा कर ही आगे धकेल कर चलाना होगा। सिनेमा के लिये वाजपेयी के पासों का इन्तजार करना पड़ेगा। कप्तान भी खुद काफी सुस्त था और उस खामोशी को कोई तोड़ना पसन्द नही कर रहा था।

—अगले रोज हम कप्तान को विदा करने के लिए स्टेशन पहुँचे। मेल कुछ लेट थी। यार-दोस्त मस्ती से प्लेटफार्म पर टहल रहे थे। जब गाड़ी आई तो हम लोगो ने कप्तान को उसमें बैठाया और उनको मालायें पहनाईं। अभी गाड़ी ने पहली सीटी दी थी कि हम सब ने देखा चंद्रकान्त चला आ रहा है। उसके साथ एक कुली सामान लादे था। हमने उसका सामान कुली के उतरवा कर उसी कम्पार्टमेंट में रखवा दिया। सब आश्चर्य से उसे देखते रह गये और वह तो मुस्कराते हुये बोला, 'सरकार ने उसे इंगलैंड नगरों के निर्माण की नई शिक्षा लेने के लिए भेजा है। उसे अगले सप्ताह दिल्ली में हवाई जहाज पकड़ना है। इंगलैण्ड से वह पाँच महीने के

लिए अमरीका टूर पर जावेगा।'

वाजपेयी की ओर देख कर कप्तान बोला, 'वाजपेयी लंगड़ी खा गये हो।

लेकिन प्रोफेसर ने तो चुपके कहा, 'दोस्त, हम सबकी शुभ कामना तुम्हारे साथ है। लेकिन हमारा सामूहिक अनुरोध है कि तुम अपने 'प्लैस्टिक के दिल' का आपरेशन करा कर ही यहाँ लौटना। वहाँ किसी अस्पताल में कुछ दिनों के लिये दाखिला करवा लेना।'

चंद्रकान्त का चेहरा मुरझा गया। उसने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा, 'आपरेशन किसके लिए करवाऊँ। उस जिद्दी औरत ने क्या तुमको नहीं बताया कि वह सिर्फ यह दिखाने के लिए नौकरी करने के लिए गयी है कि उसे मेरी आर्थिक गुलामी पसन्द नहीं थी। मैंने उससे भी नाता तोड़ दिया है। अब आजाद होकर इस टूर पर जा रहा हूँ।'

गाड़ी ने दूसरी सिटी दे दी और वह चलदी थी।

हम सब साथी अवाक् से उस प्लेटफार्म पर रह गये। न चाहते हुए भी उसका और कप्तान का सात घंटे का साथ हो गया था। क्या वे कोई बात सुलझा सकेंगे।

वाजपेयी ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'वकील चलो, आधा घंटा तो अभी 'कार' स्टार्ट करने में ही लगेगा।'

हम सब प्लेटफार्म से बाहर निकल आए थे।

फूल और काँटा

यह बात गाँव-भर में फैल गयी कि मुताड़ू मैदान से लौट कर आ गया है। आज से सात-आठ साल पहले उसका नाम तथा व्यक्तित्व गाँव वालों के लिए किसी महत्त्व का नहीं था। उन दिनों वह धनी परिवारों के ढंगर चराता और जंगल से घास-लकड़ी काट कर लाता था। जब कोई बहू मायके से ससुराल जाती, तो वह उसका असबाब ढोता था। उसका पिता मिस्त्री था और जब वह पाँच साल का था, तभी मर गया। उसकी माँ कुछ परिवारों की औरतों के काम में हाथ बँटाया करती थी। वह बचपन में बहुधा पेशाब करके बिस्तर तर रखा करता, इसीलिए उसकी माँ ने उसका नाम मुताड़ू रख दिया था। उसका कुछ और नामकरण भी वह करती, पर इस बीच उसका पिता मर गया। फिर उसकी माँ का विश्वास था कि सुन्दर नामों वाले लड़के जिन्दा कम रहते हैं और उन पर आसानी से नजर लग जाती है।

उसकी माँ उस समय तहसीलदार के परिवार की सबसे छोटी बहू के साथ ओखली में धान कूट रही थी। गोधूली बीत चुकी थी और गायें दुही जा रही थीं। कभी बीच-बीच में किसी बाछी के रँभाने की आवाज सुनाई पड़ती थी। वह बूढ़ी धान की आखिरी घान कूट रही थी और वह कुटे हुए धान को सूप पर फटकती हुई भूसी उड़ा एक ओर जमा कर रही थी। वह अधकुटी कनियों को फिर-फिर ओखली में डाल देती। वह बहू बहुत बड़े घर की बेटी तथा माँ-बाप की प्यारी है और इस तरह का मोटा काम नहीं कर पाती। इसीलिए वह बुढ़िया उसकी सहायता कर

दिया करती है। कभी-कभी वह भावुकता में बताती है कि उसको सास किस तरह उससे नाखुश रहती है तो वह समझाती है कि आठ-दस महीने में उसका पति नौकरी पर लग जाएगा, तब कौन यहाँ रहेगा। बात कुछ सच थी। उस परिवार के लड़के बाहर मैदान में नौकरी करते थे और उनको गाँव की खेती-पाती में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसकी सास तो कहती कि यह लाखों की जायदाद बिगड़ रही है और लड़कों को कोई चिन्ता नहीं है। वह लाखों की जायदाद, पहाड़ों पर के छोटे-छोटे खेत, जिनमें दिन-भर काम करने पर केवल खाने भर की पैदावार हो पाती है। यदि परिवार के पुरुष बाहर जा कर नौकरी न करें, तो एक दिन भी काम न चले।

उधर बच्चे अपने बड़ों की आज्ञा की अवहेलना करके मुताड़ू के घर की ओर हरिजनों की बस्ती में पहुँच गये। मुताड़ू के लिए यह घटना नई थी कि सवर्ण परिवारों के बच्चे नीच जाति वालों के घर जाएँ। उसे डर था कि कहीं यह घटना आफ़त तो नहीं लाएगी। बचपन में कई बार वह इन बच्चों को छू-भर देने से पिट चुका था और एक बार वह पुजारी के सामने पड़ गया, तो उनके नौकर ने उसे पकड़ कर जलते हुए कोयले से दाग दिया था। एक महीने में वह घाव ठीक हुआ था। तब से ही वह इन लोगों से बहुत डरता था और जब कुछ बड़ा हुआ, तो इन बड़े कहलाने वालों के अत्याचार से ऊब कर गाँव से भाग गया था। वह बात सात-आठ साल पहले की थी। तब वह चौदह साल का था और डंगर चराने के अलावा अपने पिता की परम्परा वाली मिस्त्रीगिरी के काम की तालीम भी ले रहा था।

तहसीलदार के परिवार का नया मकान बन रहा था और वह तीन आना रोज़ की मजदूरी पर पत्थर ढोता तथा नदी से कनस्तर भर कर पानी लाता था। परिवार की छोटी बहू मायके से आई, तो उसने चौक में कलेवे की कंडी ठाकुर से रखवाई थी। इतने में उधर से मुताड़ू गुजरा। उसकी सास तुलसी की पूजा कर रही थी। उसने उसी समय वह कंडी

हटवा दी और हल्ला मचाया कि बड़े घर की बेटी है और बड़ा दिमाग रखती है। सास की आज्ञा के खिलाफ बहू मायके में अधिक रुक गयी थी और सास इस कारण उस पर खार खाए बैठी थी। उसने वह कलेवा नीच जाति वालों में बँटवा दिया। मुताड़ू तो सास और बहू के बीच बेकार का शिकार बन गया था। वह रोती हुई चुपचाप भीतर चली गयी, पर सास घंटे-भर तक बड़बड़ाती रही। उस दिन हफ्ते वाली मजदूरी मिलने वाली थी और मुताड़ू ठेकेदार का इन्तजार कर रहा था। ठेकेदार भी नहीं आया और परिवार के नौकर ने उसकी कमीज उतरवा कर उसकी कमर पर गिन कर चौदह बेतें मारीं। वह सास उन हरिजनों पर उबल पड़ी थी कि डोम सिर चढ़ गये हैं, अब गाँव का कल्याण नहीं होगा।

मुताड़ू एक घंटे वहीं चौक के कच्चे फर्श पर बेहोश पड़ा रहा। होश आने पर उसका चाचा उसे उठा कर घर ले गया। उसे हल्दी और गुड़ पिलाया गया। उसके बदन पर कच्ची हल्दी पीस कर लगाई गयी। फिर भी वह रात भर सो नहीं सका। वह घटना कोई नई नहीं थी। इस तरह तो रोज ही होता था। पर सास-बहू के झगड़े से उठी यह घटना अगले दिन घाट-बाट में फैल गयी। यह निर्णय तो कोई नहीं दे सका कि कसूर सास का था या बहू का, पर इस बात से सब सहमत थे कि यदि मुताड़ू उस समय वहाँ न होता, तो यह घटना न घटती। उसकी माँ तो सुबह ही बड़ी देर तक उस परिवार में जा कर माफी माँगती रही और सास ने उसे समझाते हुए कहा कि दोष उसका नहीं है, जमाना ही खराब आ गया है, तभी तो आजकल सब-के-सब हरिजन आर्यसमाजी बन रहे हैं और कहते हैं कि अब वे भी जनेऊ पहनेंगे। कलयुग का तीसरा चरण शुरू हो गया है। सास से अधिक सहानुभूति बहू ने दिखाई थी। वह दिन में छिप कर उसे खेत में बुलाने में सफल हुई और उसने माफी माँगते हुए कहा था कि उसके कारण ही वह सब काड हुआ। उसने बुढ़िया को एक रुपया देकर कहा था कि वह उसे हलुवा खिलाए और दूध पिलाए। उसने यह भी पूछा था कि कोई भारी चोट तो नहीं आई। उसे अपनी सास से घृणा

थी, इसीलिए उसने यह उद्गार प्रकट किया कि सास का यही हाल रहा, तो वह गंगा में डूबकर प्राण दे देगी। उसके माँ-बाप ने उसे इस घर में दे कर उसका गला काट दिया। मुताड़ू की माँ ने इसका समाधान करते हुए उसे समझाया था कि लड़का होनहार है, जल्दी ही नौकरी पर लग जाएगा, तब अपनी जिठानियों की तरह वह मौज करेगी।

मुताड़ू जब स्वस्थ हुआ, तो उसका मन उस गाँव में नहीं लगा और एक दिन वह शहर भाग गया। शहर में भी हरिजनों के लिए कोई जगह न थी। वहाँ भी वे ही सामाजिक बन्धन थे। एक होटल वाले ने उसे इस शर्त पर नौकर रखा कि वह अपना नाम माधव सिंह रख ले और ग्राहकों के पूछने पर बताए कि वह ठाकुर है। उसने यह स्वीकार कर लिया और वह वहाँ चौका-बर्तन का काम करने लगा। उस काम पर लगे हुए उसे दो महीने भी नहीं हुए थे कि उसके गाँव का एक आदमी उस होटल में आया और उसे पहचान गया। पहले तो मुताड़ू ने छिपने की चेष्टा की, पर सफल नहीं हुआ और उस व्यक्ति ने उसका कान पकड़ कर कहा, 'सुअर के बच्चे! ठाकुर बन कर लोगों को धोखा दे रहा है?' मैनेजर ने उसे पीटा और अपने ग्राहकों से माफी माँगते हुए कहा कि जमाना खराब आ गया है। अब किसी का भी एतबार नहीं किया जा सकता। वह तो उसे पुलीस में देने की बात भी करने लगा। लेकिन कुछ रहमदिल लोगों ने उसे यह कह कर छुड़ा दिया कि इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा।

वहाँ से छूट जाने पर, वह मैदान की ओर भाग गया। होटल वाले अनुभव के बाद वह कुछ ढीठ हो गया था। उसने अपनी जाति और नाम यों ही रहने दिए। लेकिन वहाँ पर एक नई रुकावट आई। नौकरी फिर एक होटल में ही मिली और वह भी इस शर्त पर कि वह जनेऊ पहन ले और ब्राह्मण बन कर खाना बनाने का काम सीखे। उस मैनेजर ने हँस कर कहा था कि वह है तो राजपूत, पर न जाने कितने हरिजनों को जनेऊ पहना कर उसने ब्राह्मण बना दिया है। आजकल नौकरों का टोटा हो गया है। चार दिन काम करने के बाद सब के पंख लग जाते हैं और हर-एक

अपनी छाती का नाप देने के लिए पुलीस-लाइन और भरती के दफ्तर पहुँच जाता है। उसने समझाया कि पुलीस और फ़ौज की नौकरी में यह आनन्द कहाँ। वह मेहनत से काम करे, तो सात-आठ साल मे इतना कमा लेगा कि अपना ही कोई रोजगार कर सके। मुताड़ू से यह सुन कर कि उसके माता-पिता मर गये हैं, उसने सन्तोष के साथ कहा था कि तब तो उसे अपने ही बूते पर जिन्दगी काटनी है और उसे खाना बनाने के काम की दीक्षा देनी प्रारंभ कर दी थी।

मुताड़ू ने यह झूठ कहा था कि उसकी माँ मर गयी है और इसका दुःख भी उसे बहुत हुआ। फिर इस प्रकार हरिजन से ठाकुर और ठाकुर से ब्राह्मण बन जाना भी उसकी समझ मे नहीं आ रहा था। लेकिन अब वह समझदार होता चला जा रहा था। वह अब दुनियाँ को समझने की चेष्टा भी करने लगा था। किन्तु वह नया होटल भी उसे सुरक्षित नही लगा। वहाँ भी उसके प्रदेश के लोग बहुधा टिका करते थे और इस क़स्बे की सीमा पहाड़ो से दूर न थी। अतएव वह वहाँ से भी भाग निकला और एक साल इसी तरह भटकता हुआ अंत मे सच ही पुलीस-लाइन में पहुँच गया, जहाँ भरती हो रही थी। उसके देश के लोगों ने बताया था कि वहाँ हरिजन भी भरती होते हैं। सरकार ने एक नई तरह की भरती खोली थी, जिसमे कि जात-पाँत का सवाल नही उठता था।

वहाँ भरती हो जाने के बाद, उसने चैन की साँस ले कर अपनी माँ के नाम पहला पत्र लिखवाया। पत्र मे उसने यह भी लिखाया कि यदि वह अब तक जीवित हो, तो पत्र का उत्तर अवश्य दे। वह उसके लिए आगे से माहवरी खर्च भी भेजा करेगा। लिफाफ़े पर लिखा था, 'माधवसिंह की माँ को मिले।' वह चिट्ठी उसकी माँ को सुनायी गयी, तो उसे विश्वास नहीं हुआ और उसे लेकर वह छोटी बहू के पास गयी। जो उसके पुत्र के भाग जाने के बाद से सदा ही सहानुभूति-पूर्वक उसकी मदद करती रहती थी। छोटी बहू का तो कहना था कि उसके कारण ही उसे
पड़ा है। किन्तु माँ केवल आँसू बहाती रहती। बहू ने कई

वह लौट कर आएगा, पर बुढ़िया को न जाने क्यों भरोसा नहीं होता था। उसका खयाल था कि वह लड़का सीधा-सादा है और न जाने कहाँ-कहाँ ठोकरें खा रहा होगा। जब कई साल तक उसका कोई पता नहीं चला, तो उसे विश्वास हो गया कि वह मर गया है और उसने जीवन में दिलचस्पी लेनी छोड़ दी।

छोटी बहू से उसने कई बार चिट्ठी सुनी थी और कुछ सवाल पूछे थे। वह जानती थी कि वह बहू भी कभी न कभी देश जाएगी और संभवतः उसी जगह चली जाए, जहाँ उसका बेटा है। उसे भरोसा था कि बहू के कहने पर वह जरूर ही घर लौट आएगा। उसके सभी पुरखों ने वहाँ के लोगों की ताबेदारी करके दिन काटे थे, उसे भी अब यही करना चाहिए। यहाँ मेहनत करके कमाये हुए चार पैसे बाहर के आठ से भले होते हैं।

बहू ने जब बताया कि वह खूब कमा रहा है और इतना कि जितना वह यहाँ न कमा सकेगा, तो उसे आश्चर्य हुआ था। लेकिन अब तो वह माहवारी पाँच रुपये माँ के लिए भेजने लगा था। जब कि अच्छे घराने के लड़के, जो देश में नौकरी करते थे, घर से पैसा मँगाया करते। वह तह-सीलदारिन तो रोज कहा करती थी कि उसके लड़कों का खर्च नहीं चलता है और सभी को कुछ-न-कुछ घर से भेजना पड़ता है। बड़े घरानों की बड़ी मुसीबत है कि काम कैसे चलाएँ। पिछलों की प्रतिष्ठा का सवाल आता है और बचपन से अच्छा खाया-पिया है। लेकिन उस माँ के लिए तो ये पाँच रुपये संसार की सबसे बड़ी निधि थे और बाद में तो भले घरों की बहू-बेटी उन माहवारी पाँच रुपयों के कारण उसकी प्रतिष्ठा बढ़ा कर, अपनी जरूरतों का रोना रो कर कर्ज लेती रहती थीं। जो वे कम ही चुका पाती थीं। अब उसका बुलावा बहुधा हुआ करता और कभी तो कोई बूढ़ा मजाक में उसे सेठानी की पदवी दे कर रुपये ठग लेता था। छोटी बहू ने कई बार उसे समझाया कि इस तरह दिया हुआ रुपया लौटेगा नहीं और अनुभव से उसने भी यह जान लिया था, पर जब कोई गरजमन्द गाँव की बहू-बेटी आ जाती, तो वह इनकार नहीं कर सकती थी।

पड़ा रहता है। उसने प्रण किया कि लड़के को चिट्ठी लिख कर सारी बातें बताएगी और पंचायत करके पुजारी को बदलवा देगी। गाँव में ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है, जो स्वय कोढ़ी हो और दूसरों पर झूठा दोष लगाता हो। उसका चंडी रूप देख कर गाँव वाले दंग रह गये। पंडित जी की स्वयं समझ में नहीं आया कि क्या करें। उनको विश्वास नही था कि उस छोटी और सच्ची बात का रूप यह हो जाएगा। उन्होंने सब देवी-देवताओं की कसमें खाई कि उन्होने वह बात नहीं कही और अपना निर्णय सुनाया कि अब वे चार-धाम की यात्रा करके ही गाँव में लौटेंगे। जिस परिवार की वे ताज़िदगी सेवा करते रहे हैं, वहाँ से यह लांछन मिले, यह उनके लिए असहनीय था। वे उस देवता के आगे फूट-फूट कर रोये और विनती की कि यदि उनके मुँह से ऐसी बात निकली हो, तो उनकी ज़बान *गल जाए और वे कोढ़ से गल कर मर जाएँ।*

पंडित जी सच ही दूसरे दिन चार-धाम की यात्रा पर चले गये। देवता अकेला न छूट जाएँ, इसलिए वे जल्दी-जल्दी में अपना एक चेला नियुक्त कर गये, जो उनकी अनुपस्थिति में वहाँ की पूजा करता रहे। यह शायद आवश्यक नही था, पर उनको डर था कि वे अपना खास आदमी न रख जाएंगे और कहीं सच ही तहसीलदारिन ने कोई नया पुजारी बैठा दिया, तो उनका बुढापा कटना कठिन हो जाएगा। उनके पास कोई जमीन-जायदाद तो थी नही, न अब वे कोई नौकरी ही कर सकते थे। यह देवता ही चालीस साल से उनको रोटियाँ दे रहा है। वही वे अपना अन्तिम समय भी व्यतीत कर देना चाहते थे। गांव के लोगों से वे रो-रो कर यह कहते हुए बिदा हुए कि कौन जाने वे लौट कर आएंगे या नही। अपने चेले को समझाते गये कि देवता की पूजा में कोई कमी न रहे और तहसीलदारिन से यह निवेदन किया था कि नया पुजारी बच्चा है, उसे समझाती बुझाती रहें।

उनके चले जाने पर गाँव में एक तरह से सन्नाटा फैल गया। कुछ लोग तहसीलदारिन को कोस रहे थे कि व्यर्थ ही पंडित जी पर लांछन

लगाया है, कौन जाने इस बुढापे में वे चार-धाम पूरा करके लौट भी पाएँगे या नहीं। कुछ मनचलों का खयाल था कि वे दिल्ली, बनारस आदि घूम-घाम कर लौट आएँगे। लेकिन हरिजनों की बस्ती मे फिर भी एक नारी उनके चले जाने पर बहुत परेशान थी। वह थी पंडित जी की चहेती। वह काली-कलूटी थी और उसके बाल सुफेद पड रहे थे। उसकी अवस्था चालीस के करीब थी। पडित जी से उसका सम्बन्ध बहुत पुराना था। अभी तक पंडितजी शराब का एक पव्वा और कुछ खाने-पीने की चीजें ले कर बहुधा वहा जाया करते थे। इस बात की चर्चा अब कोई नहीं करता। इतनी पुरानी बात में कोई नयापन भी तो अब नही आ सकता। कुछ हो उस बात को ले कर जो तूफान उठा, वह एक सप्ताह में ही दब भी गया।

एक रोज़ फिर नयी घटना घटी। मुनाड़ ने एक फोटो भेजा जिसमे वह अपनी पत्नी के साथ बैठा हुआ था। उसकी माँ तक उसे सिपाही की वरदी में देख कर चकित रह गयी। वह इतना बडा हो गया होगा, वह स्वयं नहीं जानती थी। वह अब बच्चा नही था, वह तो एक स्वस्थ युवक था। उसकी पत्नी गांव की युवतियों से भी भली लगती थी। उस फोटो ने गाँव में तहलका मचा दिया। जब छोटी बहू ने उसे देखा, तो वह भी आँखें फाड-फाड कर बडी देर तक उसे देखती रह गयी। वह तो सच ही सुन्दर युवती थी। गाँव में शायद ही कोई बहू इतनी अपूर्व होगी। वह भी आज इसी गाँव की बहू थी। उसकी तुलना उच्च जाति की बहुओ के साथ करना भले ही अनुचित था, फिर भी वह उनको चुनौती दे रही थी। हरिजनों की बहू इस ठाठ से फोटो खिचवाए, यह गाँव का अपमान था।

तहसीलदार की पत्नी ने इसका निराकरण कर दिया। उसने बताया कि वह किसी रंडी की लडकी होगी, जो दो-चार साल उसके साथ रहेगी और फिर भाग जाएगी। रंडियों के अलावा और कौन इस तरह फोटो खिचवाता है? घोर कलयुग की दुहाई दे कर वह चुप हो गयी, पर गाँव का बहू-समुदाय तहसीलदारिन की बात स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था।

उनकी धारणा थी कि वह किसी भले घर की लड़की थी और उस नौजवान के प्रेम में फंस कर, उससे उसने शादी कर ली होगी, प्रेम तो अंधा होता है। कई नवयुवतियों ने उस फोटो को देख कर गहरी साँस ली थी। वह फोटो न जाने कितने हाथों में पड़ा और जब वह उसकी माँ को मिला, तो फट कर मैला हो गया था।

गाँव के रोज़ाना जीवन में वह फोटो आख़िर खो गया। अपनी-अपनी समस्याओं को सुलझाने में हर-एक लगा रहा। आई-गयी बातें तो बरसाती तूफ़ान की तरह उड़ जाया करती हैं।

—यह सच बात थी कि मुताड़ू हरिजन बच्चों के लिए लेमन-ड्राप, टॉफी तथा दस्तूरी गुड़, चना और इलायची दाना लाया था। वह कुछ प्लास्टिक के खिलौने भी लाया था, पर वे तो वह अपने निकटतम परिवार के बच्चों के लिए लाया था। अपनी माँ के लिए भी वह कपड़े लाया था। इसके अलावा वह उस छोटी बहू के लिए भी एक साड़ी-जंपर लाया था, जो उसकी माँ की ओर से चिट्ठी लिख कर उसको भेजा करती थी। यदि वह न होती, तो उस गाँव से उसका सम्पर्क टूट सा गया होता। उस महिला के लिए वह हृदय में काफ़ी श्रद्धा रखता था। उसके अफसर की पत्नी जैसे कपड़े पहनती थी, वह उसी नकल के काफ़ी मँहगे कपड़े लाया था। उसकी पत्नी ने नये डिज़ाइन का एक ब्लाउज़ भी उसके लिए सिला दिया था।

इस समय वह अपने चाचा की तिवारी पर बैठा हुआ, सिगरेट फूँक रहा था। चाची भीतर से चाय बना कर ले आई थी और वह अपने मग पर ले कर उसे पी रहा था। बूढ़े उससे कई बातें पूछ रहे थे। सब को आश्चर्य हो रहा था कि जिन बातों का समाधान कराने के लिए वे अब तक तहसीलदार परिवार के बच्चों के पास जाया करते थे, उन सब का ज्ञान उसे था। वह तो हवालदार हो गया था। उसके असबाब के साथ हिन्दी का एक पुराना अख़बार लिपटा था, जिसे उसने सफर में ख़रीदा था।

वह अखबार पढ़ता है, यह जान कर बूढे दंग रह गये थे। बूढे उससे बाहर मैदान की कई बातें पूछते और वह उनका उत्तर दे कर सबका समाधान कर देता था। वह जाति, जिसके लडके आज तक केवल मिस्त्री, लोहार, बढ़ई आदि का काम करते थे और जिनका समाज मे कोई स्थान नहीं था; उनका एक लड़का अब एक नए समाज का निर्माण कर रहा था। वह तो कहता था कि अब हरिजन मदिरो मे जा सकते है, कोई इसमे रुकावट डालेगा, तो उसे जेल हो जाएगी। उसने बताया था कि वह और नौजवानों को भी आर्मड कान्स्टेबेलरी में भरती करा देगा। वे पुलीस और फौज, दोनों का काम करते हैं। उसकी बातो को सुन कर कुछ बूढे उलझन में पड गये थे।

एक ने तो कहा कि हम तो इन बिट्टों की चाकरी करते-करते मर गये और आज तक पूरा-पेट खाना नही मिला। वह गाँव का बूढा दरजी था। अब तक न जाने उसने कितनी बेटियो की विदाई के घाघरे नही सिए थे। जब पहले-पहले कपड़े का अकाल पड़ा और लडकियो को शादियाँ साड़ियाँ पहना कर की जाने लगीं, तो उसे बडा ताज्जुब हुआ था। लेकिन वह रिवाज तहसीलदार की सबसे छोटी लड़की ने चालू किया था। इतना ही नही उसने अपने कपड़े भी क़स्बे के दरजो से सिलवाए थे। फिर तो एक नया सा चलन हो गया था कि अब कपड़े शहर में सिलाये जाते थे। जो कुछ गरीब परिवार बचे थे, उनसे कुछ आमदनी नहीं थी और कई साल से उस बूढे तथा उसकी पत्नी ने भर पेट खाना नही खाया था। उसका खयाल था कि बड़ी जाति वाले उनको भूखा मारना चाहते है, अन्यथा ऊँची जाति वालों को दरजी का काम करने की कोई आवश्यकता नही। यह काम तो वे पुश्तों से करते चले आए हैं।

लेकिन कुछ बूढियो का तकाजा था कि वह अपनी पत्नी को कब लाएगा। एक अधेड उम्र की औरत ने जो कि रिश्ते में उसकी भाभी लगती थी, उससे मजाक किया कि वह उससे गाना और नाचना सीखना चाहती है। वह ओजी परिवार की महिला थी, जो प्रत्येक चैत्र में गाँव के

उच्च घरानों में जा कर नई फ़सल के आगमन पर नाचती-गाती हैं। वे सनातन से गाँव के दरज़ी और नृत्य के रक्षक हैं। उनके पति प्रत्येक नए मास की सूचना ढोल बजा कर गाँव के हरएक परिवार को दे आते हैं। वह इस बात पर मुसकरा कर चुप हो गया। बुज़ुर्गों के आगे वह उससे मजाक नही कर सकता था। यदि वहाँ गाँव के बूढे तथा बूढियाँ न होतीं और केवल नवयुवतियाँ ही होतीं, तो वह अपनी पत्नी के गुणगान-करने मे कदापि न हिचकता।

जब उसकी माँ न पहुँची, तो उसने चाची से जानना चाहा कि बात क्या है। यह जान कर कि माँ ओतली में है, वह उठ कर उधर जाने की सोच रहा था, पर रुक गया। बच्चो का जुलूस तो अभी तक मूक-सा खडा था। उनमें से एक ढीठ लडके ने उससे सवाल किया कि वह उनके लिए क्या लाया है ? वह पहले तो हिचका, पर उनका आग्रह टाल नही सका। उसने सोचा कि गाँव अब जरूर बदल गया होगा, सात-आठ साल कम नही होते है। बस अब तो वह बिना किसी हिचक के उठा और अपना सन्दूक खोल कर, टाफ़ियाँ तथा लेमन-ड्राप उन बच्चो मे बाँट दी। वे बच्चे बिना किसी हिचक के टाफियाँ आदि ले कर शोर-गुल मचाते हुए लौट गये। वह उनको जाते हुए देखता रहा। उसे अपना बचपन याद आया, जब इसी गाँव को उसे विवश हो कर छोड़ना पडा था और आज भी तो वह अन्तिम बार आया है, अपनी माँ को साथ ले जाने। इस गाँव में रह कर उनको क्या करना है। उसकी पत्नी के लिए यहाँ आना सभव नहीं। इस गाँव की हालत सुधरी नही है। गाँव वालों की बातों से ज्ञात हुआ कि भले घराने भी टूट गये है। पढे-लिखों की बेकारी फैल गयी है। तहसीलदार का मझला लड़का लड़ाई के बाद बेकार हो कर घर बैठा हुआ मक्खियाँ मार रहा है और उसका काम यही है कि लोगों मे आपसी लड़ाई करवा कर मुकदमा चलवा देता है। वह स्वयं किसी-न-किसी पक्ष का गवाह बन कर कचहरी जाता है। यही उसकी आमदनी का जरिया रह गया है। हरिजनों की बहुओं को घाट-बाट ताकता है और उनके घरों की मुर्गियाँ चोरी करवा

देता है। यही नहीं, वह उनके लड़कों से काम करा-करा कर मजदूरी नहीं देता। बात-बात पर फौजदारी करने के लिए उतारू हो जाता है। पिछले साल उसने एक बूढे को गड्ढे मे ढकेल दिया था, जिससे उसकी टाँग टूटते-टूटते बची और बेचारा सात महीने अस्पताल में पड़ा रहा। गाँव के लोग उससे घृणा करके भी विवश रहते हैं।

कई परिवारों ने तो मुताड़ू को सोने की चिड़िया समझ कर, माँग की थी कि उनको वह आर्थिक सहायता दे। वे बताते कि नए काम सब बन्द हो गये हैं और मजदूरी नहीं मिलती। वहाँ के कई नौजवान उसके साथ चलने के लिए तैयार थे; वे यहाँ की जिन्दगी से ऊब गये थे। पास के क़स्बे मे रोजगार मन्दा था और कोई नया काम चालू नहीं करना चाहता था। उनके पड़ोस में इसाइयो का एक परिवार रहता था, जिसके पुरखे हरिजन थे और इस नए मजहब को पचास-साठ साल पहले अपना चुके थे। उनके परिवार के मिस्टर पीटर ने उससे हाथ मिला कर कहा कि वह रात का खाना उनके परिवार मे खाए। अलग बुला कर चुपके कान मे कहा कि साथ मे रम लाए हो तो लेते आना। बताया कि कई साल से उन्होंने रम नही पी है। वह उनकी ओर ग़ौर से देखता रहा। मिस्टर पीटर पहले इन हरिजनो के यहाँ कभी नही आते थे। वे तहसीलदारों की बैठक को ही अधिकतर रौनक किया करते थे। उनमे इतनी तबदीली कैसे आ गयी, यह बात उसकी समझ में नहीं आई। उनका निमंत्रण स्वीकार करके उसने उनका मान रख लिया। वह पहला ही हरिजन था, जिस यह सम्मान मिला था। उनके चले जाने पर सभी ने उसके भाग्य की सराहना की। उसकी चाची ने तो यह भी कहा कि उसने बेकार मैदान की लड़की से शादी कर ली, भला वह यहाँ आना क्या पसन्द करेगी? चाहता, तो पीटर साहब उसे अपनी लड़की दे देते।

इस गाँव की नई हलचलों में वह खो गया। इन बीते हुए सालों में कई मर चुके थे। कई नई बहुएँ आई थीं। कई लड़के नौजवान हो चुके थे। उसे सब को नए सिरे से पहचानना पड़ा था। ये पीटर साहब तो उसे

कई बार, बेंतें लगा चुके थे। उनके बाड़े में सुन्दर फूल खिले रहते और बचपन में मुताड़् बहुधा उनको तोड़ कर ले आया करता था। यही नही, उनके उस बाड़े में आड़ू के विलायती पेड़ थे और वह उनको भी चोरी से तोड लाता था। कई बार चोरी के अपराध मे उसे उनके उस बाड़े मे मुफ्त में काम करना पड़ा था। वे तो उसके हाथ पर बेंतें मारते हुए कहते कि वह ठीक काम नही करेगा और फिर चोरी करेगा तो उसे पेड़ के नीचे जिन्दा गाड दिया जाएगा। पेड़ आदमी का गोश्त ज्यादा पसन्द करता है। पीटर साहब उन दिनों नये-नये असिस्टेंट मास्टरी से पेन्शन ले कर आए थे। वे गाँव वालो पर रौब गालिब करते थे कि उनके ताल्लुकात अंग्रेज हाकिमो से हैं। वे बीच-बीच मे अंग्रेजी बोलते। मुताड़् ने सोचा था कि वे गाँव छोड कर कहो और चले गये होगे। उसको क्या मालूम था कि उसके साथ वे दोस्ती से हाथ मिलाएँगे! वहाँ खाना खाने का निमंत्रण स्वीकार करने के बाद, उसे उस परिवार के लिए कुछ न कुछ उपहार जुटाना भी आवश्यक जान पड़ा।

लेकिन रात पड़ गयी और उसकी माँ अभी तक नही आई थी। वह अपनी माँ की एक झलक देखना चाहता था। वह अपना जूता पहन कर सीढियों से नीचे उतर आया, फिर रास्ते पर पहुँच कर गाँव की ओर तेजी से बढ गया। वह चुपचाप ही गाँव को पार करना चाहता था। उसे वहाँ के लोगो से कोई दिलचस्पी नही थी। लेकिन बालकों की वह टोली तो अभी तक भैरवनाथ के चौक मे जमो थी और उससे पाई हुई मिठाई उड़ा रही थी। उनके लिए यह समस्या थी कि वे उसे किस रिश्ते से पुकारा करें। यही नही उस मिठाई की चर्चा गाँव भर में फैल चुकी थी। बूढे अवाक् से इस पर सोच रहे थे। इस घटना ने गाँव मे नई आग सुलगा दी थी। बच्चे उसे घेर कर कुछ बातें पूछना चाहते थे, पर उसे अपनी माँ के पास पहुँचने की जल्दी थी। वह इसीलिए किसी से कुछ नही बोला।

ओखली के पास पहुँच कर उसने अपनी माँ के पाँव छुए और एक बार छोटी बहू को देख कर हाथ जोड़ दिए। उसकी माँ उसे सीने से लगा

कर, फफक कर रो पड़ी। वह न जाने कितनी देर तक उसी स्थिति में रही, इसका भी उसे पता न रहा। उसका मन उमड़ रहा था।

तभी उसने तहसीलदारिन का भारी स्वर सुना, "छोटी बहू, खड़ी-खड़ी क्या ताक रही है? आधी रात तक दो सेर धान नहीं कूट सके हैं! मुताड़ू क्या देख रहा है? टोकरी उठा कर घर पहुँचा दे! अब तो मुफ़्त का माल खा कर मोटा पड़ गया है।"

बहू चुपचाप अपने घर की ओर चली गयी। सास कुछ देर तक खड़ी रही और मुताड़ू ने कुटे हुए धान की डलिया अपनी माँ से ले ली। फिर उसने मूसल उठाया और तहसीलदार के घर पर पहुँचा कर चला आया। उसकी माँ चाहती थी कि वह अपनी मजदूरी का हिस्सा कुछ टूटे हुए चावलों की मुट्ठी ले ले, पर मुताड़ू ने मना कर दिया और वह अपनी माँ के साथ घर पहुँच गया। उसने देखा कि उसकी माँ बहुत बदल गयी है। उसे बहुत कम दिखाई देता है। उसने बेटे को बताया कि छोटी बहू के दो बच्चे हैं। उसके सुहाग के लिए वह विनती करती है। इस दुःख में वह उसे सदा सहारा देती रही थी। और मुताड़ू ने उस ताड़िका सास की बहू से तुलना की। एकाएक मन में ख़याल आया कि वह उसके बच्चों को भी कुछ दे। सच ही नए गाँव का कोई ज्ञान उसे नहीं था। उसने अगले दिन क़स्बे जा कर उनके लिए भी उपहार लाने का विचार किया।

जब गाँव के लोग चले गये, तो उसने अपने कपड़े बदले। घड़ी में देखा, अभी सात बजे थे। उसे खाना खाने नौ बजे जाना था। पीटर साहब ने कहा था कि वे अंग्रेज़ी टाइम से खाना खाते हैं। उसकी माँ ने जब सुना कि पीटर आया तो हँस पड़ी और बताया कि साहब की हालत काफ़ी ढीली-ढाली हो चली है। दोनों लड़के आवारा निकले। एक लड़की कहीं मास्टरनी है और वही कुछ रुपये भेजती है। साहब की तनख्वाह तो देशी ठर्रे में उड़ जाती है। इस भेद की बात को बताने में भी व- चूकी कि उसका उन पर पचास रुपया क़र्ज़ भी है। वह बहुत आदमी है, हो सकता है कि दावत दे कर वह और क़र्ज़ लेना

उसने सावधान किया कि कहीं वह उसके चंगुल में न फँस जाए।

वह माँ की बात अनमने भाव से सुन रहा था। उसके मन में तहसीलदारिन की बात करवट ले रही थी। उसने उसका अपमान किया है। वह स्वयं अपनी माँ को सहयोग देता, पर आज भी वह तहसीलदारिन उन पर शासन करने की धृष्टता करती है। किन्तु वह उससे बहुत घृणा करते हुए भी विवश है। उसे लगा कि आज की घटना उस पुरानी घटना की तरह ही है, जिसके कारण उसे गाँव छोड़ना पड़ा था। तहसीलदारिन की आँखों में वह छोटी नीच जाति का है। वह बहुत बेचैन हो उठा और नीचे आँगन में टहलता रहा। सामने ऊँचे पहाड़ की चोटी पर चाँद चमक रहा था। वहाँ तारे भी झिलमिलाते दिखाई दिए। जब उसने पहाड़ छोड़ा था, तब यह चाँद सदा ही उसके साथ रहा है। वह अपनी पत्नी से हँस कर कहा करता था कि जब पहले-पहल उसने चाँद को अपने साथ हर जगह पाया, तो उसे आश्चर्य हुआ था, लेकिन समझ आते ही उसे मालूम हुआ कि यह चाँद तो बिना किसी भेद-भाव के सब को रोशनी दिया करता है।

पहाड़ी पर फले हुए गाँवों के चिराग झिलमिला रहे थे और कुछ दूरी पर जो नदी बहती थी, उसकी धारा की आवाज गूँज रही थी। वह दृश्य भी उसे मोह नहीं सका। उसका मन अनमना हो रहा था। हृदय की पीड़ा उमड़ कर छाती चीर बाहर बह जाना चाहती थी। उसका मन कर रहा था कि वह उसी समय गाँव छोड़ कर चला जाए, लेकिन ऐसी कायरता दिखलाने में उसे संकोच हो रहा था। आज तो वह पहले की तरह निर्बल नहीं था। यदि वह अपनी पत्नी के साथ आया होता, तो सच ही आज वह मर कर भी इस अपमान का बदला चुकाता। यह चाँद-सितारों का खेल जो उसे बचपन से प्यारा था, आज उसे डसता-सा लगा। इस चाँद-सितारे की दुनियाँ के नीचे उसकी हैसियत हो क्या थी! वह नीच जाति का लड़का है, जिसकी हैसियत का सब मजाक उड़ाते हैं। गाँव के पीछे वाली सड़क पर उसकी दृष्टि पड़ी। इसी सड़क से हो कर वह एक दिन भाग गया था। न जाने कितने नौजवान आज तक उस सड़क से भागे होंगे! लेकिन

आज तो........

पीटर साहब का पैग़ाम आया। उसका दो घंटे का समय मानसिक उलझन में कटा। उसका मन नहीं चाह रहा था कि वह वहाँ जाए, फिर भी विवश था। उसने ऊपर जा कर सन्दूक खोला और एक छोटी शीशी में रम भर कर खाकी पतलून की जेब में उसे रख लिया। चुपचाप नीचे उतर कर वह पीटर के घर की ओर चला। उसके मन का गर्व उस रूढ़िवादी महिला ने किस आसानी से चूर-चूर कर दिया, इसकी उसे कल्पना तक न थी। शासन करने की वह प्रणाली सड़ी-गली होने पर भी अभी बदली नहीं थी। इसका ज्ञान शायद उसे नहीं था। वह जहाँ अपने साथियों के साथ नौकरी करता था, वहाँ उसका कोई जीवित-सा सम्पर्क बाहर की दुनिया से नही था। वे तो अपने बैरकों में रहते थे। कुछ साथी बाहर से समाचार-पत्र लाया करते जिनकी खबरों को बिना किसी टीका-टिप्पणी के वे हज़म कर जाते थे।

उसका अपनी पत्नी से भी पहले कोई सम्पर्क नहीं था। वह एक पुराने हवालदार की लड़की थी। उस हवालदार ने उसके काम में बड़ी दिलचस्पी ली थी। वह भी हरिजन था। वह कहाँ का रहने वाला था, इस पर उसने कभी नहीं सोचा। लेकिन एक दिन जब उस ने अपनी लड़की की शादी का प्रस्ताव उसके सामने रखा, तो वह चुपचाप उसे स्वीकार कर बैठा। उस अधेड़ की पत्नी मर गयी थी और वह अकेली लड़की ही थी। वह चाहता था कि लड़की देख कर पसन्द करे, पर उस पसन्द की बात को भूल कर उसने शादी करने की स्वीकृति दे दी थी। उस शादी की दावत में बड़े अफ़सर शरीक हुए, फिर भी अपने गाँव में उसकी हैसियत नहीं बन सकी। उसकी पत्नी की ख्वाहिश थी कि गाँव को एक बार देख ले। वह पत्नी से कहता था कि उसका गाँव बहुत सुन्दर है। प्रकृति की इतनी अपूर्व छटा उसने और कहीं नहीं देखी। मैदानों में सारा दृश्य पेड़ों के झुर-मुटों के बीच छिप जाता है। पहाड़ों में जब बरसात के बाद हरियाली उभरती है और फूल खिलते हैं, तो वहाँ का दृश्य अपूर्व लगता है। उसे

देख कर कोई भी मुग्ध हुए बिना नहीं रहता। जब कभी वह पहाड़ों की चर्चा करता, तो उसका हृदय भावुकता से भर जाता था। पत्नी टकटकी लगा कर पति को देखती रहती। उसकी माँ नेपाली थी और वह उस जाति की ताज़गी अपने चेहरे पर लाई थी। ये सब बातें उसके हृदय में फैल रही थीं।

वह पीटर के मकान पर पहुँचा, तो उनके झबरा कुत्ते ने दरवाज़े पर उसका स्वागत किया। वह कुत्ता उसे भीतर न घुसने देता, यदि मेम साहिबा ने डाँट-फटकार न बताई होती। वे फाटक के पास आ कर अपने टामी को डाँट रही थीं। कुत्ता उनके पाँवों पर लोट-पोट रहा था। वह चुपचाप उसके साथ बढ़ कर भीतर पहुँचा। मेज़ पर खाना लगा था और उनकी लड़की जो नर्स का कोर्स समाप्त कर अभी-अभी घर लौटी, खाने की देख-माल कर रही थी। वह चुपचाप वहाँ बैठ गया। तभी इशारा करके पीटर साहब उसे अपने कमरे में ले गये और वहाँ दोनों ने थोड़ी-थोड़ी पी डाली। गृहस्वामिनी बार-बार चेतावनी दे रही थी कि वे इस प्रकार उस बच्चे को बिगाड़ रहे हैं। लेकिन कुछ पी कर पीटर साहब बता रहे थे कि उनकी पत्नी चाहती है कि वे मर जाएँ। छटे-छमाहे थोड़ी-सी पी लेते हैं, तो क्या हो गया? तीस साल मदरसे में पढ़ा कर भी आज बीस रुपया पेन्शन मिलती है! भला उससे शरीफ आदमियों का खर्च चल सकता है?

शरीफ़ आदमियों वाली बात अभी चल ही रही थी कि गृहस्वामिनी ने प्रवेश करके कहा, "आपको भूख नहीं होगी, यह बच्चा तो सफ़र से थक कर आया है। आपके साथ बातें करने के लिए अभी उसके पास काफी समय है। वह महीने भर रहेगा......."

खाना खाने में मुताड़् को कोई उत्साह न था। उसकी भूख आत्म-सम्मान की आग में स्वाहा हो चुकी थी। उस लड़की ने एक बार सहानुभूतिपूर्वक कहा कि उसने कुछ नहीं खाया, तो वह चेष्टा करने लगा कि कुछ जल्दी-जल्दी निगल कर पेट में डाल ले और भाग जाए। अपनी परे-

शानी को वह व्यक्त नहीं होने देना चाहता था। लेकिन वह लड़की तो सब-कुछ बारीकी से भाँप रही थी। वह पूछ ही बैठी कि क्या तबीयत ठीक नहीं है ? और फिर खुद ही बताने लगी कि आजकल सारे गाँव में मलेरिया और इंफ्लूएंजा फैला हुआ है, मानो वह कोई बड़ी डाक्टरनी हो।

मुताड़ू ने एक-दो बार उस लड़की की ओर देखा। वह काली थी, पर उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थी। वह बड़ुन कुरूप थी, फिर भी मुताड़ू ने अनुभव किया कि वह सहृदय है। उसकी बातों से वह स्वस्थ हो गया। उससे कई बार आँखें मिलीं पर उस ढीठ लड़की की आँखों में लाज उसने नहीं पाई। वह बता रही थी कि गाँव के लोग वैद्य की सड़ी-गली पुड़िया पसन्द करते हैं, पर उसकी बतायी हुई दवा नहीं खाते। वह तहसीलदारिन का मजाक उड़ा रही थी कि तीन-चार साल से डीसेंटरी की मरीज है, पर दवा नहीं खाती। बड़ी धर्मात्मा बनी फिरती हैं। उसकी बहू मनाती है कि सास मर जाए, तो वह प्रसाद बाँटेगी।

मुताड़ू को उस लड़की का साहस अद्‌भुत लगा। उसकी भीतरी निर्मलता ने उसे मोह लिया। उसे अब भरोसा हो गया कि उस तहसील-दारिन का मजाक उड़ाने की शक्ति वह रखती है। वह हँस रही थी कि पिछले साल जब तहसीलदारिन की मझली बहू को बच्चा होने वाला था, तो कभी किसी के आगे नहीं झुकने वाली तहसीलदारिन ने उसका चरण-चुम्बन किया था ताकि उसकी बहू को बचा लिया जाए। उसका सारा घमंड काफूर हो गया था।

लेकिन बीच ही में मेम साहब ने इन-सारी बातों पर तुषारपात कर डाला। वे सहज ही पूछ बैठीं कि, क्या सचमुच उसने किसी रंडी की लड़की से शादी की है। तहसीलदारिन ने यह बात सबसे कही थी, उसका फ़ोटो भी तो यहाँ आया था।

"तहसीलदारिन बेईमान है। वह स्वयं अच्छी नहीं है। न जाने किस घमण्ड में फूली हुई है। लड़के तो दफ्तरों में बाबू की नौकरी करते हैं।" गुस्से में वह बोला।

इस पर लिली बोली, "देखो न मम्मी, मैंने ठीक बात कही थी। वह तहसीलदारिन बहुत बड़ा दिमाग रखती है। लेकिन अब उसकी एक नहीं चलेगी।"

गुस्से से अभी तक उसका चेहरा तिलमिला रहा था। उसका वश चलता, तो वह उसकी झोंटी पकड़ कर सारे गाँव में घुमा कर चैन लेता। उस औरत का दिमाग तभी ठीक होता। वह बेईमान न जाने क्यों इतना गरूर रखती है। उसे शायद यह नहीं मालूम है कि अब कानूनन हरिजनों पर कोई उँगली नहीं उठा सकता है।

उसने जल्दी-जल्दी हाथ धोए और अपने घर जाने की तैयारी करने लगा। तभी लिली उसके कान में बोली, "इस तरह गुस्सा होने से कोई फ़ायदा नहीं है।"

उसको बात से उसे बहुत दिलासा मिला। उसे यह विश्वास हो गया कि वह वह अकेला नहीं है। लिली की ओर उसने देखा। लिली ने अनुरोध किया कि वह कुछ देर बैठे रहें। वह भीतर जा कर एक पुराने मोढ़ा पर चुपचाप बैठ गया। लिली बता रही थी कि, उसको जल्दी बाहर के किसी अस्पताल में नौकरी मिल जाएगी। यह लड़की जब छोटी थी, तो गाँव के लोग इसे देखा करते थे। वह रंगीन कपड़े पहने हुए बहुत सुहावनी लगती थी। फिर तो यह ईसाइयों के स्कूल में पढ़ने चली गयी। आज उसे देख कर मुताड़ू भी चकित-सा रह गया था। उसे देख कर मुताड़ू को अपनी पत्नी की याद हो आई, जो तीन-चार महीनों में माँ बनने वाली थी। वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता है। इस समय वह सो रही होगी। वह उसे कल पत्र लिखेगा। उसकी पत्नी उससे अधिक शिक्षित है और वह इस साल दसवीं की परीक्षा देने को सोच रही थी। उसकी योजना थी कि वह इसके बाद ट्रेनिंग ले कर कहीं मास्टरनी बन जाए। उसकी महत्त्वाकांक्षाओं से वह बल पाता रहा है। उसने उसे कई महीनों तक पढ़ाया भी था।

लिली बार-बार उससे पत्नी की बातें पूछ रही थी और वह साधारण

सा उत्तर दे देता। वह न जाने उस युवती के बारे में क्यों इतनी जानकारी चाहती थी। वह और बातें भी करती, पर गृहस्वामिनी आ गयी और बैठ कर बहुत-सी बातों के साथ यह पूछते हुए भी न चूकीं कि वह क्या-क्या लाया है। उसने आसानी से सब कुछ बता दिया, पर छोटी बहू वाली चीजों को छिपा गया। गृहस्वामिनी बोली कि लड़ाई के जमाने से कपड़े का जो अकाल पड़ा है, तब से अच्छा कपड़ा देखने तक को नहीं मिला। उसने यह भी कहा कि वह अगले दिन कुछ समय निकाल कर उसके घर आएगी। उसकी भावना को मुताड़ अच्छी तरह समझ गया कि वह क्या चाहती है।

कुछ देर के बाद जब वह अपने घर को रवाना हुआ, तो लिली बोली कि कल सुबह वह चाय पीने उसके घर आए। लेकिन उसने तो स्वयं ही लिली को अपने यहाँ चाय का न्योता दे दिया। लिली ने गरदन हिला कर मूक स्वीकृति दी। वह तेज़ी से फाटक के भीतर चली गयी और जब उसकी आहट खो गयी, तो उसने गहरी साँस ली। उस समय चाँद आकाश में ऊपर उठ चुका था और इस तरह हँसता हुआ दिखाई दिया, मानो एक युवक और युवती का इस भाँति अलग होना उसे डस गया हो।

सुबह जब उसकी नींद टूटी तो सात से अधिक बज गया था। वह जल्दी से उठा और माँ से बोला की लिली चाय पीने आएगी। माँ कुछ नहीं बोली। माँ की ओर उसने देखा, जो न जाने कब से उसके आने की बाट जोह रही थी। वह अपनी माँ को बहुत प्यार करता था। जब उसने पहाड़ छोड़ा था, तो उसका मन बार-बार करता कि वह पंछी की तरह उड़ कर माँ के वक्ष-स्थल में छिप जाए। जब लौटने पर माँ को उसने देखा, वह दंग रह गया। माँ इन चंद सालों में ही बहुत बदल गयी। माँ चाय बनाने की सोच रही थी पर स्वयं इस काम में सफल न होने की आशा से किसी और को बुला लाई। वह उठ कर झरने पर पहुँचा। झरना हरिजनों और पशुओं के लिए था। उस समय सुनसान था। वह बड़ी देर तक नहाता रहा। सामने

पहाड़ पर गाँव के पशु चर रहे थे। गाँव की सनातन प्रणाली चालू थी। सदियों से जो प्रकृति का रूप था, वह मौसमों के साथ उसी पुरानी रफ्तार से चल रहा था। यदि कोई परिवर्तन हुआ था, तो यही कि बच्चे जवान हो गये, जवान अधेड़, अधेड़ बूढ़े और बच्चों की नई पौध भी इस बीच तैयार हो गयी थी। एक नई बात यह थी कि हरिजनों ने अपनी बस्ती पर तिरंगा झंडा फहराया हुआ था। वह झंडा उनके दफ्तर पर भी फहराया करता है।

जब वह लौट कर घर पहुँचा, तब तक लिली नहीं आई थी। वह पीटर साहब के पास पहुँचा, तो उन्होंने बताया कि गाँव में किसी महिला को देखने गयी है। बड़ी देर तक वह उसका इंतजार करता रहा। जब वह आई तो लगा कि वह बहुत थकी है। उसने बताया कि किस तरह वह बच्चे और माँ की रक्षा कर सकी है। वह माँ बहुत निर्बल थी। उसने व्यंग्यपूर्ण हँसी मे बताया कि पेट-भर खाना मिले चाहे नहीं, इस ओर किसी का ध्यान नही है। पति पाँच साल से बेकार है। पाँच प्राणी खाने वाले है। फिर खेत भी अपने नहीं, दूसरो के खेत आधे-तिहाई पर कमा कर किस तरह गुजर हो सकती है? उसकी समझ में नहीं आता कि वह माँ किस तरह जिन्दा रहेगी।

लेकिन उसने चुपके यह भी बताया कि गाँव की मर्यादा को धक्का पहुँचा है। कल उसने सवर्ण लोगों के बच्चों को मिठाई बाँट कर गुरुतर अपराध किया है। तहसीलदारिन तो सुबह से बमक रही है कि अब सारे गाँव को प्रायश्चित करना पड़ेगा और उसके शाहजादे ने तो प्रण किया है कि वह उसकी लाश गिरा कर ही चैन लेगा, जिसने यह काम किया है। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि तहसीलदार-परिवार का एक नाती मिठाई ले कर वहाँ पहुँचा जहाँ उसकी दादी माला ले कर पूजा कर रही थी और उसने मिठाई देवता को चढ़ाने की चेष्टा की थी। वे गोपाल जी तो चुप रहे, पर दादी सुबह से ब्राह्मणों की पंचायत कर रही है। ब्राह्मणों का कहना है कि अब तो सारे गाँव का सवाल है। दिन में पंचायत होगी और वह जो भी तय करेगी, वही किया जाएगा। जो लिली कल उसे काफी

शक्तिशालिनी दिखाई दी, आज चिंतित लग रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे और क्या छिपाए।

तहसीलदार के आवारा लड़के ने उससे कहा था कि एक रोज में ही उस डोम के छोकरे पर लट्टू हो गयी है। उसका मन तो कर रहा था कि वह एक चाँटा मार कर बदला चुकाए; पर वह कुमारी थी, अभी उस अस्त्र का प्रयोग करना उसे नहीं आया था। उसकी शिकायत ले कर वह तहसील-दारिन के पास गयी, तो वह बोली कि पहले अपने दिल की गवाही ले ले। घाट-बाट चर्चा हो रही है कि तू रात-भर उस डोमड़े के साथ रही। उसे भी ताव आ गया और वह ज़ोर से कह आई, 'मैं कभी तुम्हारे पाँवों पर गिरने नहीं आई तहसीलदारिन! अपना घमंड तुम अपने पास रखो। मैं इससे डरने वाली नहीं हूँ। तुम्हारी बहुएँ तो काठ की बनी हैं। मैं तुम्हारी बहू होती, तो नाकों चने चबवाती।' वह गुस्से में तेज़ी से लौट आई। लिली ने तहसीलदारिन का अपमान किया और सम्भ्रान्त परिवार की महिला खून का घूँट पी कर चुपचाप रह गयी थी। वह जानती थी कि आज वह उस लड़की का मुकाबिला करके जीत नहीं सकती है। उसका मान सभी परिवारों में था। वह लड़की सभी गरीब परिवारों की सहायता किया करती है। वे उसके विरुद्ध कुछ कहने वाले नहीं। उसका क्रोध तो उस लड़के पर था, जिसके कारण यह सब हुआ।

लिली के हृदय में अभी तक क्रोध सुलगा हुआ था। मुताड़ू उसको नहीं समझ पा रहा था। वह उसके लिए चिंतित थी और पछता रही थी कि व्यर्थ ही उसने यह झगड़ा बढ़ा दिया। वह चाहती तो कुछ न हुआ होता। वह उससे कहना चाहती थी कि गाँव छोड़ दे। वहाँ उसका रहना हित-कर नहीं है, पर कह नहीं सकी। वह इस बात को कदापि न मानेगा। चाय की एक-एक घूँट के साथ नए-नए विचार मन में उठ रहे थे! वह तय नहीं कर पा रही थी कि कौन-सा रास्ता निकाले। वह उसे बेकार में भयभीत नहीं करना चाहती थी। इतना उसने उसे जरूर बता दिया कि वह गाँव की ओर न जाए। उस मिठाई वाली चर्चा का वर्णन कर दिया।

उसे यह समझा दिया कि किसी की उत्तेजना में न आए। उसे धीरज दिया कि वह दिन में कस्बे जा कर थानेदार की बीवी से सभी बातें कहेगी। उसे पूरा विश्वास था कि वह उसको सहायता करवा सकेगी। उस औरत की उसने साल भर पहले मौत से रक्षा की थी और थानेदार ने उसे सौ रुपये तथा एक साड़ी भेंट में दी थी। छठे-छमाहे थानेदार की बीवी उसके यहाँ छोटी-मोटी चीजें भेजना नहीं भूलती।

लिली ने चाय का प्याला समाप्त भी नहीं किया था कि उसकी माँ आ पहुँची। अतएव वह उससे और कोई बात न कर सकी। जब वह चली गयी, तो श्रीमती पीटर ने सब कपड़ों की छानबीन की और 'होनहार बेटा' कह कर और शाम तक रुपये भेज देने का आश्वासन दे कर, एक साड़ी और जंपर झटक लिया। रंगीन वायल की साड़ी वह छोटी बहू के लिए लाया था। उसके कहने पर कि साड़ी का वे क्या करेंगी, श्रीमती पीटर ने आसानी से बता दिया कि उसे काट कर ब्लाउज बनाये जा सकते हैं। इसके बाद अधिक बात न बढ़ा कर वे यह कहती हुई चली गयीं कि शाम तक पूरा रुपया भेज देंगी। साहब उस दिन क़स्बे के डाकखाने से रुपया निकाल कर न ला सके, तो फिर दो-चार दिन का सब्र करना पड़ेगा। लेकिन वह तो जानता था कि वह हाथ से निकल गया है। सन्तोष इसी बात का था कि उसे लिली की माँ ले गयी और लिली एक सहृदय युवती है।

उनके चले जाने के बाद गाँव के कुछ बूढ़े आए और चिन्तित हो कर समझाया कि उसे ठाकुर लोगों से माफ़ी माँग लेनी चाहिए और जो कुछ जुर्माना पंचायत करे, दे देना चाहिए। लेकिन नौजवान, जो कि न जाने कब से खार खाये बैठे थे, किसी प्रकार का समझौता करने के लिए तैयार नहीं हुए। हरएक अपनी-अपनी राय रख रहा था। कुछ लोगों का खयाल था कि इस मामले में पीटर साहब की सलाह लेनी चाहिए, पर उनकी मेम ने तो साफ कह दिया कि वे लोग इस तरह के झगड़ों में नहीं पड़ते, साहब को भला कचहरी जाने का वक्त कहाँ है ?

लिली दो घण्टे के बाद आई और उसे बता गयी कि वह क़स्बे जा रही है। इससे अधिक बात वह नहीं करना चाहती थी। जब वह चली गयी, तो गाँव वालों में उस बात को ले कर भी चर्चा होने लगी। बात पहुँचते-पहुँचते तहसीलदारिन के कान में पड़ी, तो वह भुनभुनायी कि उसका क्या है, जिसे चाहे खसम बना सकती है। फिर गाँव के बूढ़ों को आश्वासन दिया कि थानेदार पहले उसके पति के साथ सिपाही था, आज नमकहलाली नहीं कर सकता।

दिन को पंचायत ने फ़ैसला किया कि मुताड़ू पर दो सौ रुपये जुर्माना किया जाता है और उसे सारे गाँव वालों से माफ़ी माँगनी पड़ेगी। छोटी बहू ने उसकी माँ के पास संदेश भिजवाया कि रुपये वह दे देगी। उसका यह कहना था कि उसके जेठ का गुस्सा बहुत खराब है। झगड़ा बढ़ाने से कोई लाभ नहीं होगा। पीटर साहब ने जब यह सुना, तो गुस्से में बोले कि गाँव वालों को जुर्माना करने का कोई हक़ नहीं है। बच्चों को किसी ने बुलाया नहीं था। मेम साहिबा बार-बार चिल्लाती रही कि उनको किसी से क्या लेना है, लेकिन साहब को मालूम था कि अभी तक मुताड़ू के पास डेढ़ बोतल रम है। उसका नशा उन पर बिना पिए ही चढ़ा हुआ था।

मुताड़ू को यह बात मान्य नहीं हुई। आज वह उन लोगों से मोर्चा ले लेने की ठान चुका था। उसने ज़ोर से कहा कि बीस-पच्चीस रुपये वह इसके लिए फेंक सकता है, पर माफ़ी कदापि नहीं माँगेगा। जो उनके मन में आए कर सकते हैं। हरिजनों के बूढ़े परेशान थे कि यह बेकार का झगड़ा है। जिनकी तबेदारी वे सदियों से कर रहे हैं, जिनके जूठे अन्न से पल कर वे बड़े हुए, उन ठाकुरों की बात काटना सच ही नई घटना थी। पर वे विवश थे। उनकी बात पर जवान छोकरे हँस देते।

गाँव वालों का संदेश आया कि यदि शाम तक माफ़ीनामा और जुर्माना न पहुँचा, तो वे मुताड़ू को पकड़ कर ले जाएंगे। इसका उसने कोई उत्तर नहीं दिया। अब वह लिली की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे लग रहा था

कि वह अकेले कुछ न कर सकेगा। यदि उसके पास बन्दूक होती, तो वह दो-चार को मार कर फांसी पर लटक जाता। उसने कमरे का निरीक्षण किया तो उसकी आँखें एक हँसिये पर जा अटकीं। उसकी माँ उससे जंगल से पेड़ों की छोटी-छोटी टहनियाँ काट कर लाती थी। उसने उसे निकाल लिया और सोचा कि अब तो वह अकेला नही है। वह अपनी रक्षा इस हथियार से करेगा।

ज्यों-ज्यों समय बीत रहा था, उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। लिली की प्रतीक्षा करते-करते रात पड़ गयी और ऊपर सड़क पर से तहसीलदार का लड़का चिल्ला रहा था, "ओ डोम के छोकरे! ऊपर आ, कहाँ छिपा हुआ है ?"

लिली की बात मन में उठी कि वह किसी के बहकाने मे न आ जाए। लेकिन ऊपर से गालियों की बोछार शुरू हो गयी और फिर पत्थर बरसने लगे। वे बीच-बीच में हँसी उड़ा रहे थे, "डोम की जात है; साले सब नामर्द है, कमरों में छिपे बैठे हुए है।" इस बात पर वह अपने को रोक नही सका। उसने हँसिया हाथ में ले लिया और अपने मकान के आँगन में खड़ा हो कर चिल्लाने लगा, "सालों! नीचे उतर आओ, मै एक-एक का खून करूँगा। ऊपर से हिजड़ों की तरह क्या चिल्ला रहे हो!"

गाँव के लोग इस चुनाती से पीछे हट गये, पर तहसीलदार का लड़का नीचे उतर आया। दोनों में हाथा-पई शुरू हो गयी। यदि हरिजनों के बूढे उसकी रक्षा न करते, तो मुताड़ू उसकी हत्या कर देता। लेकिन उसे उसी के बुजुर्गों ने रोक लिया था। अब तहसीलदार का लड़का शेर बन कर उसे ललकार रहा था। वह उसे पकड़ कर ऊपर ले जाना चाहता था, पर उसकी समझ में कुछ नहो आ रहा था। फिर भी हिम्मत करके उसने कहा, "चल ऊपर, जो बातें करनी हां, वहाँ होंगी।"

मुताड़ू ताव में तो था ही, गुस्से में बोल बैठा, "चल, देखता हूँ क्या कर लेगा।" वह उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। कुछ हरिजन ने इसका विरोध किया, तो गाँव के बूढ़े पंडित जी, जो चार-धाम

की यात्रा करके लौट आए थे, चतुराई से बोले, "गाँव का आपसी झगड़ा है, आपस में ही निपट लेना चाहिए। बेकार कचहरी जा कर क्या होगा ?"

पंडित जी की बात हरिजन बुड्ढों ने मान ली और सब लोग भैरव-नाथ के चौक की ओर रवाना हो गये। पीटर साहब आशा में थे कि उनको भी निमन्त्रण मिलेगा, पर यह नही हुआ। वे अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए वहाँ नहीं गये।

काफ़ी गरम और ठंडी बहस के बाद जब मुताड़ू ने जुर्माना देना स्वीकार नहीं किया, और न माफ़ी माँगी, तो तहसीलदार के लड़के ने ज़ोर से कहा, "मुताड़ू को आज रात पकड़ कर यहीं किसी की गौशाला में बन्द कर दिया जाए और कल सुबह उसे थाने भेज दिया जाए।" इस बात पर हरिजन युवक कुछ नहीं सोच सके कि क्या किया जाए।

तभी लिली ने आ कर मुताड़ू को बताया कि वह पुलीस में रिपोर्ट लिखा आयी है कि सुबह तहसीलदार के लड़के ने नाजायज़ तरीके से उस पर हमला किया। उसे बचाने के कारण गाँव वाले मुताड़ू से नाखुश हैं। उसने यह भी बताया कि कल उसका वकील कचहरी मे मुकदमा दायर कर देगा।

—लिली और मुताड़ू चले गये। उस हार पर सब दंग थे,और तह-सीलदार का लड़का ओंठ चबा कर चुप रह गया। तहसीलदारिन ने जब सुना, तो दहशत के मारे बेहोश हो गयी। उसकी बहुएँ मना रही थीं कि वह इस धक्के से मर जाए, तो पाप कटे।

रास्ते में लिली ने बताया कि उसने पाँच सौ रुपया थानेदार को देने का वायदा किया है। थानेदार ने तो हँस-हँस कर कहा था कि कोई दूसरा होता, तो वह दो हज़ार से कम की माँग न करता। वह तो उनके अहसान से दबा है। फिर बताया कि यह महकमा ही ऐसा है कि बाप या अपना बेटा ही इसमें फँस जाता, तो वह इससे कम पर मामला न दबाता।

यह मुताड़ू की पहली विजय थी। उसने लिली से कहा कि उसके अहसान का वह सदा ऋणी रहेगा।

लिली इस पर मुसकरा दी। आज वह बहुत खुश थी।